

ਹੀਂ ਸ੍ਰ ਹੀਂ ਸ੍ਰ ਹੀਂ ਸ੍ਰ ਹੀਂ ਸ੍ਰ ਹੀਂ ਸ੍ਰ ਹੀਂ ਸ੍ਰ ਹੀਂ ਸ੍ਰ ਹੀਂ ਸ੍ਰ

विक्रमसंवतः २०८२-२०८३  
 शालिवाहन शक-१९४७-४८  
 सन् १९३३, लक्ष्मणसंवत् १९६-१७  
 ईस्वी सन् २०२५-२६



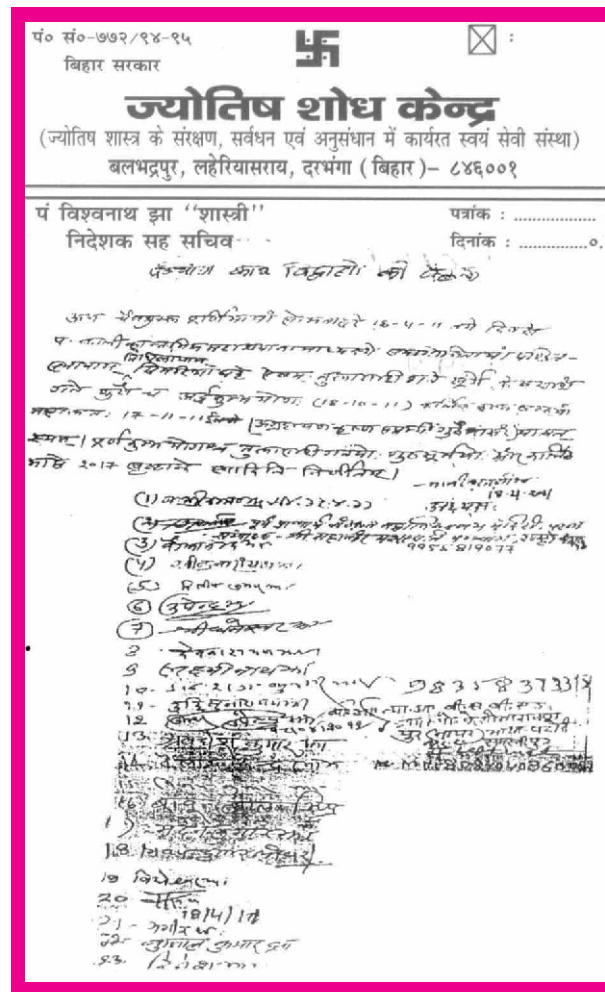
सर्वमङ्गला विद्वत्परिषद् सह पंचाङ्ग समर्थकाः

१. पं. श्री सुखदेव पाठक, बेगूसराय
२. पं. श्री रामनारायण झा, रूदौली
३. पं. श्री दिनेश कुमार झा, अहियापुर, बेगूसराय
४. पं. श्री विकास मिश्र अहियापुर बेगूसराय
५. पं. श्री रंजन शास्त्री, मुजफ्फरपुर
६. पं. श्री नारायण झा, सिद्धाश्रम
७. पं. श्री दीपक झा, रानी
८. पं. श्री रत्नेश्वर पाठक, मालीपुर
९. पं. श्री धीरेन्द्र झा, रूदौली
१०. पं. श्री सनातन भारद्वाज, श्रीधाम बरौनी
११. पं. श्री राम भारद्वाज, सिद्धाश्रम
१२. पं. श्री रमेश मिश्र, सिद्धाश्रम
१३. पं. श्री लक्ष्मण भारद्वाज, गुरुधाम रूदौली
१४. पं. श्री साकेत कुमार झा, रूदौली
१५. पं. श्री पद्मनाभ झा, रसलपुर
१६. पं. श्री रंधीर झा, मंझौल
१७. पं. श्री प्रकाश मिश्र, गढ़पुरा
१८. पं. श्री गौरीशंकर पाठक, अहियापुर
१९. पं. श्री राजेश कुमार झा, अहियापुर
२०. पं. श्री राजकुमार झा, रसीदपुर
२१. पं. श्री सुभाष कुमार पाठक, गौड़ा
२२. पं. श्री सतीश पाठक,
२३. पं. श्री अमरनाथ झा टभका समस्तीपुर
२४. पं. श्री अनंत झा टभका समस्तीपुर
२५. पं. श्री विद्यासागर झा खूटहा
२६. पं. श्री गंगाधर ठाकूर प्र. संस्कृत महावि. खम्हा

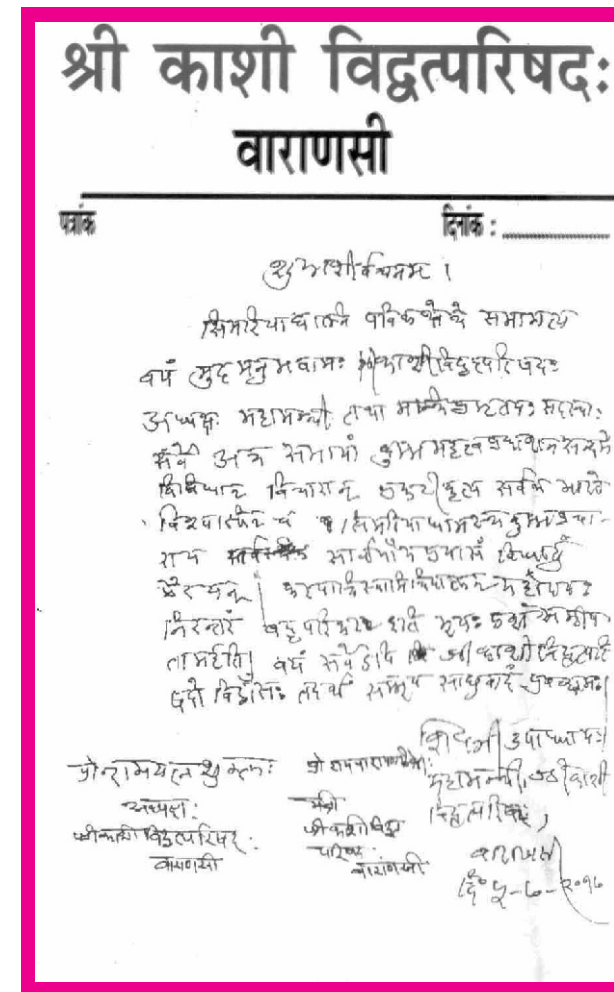
२७. पं. श्री कृष्ण मोहन झा महारथपुर बेगूसराय
२८. आचार्य श्री विजय कृष्ण झा कन्हैयाचक खगड़िया
२९. पं. श्री शत्रुघ्न झा बनगांव सहरसा
३०. पं. डॉ. प्रजापति झा शाम्हो बेगूसराय
३१. पं. श्री चंद्रभूषण झा शाम्हो बेगूसराय
३२. पं. श्री भूपेंद्र ठाकुर तेयाय बेगूसराय
३३. पं. श्री विकास पाठक पपरौर बेगूसराय
३४. पं. श्री परमानंद झा मंडौल बेगूसराय
३५. पं. मिथिलेश झा आहो बेगूसराय
३६. पं. बुधन ओझा, पटना
३७. पं. श्री आशुतोष कुमार झा, व्याकरण ज्योतिषाचार्य  
रहुआ, समस्तीपुर
३८. पं. बाबु साहेब झा, बोरिया, समस्तीपुर
३९. पं. अखिलेश्वर कुमार पाण्डेय, ज्योतिषाचार्य,  
शिवहर

## अखिल भारतीय सर्वमंगला परिवार

१. स्वामी सुलभानन्दजी, पटना
२. स्वामी नागेन्द्रानन्दजी, पटना
३. स्वामी अभयानन्दजी, पटना
४. स्वामी उमेशानन्दजी, पटना
५. स्वामी माधवानन्दजी, प्रयाग
६. स्वामी गंगानन्दजी, हरिद्वार
७. स्वामी प्रेमतीर्थजी, हरिद्वार
८. स्वामी विश्वनाथानन्दजी, पुनौराधाम
९. स्वामी सत्यानन्दजी, आश्रम
१०. स्वामी दिनेशानन्दजी, आश्रम
११. स्वामी संजयानन्दजी, आश्रम
१२. स्वामी सदानन्दजी, आश्रम
१३. स्वामी अखिलेश्वरानन्दजी, सुपरमार्केट
१४. स्वामी सुदर्शनानन्दजी, सहरसा
१५. स्वामी प्रद्युम्नानन्दजी, शिवहर
१६. स्वामी निर्मलानन्दजी, शिवहर
१७. स्वामी नंदकिशोरानन्दजी, शिवहर
१८. स्वामी ध्रुवानन्दजी, राजगीर
१९. स्वामी शिवकुमारानन्दजी, राजगीर
२०. स्वामी अमरेन्द्रानन्दजी, आश्रम
२१. स्वामी कौशलेन्द्रानन्दजी, आश्रम
२२. स्वामी रीतेश्वरानन्दजी, आश्रम
२३. स्वामी राधेश्वरानन्दजी, आश्रम
२४. स्वामी नृपेन्द्रानन्दजी, आश्रम
२५. स्वामी ज्ञानानन्दजी, आश्रम
२६. स्वामी नीरंजनानन्दजी, आश्रम
२७. स्वामी विजयानन्दजी, आश्रम



२८. स्वामी उमेशानन्दजी, आश्रम
२९. स्वामी रोचकानन्दजी, आश्रम
३०. श्री सुरेन्द्र चौधरी, अध्यक्ष
३१. श्री राजकिशोर प्रसाद सिंह, महासचिव
३२. श्री दिनेशप्रसाद सिंह, सचिव
३३. श्री नवीन प्रसाद सिंह, कोषाध्यक्ष
३४. श्री राजीव कुमार सिंह



३५. श्री सुशील चौधरी
३६. श्री नीलमणि सिंह
३७. डा० अंजनी प्रसाद सिंह
३८. श्री इंदू भारती जी, लखनऊ अधिवक्ता  
पटना उच्च न्यायालय
३९. श्री प्रवीन कुमार 'प्रेम'
४०. श्री विजय कुमार सिंह

**पंचांग सहयोगी सदस्यगण**

१. श्री. सुरेन्द्र चौधरी अध्यक्ष सर्वमंगला आध्यात्मयोग विद्यापीठ, सिमरिया
  २. श्री रामतन साही मुजफ्फरपुर
  ३. श्री सुदर्शन सिंह सहरसा
  ४. श्रीमती किरण देवी सूरत, गुजरात
  ५. आचार्य श्री नारायण झा रसलपुर बेगूसराय
  ६. आचार्य श्री दिनेश कुमार झा अहियापुर बेगूसराय
  ७. श्री राजीव चौधरी (बबलू) जोड़पुरा समस्तीपुर
  ८. आचार्य श्री वरुण पाठक अहियापुर बेगूसराय
  ९. आचार्य श्री राजेश झा अहियापुर बेगूसराय
  १०. आचार्य श्री रमेश मिश्र अहियापुर बेगूसराय
  ११. आचार्य श्री रंजन शास्त्री मुजफ्फरपुर
  १२. पं. श्री संतोष पाठक अहियापुर बेगूसराय
  १३. पं. श्री दीपक कुमार झा रानी बेगूसराय
  १४. पं. श्री गौतम कुमार सुमन रानी बेगूसराय
  १५. पं. श्री दुर्गेश झा सोरमार समस्तीपुर
  १६. स्वामी श्री सुलभानन्द जी पटना
  १७. श्री सुरेन्द्र प्रसाद सिंह हरिपुर कादरावाद, बेगूसराय
  १८. श्री ब्रजेश (पत्रकार) शाहपुर जन्दाहा वैशाली
  १९. श्री विश्वजीत कुमार गंगापुर समस्तीपुर
  २०. श्री पंकज कुमार सिंह गढ़पुरा बेगूसराय
  २१. स्वामी ज्ञानानन्द जी बरियारपुर बेगूसराय
  २२. स्वामी नृपेन्द्रानन्द जी भैरवार बेगूसराय
  २३. श्री पप्पू राय रूपसबाज बेगूसराय
  २४. श्री वीरेन्द्र प्रसाद सिंह डुमरी परोड़ा बेगूसराय
  २५. श्री गीरीशंकर सिंह निपनियाँ बेगूसराय
  २६. पं. श्री बनवारीलाल तिवारी प्रयागराज उ.प्र.
  २७. पं. श्री सुभम् तिवारी प्रयागराज उ.प्र.
  २८. स्वामी श्री राधेश्वरानन्दजी अहियापुर बेगूसराय
  २९. श्री सनातन कुमार (श्याम भारद्वाज) शोकहरा बेगूसराय
  ३०. पं. श्री पद्मनाभ झा रसलपुर बेगूसराय
  ३१. श्री संजय चौधरी नवटोल, बेगूसराय
  ३२. श्री संजीत कुमार (M. R.) बछौता खगड़िया
  ३३. श्री अरविंद यादव महेशपुरा डुमरी बेगूसराय
  ३४. डा. कौशल किशोर चौधरी संस्थापक कुलसचिव पुर्णिया वि. वि.  
समप्रति निदेशक B.R.A.V.V. मुजफ्फरपुर
  ३५. पं. श्री त्रिलोचन ठाकुर शाहपुर बेगूसराय
  ३६. श्री अमरेन्द्र कुमार सिंह डुमरी परोड़ा, बेगूसराय
  ३७. श्री कौलशेन्द्र कुमार सिंह डुमरी परोड़ा बेगूसराय
  ३८. श्री रीतेश कुमार गोखलेनगर विष्णुपुर, बलिया, बेगूसराय



### मङ्गलाचरण

सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके।  
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते॥  
गुरुभ्यश्च ग्रहेभ्यश्च मया बद्धोऽसमंजलिः।  
प्रसन्नमनसस्तेन सत्यां कुर्वन्तु भरतीम्॥

स जयति सिन्दुरवदनो देवी यत्पादकपंकजस्मरणम्।  
वासरमणिरिव तमसां राशिन्नाशयति विघ्नानाम्॥  
विनायकं प्रणम्यादौ देवीं वाग्देवतां गुरुम्।  
संवत्सरफलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥

यश्चैत्रशुक्लप्रतिपत्सु धीमान् शृणोति वर्षीयफलं पवित्रं।  
भवेद्धनाढ्यो बहुसस्यभोगी जह्याच्चपीडां तनुजां च वार्षिकीम्॥

प्राप्ते नूतनवत्सरे प्रतिगृहे कुर्याद्ध्वजारोपणं स्नानं,  
मंगलामाचरेद्द्विजवरैः कुर्यान्मनोवाच्छितम्।

ग्राह्या रौप्यसुवर्णरत्नमणयो वृद्धादिभिः पूजयेच्छ्रोतव्यं  
द्विजवर्यभाषितफलं श्रेयस्करं पुण्यदम्॥

शाकस्य श्रवणात् सुपुण्यजनंसंवत्सरस्यआढ्यतां  
राज्ञोराजकुले जयो विजयते मन्त्री फलं बुद्धिदं।

धान्यं धान्यपते रसं रसपतेः क्षेत्रेषु वृद्धिस्तथा,  
सस्यं सर्वसुखं च वत्सफलं संश्रृण्वतां सिद्धिदं॥

धन्य ई मिथिला धाम, जतय ऐला राम भगवान।  
धन्य अयाची-मंडन-ज्ञान, भन विद्यापति कवि महान॥

धन्य कुशेश्वर-विदेश्वर-सिंहेश्वर ओ अभिराम।  
धन्य मछैता विषहरि धाम, धन्य भवानी उगनेश्वर गाम॥

धन्य मिथि आ मिथिलाधा, धन्य धन्य विदेहरजधाम।  
धन्य धरा छथि सीताराम, रमण करै छथि नमन प्रणाम॥

### श्री मङ्गलमूर्तये नमः, श्रीसरस्वत्यै नमः

कल्पादिसम्बत्-१७७२६१६१२६, सृष्टिसम्बत्-१६५५८८५१२६, रामसम्बत्-८८०१६७, कृष्णसम्बत्-५२६१, कलिसम्बत्- ५१२६-२७, सप्तर्षिसम्बत्-५१०१, विक्रमसम्बत्-२०८२-८३, सन्-१४३३ साल, लक्ष्मणसम्बत्-६१६-१७, क्रिस्तब्दः-२०२५-२६, तत्र प्रभवादिबार्हस्पत्यगताब्दादयः-५२॥०१।१८।११।००।००, भोग्याब्दादयः-७।१०।१२।००।०० अत्र विद्यमाने- हयवेदनवेन्दुमिते-(१६४७), शकाब्दे रूद्र विंशति द्वाव्या नासत्य दैवतयुगे त्रिपञ्चाशत सिद्धार्थ नामक मध्यम बार्हस्पत्य सम्बदसर फलम्:-

जलपूर्णास्तथा मेघाः शस्य पूर्णाच मेदिनीः। निष्टुराः पार्थिवा देवि सिद्धार्थ द्वै वरानने॥

अथ वर्षेश बुध फलम्-

राजानो मुदिता भवन्त्यतिबलाः कीर्तिप्रतापान्विताः। गीते नृत्यरताः सदा विजयिनः कान्तामुखे षट्पदाः॥  
वृष्टिःशस्यकरी धनाम्बरयुता विप्राश्च पूर्णालया। रोगानां च विनाशनं नरपशेश्चन्द्रात्मजेऽब्दाधिपे॥

सम्बाहक शनि फलम्-

मेघो घोर रवं करोति विविधं स्वल्पं पयेच्छेज्जलम्। दुष्टानां विजयो महाजन पदा विख्यात नाशोस्पदा॥  
धर्माणां खलु विपलवो नरपतिः संक्षोभ लोभाकुला। सर्वस्वापद वेस्तिता च वसुधा सम्बाहके सूर्य जे॥

पालक-शुक्र फलम्-

मेघाः कालेस्वीकीये बहुसलिलमुचश्चारू कीर्त्यान्विताः स्युः। लोकाः सम्पन्न वित्त नय विनय युताः कीर्तिभाव वहन्ति॥  
राजानः शिष्टपक्षैः प्रमुदित हृदया दान दाक्षिण्य युक्ताः। स्वस्थाः विज्ञान शीलाः प्रतिदिन मुदिताः पालके भार्गवेच॥

मेघाधिप भौम फलम्-

सदाजलचराः खिन्नाः स्वल्प वृष्टि कराः कुजे।

तोयाधिप बुधफलम्-

शस्य युक्ता मही नित्यं मुदिताश्च बुधेचराः॥

शस्याधिप चन्द्रफलम्-

पृथ्वी शस्य समाकीर्णा जलदाभूरितोयदाः। नन्दन्ति मानवाः सर्वेशस्ये च निशाकरे॥

लोकाधिप बुधफलम्-

बुधे विभव भोगादया विक्षा वेद विलासिनः। सदाम्बराः सत्य जनाः प्रमोद सहिता नराः॥

संवर्तक मेघ फलम्-

संवर्तके महावृष्टिः शस्य वृद्धि करी शुभा। जल पूर्णा मही नित्यं जलदैर्वैष्टितं नभः॥

वर्षादिविश्वा २०८२-८३

वर्षा-११ धान्यम्-११, शीतम्-५, तृणम्-१७, उष्णम्-२३, वायुः-६, प्रजावृद्धिः-१५, प्रजाक्षयः-१५, विग्रहः-११, उग्रत्व-१५, रसोत्पत्ति-१७, फलोत्पत्ति-७, रोगः-७, रोगक्षयः-५, आचार-५, व्यभिचार-११, मरण-६, जनन-१६, चौर-६, चौरोपशमन-१५, अग्निभय-५, अग्निशमन-१५।

### आय-व्यय २०८१-२०८२

| राशि | मेष  | वृष   | मिथुन | कर्क   | सिंह  | कन्या | तुला  | वृश्चिक | धनु    | मकर   | कुम्भ | मीन    |
|------|------|-------|-------|--------|-------|-------|-------|---------|--------|-------|-------|--------|
| आय   | ५    | १४    | २     | ११     | १४    | २     | १४    | ५       | ८      | ११    | ११    | ८      |
| व्यय | ५    | ११    | ११    | ८      | २     | ११    | ११    | ५       | ११     | ५     | ५     | ११     |
| फल   | लाभः | हानिः | रोगः  | सौख्यः | विजयः | रोगः  | हानिः | लाभः    | सौख्यः | विजयः | विजयः | सौख्यः |

फलम्:-

आय व्यय युति कृत्वा तत्र रूपं विशोधयेत्। अष्टभिश्च हरेदभागं शेषांके फल मादिशेत॥

लाभः सौख्यं तथा क्लेशो रोगो लोकापवादनम्। सम्मान विजयो हानिः कथितं पूर्वं सूरिभिः॥

सन् १४३३ साल, १६४७-४८ शकाब्दीय शुध्यशुब्दी

श्रावण कृष्ण प्रतिपच्छुक्रवासरात् गुर्वस्त बाल्य दोषाभ्यां श्रावण कृष्ण चतुर्थ्या चन्द्रे १८।११ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादिः-००।०३।१८।११॥ ततो भाद्र कृष्ण नवम्यां रवौ-२६।५ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादिः-१।४।१०।५४॥ ततः सिंहादित्य दोषादाश्विन कृष्णैकादश्यां बुधे-२६।०६ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादिः-०१।०१।००।०४॥ ततः पौष कृष्ण प्रतिपत्छुक्र वासरे-११।४३ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादिः-०२।१८।४२।३४॥ ततः शुक्रक्षैण्यास्त बाल्य धनुरादित्य दोषेभ्यः माघ शुक्ल-दशम्यां बुधे-४६।२४ यावदशुद्धस्तनमानं मासादिः-१।२४।३४।४१॥ ततः प्रथम ज्येष्ठ कृष्णामावास्यायां शनौ ५१।०० यावच्छुद्धस्तन्मानं मसादिः-०३।१८।०४।३६॥ ततः मलमासः दोषात् द्वितीय ज्येष्ठ कृष्णामावास्यायाञ्चन्द्रे-१८।१६ ततः आषाढ कृष्ण त्रयोदश्यां रवौ २३।५० यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादिः-०।२७।१४।३४॥ ततः गुरु क्षैण्यास्त दोषाभ्यमाषाढी यावदशुस्तन्मानं मासादिः-०।१७।३६।१०॥ अतोवर्षे शुद्ध समय मानं मासादिः-०८।०८।१२।३८॥ अशुद्ध समय मानं मासादिः-०४।१५।४७।२२ तेन वर्ष-पूर्ति दिनानिः-

### पञ्चाङ्ग देखने की विधि:

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम तिथि उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डात्मक मान एवं तिथि घण्टा मिनट उसके बाद नक्षत्र का नाम एवं दण्डपल और घण्टा मिनटात्मक मान है, तत्पश्चात् योग का नाम एवं दण्ड पल मान उसके बाद पूर्वार्ध करण का नाम एवं दण्डात्मक मान, पश्चात मेषादि राशि में चन्द्रमा के भुक्तकाल का घण्टात्मक मान, उसके बाद सूर्योदय एवं सूर्यास्त तथा मिश्रमान कालिक स्पष्टराश्यादि सूर्य का भोगकाल एवं राष्ट्रीय, नेपाली एवं अंग्रेजी दिनांक तत्पश्चात मुहूर्त पर्वादि दिये गये हैं।

उदाहरणार्थ- प्रथम श्रावण कृष्णपक्ष शुक्रवार को प्रतिपदा तिथि का दण्डात्मक मान ५२।१६, रात्रि २।८ तक, पूर्वाषाढानक्षत्र का दण्डपल ५।४५, दिन ७।३२ तक योग वैधृति का दण्डात्मक मान ४२।३८, करण बालव का दण्डात्मक मान ३०।१३, चन्द्र का भुक्त धनु राशि में दिन १।३१ तक, सूर्योदय ५ बजकर १४ मिनट पर तथा सूर्यास्त ६ बजकर ४६ मिनट पर, सूर्य मिथुन राशि के २४ अंश ५५ कला ३३ विकला पर भोग कर रहा है, ऐसा समझना चाहिए। राष्ट्रीय १५, नेपाली आषाढमासे के २७ गते तथा अंग्रेजी दिनांक ११ जुलाई समझना चाहिए। उसी पंक्ति में धर्मशास्त्र के द्वारा वर्णित पर्वादि दिया गया है। इस पञ्चाङ्ग के निचले भाग में मिश्रमानकालिक राश्यादि दैनिक स्पष्ट ग्रह एवं दण्डपालक मिश्रमान दिया गया है। तदनन्तर दैनिक लग्न सारणीय दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन सूर्योदयकालिक लग्न का समाप्ति काल मानक समय के अनुसार दिया गया है। साथ ही उपयोगी विविध विषय भी दिये गये हैं।



**कन्या- ( टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो )-** कन्या राशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य फलदाई है आय व्यय चक्र के अनुसार यह वर्ष रोग कारक है शत्रु पक्ष निर्बल होगा सरकारी कर्मियों का कार्यभार में वृद्धि होगी तथा स्थानांतरण की संभावना बनेगी स्वास्थ्य सामान्य रहेगा भौतिक सुख में वृद्धि होगी छात्रों तथा परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होगी जातक के प्रक्रम में वृद्धि होगी लोहे खनिज संचार भवन निर्माण से संबंधित व्यक्तियों को विशेष लाभ होगा उधर नेत्र से संबंधित रोग से पीड़ा होने की संभावना है घर में वैवाहिक कार्यक्रम होंगे न्यायालय कार्य संपादित होंगे।

**तुला- ( रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते )-** तुला राशि वाले के लिए यह वर्ष शुभ फलदाई है। उत्तम स्वास्थ्य परिवार में मांगलिक कार्य, कुटुंबीय सौख्य, कार्य उत्तम और संतान सुख की प्राप्ति होगी। न्यायालयी कार्यों में बाधायुक्त सफलता, व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों को मध्यम आय की संभावना, छात्रों तथा प्रतियोगिकी परीक्षार्थियों को सफलता मिलेगी, सरकारी कर्मियों को कार्य का भार बढ़ेगा पदोन्नति प्राप्त होंगे। माता-पिता के स्वास्थ्य में सुधार रहेगा, स्थानांतरण का भी योग बनता है। सोने चांदी के व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों को हानि होने की संभावना है। पारिवारिक क्लेश के लिए शिवपूजन करना हितकर होगा।

**वृश्चिक- ( तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू )-** वृश्चिक राशि वालों के लिए यह वर्ष मिश्रित फलदाई प्रतीत होता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, कंठ तथा नेत्र पीड़ा की संभावना रहेगी, कृषि कार्य प्रभावित होंगे, बहु प्रतिक्षित कार्य में सफलता मिलेगी। न्यायालयी कार्य संपादित होंगे, धनसंचय में कमी होगी, धार्मिक कार्यों में व्यय होंगे, सुख साधनों में वृद्धि होगी, भूमि भवन संबंधी कार्य व्यवधान युक्त होने के बाद भी सफल होंगे। कृषि संबंधी कार्य से धनागम की संभावना है। नौकरी पेशा वालों के लिए पदोन्नति की संभावना, स्त्री से सहयोग की प्राप्ति होगी। **धनु- ( ये, यो, भा, भी, भु, ध, फ, ढ़, भे )-** धनु लग्न वालों के लिए यह वर्ष शनि की अद्वै्या के प्रभाव में रहने के कारण मिश्रित फलदाई है। जातक मानसिक कष्ट कारक, महत्वपूर्ण कार्यों में बाधा, अनावश्यक भय, अस्थि संबंधित भय तथा अपव्यय संभव है। छात्रों के लिए विशेष सफलता प्रतियोगी परीक्षार्थियों और विवाहितों के लिए सुनहरा अवसर है। नौकरी पेशा से जुड़े व्यक्तियों के लिए अधिक कार्यभार तथा पदोन्नति का भी योग है। भ्रातृ विरोध, पारिवारिक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। औषधि से जुड़े व्यक्तियों को अतिरिक्त लाभ प्राप्त होने की संभावना है।

**मकर- ( भो, जा, जी, जू, जे, जो, खा, खू, खे, खो, गा, गी )-** मकर राशि वालों के लिए यह वर्ष उत्तम प्रतीत होता है। आय व्यय चक्र के अनुसार आय 15 तथा व्यय 5 है, इस कारण जातक को सभी प्रकार के कार्यों में विजयी होने तथा प्रतिष्ठा प्राप्ति का योग बनता है। शनि के मार्गी तथा बक्री होने के फलस्वरूप लाभ तथा हानि की भी संभावना है, उत्तम स्वास्थ्य, महत्वपूर्ण कार्यों में प्रगति, आकस्मिक रूप से धनागम का भी योग बनता है, परंतु उसी अनुपात में व्यय भी बढ़ेगा। छात्रों तथा प्रतियोगी परीक्षार्थियों को सामान्य सफलता की प्राप्ति होगी। नौकरी पेशा से जुड़े व्यक्तियों को पदोन्नति प्राप्त होगी, सामाजिक अपयश भी प्राप्त होंगे। सामाजिक तथा राजनीतिक व्यक्तियों को पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होगी।

**कुंभ- ( गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो दा )-** कुंभ राशि वाले व्यक्ति के लिए यह वर्ष शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव में रहेगा शनि के मीन राशिस्थ होने तथा बक्री मार्गी होने से प्राय: यह वर्ष लाभकारी प्रतीत होता है। जातक के स्वास्थ्य में सुधार तथा मानसिक कष्ट संभावित है। उत्तम भाग्य, धार्मिक स्थान का परिभ्रमण, मांगलिक कार्यों की पूर्ति, छात्रों तथा प्रतियोगी परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्त होने की संभावना है। बंधु विरोध सामाजिक तथा राजनीतिक व्यक्तियों को निराशा मिलेगी। शनिवार को पीपल वृक्ष में गुड़ मिश्रित जल देने, लोहे की अंगूठी धारण करना, एवं हनुमान चालीसा व सुंदरकांड का पाठ तथा हनुमत पूजन करना हितकर होगा।

**मीन- ( दी, दू, थ, झा, ज, दे, दो, चा, ची )-** मीन राशि वालों के लिए यह वर्ष शनि की साढ़ेसाती के प्रभाव में रहेगा। जातक को मानसिक कष्ट, पारिवारिक समस्या, भ्रात्रि विरोध तथा सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यकर्ताओं को विरोध का सामना करना पड़ सकता है। उदर पीड़ा तथा अस्थि संधि में पीड़ा कारक होगा। जातक अनावश्यक व्यय भार से ग्रस्त होगा, भाग्य पक्ष निर्बल, शत्रु पक्ष सबल होकर पीड़ा दायक होंगे। भौतिक सुख साधन में कमी होगी, छात्रों तथा परीक्षार्थियों में निराशा होगी। शनिवार को पीपल वृक्ष में गुड़ मिश्रित जल दें, शनि का मंत्र जपे, तथा लोहे की अंगूठी धारण करें। शनिवार को हनुमत पूजन तथा हनुमान चालीसा का पाठ सुंदरकांड का पाठ करना लाभकारी सिद्ध होगा।

**द्वितीय जयेष्ठ मास फल:-** इस महीने में पाँच सोमवार “चंद्रे बहु जलं धान्यं तृणानां बहुलोदयः” मिथुन संक्रांति मुहूर्त उ. तथा चंद्रदर्शन मुहूर्त के आलोक में खाद्य पदार्थों के मूल्य में सौम्यता, दुग्धादि उत्पादन में वृद्धि, प्राकृतिक प्रकोप, वायु वृष्टि तथा उष्णता की अधिकता के कारण चौरागि्न भय में वृद्धि होगी। सुवर्णादि के भाव में अस्थिरता, रसादि पदार्थों के उत्पादन में ह्रास होगा। लौह पदार्थ तथा किराना व्यवसाय में लाभ होगा। किसी प्रमुख विवाद के समापन होने तथा जातीय उन्माद में कमी होने की संभावना है।

**आषाढ़ मास फल:-** इस माह में पाँच मंगलवार “पञ्च भौमे भयं महत्” तथा पाँच बुधवार पांच “बुधे रसक्षयो भूम्यां” कर्क संक्रांति मुहूर्त ४५ एवं चंद्र दर्शन मुहूर्त के आलोक में प्राकृतिक प्रकोप, रोग, चौरागि्न तथा भय में वृद्धि, सांप्रदायिक सद्भाव में कमी तथा राजनीतिक उथल-पुथल जनान्दोलन में वृद्धि होने की संभावना रहेगी। सुवर्णादि के भाव में अस्थिरता रहेगी। अन्नादि खाद्य पदार्थ के मूल्य सामान्य रहेंगे। श्वेत पदार्थ के उत्पादन में वृद्धि होगी। गृह निर्माण सामग्री के भाव में वृद्धि होगी। संचार सेवा, विद्युत उत्पादन में वृद्धि होगी। रासायनिक पदार्थ महंगे होंगे

## राशि फल २०८२-०८३

**मेष- ( चू, चे, चो, ला, ली, ले, लो, अ )** – मेष राशि वाले जातक के लिए यह वर्ष मिश्रित फलदायी होगा, मानसिक कष्ट, स्वा्थ्य संबंधी चिंता, धन संचय में कमी,मांगलिक कार्य की पूर्ति, शत्रु पक्ष में प्रबलता, आर्थिक क्षति, न्यायालयी कार्यों में व्यवधान, छात्रों के एकाग्रता में कमी, दाम्पत्य शौर्य में वृद्धि तथा धार्मिक यात्रा में सुख की प्राप्ति होगी। बंधु विरोध का भी सामना करना पड़ेगा। अविवाहितों को लाभ प्राप्त होगा। शनि के साढ़े साती के प्रभाव में यह पूरा वर्ष रहेगा। लोहे की अंगूठी धारण, शनिवार को गुड़ मिश्रित जल पीपल वृक्ष में दें तथा श्री हनुमान चालीसा तथा सुंदर काण्ड का पाठ करना हितकर होगा।

**वृष- ( ई, ऊ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो )** – इस राशि वाले व्यक्ति के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। संतान से सुख की प्राप्ति होगी, व्यवसाय में उच्च वर्ग के सहयोग से लाभ की प्राप्ति होगी, भूमि तथा भवन संबंधी कार्य में बाधा युक्त सफलता प्राप्त होगी, स्वास्थ्य ठीक, दाम्पत्य सुख में वृद्धि, पुत्रादि की प्राप्ति, जनगम तथा मांगलिक कार्य की पूर्ति तथा धार्मिक स्थल की यात्रा से मानसिक संतुष्टि होगी। बंधु समागम तथा शौर्य में वृद्धि होगी, स्वजन विवाद, कर्मचारियों के स्थान परिवर्तन की भी संभावना है।

**मिथुन- ( का,की,कु,घ,ङ,छ,के,को,हा )**– इस वर्ष मिथुन राशि वाले व्यक्ति के लिए यह वर्ष सामान्य फलदाई रहेगा। संतानों के शिक्षा में व्यवधान युक्त सफलता, दाम्पत्य सुख, शौर्य में वृद्धि, मातृ पक्ष में पीड़ा, बंधु विरोध, धार्मिक तथा मांगलिक कार्य में सफलता मिलेगी। भूमि भवन संबंधी कार्य में व्यवधानयुक्त सफलता की प्राप्ति, छात्रों को प्रतियोगी परीक्षा में सफलता की प्राप्ति, अविवाहित व्यक्तियों को व्यवधानयुक्त सफलता मिलेगी। नौकरी पेशा वाले, राजनीति क्षेत्र में काम करने वाले व्यक्तियों को कार्य में सफलता मिलेगी। आय में वृद्धि का भी योग है।

**कर्क- ( ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो )**–कर्क राशि वालों के लिए यह वर्ष सामान्य फल दायक है। परिश्रम करने वालों के कार्य में सफलता प्राप्त होगी, धार्मिक स्थानों की यात्रा, शैक्षणिक तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होगी। नौकरी पेशा वालों के लिए कार्यभार में वृद्धि होगी। दांपत्य सुख में कमी, व्यापार में ह्रास होगा, नेत्र पीड़ा से पीड़ित रहेंगे। भ्रातृ कलह तथा आपसी सामंजस्य में कमी होगी। मित्र वर्ग से सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य संबंधित चिंता, भूमि भवन संबंधी विवाद में सफलता प्राप्त होगी। संतान के प्रति चिंता में वृद्धि होगी।

**सिंह- ( मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे )**– सिंह राशि वालों के लिए यह वर्ष शनि की अद्वैया के प्रभाव में रहेगा इस कारण रात्रि विरोध की स्थिति बनेगी दांपत्य सुख में कमी होगी भूमि भवन संबंधी कार्य में व्यवधान होगा शिक्षा तथा प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होगी न्यायालय कार्यों में सफलता मिलेगी न्यायालय से दंड प्राप्त होने की संभावना भी है किसी आकस्मिक घटना का सामना करना पड़ सकता है व्यापारिक तथा राजनीतिक व्यक्तियों को बधायुक्त सफलता प्राप्त होगी वैवाहिक तथा मांगलिक कार्य संपन्न होंगे पारिवारिक कलह तथा नौकरी में बाधा उपस्थित होंगे घरेलू अपव्यय तथा व्यापारिक प्रतिष्ठान में लाभ से अधिक वह होने की संभावना है शनिवार को पीपल वृक्ष में गुरु मिश्रित जल दिन लोहे की अंगूठी धारण करें तथा हनुमान चालीसा एवं सुंदर का कांड का पाठ करना हितकर होगा।

**मार्ग ( अग्रहायण ) मास का फल:-** इस मास में पांच गुरुवार– (चन्द्र जीवो पदा पञ्च अन्नादीना महर्घा ) वृश्चिक संक्रांति मुहूर्त –उ० तथा चंद्र दर्शन मुहूर्त के आलोक में खाद्य पदार्थों के मूल्य में तेजी रहेगी सीताधिक्य, अर्थव्यवस्था में प्रगति तथा कृषक वर्ग में प्रसन्नता, सांप्रदायिक तनाव से जनजीवन प्रभावित होगा। राजनीतिक उथल-पुथल, धार्मिक आस्था में वृद्धि, धर्माचार्यों में मतभेद, व्यक्ति विशेष पर आघात की संभावना, अग्निभय में वृद्धि, आकाशीय दुर्घटना पीत पदार्थों तथा धातु पदार्थों के मूल्य में वृद्धि होने की संभावना है ।

**पौष मास फल-** इस महीने में पांच शुक्रवार “प्रजा वृद्धिस्तु भार्गवे” तथा पांच शनिवार “दुर्भिक्षं पञ्च मन्देषु” मूले धनुषि रविः” मुहूर्त १५ तथा चंद्रदर्शन मुहूर्त के आलोक में प्रजा वृद्धि, खाद्य पदार्थ के मूल्य में वृद्धि, आंदोलन, सांप्रदायिक तनाव में वृद्धि, सीमावर्ती क्षेत्र में अशांति, प्राकृतिक आपदा शीतलहर शीताधिक्य से जन सामान्य प्रभावित होंगे। अर्थव्यवस्था में लाभ, रासायनिक पदार्थ वाहनादि के मूल्य में वृद्धि, धातु पदार्थ के मूल्य में कमी, पीले पदार्थों के मूल्य में वृद्धि, होयत। केंद्रीय मंत्रिमंडल में फेर बदल, विपक्षी दल में सक्रियता सामान्य खंड वृद्धि तथा न्यायालीय निर्णय से असंतोष में वृद्धि होगी।

**माघ मास फल:-** इस महीने में पांच रविवार –“पंचार्क वासरे रोगाः” मकर संक्रांति मुहूर्त उ. तथा चंद्र दर्शन मुहूर्त के आलोक में रोग वृद्धि के कारण जनहानि की संभावना है। विधर्मियों में आपसी में वैमनस्य के कारण विशेष अशांति रहेगी। धान्यादि खाद्य पदार्थों के मूल्य में अस्थिरता रहेगी। पीत धातु के पदार्थों के मूल्य में वृद्धि, श्वेत पदार्थों के मूल्य में कमी, किरना पदार्थों के मूल्य में वृद्धि संभावित है। शीत लहर तथा हिमपात से जन-धन की हानि, अर्थव्यवस्था में वृद्धि, कृषि उद्योग से प्रगति कारक संकेत हैं। जातीय असंतुलन तथा प्राकृतिक प्रकोप से कृषि कार्य प्रभावित होंगे। उपल वृष्टि की संभावना है।

**फाल्गुन मास फल:-** इस महीने में पाँच सोमवार “चंद्रे बहु जलं धान्यं तृणानां बहुलोदयः” तथा पाँच मंगलवार – पंच भौमे भयं गृहत – कुंभ संक्रांति मुहूर्त उ. तथा चंद्रदर्शन मुहूर्त के आलोक में वायु वेग वृष्टि तथा उपल वृष्टि से जन-धन तथा कृषि कार्य की हानि, तृणादि के उत्पत्ति में वृद्धि, खाद्य पदार्थ के मूल्य में सौम्यता, अर्थोपार्जन में वृद्धि, कृषि कार्य तथा गृह निर्माण वाहनादि निर्माण में वृद्धि होगी। सांप्रदायिक तथा जातीय उन्माद के कारण जन-धन की हानि, प्राकृतिक प्रकोप के कारण जनमानस में भय की संभावना, पीत पदार्थ तथा धातु के मूल्य में तेजी, श्वेत पदार्थों के मूल्य में कमी की संभावना रहेगी।

**चौत्र मास फल:-** इस मास में पांच बुधवार :- “बुधे रसक्षयो भूम्यां” पांच गुरुवार का योग : “चंद्र जीवो यदा पञ्च अन्नादीनां महर्धता”, मीन संक्रांति मुहूर्त उत्तर तथा चंद्र दर्शन मुहूर्त के आधार पर इस महीने में अन्नादि के भाव अस्थिर रहेंगे। मधुर तथा रसादि पदार्थ का उत्पादन कम होगा, दुग्धादि पदार्थों के उत्पादन में वृद्धि होगी, लौह पदार्थ, चाय, तथा नशीले पदार्थ में तेजी होगी। पीत एवं धातु पदार्थ के मूल्य में कमी आएगी। श्वेत पदार्थ के उत्पादन में ह्रास होने की संभावना है। सांप्रदायिक तनाव, जातीय उन्माद में वृद्धि होगी। वायु वेग उपल वृष्टि के कारण जन-धन की हानि होने की संभावना रहेगी।

**बैशाख मास फल:-** इस महीने में पाँच शुक्रवार – “प्रजा वृद्धिस्तु भार्गवे” मेष संक्रांति मुहूर्त १५ तथा चंद्र दर्शन मुहूर्त के आलोक में इस मास में अन्नादि के भाव में अस्थिरता रहेगी। शास्त्रीय ज्ञान तथा बौद्धिक ज्ञान संबंधी कार्य में वृद्धि, प्राकृतिक प्रकोप, सांप्रदायिक तनाव एवं जातीय उन्माद के कारण जन-धन की हानि संभावित है। सुरक्षा से संबंधित कार्य में व्यवधान, राजनैतिक अस्थिरता, उष्मता में वृद्धि, वायु वृष्टि प्रकोप तथा लौह पदार्थ के मूल्य में कमी सुवर्णादि के भाव में वृद्धि रसादि पदार्थों के मूल्य में तेजी रहेगी।

**प्रथम जयेष्ठ मास फल-** इस महीने में पांच शनिवार “दुर्भिक्षं पञ्च मन्देषु” तथा पांच रविवार– “पञ्चार्क वासरे रोगाः” वृष संक्रांति मुहूर्त उत्तर तथा चंद्र दर्शन मुहूर्त के अनुसार प्राकृतिक प्रकोप, रोग चौरागि्न भय में वृद्धि की संभावना है। अन्नादि के भाव में वृद्धि होगी, सांप्रदायिक सद्भाव में कमी तथा जातीय उन्माद, राजनीतिक अस्थिरता, उच्च पदासीन व्यक्ति की हानि, आकाशीय दुर्घटना तथा जनान्दोलन के कारण प्रजा वर्ग में उद्धिग्नता रहेगी। सुवर्ादि के भाव में कमी होगी, गृह निर्माण सामग्री महंगे होंगे। विदेशी व्यापार तथा विलासिता सामग्रियों के उत्पादन में वृद्धि होगी।

## वर्षफल २०८२-०८३

इस वर्ष के राजा बुध, मन्त्री शनि, पालक बुध , मेघपति मंगल, तोयपति बुध, शस्यपति चन्द्र, लोकपति बुध, सम्वर्तक नामक मेघ, वर्षा ११, धान्य ११, सिध्दार्थ नामक संवत्सर है, जिसका फल उत्तम है – जलपूर्णस्तथा मेघाः शस्यपूर्णा च मेदिनि। निष्ठुराः पार्थिवाः देवि सिध्दार्थाब्दे वरानने।। अर्थात सिद्धार्थ संवत्सर में जल पूर्ण मेघ और शस्यपूर्ण पृथ्वी एवं दयाहीन नृप वर्ग होते हैं।

वर्षा योग उत्तम है तथा पृथ्वी धान्य से पूर्ण तथा सामरिक गति विधि में वृद्धि, प्राय: अनेक देशों में युद्ध की स्थिति बनी रहेगी। राजा बलवान तथा प्रमुदित रहेंगे और उनकी कीर्ति तथा प्रभाव में वृद्धि होगी। रोगों के शमन के विभिन्न तरीके अपनाए जाने से लोगों में रोगों का शमन होगा। सम्वाहक के प्रभाव के कारण मेघों के घोर गर्जन, अल्प रूप में जल वर्षण, दुष्टों पर विजय, धार्मिक व्यक्तियों की हानि होने की संभावना, राजा को क्षोभ तथा लोभ बढ़ेगा। पालक के प्रभाव के कारण राजा प्रसन्न, लोक पालक तथा दान दक्षिणा युक्त होंगे। मेघाधिप के प्रभाव के कारण पर्यटन स्थल प्रभावित होंगे, अग्नि का प्रकोप बढ़ेगा, अपराध में वृद्धि, वायु वेग अतिवृष्टि; अनावृष्टि के कारण कृषि कार्य प्रभावित होंगे, व्यापारिक कार्य तथा व्यापारियों में क्षोभ, आकाशीय उपद्रवों में वृद्धि, वर्ष में यदा कदा चार चार ग्रहों के योग के कारण समय समय पर प्राकृतिक उत्पात, भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, हिमपात तूफान, भूस्खलन, संक्रामक रोग, अग्नि कोप विद्युत, अनैतिक कृत्य अंतर्विरोधादि कार्यों में वृद्धि होगी कृषि कार्यों में अनेक प्रकार के बाधाओं के बावजूद लाभ की संभावना होगी स इस वर्ष ज्ञान तथा विज्ञान के क्षेत्र में प्रचार प्रसार में वृद्धि होगी स ग्रीष्म कालीन कृषि में साधारण हानि के बावजूद उत्पादन संतोष जनक रहेगा स रोग तथा कीटों में वृद्धि होगी

### मासफल

**श्रावण मास का फल:-** इस महीने में पांच शुक्रवार – “प्रजा वृद्धिस्तु भार्गवे” तथा पाँच शनिवार – “दुर्भिक्षं पञ्च मंदेषु” तथा कर्क संक्रांति मुहूर्त – उ० हं जिसके कारण खाद्य पादार्थों में सस्ती, दुग्धादि उत्पादन में वृद्धि, अतिवृष्टि से बाढ़ की स्थिति तथा कृषक वर्ग को हानि होने की संभावना, अर्थ व्यवस्था में मंदी, पर्वतीय क्षेत्रों में भूस्खलन तथा भूकंप से क्षति, सुरक्षा संबंधी व्यय में वृद्धि, सांप्रदायिक तनाव में वृद्धि, धर्माचार्यों में मतभेद, चक्रवाती वर्षा से हानि, धातु पादार्थों के भाव में तेजी रहेगी ।

**भाद्र मास का फल:-** इस माह में पाँच रविवार – “पञ्चार्क वासरे रोगाः” सिंह संक्रांति मुहूर्त ४५ तथा चंद्र दर्शन मुहूर्त के विचार से खाद्य पदार्थों के भाव में सामान्य वृद्धि, अतिवृष्टि तथा अनावृष्टि के कारण कृषि कार्य की हानि होने की संभावना रहेगी। भूस्खलन से पर्वतीय क्षेत्र प्रभावित होंगे। रोग, चोरोपद्रव में वृद्धि के कारण सामान्य जन प्रभावित होंगे। राजनैतिक व्यक्तियों में आपसी तनाव से राजकीय कार्य प्रभावित होंगे, धातु के पदार्थों के भाव में ह्रास तथा वृद्धि से असमंजस की स्थिति बनेगी। गृह निर्माण संबंधी वस्तुओं के भाव में वृद्धि होने की संभावना रहेगी।

**अश्विन मास का फल:-** इस मास में पांच सोमवार – “चंद्रे बहु जलं तोयं तृणानां बहुलोदयः” तथा पांच मंगलवार – “पञ्च भौमे भयं गहत्” कन्या संक्रांति मुहूर्त –उ० तथा चंद्र दर्शन मुहूर्तों के आलोक में भारतीय जनमानस में अशांति, विदेशी जन में भय, तथा जनांदोलन की स्थिति रहेगी। धातु के पदार्थों में प्रारंभ में मंदी तथा बाद में महर्घता की स्थिति बनेगी। रुई, सूत, तथा कपास के भाव में वृद्धि रहेगी। खाद्य पदार्थों के भाव में वृद्धि, जल तथा वायु वेग युक्त वर्षा से कृषि कार्य प्रभावित होंगे। उग्रवादी तत्व में सक्रियता बढ़ेगी। प्राकृतिक प्रकोप की संभावना, आकाशीय उपद्रव में वृद्धि होंगे।

**कार्तिक मास का फल:-** इस महीने में पांच बुधवार –“बुधे रसक्षयो भूम्यां” कन्या संक्रांति मुहूर्त- उ० एवं चंद्र दर्शन मुहूर्त विचार से खाद्य पदार्थ के भाव में सौम्यता रहेगी, सीमा क्षेत्र अशांत रहेगा, प्राकृतिक आपदा, भूस्खलन से क्षति की संभावना मसाले के मूल्य वृद्धि से गृहणियौ प्रभावित होगी, दुग्धादि पदार्थों के भाव में वृद्धि होगी, सामान्य वर्षा की संभावना, विधर्मियों की गतिविधि से सामान्य जन आक्रोशित रहेंगे। जातीय संघर्ष तथा राजनैतिक षड्यंत्रकारी अधिक सक्रिय रहेंगे, जिसके कारण जन आंदोलन की संभावना यत्र-तत्र होंगे। पर्वतीय क्षेत्र वायु वेग युक्त वर्षा से प्रभावित होंगे।



|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                        |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>॥ <b>अथ कर्मकाण्ड विमर्श ॥</b></p> <p><b>पंचोपचारपूजा-</b></p> <p>गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च।<br/> पंचोपचाराः कथिता देवनां प्रीतिहेतवः॥</p> <p><b>षोडशोपचारपूजा-</b></p> <p>आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा।<br/> मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च॥<br/> गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा॥</p> <p><b>पंचगव्यम्-</b></p> <p>गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्।<br/> पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्॥</p> <p><b>पंचामृतम्-</b></p> <p>शर्करा मधु दुग्ध च घृतं दधि समांशकम्।<br/> पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते॥</p> <p><b>पंचरत्नानि-</b></p> <p>वज्रमौक्तिकवैदूर्यपुष्परागेन्द्रनीलकम्।<br/> पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्॥</p> <p><b>पञ्चपल्लवाः-</b></p> <p>अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षक्षूतन्त्यग्रोधपल्लवाः।<br/> पञ्चपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः॥</p> <p><b>सप्तमृत्तिका-</b></p> <p>गजाश्वरथवल्मीकसंगमाद्भद्रगोकुलात्।<br/> राजद्वारप्रवेशाच्च मृदमानीय निःक्षिपेत्॥</p> <p><b>सर्वौषधिः-</b></p> <p>मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्।<br/> शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः॥<br/> सर्वौषधिनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्।</p> <p><b>सप्तधान्यम्-</b></p> <p>यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च।<br/> श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्॥</p> <p><b>हवने शाकल्यनिर्णयः-</b></p> <p>तिलार्धं तण्डुलं प्रोक्तं तण्डुलार्धं यवा स्मृता।<br/> यवाद्धं शर्करां दद्यात् सर्वार्धं च घृतं स्मृतम्॥</p> | <p><b>प्रदक्षिणा विचारः-</b></p> <p>एका चण्ड्या, रवेः सप्त, तिस्रः कार्याविनायके।<br/> हरेश्चतस्रः, कर्तव्याः शिवरस्यार्धप्रदक्षिणा॥<br/> (आह्निकसूत्र)</p> <p><b>नवग्रह-समिधा ( लकड़ी )</b></p> <p>अर्कः पलाशः खदिरस्वपत्वपामागोऽथ पिप्पलः।<br/> औदुम्बरशमीदूर्वाकुशाश्च समिधः क्रमात्॥<br/> अर्क ( मदार ), पलाश, खदिर ( खैर ), अपामार्ग ( चिड़चिड़ ), पीपल, औदुम्बर ( गूलर ), शमी, दूर्वा, और कुशा-ये नव ग्रहों की समिधाएँ कही गई हैं।</p> <p><b>महिष्यादि प्रसव दोषः-</b></p> <p>माघेबुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा।<br/> सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः॥</p> <p><b>बिल्वपत्र विचार-</b></p> <p>अर्पितान्यपि विल्वानि प्रक्षाल्यापि पुनःपुनः।<br/> शंकरायार्पणीयानि न नवानि यदि क्वचित्॥<br/> (स्कन्दपुराण) बिल्वपत्र न मिलने पर चढ़ाये हुये बिल्वपत्र को धोकर चढ़ाना चाहिए।</p> <p><b>दूर्वादि विचारः-</b></p> <p>दूर्वाःस्वाभिमुखग्राःस्युर्बिल्वपत्रमधोमुखम्।<br/> दूर्वाको अपनी ओर और बिल्वपत्र नीचे मुखकर चढ़ाना चाहिये।</p> <p><b>धूप विचारः-</b></p> <p>पूजनस्थल के बायें भाग में धुपदानी ( अगरबती ) स्थापित करना चाहिये।</p> <p><b>दीपविचारः-</b></p> <p>घी का दीपक दायीं ओर और तेल का दीपक बायीं ओर स्थापित करना चाहिय।</p> <p><b>जपस्थान विशेषः-</b></p> <p>शुचिस्थाने स्वगृहे जलाशये देवालये वा शूचिर्भूत्वा विधिवज्जपं कुर्यात्कारयेद्वा तदुक्तं स्मृतौ।<br/> गृहे त्वेकगुणं जाप्यं नद्यां तु द्विगुणं स्मृतम्॥<br/> गवां गोष्ठे दशगुणं अग्न्यागारे शताधिकम्॥<br/> तीर्थादिषु सहस्रं स्यादनन्तं विष्णुसन्निधौ॥</p> | <p><b>• प्रतिमा के स्थापन में दिशाका निर्णय</b> ( देवतामूर्तिपकाण ३।२४-२७ )</p> <p>पूर्वापरास्यं देवानां, मुखं नो दक्षिणोत्तरम्। ब्रह्मा विष्णुः शिवाकेन्द्रा गुहः पूर्वपराङ्मुखः॥</p> <p>शिवब्रह्मजिना विष्णुः सर्वाशाभिमुखाः शुभाः॥</p> <p>गणेशो भैरवश्चण्डी नकुलीशो ग्रहास्तथा। भूताद्या धनदाश्चैव दक्षिणास्याः शुभाः स्मृताः॥</p> <p>मातृणां सदनं कार्यं दक्षिणोत्तरदिङ्मुखम् हनुमान् वानरश्रेष्ठो नैर्ऋतारयो विदिङ्मुखः॥</p> <p><b>• मन्दिर के लिये प्रतिमा का परिमाण</b> ( बृत्संहिता ५७।४७ )</p> <p>सौम्या तु हस्तमात्रा वसुदा हस्तद्वयोच्छ्रिता प्रतिमा। क्षेमसुभिक्षाय भवेत् त्रि-चतुर्हस्तप्रमाण वा॥</p> <p>मन्दिर के लिये एक हाथकी प्रतिमा सौम्याताको प्रदान करनेवाली, दो हाथकी प्रतिमा धनको देनेवाली, तीन हाथकी प्रतिमा कल्याणको देनेवाली और चार हाथकी प्रतिमा सुभिक्षको देनेवाली होती है।</p> <p><b>• घर के लिये प्रतिमा का परिमाण</b> ( भविष्यपुराण )</p> <p>अंगुष्ठपर्वादारभ्य वितस्तिर्यावदेव तु। गृहेषु प्रतिमा कार्या नाधिका शस्यते बुधैः॥</p> <p>अंगुष्ठ पर्वसे लेकर वितस्ति(बिता) परिमाणतक की प्रतिमा घरों में रखनी चाहिये, इससे अधिक प्रमाण की प्रतिमा विद्वानों ने अप्रशस्त कही है।</p> <p><b>• घर में प्रतिमा रखने का विचार-</b></p> <p>गृहे लिंगद्वयं नार्च्यं शालग्रामद्वयं तथा। द्वे चक्रे द्वारकायास्तु नार्च्यं सूर्यद्वयं तथा॥</p> <p>शक्तित्रयं तथा नार्च्यं गणेशत्रयमेव च। द्वौ शङ्खौ नार्चयेच्चैव भग्ना च प्रतिमा तथा॥</p> <p>नार्च्येच्च तथा मत्स्यकूर्मादिदशकं तथा। गृहेऽग्निदग्धा भग्नाश्च नार्च्याः पूज्या वसुधरे॥</p> <p>एतासां पूजनान्नित्यमुद्वेगं प्राप्नुयाद् गृही। घर में दो लिंग, दो शालिग्राम, दो द्वारिकाचक्र, दो सूर्य, तीन शक्ति, तीन गणेश, दो शंख, खण्डित प्रतिमा और मत्स्य, कूर्म आदि दशो अवतारों की एकसाथ प्रतिमाओं का तथा अग्निसे दग्ध ( जली ) एवं भग्न(खण्डित) मूर्ति का पूजन नहीं करना चाहिये। इस प्रकार की मूर्तियों के पूजन करने से गृहस्थ नित्य ही उद्वेग(संकट) को प्राप्त होता है।</p> <p><b>• घर में शालिग्राम रखने का विचारः-</b> ( पद्मपुराण )</p> <p>शालग्रामः समाः पूज्याःसमेशु द्वितीयं न हि। विषमा नैव पूज्यास्तु विषमेष्वेक एव हि॥</p> <p>शालग्रामशिला भग्ना पूजनीय सचक्रका। खण्डिता स्फुटिता वापि शालग्रामशिलाशुभा॥</p> <p>शालिग्राम भगवान का सम चार छः आदि रूप से पूजन करना चाहिये। समरूप में भी दो शालिग्राम की पूजा नहीं करनी चाहिये। विषम रूप में एक शालिग्राम का ही पूजन करना चाहिये(तीन शालिग्राम आदि का पूजन नहीं करना चाहिये)।</p> <p><b>खण्डित मूर्ति का विचार</b></p> <p>१ खण्डित मूर्ति यदि काष्ठ की हो तो उसे अग्नि में समर्पित कर दें। २. यदि पत्थर की हो तो जल में प्रवाह करें और यदि रत्न या धातु की हो तो उसे आगाध जल में डुबो देना चाहिये। जो मूर्ति खण्डित हो गई हो उन खण्डित अंग को वस्त्र आदि से ढककर मूर्ति को सवारी में रखें। तत्पश्चात् उसे गाजे बाजे के साथ किसी शुद्ध जल वाले जलाशय तक ले जाकर जल में डुबो दें। जिस परिमाण की मूर्ति खण्डित हुई हो उसी परिमाण की दूसरी मूर्ति तैयार करके पहली मूर्ति वाले खाली स्थान पर यथा विधि प्रतिष्ठा करनी चाहिये।</p> | <p><b>• यज्ञ में दशदान का विवरण-</b></p> <p>गो-भू-तिल-हिरण्यान्य-वासो-धान्य-गुडानि च। रौप्यं लवणमित्येवं दशदानं प्रकीर्तितम्॥</p> <p>गौ, भूमि, तिल, सुवर्ण, घृत, वस्त्र, धान, गुड़, चाँदी और नमक-ये दश वस्तु दान के लिये कही गई हैं।</p> <p><b>• गोदान का महत्त्व-</b></p> <p>गोप्रदानं तारयते सप्त पूर्वान् परांस्तथा। यथाकथञ्चिद्दत्त्वा गां धेनुं वाँधेनुमेव वा।</p> <p>अरोगामपरिक्लिष्टां दाता स्वर्गे महीयते॥</p> <p>गोदान से सात पीढ़ी के पूर्वजों तथा सीत पीढ़ी के आगे होने वाले वंशजो का निस्तार करती है।</p> <p>( बृहस्पति ) <b>भूमिदान का महत्त्व</b></p> <p>षष्टिं वर्षसहस्राणि स्वर्गे वसति भूमिदः। उच्छेत्ता चानुमन्ता च तावन्ति नरके वसेत्॥</p> <p>यात्किञ्चित्कुरुते पापं जन्मप्रभृति मानवः अपि गोचर्ममात्रेण भुमिदानेन शुद्ध्यति॥</p> <p>भूमिदान करनेवाला पुरुष साठ हजार वर्षों तक स्वर्ग में निवास करता है और जो दी हुई भूमि हरण करता है या हरण करने का सलाह देता है, वह उतने ही वर्ष नरक में रहता है। मनुष्य जन्म से लेकर जो कुछ भी पाप करता है उसकी निवृत्ति के लिये यदि वह गायके चामके बराबर भी भूमिदान करे, तो वह शुद्ध हो जाता है।</p> <p><b>• अग्निको प्रज्वलित करने का विचारः</b> ( देवीभागवत ११।२२५-६ )</p> <p>न पाणिना न शूर्पेण न च मेध्याजिनादिभिः। मुखोपधमेदग्निं मुखादेव व्यजायत॥</p> <p>पटकेन भवेद् व्याधिः शूर्पेण धननाशनम् पाणिना मृत्युमाप्नोति कर्मसिद्धिर्मुखेन तु॥</p> <p>यज्ञाग्नि को न तो हाथसे दहकावे, न सूपसे और न पवित्र मृगचर्म आदि से ( आदि पदसे वस्त्र का ग्रहण है )। मुखसे ही यज्ञाग्निको धौंके, क्योंकि वह मुखसे उत्पन्न हुआ है। वस्त्र ( चर्म आदि ) से अग्निको धौंकने पर व्याधि(रोग) होती है, सूपसे धौंकने पर धन-नाश होता है, हाथसे धौंकने पर मरण होता है, किन्तु मुखसे धौंकने पर कर्मसिद्धि होती है।</p> <p><b>• विधिहीन अग्नि में हवन करने से हानि</b> ( बायुपु ७५।६२ )</p> <p>अप्रबद्धे सधूमे च जुहुयाद्यो हुताशने। यजमानो भवेदन्धः सोऽपुत्र इति नः श्रुतिः॥</p> <p>जो यजमान अग्निके ठीक-ठीक न जलने पर और धूमके रहते हुए अग्नि में हवन करता है, वह अन्धा और पुत्रहीन होता है।</p> <p><b>• पूर्णहुति खड़े होकर ही करना चाहिये</b></p> <p>मूर्धानं दिवमन्त्रेण संस्रुवेण च धारयेत्। दद्यादुत्थाय पूर्णां तु नोपविश्यकदाचन ( अग्निपु )</p> <p>मूर्धानंदिवः०, ( शु.य. ७।२४ ) इस मन्त्र के द्वारा सुवसे घृतकी धाराको खड़े होकर पूर्णाहुति करना चाहिये, बैठकर नहीं।</p> <p><b>• कर्म-विशेष में अग्नि के भिन्न-भिन्न नामः-</b></p> <p>प्रत्येक कर्म लिये अग्नि के अलग अलग नाम हैं। अतः जिस कर्म के लिये जिस अग्नि का आचर्यो ने नाम-निर्देश किया है, उसी अग्नि का सर्वाधि आवाहन एवं स्थापन कर हवन करना चाहिये- गर्भाधानमें- <b>भरत</b>, पुंसवनसंस्कारमें- <b>वर</b>, सीमन्तोन्नयन संस्कार</p> | <p>में- <b>मंगल</b>, जातकर्ममें-<b>स्वभू</b> और नामकर्म में <b>बल</b>, अन्नप्राशन संस्कार में-<b>अंगिरा</b>, चूड़ाकरण में <b>समुद्रभव</b>, उपयन में <b>जय</b>, गोदान अर्थात् समावर्तन में <b>रुद्र</b>, विवाह में <b>संयुग</b> अग्नि कहा गया है। अग्निहोत्र में <b>व्यालिक</b>, गृहकर्म में <b>भव</b> और पितृकर्म में <b>विश्वदेव</b>, उदरकी अग्निका नाम <b>अनल</b> है, मृत(शव) का भक्षण करने में अग्निका नाम <b>कल्मष</b> है। महाहोम में <b>वह्निका</b>, जलमें प्रवाह करने में अग्निका नाम <b>जल</b> है। पूर्णिमा के होम में <b>शशांक</b>, प्रलयमें अग्निका नाम <b>संवर्तक</b> है। काठसे उत्पन्न अग्निका नाम <b>घोर</b> है। वाँसों से उठी अग्निका नाम <b>परान्त</b> है। समुद्रमें रहनेवाली अग्नि <b>वडवाग्नि</b> है। पाक (अन्नपाक) करनेमें <b>दक्ष</b>, वसोर्धारा में जिसमें हवन किया जाता है उस अग्निका नाम <b>निधीश</b> है। धूपसे निकली अग्निका नाम <b>कामदेव</b> है। धान आदिके तुष(भूषी) की अग्निका नाम <b>कामहा</b> है। राथ्यू(चत्वर चौराहो) में स्थित अग्निका नाम <b>कामहा</b> है। क्षुधा उत्पन्न करनेवाली अग्निका नाम <b>बिभत्सु</b> है, राजा के घरमें उत्पन्न अग्नि का नाम <b>विजय</b> है। वृक्षोंसे उत्पन्न अग्निका नाम <b>धूम्र</b> है। दीपक में स्थित अग्नि का नाम <b>कृष्णपथ</b> है। हेमन्त आदि की अग्नि का नाम <b>वाद्य</b> है। मातृ मन्दिर से उत्पन्न अग्निका नाम <b>अजित</b> है। म्लेछ लोगों में जो अग्नि रहती है उसका नाम <b>शंकर</b> है। ईंटों की भट्टी की अग्नि नाम <b>संघ</b> है। प्रायश्चित्त में अथवा व्रत खण्डित होने पर <b>शुद्धि</b> नामक अग्नि और शुक्र के आधान में अर्थात् वीर्याधान में <b>जय</b> नामक अग्नि जानना चाहिये। ( <b>देवीपुराण १२३</b> )</p> <p><b>• गुरु-शुक्र के अस्तादि में त्याज्य कर्म-</b>( मु.चि.शुभाषुभ ४६,४७ श्लो )</p> <p>जब गुरु-शुक्र, वृद्ध अस्त और बाल हों तथा क्षय मास तथा अधिक मास में बावली, बगीचा, तलाब, कुआँ, मकान इनका आरंभ और प्रतिष्ठा व्रत का आरंभ और उद्यापन, वधु प्रवेश, महादान, सोमयज्ञ, अष्टका श्राद्ध, गोदान ( ब्रह्मचारी का केशान्त संस्कार ), नवान्न, जलशाला प्रथम श्रावणी कर्म वेद व्रत नील वृषोत्सर्ग अतिपन संस्कार ( बालकों का जातकर्मादि संस्कार जो समय पर नहीं हुआ है ), देवप्रतिष्ठा, गुरु से दीक्षा, यज्ञोपवीत, विवाह, मुण्डन प्रथम बार तीर्थ दर्शन, संन्यास, अग्निहोत्र, राज्याभिषेक की यात्रा चतुर्मास यज्ञा समावर्तन कर्णवेध और किसी दिव्यान्तरिक्ष वस्तु की परीक्षा नहीं करनी चाहिए।</p> <p><b>• रुद्राक्ष के एक-मुख आदिके नाम और उनका फल</b></p> <p>एकवक्त्रः शिवः साक्षाद् ब्रह्महत्यां व्यपोहति। अवध्यत्वं प्रतिस्रोतो बहिनस्तम्भं करोति च॥ द्विवक्त्रो हरगौरी स्याद् गोवधाद्यधनाशकृत्।.....( शिवरहस्य के अनुसार )</p> <p>‘एक मुखवाला रुद्राक्ष साक्षात् ‘शिव’ है, जो ब्रह्महत्याको दूर करता है और समस्त स्रोतोंको अवध्य तथा अग्नि को रोकता है। दो मुखवाला रुद्राक्ष ‘हरगौरी’ ( शिव. पार्वती ) है, जो गोहत्या आदि पापों को दूर करता है। तीन मुखवाला रुद्राक्ष ‘अग्निजन्मा’ है, जो पाप-समूहोंको दूर करता है। चार मुखवाला रुद्राक्ष ‘ब्रह्मा’ है, जो मनुष्य की हत्या के पाप को नष्ट करता है। पाँच मुखवाला रुद्राक्ष ‘गुह’ है, जो भ्रूण-हत्या के पाप को नष्ट करता है।</p> <p>सात मुखवाला रुद्राक्ष ‘अनन्त’ है, जो सुवर्णकी चोरीके पापको नष्ट करता है। आठ मुखवाला रुद्राक्ष ‘विनायक’ है, जो समस्त प्रकार के असत्यांका नाश करता है। नौ मुखवाला रुद्राक्ष ‘भैरव’ है, जो शिवसायुज्य ( मोक्ष ) को देता है। दश मुखवाला रुद्राक्ष ‘विष्णु’ है, जो भूत एवं प्रेतके भयको हरण करता है। ग्यारह मुखवाला रुद्राक्ष ‘रुद्र’ है, जो अनेक प्रकारके यज्ञों के फलको देता है। बारह मुखवाला रुद्राक्ष ‘काम’ है, जो समस्त कर्मों में, सफलता देता है और चौदह मुखवाला रुद्राक्ष ‘श्रीकण्ठ’ है, जो वंशका उद्धार करता है।</p> |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|



## ॥ अथ यज्ञ विमर्शः ॥

### • अनाधिकारी को यज्ञ करानेसे हानि (मनुस्मृति ३।६५)

अयाज्ययाजनैश्चैव नास्तिक्येन च कर्मणाम्। कुलान्याशु विनश्यन्ति यानि हीनानि मन्त्रतः॥  
जिनको यज्ञ करानेका अधिकार अथवा योग्यता नहीं है, उसके द्वारा यज्ञ कराने से, कर्मों की नास्तिकता से और वेदमन्त्रोंसे रहित होने से कुल शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं।

### • पतित को यज्ञ कराने से हानि (महाभारत, अनुशा० १११।४६-५१)

पतितं याजयित्वा कु कृमियोनौ प्रजायते। तत्र जीवित वर्षाणि दश पक्रच वर्षाणि च भारत॥  
कृमिभावाद् विमुक्तस्तु ततो जायति गर्दभः। गर्दभः पञ्च वर्षाणि पक्रच वर्षाणि सूकरः॥  
कुक्कुटः पञ्च वर्षाणि पञ्च वर्षाणि जम्बुकः श्वा वर्षमेकं भवति ततो जायति मानवः॥  
पतित पुरुष को यज्ञ करानेवाला ब्राह्मण कीड़ा बनकर उत्पन्न होता है और हे भरतवंशी राजन्! वह पन्द्रह वर्ष तक कीड़े की योनिको भोगता है। कीड़ेकी योनिसे छुटकर वह गधा होता है, फिर वह पाँच वर्षमें गधेकी योनिसे छुटकर सूअर होकर उत्पन्न होता है और पाँच वर्ष तक मुर्गेकी, गीदड़की तथा एक वर्ष तक कुत्ते की योनिको भोग कर फिर वह मनुष्य योनि में जन्म लेता है।

### • शूद्र को यज्ञ कराने से हानि (पाराशरस्मृति १३।३६)

दक्षिणार्थे तु यो विप्रः शूद्रस्य जुहुयाद्ध्रुविः। ब्राह्मणस्तु भवेच्छूद्रः शूद्रस्तु ब्राह्मणो भवेत्॥  
जो ब्राह्मण दक्षिणा के लोभ से शूद्रको यज्ञ कराता है, वह शूद्र हो जाता है।

### • यज्ञ में ब्राह्मणों के पूजन से ही कर्म की पूर्णता होती है:- (यज्ञ-मीमांसा २०४-०५७)

ब्राह्मणानां नित्यपूजा कार्या वित्तानुसारतः। यावद् विप्रो न पून्यन्ते न तावत् पूर्णतां व्रजेत्॥  
पूजितेषु तु विप्रेषु सर्वं सम्प्रणितां व्रजेत् प्रतिमा तेऽधिकं पुण्य ब्राह्मणस्य तु पूजने॥  
यज्ञ में प्रतिदिन अपनी शक्तिके अनुसार ब्राह्मणों का पूजन करना चाहिये। क्योंकि जब तक ब्राह्मणों का पूजन नहीं किया जाता, तब तक यज्ञ पूर्ण नहीं होता। देवताओं से भी अधिक यज्ञकें ब्राह्मणों के पूजन करने का महत्त्व है, अतः ब्राह्मणों का पूजन होने पर ही यजमान के समस्त कार्य परिपूर्ण होते हैं।

### • यज्ञादि में धर्मपत्नी की आवश्यकता:-

पत्नी धर्मार्थकामनां कारणं प्रवरं स्मृतम्। अपत्नीको नरो भूप कर्मयोग्यो न जायते।  
ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि वैश्यः शूद्रोऽपि वा नरः॥ पत्नी धर्म, अर्थ तथा काम की सिद्धिका श्रेष्ठ साधन है। कोई भी पत्नी-रहित पुरुष चाहे वह ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो, वैश्य हो अथवा शूद्र हो- धार्मिक कर्म करने के योग्य नहीं हो सकता। “अयज्ञो वा एष योऽपत्नीकः।” (तैत्तिरीब्राह्मण २।२।२) जो पुरुष पत्नी से रहित हैं वह यज्ञ के अयोग्य है। एकचक्रो रथो यद्वदेकपक्षो यथा खगः अभार्योऽपि नरस्तद्वदयोग्यः सर्वकर्मसु। (भविष्यपुरा.)- जिस प्रकार एक पहियेवाला रथ और एक पाँखवाला पक्षी चलने या उड़ने में असमर्थ होता है उसी प्रकार भार्यारहित पुरुष समस्त कर्मों में अयोग्य हैं।

### • पत्नी के अनुपस्थित में:- (वाधूलस्मृति)

यस्य भार्या विदूरस्था पतिता वा रजस्वला। अनिष्टा प्रतिकूला वा तस्याः प्रतिनिधौ क्रिया॥  
अन्यां कुशमयीं पत्नीं कृत्वा तु प्रतिरूपिकाम्। क्वचिच्छरमयीं पत्नीं नित्यकर्मणि कारयेत्।  
जिनकी पत्नी दूरी हो, पतित हो, रजस्वला हो, अनिष्ट करनेवाली हो अथवा अनुकूल न हो, ऐसी स्थिति में भी अपनी पत्नी के प्रतिनिधिरूप में कुशा की पत्नी का निर्माण कर नित्यकर्म करें।

### • कर्म विशेष में पति के समीप पत्नी के बैठने का निर्णय

सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणः शुभा।  
व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी-सहभोजने। व्रते दाने मखे श्राद्ध पत्नी तिष्ठति दक्षिणे॥  
वामे सिन्दुरदाने च वामे चैव द्विरागमे। वामेऽशनैक शय्यायां भवेज्जाया प्रियार्थिनी॥  
आशीर्वादेऽभिषेके च पादप्रक्षालने तथा शयने भोजने चैव पत्नी तूत्तरतो भवेत्॥  
समस्त धार्मिक कार्यों में पत्नी के लिये अपने पति के दक्षिण भाग में बैठना शुभ कहा गया है। व्रतबन्ध में विवाह में, चतुर्थी कर्म में, सहभोजन में, दान में, यज्ञ में, और श्राद्ध में पत्नी को पति के दक्षिण भाग में बैठना चाहिये। विवाह के समय सिन्दुरदान में, द्विरागमन में, पति के साथ बैठकर भोजन करते समय और पति के साथ शयन करते समय पत्नी को सर्वदा अपने पति के वाम भाग में ही रहना चाहिये। ब्राह्मणों द्वारा आशीर्वाद प्राप्त करते समय, ब्राह्मणों के पाद-पक्षालन के समय, अभिषेक के समय भी अपने पति से वामभाग में बैठना चाहिये।

### • स्त्री को पति की आज्ञा के बिना यज्ञादि करने का निषेध:- (मनुस्मृति ५।१५५)

नास्ति स्त्रीणां पृथज्ञो न व्रतं नाप्युपोषणम्। पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते॥  
स्त्रियों को पति की आज्ञा के वगैर स्वतन्त्ररूपेण यज्ञ, व्रत तथा उपवास करने का अधिकार नहीं है। स्त्री तो केवल पति-सेवारूपी यज्ञ के प्रभाव से ही स्वर्ग में आदर प्राप्त करती है।

### • यज्ञादि में संकल्प की आवश्यकता- (भविष्यपुराण में)

संकल्पेन विना कर्म यत्किञ्चित्कुरुते नरः। फलं चाप्यल्पकं तस्य धर्मस्यार्द्धक्षयो भवेत्॥  
मनुष्य संकल्प के बिना जो कुछ भी कर्म करता है उसका फल बहुत थोड़ा होता है। उसके आधे पुण्य का क्षय हो जात है। संकल्पमूलः कामो वै यज्ञाः संकल्पसम्भवाः। व्रतानि यमधर्माश्च सर्वे संकल्पजाः स्मृताः॥ मनु २।३।

### • यज्ञादि में न्यास की आवश्यकता (शारदातिलक टीका ४ पटल)

पूजाजापार्चना होमाः सिद्धमन्त्रकृता अपि। अङ्गविन्यासविधुरा न दास्यन्ति फलान्यापि॥  
न्यासं विना जप विना जपं प्राहुरासुरं विफलं बुधाः न्यासात्तदात्मको भूत्वा तु तं यजेत्॥  
सिद्ध मन्त्र करने पर भी पूजन, जप, अर्चन तथा होकर्म अंगन्यासके बिना फलप्रद नहीं होते। न्यासके बिना किया हुआ जप आसुरी कहाता है, उसका कुछ फल नहीं होता। इसलिये न्यासादि कर्मद्वारा देवस्वरूप होकर देवार्चन करना चाहिये- देवो भूत्वा देवान् यजेत् न्यासहीनं तु यत्कर्म गृहणत्यर्द्धं तु राक्षसाः। न्यासके बिना जो कर्म किया जाता है, उसका आधा फल राक्षस ले लेते हैं।

### • यज्ञादि में एक वस्त्र धारण निषेध

स्नानं दानं जपं होमं स्वाध्यायं पितृतर्पणम्। नैकवस्त्रो द्विजः कुर्याच्छ्राद्धभोजनसत्क्रिया॥ (योगियाज्ञवल्क्यः)  
एकवस्त्रो न भुञ्जीत श्रौते स्मार्ते च कर्मणि। न कुर्याद्देवकार्याणि दानं होमं जपं तथा। (गौतमः)

### • प्रशस्त आसन

शमी काश्मरी शल्लः कदंबो वरणस्तथा। पञ्चासनानि शस्तानि श्राद्धे देवार्चने तथा॥  
कौशेयं कम्बलं चैव अजिनं पट्टमेव च। दारुजं तालपत्रं वा आसनं परिकल्पयेत्॥  
शमी, गम्भार, शोणवृक्ष, कदंब और खैर, रेश, कंबल, मृगचर्म, काष्ठ और तालपत्र इनका आसन श्राद्ध तथा देवार्चन में प्रशस्त कहे गये हैं।

### • आसन के विभिन्न फल

कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धि-मोक्षश्रीव्याघ्रचर्मण। वंशाजिने व्याधिनाशः, कम्बले दुःखमोचनम्॥  
अभिचारे नीलवर्णे रक्तं वश्यादिकर्मणि। शान्तिके कम्बलः प्रोक्तः सर्वेष्टं चित्रकम्बलम्॥  
वंशासने तु दारिद्र्यं पाषाणे व्याधिसम्भवः धरण्यां दुःखसमभूतिर्दौर्भाग्यं छिद्रदारुजे।  
तृणे धनयशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः॥ काले मृगचर्म पर ज्ञानसिद्धि, व्याघ्र चर्म पर मुक्ति, वंशवल्कल पर व्याधि से मुक्ति, कम्बल पर दुःखनिवृत्ति। अभिचार कर्म में(मारण, मोहन, उच्चाटन आदि में) नीला आसन, किसी को वश में करने के लिए लाल आसन पर, ग्रहपीड़ा, महामारी आदिकी शान्ति के निमित्त किये जा रहे कर्म में कम्बल का आसन कहा गया है। चित्र कम्बल समस्त कार्यों के लिये कहा गया है। बांस के आसन पर दरिद्रता, पत्थर पर व्याधि, भूमि पर दुःख, छिद्रवाले काठ पर दौर्भाग्य, तृणासन पर धन और यश का नाश तथा पल्लवासन पर चित्त-भ्रम होता है।

### • पूजन के समय प्रौढपाद ( जाँघ पर पैर रखकर ) नहीं बैठना चाहिए।

स्नानं दानं जपं होमं भोजनं देवतार्चनम्। प्रौढपादो न कुर्वीत स्वाध्यायं पितृतर्पणम्॥  
स्नान, दान, जप, होम, भोजन, देवपूजन, वेदका स्वाध्याय और पितृतर्पण में जाँघ पर पैर रखकर नहीं बैठना चाहिये। ( अत्रिसंहिता ३१८ )

### • दक्षिणा देने की आवश्यकता

यज्ञो दक्षिणा सार्धे पुत्रेण च फलेन च। कर्मिणा फलदाता चेत्येवं वेदविदो विदुः॥  
देवीभागवत् ६।४५।५०  
कृत्वा कर्म च तस्यैव तूर्णं दद्याच्च दक्षिणाम्। तत्कर्म फलमाप्नोति वेदैरुक्तमिदं मुने॥  
कर्ता कर्मणि पूर्णोऽपि तत्क्षणात् यदि दक्षिणाम्। न दद्यात् ब्राह्मणेभ्यश्च दैवेनाज्ञानातोऽथवा॥  
मुहूर्ते समतीते च द्विगुणा सा भवेद् ध्रुवम् एकारत्रे व्यतीते तु भवेद्रसगुणा च सा। (ब्रह्मवैवर्त प्र.ख. ४२।५४)  
दक्षिणा से युक्त पुत्ररूप फलके साथ यजमानों को फल प्रदान करता है। तथा कर्म करारकर ब्राह्मणों को शीघ्र दक्षिणा देने से यजमान को तत्काल फलकी प्राप्ति होती है। यज्ञादि कर्म के पूर्ण हो जाने पर भी दैववश अथवा अज्ञानवश ब्राह्मणों को दक्षिणा न देने से प्रतिक्षण वह दक्षिणा द्विगुणित हो जाती है। एक रात बीज जाने पर वह छः गुनी हो जाती है।

### • तिलक ( चन्दन ) धारण की आवश्यकता-

स्नानं सन्ध्या पञ्चयज्ञान् पैत्र्यं होमादिकर्म यः। विना तिलकदर्भाभ्यां कुर्यात्तन्निष्फलं भवेत्॥  
जो स्नान, सन्ध्या, पञ्चमहायज्ञ, तर्पण, श्राद्ध आदि पितृ कर्म तथा होम आदि कार्य तिलक और दर्भ(कुश) के बिना करता है, उसका फल निष्फल जाता है।

### • यज्ञादि में धौत वस्त्र पहनना चाहिये:- वशिष्ठ

जपहोमोपचारेषु धौतवस्त्रपरो भवेत्। अलंकृत शुचिर्मौनी श्राद्धादौ विजितेन्द्रियः॥  
जप, होम आदि शुभ कृत्यों में धोती पहन कर ही कर्म करना चाहिये और श्राद्ध आदि कृत्य में पवित्र वस्त्र को धारण कर तथा जितेन्द्रिय एवं मौनी बनकर श्रद्धापूर्वक कर्म करना चाहिये।

### • कुशके पवित्री( अंगुठी ) की महत्ता:-

जपहोमहरा ह्येते असुरा दैत्यरूपिणः। पवित्रकृत-हस्तस्य विद्रवन्ति दिशो दश॥  
यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा। त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य ब्राह्मणस्य पवित्रकम्॥  
जप और होम के फलकी हरण करनेवाले दैत्यरूपी असुर हाथमें पवित्र धारण किये हुए ब्राह्मण को देखकर दशों दिशओं में भाग जाते हैं। जैसे इन्द्रका वज्र, विष्णुका चक्र और शिवका त्रिशूल शस्त्र कहा गया है, वैसे ही ब्राह्मण का शस्त्र पवित्री कहा गया है।

### • पवित्री में कुश की संख्या विचार-

चतुर्भिर्दर्भपिञ्जलैर्ब्राह्मणस्य पवित्रकम्। एकैकन्यूनमुद्दिष्टं वर्ण वर्णे यथाक्रमम्॥  
सर्वेषां वा भवेद् द्वाभ्यां पवित्रं ग्रथितं नवम्। चतुर्भिः शान्तिके कार्यं पौष्टिके पञ्चभिस्तथा॥  
पैतृके तु त्रिदर्भाश्च द्वौ दर्भौ नित्यकर्मणि॥ ( मार्कण्डेयः )  
अर्थात् ब्राह्मण के लिये चार कुशाओं का पवित्री धारण करने के लिये कहा है। क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्रके लिये क्रमसे एक-एक कुश कम कर देना चाहिये। अथवा सभी वर्णके लिये नूतन और ग्रन्थियुत दो कुशाओं का पवित्री होना चाहिए। शान्ति कर्म में चार कुशाओं का, पौष्टिक कर्म में पाँच कुशाओं का, पितृकर्म में तीन कुशाओं का और नित्यकर्म में दो कुशाओं का पवित्री बनाना चाहिये।

### • जप करते समय हाथ से माला गिरने या टूट जाने पर प्रायश्चित

माला यदि पतेद्धस्तातत्तथा चैव विनश्यति। सहस्रं तत्र सज्जप्यं ब्राह्मणान् भोजयेत्ततः॥  
भोजनं ब्राह्मणानां तु सर्वानिष्टस्य नाशनम्। गायत्रीं वा जपेत्साष्टशतं भक्त्या समाहितः॥  
ततोऽपरां नवां मालां तज्जातीयां वरानने। गृहणीयात् कृते चैवं न विधैरभिभूयते॥  
यदि जप करते समय माला हाथ से गिर जाय या टूट जाय तो एक हजार बार मन्त्र का जप करे और ब्राह्मणभोजन करावे। ब्राह्मण को भोजन कराना सकल अरिष्टों का विनाशक है। अथवा एकाग्र होकर भक्ति से १०८ बार गायत्री का जप करें। तदनन्तर दूसरी वैसी ही नई माला ग्रहण करें। ऐसा करने से पुरुष को विघ्न क्लेश नहीं होते।

### • जप गणनार्थ ( गणना हेतु ) विहित वस्तु-

लाक्षा कृसीदं ( रक्तचन्दनम् ) सिन्दूरं गोमयं च करीषकम् एभिर्निर्णय गुटिकां जपसंख्या तु कारयेत्। (यामल)  
नाक्षतेर्हस्तपर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकैः। न चन्दनैर्मृत्तिकया च जपसंख्यां तु कारयेत्॥  
लाख, लालचन्दन, कमलगट्टा, सिन्दूर, गोबर के गुटिका बनाकर जपकी गणना करनी चाहिए। अक्षत् से, हाथ के पर्व से, धान्य से, पुष्प से, चन्दन से और मृत्तिका से जपकी गणना न करे।

### • यज्ञादि में यज्ञोपवीत धारण की आवश्यकता-

द्विजको सर्वदा यज्ञोपवीती होकर और शिखा बाँधकर रहना चाहिये। शिखा और यज्ञोपवीत के बिना वह जो कुछ कर्म करता वह न किये हुए के सदृश ही होता है।

### • यज्ञ में जलयात्रा की आवश्यकता-

शान्तिकं पौष्टिकं वापि जलयात्रां विना बुधः। कुरुते यदि वा मोहात्कर्म तस्य च निष्फलम्॥  
तडागादिप्रतिष्ठासु देवतायतनादिषु। लक्षहोमे कोटिहोमेऽप्युतहोमे तथैव च॥  
व्रतोत्सर्गे महादाने यज्ञे वा वितते शुभे। जलयात्रां पुरा कृत्वा श्रेष्ठ कर्म समाचरेत्॥  
जो शान्तिक व पौष्टि यज्ञादि कर्म जलयात्रा के बिना करता है, तो उसका वह कर्म निष्फल जाता है। तडाग आदि की प्रतिष्ठा करनी हो, देवमन्दिर आदिकी स्थापना करनी हो, लक्षहोम, कोटिहोम तथा अयुत हवन करना हो, एकादशी आदि व्रत का उद्यापन करना हो, सुवर्णका दान तुलादान, भूमिदान आदि महादान करना हो एवं मंगलमय महायज्ञ करना हो, तो पहले जलयात्रा करके तदुपरान्त श्रेष्ठ शुभ कर्म का अनुष्ठान करना चाहिये। ( यज्ञमीमांसा४१३ )



**द्विरागमनमुहूर्तः-** अश्वि. रो. मृ. उत्तरा ३. पुन. पुष्य, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. शत. रे, **नक्षत्रेषु**, १।२।३।५।६।८।

१०।११।१२।१३।१५ **तिथिषु**, **शुक्लपक्षे ५ यावत्**। सू.चं.बु.वृ.शु. **वारेषु** मृत्युगादिरहितेषु, २।३।६।७।१२ लग्नेषुशुभयुतेषितेषु, शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते।
पापैः ३।६।११ पापैः ३।६।६६ स्थितैःशुभम्। विषमवर्षे सौरक्रमेण मार्गफाल्गुन वैशाखामासेषु, शुक्रबाल्यस्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम् प्रथमवर्षे न शुक्रविचारकार्यः। तृतीयादिविषमावर्षे शुक्र विचारो विधेयः। शुक्रान्धविहित (रे.अश्वि. रो. मृ.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रऽपि द्विरागमनम् शुभम् व्यतीते पञ्चमे वर्षे न. शुक्रविचारो न वा मुहूर्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि. शुभतिथिदिनक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमन शुभम्।

**नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्तः**

रो. मृ. उत्तरा ३. पुष्य, कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. शत. रे. नक्षत्रेषु, बु. वृ. शा. वारेषु, शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु, लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

**वधू-प्रवेश-मुहूर्तः-**

विवाहादिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पंचम-सप्तम-नवमदिने (आचारादन्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे, चैत्र-पौष-भाद्र-क्षयमास-मलमास- भिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्त। न अत्र शुक्रविचारः कालविचारो वा १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५। तिथिषु। चं.,गु.,शु.शं., वारेषु, मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि.,रो.मृ.,पु.,उत्तरा-३ह.,चि., स्वा.,अनु., मू.,श्र.,ध.,रे., नक्षत्रेषु २।३।५।६।७।८।९।११।१२। लग्नेषु। शुभैः ।१।२।५।७।१०।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः।

**यात्रा मुहूर्तः**

वामपृष्ठराहौ। मलमासक्षयमास सौरक्रमेण चैत्र,भाद्र,पौष, रहित मासेषु। **अ.मृ.,पु.,ह.,ज्ये.,अनु.,श्र.,रे.** नक्षत्रेषूत्तमः। **रो. पू.३, चि., स्वा., मू.,पूषा.,ध.** नक्षत्रेषु मध्यमः। मृत्युयोग, दग्धतिथि मासान्त-संक्रान्ति-मासादि प्रभृतिदोषरहिते। अमृतसिद्ध- सर्वार्थसिद्धादिशुभ योगेषु। अमाशुक्लप्रतिपच्च विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु। दिक्शूलरहितदिने १।२।३।५।६।७।८।१०।११ चन्द्रेषु। आवश्यकं ४।१२ चन्द्रेऽपि। द्विरागमनान्तरं पितृगृहगतायाः पुनः पतिगृहगमने दक्षिण-सम्मुख-कालौ त्याज्यौ। तदन्तरमावश्यकं केवलं सम्मुख-कालस्यत्याज्यः। दक्षिणकाले च सम्मुख चन्द्रवशेन-यात्राकार्यं

- सर्व दिगगमन नक्षत्राणि-** अश्विनी-मृगशिरा-पुष्य- श्रवणनक्षत्राणि सर्वदिगगमने शुभानि।

- दिशा शूल विचार-** सोमे शनिवारे च पूर्वस्यां, वृहस्पतिवारे दक्षिणस्यां, रवि शुक्र वासरे च पश्चिमायां, मंगल बुध वासरे च उत्तरस्यां दिशि दिक्शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम्।

**दिशा शूल-परिहारः-** रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृत-पय-गुड-तिल-दधि-यव-माणानं भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये गच्छेत।

**विदिक्( कोन ) शूल विचार-** शनौ पूर्वे, चन्द्रऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मंगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम्।

**कालशूलम्-** उषाकाले पूर्वस्यां,मध्याह्ने द्षिणस्यां, सायंकाले(गोधूल्यां)पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्,कालशूलदोषत्वात्।

**लग्न-चन्द्रयोर्वासः-** मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां,मिथिनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वासः। सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयोः यात्राशुभा। परं सर्वदिगगमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभ।

- द्वादशचन्द्रस्य विशेष-** अधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे। पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्ध विवादे चन्द्रो द्वादशगः शुभः॥

- चन्द्र विचारः-** जन्मनामग्रामादिराशितोऽभिष्ट दिनस्य चन्द्रं यावत् गणनीयम्। तत्र १।२।३।५।६।७।८।१०।११ संख्याकश्चन्द्र शुभ प्रदः मृत्यु प्रदः। ४ कलहदः।१२ हानकारकः। तत्र दुष्टे चन्द्रे तद् दोषशान्त्यर्थमामतण्डुशंख श्वेतवस्त्रादि दानं कार्यम्।

चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भ- कालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वम् उपनयनं कार्यम्।

- प्रदोषनिर्णयः-** यदा तृतीयायां प्रहरात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ट्यां सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निष्ठिम्।

- वर-वरण मुहूर्तः-** शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः वरवरणंशुभम्।

- वर वरण मन्त्र-** ओम् तस्मिन् कालेऽग्नि सान्निध्ये, स्नातः स्नातेहयरोगिणि अव्यंगे अपतिते क्लीवे(अमुक नाम्नीं)कन्यां पिता तुभ्यं प्रदास्यति।

- कन्या वरण मुहूर्तः-** शुभतिथि दिन लग्नेषु कृषिका पूर्वात्रय विवाहेषु च पुष्प फल वस्त्रादिभिः कन्यावरणंशुभम्।

● **विवाह-उपनयनादौ मण्डपादि निर्माण मुहूर्तः**
विवाहोपनयनादिशुभकर्मसु चन्द्रतारानुकूले दिने विवाहमुहूर्ते वैवाहिकमुपनयनादिमुहूर्ते चोपनयनादिकं सम्बद्धं मण्डपादि कार्यं विधेयम्।

**विवाहः मुहूर्तः**

मार्ग-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु सौरक्रमेण (देवोत्थानांत्परं हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, **सू. चं. बु. वृ. शु** वारेषु, **अश्वि. रो. मृ. म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. धन. रे.** नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन, लग्नेषु, शुभग्रहेषु १।४।५।७।८।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुरुर्वा शुक्रो १।४।५।७।८।१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठा कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहे न कार्यः ज्येष्ठ-कन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्, अवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्तवा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्योर्विवाहः शुभः।

- विवाहोपरान्त प्रथम नदी-तलावादि में स्नान-मुहूर्तः-** विवाह दिनात्षोडशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं । २।३।५।७।१०।१३ तिथिषु, चं.,बु.,गु, शु.दिनेषु, आर्द्रा, पुनः, पु. आश्ले., म.,पूफ.,उफा.,ह.,चि.,स्वा.,नक्षत्रेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, लग्नेषु शुभम्।

| ग्रहाः          | सूर्यः    | चन्द्रः     | गुरूः      |
|-----------------|-----------|-------------|------------|
| <b>शुभः</b>     | ३।६।१०।११ | ३।६।७।१०।११ | २।५।७।९।११ |
| <b>पुज्यः</b>   | १।२।५।७।९ | १।२।५।६     | १।३।६।१०   |
| <b>निन्द्यः</b> | ४।८।१२    | ४।८।१२      | ४।८।१२     |

एतद्वाशेर्लग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्ध, पापैः ३।६।११ गतैः शुभैः १।४।५।७।८।१० गतैः जनमराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने ४।६।८।१२ रहित चन्द्रे शुभम्।

**अक्षरारम्भमुहूर्तः**

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (वालो यदि क्षस्तदा तत्पूर्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वती लक्ष्मी-नवग्रह-कुलदेव- ग्रामदेवान् विधिवत् सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भौ विधेयः। अश्वि., आ., पुन., पु., ह., चि., स्वा., अनु., अभि., श्र., रे, नक्षत्रेषु २।३।५।६।१०।९९।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। चं., बु., वृ., शु., दिनेषु, वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, लग्नेषु तन्वांशं चोत्तमः। कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्ध गुरौ दशमे बुधे सप्तमे शुक्रे लग्ने ग्रहवलाद्वये शुभम्।

**विद्यारम्भमुहूर्तः**

उत्तरायणे गणेशं विष्णुं लक्ष्मीं सरस्वतीञ्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे संजाते सति सूर्यबुधगुरूशुक्रवारेषु २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि., मृ., आ., पुन., पु., आश्ले., ह., चि., स्वा., मू., पूर्वा., ३, श्र., ध., शत. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।८।१० गतैः पापैः ३।६।११ गतैः वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारम्भः शुभः।

**उपनयन ( व्रतबन्ध ) मुहूर्तः**

शुभ समये, उत्तरायणे माघादिषड्मासेषु सू. चं. बु. वृ. शु वारेषु (सामवेदीनां मंगलवारेऽपि) जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम् २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे पूर्वाह्ने च शुभम् मकरार्के पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्न मासानां द्वितीया, आषाढे १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि., रो., मृ., आ., पुष्य, आश्ले., पूर्वा३,उत्तरा३, ह.,चि., स्वाति, अनु, मू., श्र., ध., शत., रे. नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियोगादिषु अपराह्ने सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदिवित्रगः। सौम्याः केन्द्र त्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शीाः। लग्नेश-चन्द्र-शुक्र-गुरवः षष्ठगाः न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ। १।५।८ स्थाःपापा न शुभाः। ६।८।१२ गताःशुभाः न शुभं प्रदाः।३।६।११ गताः पापाः शुभदा पूर्णचन्द्रो वृष-कर्क-लग्न-गतः शुभो नान्यथाः। लग्नेऽर्कः शुभः।

**गुरुशुद्धि-** जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।८।११ स्थानगतः गुरु शुभः। ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः। १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्ध। रामाचार्यमते १।३।६।९० स्थान गतो गुरुः शान्त्या शुभः। ४।८।१२ स्थानगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडश वर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य

**शिशु-भूम्युपवेशन मुहूर्तः**

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पंचमे मासिक उतरा३, रो. मृ, ज्ये., अनु. अ., हस्त, पुष्य. अभिजित् नक्षत्रेषु रिक्तामारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृषसिंह वृश्चिक कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्।

**शिशु के भूमि पर बैठाने का मन्त्र-**

**रक्षेनं वसुधे देवि सदा सवर्गगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥**

अत्रैव शिशोरे वस्त्रं, शस्त्रं, लेखिनीं, पुस्तकं सुवर्णं रौप्यञ्च स्थाप्यम। तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति।

**शिशुदर्शन मुहूर्तः**

तृतीये मासे शुभ-तिथिदिन-नक्षत्रेषु पुष्य-फल-वस्त्र-द्रव्यादिनी शिशुदर्शनं शुभम्।

**नामकरण-मुहूर्तः**

विप्राणां ११, क्षत्रियाणां १३, वैश्यानां १६, शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम्। अथवा स्वा., पुन.,श्र.,ध., ह., अश्वि.,पु.,अभि.,उ.३,रो.मृ.,रे., चि., अनु, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं., बु., वृ., शु. दिनेषु पूर्वाह्ने शुभम्। मध्याह्ने मध्यमम् शुभलग्ने शुभैः १।४।५।७।८।१० स्थितैः पापैः ३।६।६६ स्थैः । ८।१२ गृहे शुद्ध चन्द्र २।३।५।८।१० स्थिते। लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम्।

**अन्नप्राशन - मुहूर्तः**

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु बालकानां षष्ठात्सममासेषु रो. उत्तरा.३, मृ., रे., चि., अनु, स्वा., पुन., श्र., शत., ह., अश्वि., पु., अभि नक्षत्रेषु। २।३।५।७।१०।१३।१५ तिथिषु चं.बु., वृ., शु., दिनेषु शुक्लपक्षे, पूर्वाह्ने, २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११ लग्नेषु जन्मलग्नराशयोरष्टमलग्नमंशञ्च रहितेषु। शभैः १।४।५।७।८।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ गतैः दशमस्थाने ग्रहरहिते शुभदृग्युतलग्ने, ४।६।८।१२ रहिते चन्द्र अन्नप्राशनं शुभम्।

**कर्णवेध-मुहूर्तः**

१।२।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लेपक्षे, कृष्णे ५ यावत्,चं.,बु., वृ.शु. दिनेषु जन्मतारां विहाय श्र., ध., पुन., ह., अश्वि, पु., अभि,मृ.,रे, चि., अनु. नक्षत्रेषु ६।७।८। मासे वा विषमवर्षे चैत्र-पौष-हरिशयन-रिक्ता-समवषाणिं त्यक्तवा, २।३।४ ।६।७।८।१२ लग्नेषु शुभैः १।४।५।७।८।१० गतैः, पापैः३।६।११ गतैः, लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः।

**चूडाकरण( मुण्डन-आद्यकेशकर्तन ) मुहूर्तः**

चैत्ररहितमासादि ६ मासे अग्रहायणे च। ज्येष्ठाग्रहणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना विषमवर्षे अश्वि, मृ., पुन., पु., ह., चि., स्वा., ज्ये., अभि., श्र., धन., शत, रे मतान्तरेण रोहिणी, उतरा३ नक्षत्रेशु। चं, बु., वृ., शु. वारेषु २।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषुशुक्ल पक्षे, कृष्णे ५ यावत्। २।३।४।८।९२

**गर्भाधान-मुहूर्तः-**

अश्वि, रो., उ.३, ह.स्वा, अनु., श्र., ध., श., चि, पुन., पु, नक्षत्रेषु। १।२।३।५।७।१०।११।१२।१३ तिथिषु। चं,बु,वृ,शु वारेषु। रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः १२ रात्रिं यावत्। शुभैः केन्द्र त्रिकोणः., पापैस्त्रयाचारिगैः., पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम्।

**सीमन्त-पुंसवन-मुहूर्तः**

पुंसवनं गर्भतस्तृतीयेमासिक कार्यम्। सीमन्तान्नयनं च षष्टेऽष्टमेमासे वा मासिक मासाधिपतौ सबले कार्यम्। मृ. पुष्य, श्र., मू., पुन., हस्त, रो., रे, उ. ३, (जन्मर्भविना) नक्षत्रेषु । १।२।३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे,कृष्णे ५ यावत्। सू., मं., वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु., चं. अपि पूर्वाह्ने, पुभस्यांगे तदंश शुभम्। पापैः ३।६।११ स्थितैः, शुभैः १।४।५।७।८।१० स्थितैः, चन्द्रे २।३।४।५।८।१०।६६ स्थिति, ४।८।१० पापरहितैः शुभम्।

**जातकर्म-मुहूर्तः-**

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुः श्रीवृद्धये च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात्। तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽहि, चि., अनु रे., उ. ३, रो, अश्वि, पुनः., पु., स्वा, श्र., ध., श., नक्षत्रेषु पूर्णिमां विहाय शुभ तिथिदलग्नेषु शुभम्।

**शिशोर्दुग्धपान मुहूर्तः-**

अश्वि., रो., मृ.,पुष्य, श्र., पुन., हस्त, रे, उ. ३, चि.,अनु,धन.शत. नक्षत्रेषु। शुभतिथिषु।शुभदिनेषु, वृष-सिंह- वृश्चिक-कुम्भ लग्नेषु स्तनपानं शुभम्। अन्नप्राशनोक्त-दिनतिथिनक्षत्रेषु सूतिकापथ्यं शुभम् भक्षणोक्ततिथिदिनक्षत्रेषु औषधिभक्षणञ्च शुभं वेद्यम्

**सूतिकास्नान मुहूर्तः**

अश्वि., रो., मृ, स्वाती अनु., उ.३, रे, नक्षत्रेषु। रवि, मंगल, गुरु दिनेषु, शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु १।२।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम्। आप्लेषा पू.३, ज्ये, ध. शत. नक्षत्रेषु मध्यम्।

**प्रसूति-नखच्छेदन-मुहूर्तः-**

अश्वि.,रो., मृ., पुन. पु. उ.३,हस्त,चित्रा, स्वाती,वि. अनु,ज्ये, श्र., ध., शतभिक्षा नक्षत्रेषु। ३।५।७।१०।११।१३ तिथिषु, ३।५।६।७।५।११ लग्नेषु, शुभदिनेषु पूर्वाह्ने शुभम्।

**स्त्रीणा लाक्षाभरणधारण-मुहूर्तः**

भ., आ., श्ले, म., वि., शत. रहित नक्षत्रेषु। शनि मंगल रहित दिनेषु शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणं (लहठीधारणं) शुभम्।

**शिशु निष्क्रमण मुहूर्तः-**

जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात्।



जन्मराशि-नामराशि वेशन-विचारणीयविषयाः-

विवाहे सर्वमांगलये यात्रायां ग्रहगोचरे। जन्मराशिप्रधानत्व नामराशिं न चिन्त्येत्॥ देशे ग्रामे गृहे युद्ध सेवायां व्यवहारके। नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्तयेत्॥ काकण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्युते स्वरोदये। मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशेः प्रधानता॥

**जन्म नक्षत्रे त्याज्याः-** जन्मनक्षत्रगणचन्द्रः प्रशस्तः सर्वकर्मसु। क्षौरभैषज्यवादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्।

**जन्ममासे त्याज्याः-** क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च।

गृहारम्भ( वास्तु )मुहूर्तः

वैशाख, आषाढ(पशुगृहं त्यक्त्वा), कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावण(सौरक्रमेण), मासेषु। माघ,ज्येष्ठ मासे मध्यम, सम्मुख-काल-वर्जित-समये। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। **आ.,रो.,मृ.,पुन, पु., उ.३, ह.,चि., स्वा.,अनु.,मूल.,श्र., ध.शत.,रे.** नक्षत्रेषु। **चं., बु, गु, शु, श,** वारेषु। दिवा, शुद्धसमये॥ शुद्धवास्तु-चक्रे, पृथ्वीशयननक्षत्रेषु २।३।५।७।८।९।१२। लग्नेषु। लग्ने शुभदृयुते। शुभैः १।४।५।७।८।१०। स्थितैः,पापैः ।३।६।११। स्थितैः, ।८।१२। ग्रहरहिते शुभः तृण-काष्ठादि- गृहनिर्माणम् अशुद्धेऽपि परञ्च इष्टिकादि गृहनिर्माणं शुद्धसमये एव। देवालमयमठादि- निर्माणमप्येष्वेव मुहूर्तेषु शुभम्।

गृहप्रवेश मुहूर्तः

वैशाख, आषाढ, कार्तिक, अग्रहण, फाल्गुन, श्रावण सौरमासेषु माष, ज्येष्ठ मासे मध्यम,। २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु शुक्ल पक्षे। **कृष्णे** ५ यावत्। **अ., रो., मृ.पुन, पु, उ.३, ह., चि., स्वा.,अनु., मूल.,श्र.,ध.शत.,रे. नक्षत्रेषु। चं. बु. वृ. शु. श.** वारेषु। दिवारात्रौ। शुद्ध समये। शुद्धे कुम्भचक्रे ।२।५।८।११ लग्नेषूत्तमा। ३।६।९।१२ लग्नेषु मध्यमः। जन्मराशि लग्नाभ्यामुपचय- ३।६।१०।११ राश्यांशेः स्थिरराशौ, लग्नात् १।३।५।७।८।१०।११ स्थानेषु शुभाः ३।६।११ स्थानेषु पापाः। ४।८ भवने ग्रहरहिते। सम्मुखकाल रहित समये शुभः। इष्टिकादि गृहप्रवेशः शुद्ध-समये तृण-काष्ठादिक-गृह-प्रवेशो-शुद्धसमयेऽपि। अग्निभय राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभ मुहूर्ते गृहारम्भो गृहप्रवेशश्च कार्यः।

- **त्रिविधप्रवेशः-** दिवा नृपप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवरात्रौ च गृहप्रवेशः शुभदः प्रोक्तः।
- राहु( काल )वासः-** सौरक्रमेण मार्गपौषमाघमासेषु पूर्वस्याम् फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम्। ज्येष्ठ-आषाढ-श्रावणेषु पश्चिमस्याम्। भाद्र-आश्विन-कार्तिकेषु उत्तरस्यां कालवासः
- पृथ्वीशननक्षत्राणि मुहूर्तः-** सूर्यनक्षत्रात्। ५।७।८।१२।१६।२६ मिते चन्द्र नक्षत्रे पृथ्वी शेते एषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभृति कार्यं ट्युबेल, बोरिंग, प्रभृति स्थापनञ्च न कर्त्तव्यम्।
- चरणिविचारः-** स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तारसंयुताम्। अष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते। तत्फलम्-पशुहानिःपशु रोगः पशुलाभः पशुक्षयः पशुनाश पशोर्वुद्धिः पशुभेदो बहुपशुः।

| गृहारम्भे वृषचक्रं अर्कभात् |    |           |
|-----------------------------|----|-----------|
| स्थान                       | न० | फलानी     |
| शीर्षो                      | ३  | अग्निभयम् |
| अ.पा.                       | ४  | शून्यम्   |
| पू.पा.                      | ४  | स्थैर्यम् |
| पृष्ठे                      | ३  | धनम्      |
| द.कु.                       | ४  | लाभः      |
| पृ.                         | ३  | नाशः      |
| वा.कु.                      | ३  | धननाशः    |
| मुखे                        | ३  | कष्टम्    |

| गृहप्रवेशे कुम्भचक्रं अर्कभात् |    |           |
|--------------------------------|----|-----------|
| स्थान                          | न० | फलानी     |
| मु.                            | १  | अग्निदाहः |
| पू.                            | ४  | उद्वसनम्  |
| द.                             | ४  | लाभः      |
| प.                             | ४  | धनम्      |
| उ.                             | ४  | कलहः      |
| म.                             | ४  | विनाशः    |
| अ.                             | ३  | स्थिरताः  |
| क                              | ३  | स्थिरता   |

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

| तिथयः                                     | १।६ | ३।११ | ५।१३ | ४।१२ | ६।१४ | ७।१५ | २।१० | ८।३० |
|-------------------------------------------|-----|------|------|------|------|------|------|------|
| दिशा                                      | पू. | अ.   | द.   | नै.  | प.   | वा.  | उ.   | ई    |
| वामवृष्टगतायोगिनीशुभ, दक्षिण-सम्मुख अशुभ। |     |      |      |      |      |      |      |      |

| देवालय-गृहारम्भ-जलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम् |                 |                  |                  |                  |
|--------------------------------------------|-----------------|------------------|------------------|------------------|
| खातदिक्                                    | नैऋत्याम्       | आग्नेयाम्        | ऐशान्याम्        | वायव्यम्         |
| देवालयारम्भे                               | ध.म.कु. सूर्ये  | मी.मे.वृ. सूर्ये | मि.क.सिं. सूर्ये | क.तु.वृ. सूर्ये  |
| जलाशयारम्भे                                | तु.वृ.ध. सूर्ये | म.कु.मी. सूर्ये  | मे.वृ.मि. सूर्ये | क.सिं.क. सूर्ये  |
| गृहारम्भे                                  | वृ.मि.क. सूर्ये | सिं.क.तु. सूर्ये | वृ.ध.म. सूर्ये   | कु.मी.मे. सूर्ये |

जलाशयवाटिका-देवादि-प्रतिष्ठा-मुहूर्तः-

सौर-माघ-फाल्गुन-वैशाख-ज्येष्ठ-आषाढमासेषु शुक्लपक्षे, **सू., चं., बु., गु,शु.,** वारेषु ।१।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५। तिथिषु। **मृ.रे. चि.अनु.ह.,अश्वि.पु.स्वा.पुन.,श्र.ध.श.,रो., उत्तरा-३,** नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकथिति- दिननक्षत्रेषु देवादप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं, स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ।३।६।११। स्थितैः। शुभैः १२।८। भिन्नस्थानगतैः देवादि प्रतिष्ठा शुभा। ग्रहाः पुष्ये, बुधः श्रवणयां, गणेशादयो देवत्यां स्थाप्याः। भगवतो देवोत्थनैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्रौ दीमालिकायाञ्च, शंकरस्य शिवरात्रौ वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

ट्युवबेल, वोरिंग, टंकी प्रभृति स्थापने शुभ मुहूर्तः-

कृ. आश्ले., म.,पू.३,भ.,वि.,मू., नक्षत्रेषु। २।४।५।६।७।८।१३।१५ तिथिषु शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्। चं.बु.वृ.शु. वारेषु। पूवाह्नेऽपराह्णे वा, २।३।४।६।७।८।१०।११।१२ लग्ने शुभयुग्दृष्टे शुभैः १।४।५।७।८।१० स्थितैः। पापैः ३।६।११ गतैः शुभम्।

वापी-कूप-तडागादिखनन-मुहूर्तः-

| वापीचक्रंरोहिणीभात् |    |            |
|---------------------|----|------------|
| स्थान               | न० | फलानी      |
| पृष्ठे              | ४  | शुभजलं     |
| नाभै                | ४  | बुद्धिनाशः |
| हृदि                | ४  | स्थिरता    |
| मध्ये               | ४  | कलहः       |
| नेत्रयोः            | ४  | धनागमः     |
| पादायोः             | ८  | दुःखम्     |

**खलस्थापनमुहूर्तः-** ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम्।

**धान्यस्थापन-मुहूर्तः-** अश्वि.रो.,मृ.पुन.,पुष्य.चि.,ह.,उ.,३,स्वा.,अनु.,मृ.,र.,ध., श.,रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिन लग्नेषु, २।३।५।८।९।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम्।

हल प्रवहण मुहूर्तः-

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. म. उत्तरा३, ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. धन. श. रे. नक्षत्रेषु। चं. मं. बु. गु. शु. वारेषु, शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु, पापैः निर्बलै। शुभैः सुबलिभिः। चन्द्र जलचर-राशिस्थिते तत्रवांशे वा। गुरौ लग्नस्थे शुते विधौ च पुष्टे शुभम्।

| हलचक्रमर्कभुक्तभात् |       |      |       |      |
|---------------------|-------|------|-------|------|
| नक्षत्र-            | ३     | ८    | ९     | ८    |
| फलम्                | अशुभं | शुभं | अशुभं | शुभं |

बीजवपन-मुहूर्तः

|                                                                                                                                                                                                                 |          |                                |      |  |       |  |       |  |       |  |       |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------|--------------------------------|------|--|-------|--|-------|--|-------|--|-------|
| अश्वि., रो., मृ., पुष्य, म., चि., ह., उ.३, स्वा., अनु., श्र., मू. रे. नक्षत्रेषु, २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, चं., बु., गु., शु. दिनषु शुभलग्नेषु, लग्नेशुभयुते, शुभैः केन्द्रत्रिकौ पापैः त्रिषडायैः शुभम्। | नक्षत्र- | बीजवपने फणिचक्र राहुनक्षत्रात् | फलम् |  | अशुभं |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |
|                                                                                                                                                                                                                 | ८        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |
|                                                                                                                                                                                                                 | ९        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |
|                                                                                                                                                                                                                 | १        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |
|                                                                                                                                                                                                                 | १        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |
|                                                                                                                                                                                                                 | १        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |
|                                                                                                                                                                                                                 | १        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |
|                                                                                                                                                                                                                 | १        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |
|                                                                                                                                                                                                                 | १        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |
|                                                                                                                                                                                                                 | १        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |
|                                                                                                                                                                                                                 | १        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |
|                                                                                                                                                                                                                 | १        |                                | ३    |  | अशुभं |  | शुभं  |  | अशुभं |  | शुभं  |

बीजवपन-मुहूर्तः

| कूपचक्रंरोहिणीभात् |    |             | तडागचक्रंसूर्यभात् |    |            |
|--------------------|----|-------------|--------------------|----|------------|
| स्थान              | न० | फलानी       | स्थान              | न० | फलानी      |
| मध्य               | ३  | शीर्घस्वादु | पूर्व              | २  | जलशोषः     |
| पूर्व              | ३  | निर्जलम्    | अग्नि              | ३  | बहुजलम्    |
| अग्नि              | ३  | शीघ्रजलम्   | दक्षिण             | २  | जलहानिः    |
| दक्षिण             | ३  | निर्जलम्    | नैऋत्य             | २  | अमृतजलम्   |
| नैऋत्यं            | ३  | निर्मलजनम्  | पश्चिम             | ३  | स्वादुजलम् |
| पश्चिम             | ३  | शीतजलम्     | वायु               | २  | निर्जलम्   |
| वायु               | ३  | जलहानिः     | उत्तर              | ३  | स्थिरजलम्  |
| उत्तर              | ३  | मधुरजलम्    | ईशान               | ३  | नष्टजलम्   |
| इशान               | ३  | क्षारजलम्   | मध्य               | ५  | पूर्णजलम्  |
|                    |    |             | वाह्य              | ३  | अमृतजलम्   |

धान्यरोपणमुहूर्तः-

रो. उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु। सू. चं. बु. गु. शु. दिनेषु। शुभतिथिषु शुभलग्नेषु च शुभम्।

धान्यछेदनमुहूर्तः-

मू.ज्ये.आश्ले.आर्द्रा, पूभा.ह.कृ. ध.श्र.मृ.स्वा.म.उत्तरा३,पूषा, भ. चि. पुष्य नक्षत्रेषु, सू.चं.बु.गु.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।११ लग्नेषु शुभम्। अन्यान्यपि यव-गोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि।

मेधिरोपणमुहूर्तः-

अ. रो. मृ. पुनः पु. उत्तरा३,ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रं. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु च मेधिरोपणं शुभम्।

वर्षेशवशेन मेधिविचारः-

वर्षेश सूर्य वंशः, चन्द्रे शिम्बरः, मंगले कदम्बकम्, बुधे उदुम्बकम्, गुरौ आम्रम्, शुक्रे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम्।

कर्णमर्दनमुहूर्तः-

मघा.पूफ.उफ. रो ज्ये. मू अनु श्र. रे नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम्।

धान्यवृद्धिमुहूर्तः-

आ.रो.पुन.पु.उत्तरा३, स्वा.वि.त्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा।

बीजस्थापनमुहूर्तः-

रो. मृ. मृ. ह. स्वा. मू. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु, चं. बु. गु. शु. वारेषु। शक्लपक्षे, कृष्ण ५ यावत् २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५, तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम्।

वृक्षादिरोपण-मुहूर्तः-

अश्वि.,रो.,मृ.,पुष्य,उ.३, ह चि., वि., अनु., मू., श., रे., नक्षत्रेषु, चं, वृ., शु. दिनेषु, शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम्-

पञ्चक (ध., श., पू., भा., उ.भा., रे) रहित नक्षेषु। १।२।३।४।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

नवान्न भक्षण मुहूर्तं

अ., रो., मृ., पुन., पु., उ.३, ह., चि., स्वा., अनु., श्र., ध., श., रे., नक्षत्रेषु शुभम्, मूले नवान्नपारवर्णं मध्यमम्। सू., च., बु., गु., वारेषु। शुक्ल पक्षे २।३।५।७।८।१०।१२।१५ तिथिषु। वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं, १३ अंशयावत् आवश्यकं २३ अंश यावदपि। ततः मरके ७ अंशानन्तरं कुंभस्थे सूर्ये वा कार्यम् २।३।४।६।७।८।९।१२ लग्नेषु, लग्नेशुभयुग्दृष्टे स्वस्वामियुते वा शुभम् नवान्नपार्वणे जन्मतारा-विशाखस्थसूर्य-कृष्ण पक्षाष्टमचन्द्र-पूर्वात्रय-मघा-भरणयाश्लेषाऽऽर्द्रा-नक्षत्र-सौर-क्रमेणकार्तिक-पाषै-चैत्रहरिशयननन्दात्रयोदशी-रिक्तामंगलशानि- शुक्रदिनानि निषिद्धानि। अभावे कृष्णपक्रचमी यावत् ग्राह्यः।

पुराणिादि श्रवण मुहर्तः

**अश्वि., रो., मृ., पुन., पु., ह., चि., स्वा, अनु., मू., श्र.,** नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। कृष्णपक्षे५ यावत्। **सू.,च., बु., गु., शु.** दिनेषु। शुभलग्ने। लग्ने शुभयुग्दृष्टे वलादये, शुभैः ।१।४।५।७।८।१०। स्थितैः पापैः ३।६।११ स्थितैः उत्तरायणे, श्रावण., आश्वि., कार्तिक, अग्र. मासेषु। तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धि क्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्तविनोपि शुभम्।

दीक्षाग्रहण मुहूर्त-

चै. वै. श्रा. आ. का. मार्गशीर्ष, मा. फा. मासेषु, अश्वि. रो. उ.३, रे. अनु. पुन. पुष्य. स्वा. मू. श्र. ध. श. पू.३, चि. नक्षत्रेषु सू. च. बु. वृ. शु. एषमहि भद्रादिदोषवर्जिते सति प्रशस्तम्। २।३।५।७।१०।११।१२ एतासुतिथिषु श्रेष्ठः कृष्णपक्षे पंचमी यावत् २।३।४।५।६।७।८।९।१२ लग्नेषुचन्द्रतारानुकूलेसति शुभम्। लग्नात् ३।६।११ एषु पापैः १।४।५।७।८।१० एषु शुभैश्चोत्तमः। अष्टम्यां संक्रान्तौ रविचन्द्रोपरागे चोत्तमः। गुरुशुक्रोदये श्रेष्ठः।

मन्त्रग्रहण मुहूर्त-

अश्वि,रो.,पुन.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.अभि., श्र.,ध.,श.,रे.नक्षत्रेषु ।२।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। अत्यावयके कृष्णपक्षो ५ यावत् सू., चं. बु.गु.शु.वारेषु। शुद्धसमये प्रातः मध्याह्ने वा ।२।३।५।७।८।९। स्थितैः,

सौरक्रमेण वैशाख, श्रावण, आश्विन, कार्तिक, अग्रहण, माघ, फाल्गुन, मासेषु। संक्रान्तौ पूर्णिमायां नवरात्रमध्ये, ग्रहणे, सिद्धक्षेत्रे मन्वादि-युगादिषु च मुहूर्तं विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्।

व्रतोद्यापन-मुहूर्तः-

अश्वि,रो.,पुन.,मृ.,पु.,उत्तरा-३,ह.,चि.,स्वा.,अनु.,मू.,श्र.,ध.,श.,रे., नक्षत्रेषु। शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा। कार्तिक, माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ, मासेषु। शुभलग्नेषु। कार्तिकवतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनञ्च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ। एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः ।१।४।५।७।८।१०। स्थितैः, पापैः ।३।६।११। स्थितैः, पंचमेशे नवमेशे गुरौ च बलादये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्धयभावेऽपि परमावश्यक

कल्याणार्थशान्ति:मुहूर्तः

अ. रो. मृ. पुन. पु. उ.३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र.ध. शत. रे. नक्षत्रेषु शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु शुद्ध समये आवश्यकंऽशुद्धेऽपि चैत्रपौषभाद्रमलमासक्षयमास रहिते शुभम्। शुभलग्ने लग्नस्थे गुरौ चतुर्थस्थे चन्द्रे दशमस्थे सूर्ये अष्टमे लग्ने च पाप रहिते शान्ति:शुभाः। शुभम्।

नवचण्डी-शतण्डी-सहस्रचण्डी यज्ञ मुहूर्तः-

वैशाख, फाल्गुन, माघ, श्रावण अग्रहण, आश्विन, कार्तिक मासेषु पूजायां तु शुभावहाः। ३।५।१५।७।१३।१०।१२।६ तिथिषु। सू.चं.बु.गु.शु. वारेषु। अश्वि. रो. स्वा. पु. ज्ये. उत्तरा३, पुन.।

**होमाहुतिविचारः-** सूर्यभात्रित्रिभे चान्द्रे सूर्यविच्छुक्रपंगवः।

चन्द्रारेज्यागुशिखिनो नेष्टा होमाहुतिः खले।

आहुति दोष परिहारः-

विवाहयाग व्रतबन्ध दीक्षा सीमन्तचण्डी गृहवास्तुशान्तौ। आदित्यसौरीकुजराहु केतवो न दोषदा यवविधायिनां खलु।

दुर्गाहोमे आहुतिचक्र विचारः-

ब्राह्मी च कौमारी च वैष्णवी च वाराहीऐंद्री त्वथ चण्डिका च। मेघा च माहेश्वरीनारसिंही क्रमेण सूर्यादिनभं त्रिकं च। श्रीपुत्रदा शोक भयौ धनाप्तिर्ह्यतस्तथा राजपदाप्तिरोगौ। विद्यासुखाप्तिनृपतेश्च लाभः फलानि दुर्गा हवने क्रमेण॥











## अथ वाजसनेयि सन्ध्या-वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिरि पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख (पूर्वात्तर कोणाभिमुख ) बैसि चानन कए दहिना हाथक अनामिका आंगुर मे तेकुशा ग्रहण कए आ जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि आचमन करी

१. ॐ केशवाय नमः, २. ॐ नारायणाय नमः, ३. ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषीकेशाय नमः। विनियोग मन्त्र-जल लय- ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णोर्देवता, गायत्रीछन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। पुनः हाथ में जल लय अपन शरीर के सिक्त करी- ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु के सिक्त करी।

तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री ( अंगुठी )धारण करी- ॐ पवित्रेस्थे वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्॥ पुनः जल लय आसन कें सिक्त करी(आसन पर छींटी)-ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। दहिना हाथ सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी-ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

शिखा स्पर्श करो- चिद्रूपिणि! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

चन्दन करी- ॐ चन्दनं वन्दयते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।

तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक संकल्प करी-ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य उत्पात्तदुरितक्षयपूर्वक-श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।

जल लय- अघमर्षण सूक्तस्याघमर्षण ऋषिर्नुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्व मेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततोरात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः॥ समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि

विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथो स्वः॥ एहि मन्त्रें जल कें अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी।

तदुत्तर बाद निम्न मन्त्रें जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह कें दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी- ॐ आपो मामभिरक्षन्तु।

• प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी - ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

सप्तव्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुब्बहती- पङ्क्तिस्त्रिष्टुब्जगत्य-श्छन्दस्याग्निब्राह्म्यादित्य बृहस्पतिवस्वरूपेन्द्र-विश्वेदेवा देवता अनादिष्ट प्रायश्चित्ते प्राणायामे विनियोगः।

गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता प्राणायामे विनियोगः। शिरसः प्रजापतिर्ऋषिर्ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मीन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढ़ैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्रणायाम करी-

• प्राणायाम मन्त्रः- ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नमः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

१. दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिना पूड़ाके बन्दकय वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी।

२. द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा कें दाबि दीर्घकालधरि वायकें धारण करैत हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ध्यान करैत कुम्भक नामक प्राणायाम करी।

३. तृतीय दहिना पूड़ा सँ अंगूठा छोड़ाय शनैः शनैः छोड़ैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत रेचक नामक प्राणायाम करी।

• प्रातः' कालीन सन्ध्याक समय-जल लय- सूर्यश्चमेति ब्रह्मऋषिः प्रकृतिश्छन्दः सूर्य्यो देवता प्रातराचमने विनियोगः।

सूर्यश्च मामन्युश्च मन्युपतयश्च मन्युकृतेभ्यः पापेभ्यो रक्षन्ताम्। यद्रात्र्या पापमकार्ष मनसा वाचा हस्ताभ्यां पदभ्यामुदरेण शिश्ना रात्रिस्तदवलुप्यतु। यत्किञ्चददुरितं मयि इदमहमापोऽमृतयोनौ सूर्ये ज्योतिषि जुहोमि स्वाहा॥ एहि मन्त्रें प्रातः कालमे आचमन करी।

तदुत्तर वाम हाथ मे जल लए विनियोग वाक्य पढ़ि दहिना हाथक अंगुष्ठ आ अनामिका आंगुर सँ एक-एक मन्त्र पढ़ैत कुल सात मन्त्र सँ सात बेर माथ पर जल प्रक्षेप करी- ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्र्यृचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः। १. ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महे रणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६. ॐ उशतीरिव मातरः। ७. ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८. ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९. ॐ आपो जनयथा च नः तदुत्तर दहिना हाथ में जल लए एक बेर विनियोग वाक्य आ तीन बेर “द्रुपदादिव” इत्यादि मन्त्र पढ़ि ओहि अभिमन्त्रित जल के देह पर सिक्त करी- द्रुपदादिवेत्यस्य कोकिलो राजपुत्र ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवताः सौत्रामण्यवभृथे विनियोगः। मन्त्रः-ॐ द्रुपदादिव मुमुचानः स्वित्रः स्नातो मलादिव। पूतं पवित्रेणोवाच्यमापः शुन्धन्तु मैनसः।

तदुत्तर दहिना हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जलक स्पर्श करैत श्वास धारण कएने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल कें अपन वाम भाग मे विना देखने नीचा खसा दी- ॐ अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।

ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो राज्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः॥ तदुत्तर दहिना हाथ मे जल लिए निम्नलिखित मन्त्र पढ़े ओहि जल सँ आचमन करी- ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः। ॐ अन्तश्चरसि भूतेषु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥

तदुत्तर पूर्वाभिमुख ठाड़ भए अगिला मन्त्रे अर्घ्य दी- ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भार्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं काल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्वबाहु भए

निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी-

• ॐ उद्वयमिति हिरण्यस्तूप ऋषिरनुटुप् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देव देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

• उदुत्यमित्यस्य प्रस्कण्व ऋषिर्गायत्री छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

ॐ उदुत्यज्जातवेदसं देवँव्वहन्ति केतवः दूशे विश्वाय सूर्य्यम्॥ चित्रमिति कौत्स ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवतां सूर्योपस्थाने विनियोगः।

• ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याऽग्नेः।

आप्रा द्यावापृथिवी अन्तरिक्ष ग्वं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च।

• ॐ तच्चक्षुरिति दध्यङ्ङाथर्वण ऋषिरक्षरातीत-पुर उष्णिक् छन्दः सूर्यो देवता सूर्योपस्थाने विनियोगः।

• ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शंत प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।

• गायत्री जप विधिः-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मन्त्रकें जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवा क विधान अछि। अतः आगु लिखल एक-एक मन्त्रकें उच्चारण करैत नीचा देल क्रमशः हृदयादि अंगक स्पर्श करी।

१. ॐ हृदयाय मनः। २. ॐ भूः शिरसे स्वाहा ३. ॐ भुवः शिखायै वषट्। ४. ॐ स्वः कवचाय हुम्। ५. ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्रत्रायाय वौषट् ६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट्।

तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी-

ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीछन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

व्याहृति-मन्त्रस्य प्रजापति-र्ऋषिर्गायत्री उष्णिग् अनुष्टुप्छन्दांस्वग्नि वायव्यादित्या देवता जपे विनियोगः। गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक पढ़ी-

ॐ श्वेतपर्णा समुदिदष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता॥ आदित्यमण्डलान्तस्था ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा॥

अगिला मन्त्रे गायत्रीक विनियोग तदुत्तर आवाहन करी- तेजीऽसीति देवा ऋषयः शुक्रं दैवतं गायत्रीछन्दो गायत्र्यावाहने विनियोगः।

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्य-मृतमसि धामनामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि॥ आवाहन कऽ निम्नलिखित विनियोग पढ़ी अगिला मन्त्रे प्रणाम करी- परोरजस इति विमल ऋषिरनुष्टुप् छन्दः परमात्मा देवता गायत्र्युपस्थापने विनियोगः।

ॐ गायत्र्यस्येकपदी द्विपदी त्रिपदी चतुष्पद्यपदसि नहि पद्यसे।

नमस्ते तुरीयाय दर्शताय पदाय परोरजसे सावदो मा प्रापत्

ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मवादिनि।

गायत्रीछन्दसां मातर्जपे मे सन्निधीभव।

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथवा यथासाध्य १०८ बेर गायत्री मन्त्र जपी - ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात् ॐ॥

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री के जप समर्पित करी- ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।

सिद्धिर्भवत् मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

तदनन्तर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रें गायत्री देवीक विसर्जन करी- ॐ उत्तरे शिखरे जात भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्॥

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रे सूर्य के अर्घ्य दए प्रणाम करी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन् । भास्वते विष्णुतेजसे॥

जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥

एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।

तदुत्तर सूर्य के प्रणाम करी-

ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्तारि सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

॥ इति सन्ध्या बन्धन विधि॥

नोट- तर्पणाधिकारी व्यक्ति तर्पण कय सूर्य के अर्घ्य देथि।

## वाजसनेयि तर्पण विधि-

१. देवतर्पण- नदी वा पोखरि में तीतले वस्त्र पहिरि नाभि तक पानि मे ठाढ़ भय वा स्थल पर तर्पण करवाक हो तँ सुखल वस्त्र धारण कय आसन पर पूब मुँह बैसि दहिना हाथ मे तेकुशा लय वाम हाथ मे उपयमन अर्थात् जुट्टी सन गुहल कुश ( बिरणी ) लय दहिन हाथ मे यव ओ जल लय देव तीर्थ सँ नीचाँ मे राखल कुश पर जल खसबैत तर्पण करी-

ॐ तर्पणीया देवा आगच्छन्तु। ॐ ब्रह्मास तृष्यताम्।

ॐ विष्णुस्तृष्यताम्। ॐ रुद्रस्तृष्यताम्। ॐ प्रजापतितृष्यताम्।

ॐ देवाः यक्षास्तथा नागाः गन्धर्वाऽपसरसोऽसुराः।

क्रूराः सर्पाः सुपर्णाश्च तरवो जम्भकाः खगाः॥

विद्याधराः जलाधाराः तथैवाकाशगामिनः।

निराधाराश्च ये जीवाः पापे ऽधर्मैरताश्चये॥

तेषामाप्यायनायै तद् दीयते सलिलं मया॥

तकर बाद उत्तराभिमुख आ नीवीती(यज्ञोपवीत कें कण्ठावलम्बित कए) भए कायतीर्थ (कनिष्ठा आंगुलिका मूल भाग) सँ सनकादि ऋषि सभक तर्पण एक-एक बेर जल दए करी-ॐ सनकादय आगच्छन्तु ( एहि मन्त्र सँ आवाहन् करी।)

ॐ सनकश्च सनन्दश्च तृतीयश्च सनातनः।

कपिलश्च आसुरिश्चैव वोढुः पञ्चशिखस्तथा॥

सर्वे ते तृप्तिमायान्तु मद् दत्तेनाऽम्बुना सदा॥

## ऋषि तर्पण-

पुनः पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय देव तीर्थ(अंगुली क अग्रभाग) सँ मरीचि आदि दस ऋषिक तर्पण एक-एक बेर जल दैत करी- ॐ मरीच्यादय आगच्छन्तु। आवहन करी। ॐ मरीचिः तृष्यताम्। ॐ अत्रिः तृष्यताम्। ॐ अङ्गिराः तृष्यताम्। ॐ पुलस्त्यः तृष्यताम्। ॐ पुलहस्तृष्यताम्। ॐ क्रतुः तृष्यताम्। ॐ प्रचेताः तृष्यताम्। ॐ वशिष्ठः तृष्यताम्। ॐ भृगुः तृष्यताम्। ॐ नारदः तृष्यताम्।



### दिव्य-पितृ तर्पण-

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांघ के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ (अंगुष्ठ आ तर्जनीक मध्यक मूल भाग)सँ हाथ मे मोड़ा रखने तिलसहित अथवा विना तिलो के तीन-तीन बेर जल दैत अग्निष्वात आदिक तर्पण करी।  
ॐ अग्निष्वात्तादय आगच्छन्तु। आवाहन करी।  
ॐ अग्निष्वत्तास्तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।  
ॐ सौम्याः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।  
ॐ हविष्मन्तः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।  
ॐ उष्मपाः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।  
ॐ सुकालिनः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।  
ॐ वहर्षिषदः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।  
ॐ आज्यपाः तृप्यन्ताम् इदं जलं तेभ्यः स्वधा नमः।

### यम तर्पण

ऊपर मे वर्णिते विधि के अनुसार १४ यमक तर्पण करी।  
ॐ यमादय आगच्छन्तु। आवहन करी।  
ॐ यमाय नमः। ॐ धर्मराजाय नमः। ॐ मृत्यवे नमः। ॐ अन्तकाय नमः। ॐ वैवस्वताय नमः।  
ॐ कालाय नमः। ॐ सर्वभूतक्षयाय नमः। ॐ औदुम्बराय नमः। ॐ दध्नाय नमः। ॐ नीलाय नमः। ॐ परमेष्ठिने नमः। ॐ वृकोदराय नमः। ॐ चित्राय नमः। ॐ चित्रगुप्ताय नमः। तकर बाद ॐ चतुर्दशैते यमाः स्वस्ति कुर्वन्तु तर्पिताः। ई वाक्य पढ़ी।

### पितृ-तर्पण-

(उपयुक्ते विधि सँ पितृ-तर्पण करी। पुरुष पक्ष के ३-३ बेर आ मातृपक्ष के १-१ बेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे “सतिलम्” नहि पढ़ी।) अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी  
ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्।

पितर क आवाहन के अगिला मन्त्रे तर्पण वही  
ॐ अद्य अमुक गोत्रः (अपन गोत्र) पिता अमुक (पिताक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (ई पढ़ि पहिल बेर जल दी)। तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि दोसर बेर जल दी), पुनः तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि तेसर बेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। ॐ अद्य अमुक गोत्रः (अपन गोत्र) पितामहः अमुक (बाबा का नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ३ बेर ॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रः (अपन गोत्र) प्रपितामहः अमुक (प्रपितामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा।। ३बेर॥ अन्त मे- “ॐ तृप्यध्वम्-३” ई वाक्य३ बेर पढ़ि जल दी॥

ॐ अद्य अमुक गोत्रः (नानाक गोत्र) मातामहः अमुक (नानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा ३ बेर॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रः (नाना क गोत्र) प्रमातामहः अमुक (परनानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा३ बेर॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रः (नानाक गोत्र) वृद्धप्रमातामहः अमुक (वृद्धप्रमातामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा-१। अन्त मे ॐ तृप्यध्वम्- ई वाक्य ३ बेर पढ़ि जल दी॥

### स्त्रीपक्ष में १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रा (अपन गोत्र) माता अमुकी (माताक नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १ बेर ॥ ॐ अद्य अमुक (अपन गोत्र) गोत्रा पितामही अमुकी (दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुक (अपन गोत्र) गोत्रा प्रपितामही अमुकी (पर दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। अन्त मे “ॐ तृप्यध्वम्” ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी॥

ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) गोत्रा मातामही अमुकी (नानी क नाम)देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) गोत्रा प्रमातमही अमुकी (पर नानी नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) गोत्रा वृद्धप्रमातामही अमुकी (वृद्ध परनानी कनाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१।

अन्त मे “ॐ तृप्यध्वम्” ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी।

एहि तर्पणक बाद अपन अन्य सम्बन्धी लोकनि कें गोत्र ओ नाम लय अपना रुचि अनुसारें तर्पण करी। तकर बाद आँजुर में

जल लय अपन बन्धु अबन्धु एवं अन्य जन्मक बन्धु कें जल दी-  
ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।

ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति॥

पुनः नीचाँ लीखल मंत्र पढ़ि स्नान कायल भिजलाहा कटिवस्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहे मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पितर कें दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।

ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य कें तीन बेर अर्घ दी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे।

जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥

एषो अर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥११॥

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते।

अनुकम्पय माम् भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

एष द्वितीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥२॥

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। एष तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥३॥

अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कें प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

*इति वाजसनेयि तर्पण समाप्तिः*



### छन्दोगणक तर्पण विधि-

दहिना हाथ मे तेकुशा लए सव्य (वामस्कन्धस्थापित यज्ञोपवीती) भए वाम हाथ के दहिना हाथक नीचा भाग मे स्पर्श कयने भूमि पर रही तऽ पूब, उत्तर अथवा ईशानकोणाभिमुख बैसि दहिना जांघ के खसेने पवित्र भूमि पर राखल तेकुशा पर अथवा एक टा सराय मे राखल जल मे (ओहि जल मे विना तेकुशा राखने), यदि जल मे ठाढ़ रही तऽ पूर्वाभिमुख भए देवतीर्थ (अंगुलिसभक अग्रभाग) सँ पहिने देवतर्पण करी। यथा परिस्थिति तेकुशा पर अथवा जल मे तीन बेर जल दैत पढ़ी-

ॐ देवास्तृप्यन्ताम्। तकर बाद उत्तराभिमुख आ नीवीती (यज्ञोपवीत कें कण्ठावलम्बित कए) भए कायतीर्थ (कनिष्का आंगुलिक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ ऋषि तर्पण तीन बेर जल दैत करी-

ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम्। पुनः पूर्वाभिमुख भए प्रजापत्य तीर्थ (कनिष्ठा अंगुलीक मूल भाग) सँ नीचा लिखल मन्त्र सँ प्रजापति तर्पण एक बेर जल दैत करी-

ॐ प्रजापतिस्तृप्यन्ताम्।

दक्षिणाभिमुख आ अपसव्य भए भूमि पर रही तऽ वाम जांघ के खसेने दक्षिणाग्र तेकुशा पर अथवा सराय मे राखल जल मे, जल मे रही तऽ ठाढ़े तिल लए पितृतीर्थ (अंगुष्ठ आ तर्जनीकक मध्य मूल भाग) सँ हाथ मे मोड़ा रखने तिलसहित अथवा विना तिलो पुरूष पक्ष के ३-३ बेर आ मातृपक्ष के १-१ बेर तिलमिश्रित अथवा तिलरहित जल दी। तिलक अभाव मे “**सतिलम्**” नहि पढ़ी।)

अगिला मन्त्र सँ सब पितरकें तीन-तीन अञ्जलि जल दी।

ॐ आगच्छन्तु मे पितर इमं गृह्णन्तु अपोऽञ्जलिम्।

पितर क आवाहन क अगिला मन्त्रे तर्पण करी-

ॐ अद्य अमुक गोत्रः (गोत्र) पिता अमुक (पिता का नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा (ई पढ़ि पहिल बेर जल दी)। तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि दोसर बेर जल दी), पुनः तस्मै स्वधा। (ई पढ़ि तेसर बेर जल दी) एहिना आगुओ सभ मे। ॐ अद्य अमुक गोत्रः (अपन गोत्र) पितामहः अमुक (बाबा क नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ३ बेर॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रः (अपन गोत्र) प्रपितामहः अमुक (प्रपितामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा। ३ बेर॥ अन्त मे- “ॐ तृप्यध्वम्-३” ई वाक्य३ बेर पढ़ि जल दी॥

ॐ अद्य अमुक गोत्रः (नानाक गोत्र) मातामहः अमुक (नानाक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा ३ बेर॥ ॐ अद्य अमुक गोत्रः (नानाक गोत्र) वृद्धप्रमातामहः अमुक (वृद्धप्रमातामहक नाम) शर्मा तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्मै स्वधा॥ अन्त मे ॐ तृप्यध्वम्-ई वाक्य ३ बेर पढ़ि जल दी

### स्त्रीपक्ष में १-१ अंजलि जल दी-

ॐ अद्य अमुकी गोत्रा (अपन गोत्र) माता अमुकी (माताक नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा १ बेर॥ ॐ अद्य अमुक (गोत्र) गोत्रा पितामही अमुकी (दादी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्य अमुक (गोत्र) गोत्रा प्रपितामही अमुकी (पर दादी के नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । अन्त मे “ॐ तृप्यध्वम्” ई वाक्य एक बेर पढ़ि जल दी॥

ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) गोत्रा मातामही अमुकी (नानी क नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा स्वधा-१। ॐ अद्य अमुकी (नानाक गोत्र) गोत्रा प्रमातामही अमुकी (पर नानी नाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१ । ॐ अद्य अमुकी (गोत्र) गोत्रा वृद्धप्रमातमही अमुकी (वृद्ध परनानी कनाम) देवी तृप्यतामिदं सतिलं जलं तस्यै स्वधा-१। अन्त मे “ॐ तृप्यध्वम्” ई वाक्य एक बेर

पढ़ि जल दी॥

एहि तर्पणक बाद अपन अन्य समबन्धी लोकनि कें गोत्र ओ नाम लय अपना रुचि अनुसारें तर्पण करी। तकर बाद आँजुर में जल लय अपन बन्धु अबन्धु एवं अन्य जन्मक बन्धु कें जल दी-

ॐ येऽबान्धवा बान्धवाश्च येऽन्यजन्मनि बान्धवाः।

ते तृप्तिमखिला यान्तु यश्चास्मत्तोऽभिवाञ्छति॥

पुनः नीचाँ लीखल मंत्र पढ़ि स्नान कयल भिजलाहा कटिवस्त्रक (धोती) जल तेकुशा पर दक्षिण मुँहे मंत्र पढ़ि पितृ तीर्थ सँ गाड़ि अपना वंशक अतृप्त पित्र कें दी-

ॐ ये के चास्मत्कुले जाता अपुत्रा गोत्रिणो मृताः।

ते गृह्णन्तु मया दत्तं वस्त्रनिष्पीडनोदकम्॥

एहि मंत्रें वस्त्रक जल कुश पर गाड़ि पूव मुँह भय यज्ञोपवीत सव्य कय सूर्य कें तीन बेर अर्घ दी-

ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे।

जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥

एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥१॥

ॐ एहि सूर्य सहस्रांशो तेजो राशे जगत्पते।

अनुकम्पय माम् भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

एष द्वितीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥२॥

ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन् नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।

एष तृतीयोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्यनारायणाय नमः ॥३॥

अर्घक बाद हाथ में लाल फूल लय सूर्य कें प्रणाम करी-

ॐ जपा कुसुम संकाशं कास्य पेयं महाद्युतिम्।

ध्वान्तारिं सर्व पापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥

*इति वाजसनेयि तर्पण समाप्तिः*



## छन्दोग सन्ध्या- वन्दन विधि

स्नान कए शुद्ध वस्त्र पहिर पवित्र आसन पर सुविधानुसार पूर्वाभिमुख उत्तराभिमुख वा ईशान कोणाभिमुख (पूर्वोत्तर कोणाभिमुख) बैसि चानन कए दहिना हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्री अथवा सोना अथवा चाँदीक अंगूठी पहिरि अथवा हाथ मे तेकुशा ग्रहण कए जा जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि अचामन करी

१. ॐ केशवाय नमः, २. ॐ नारायणाय नमः, ३.ॐ माधवाय नमः। हाथ धोली ॐ गोविन्दाय नमः, ॐ हृषिकेशाय नमः। मार्जन विनियोग मन्त्र-जल लय-ॐ अपवित्रः पवित्रो वेत्यस्य वामदेव ऋषिः, विष्णुर्देवता, गायत्रीच्छन्दः हृदि पवित्रकरणे विनियोगः। पुनः हाथ में जल लय अपन शरीर कें सिक्त करी-ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ ॐ पुण्डरीकक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल सँ सिक्त कय सभ वस्तु कें सिक्त करी। तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आँगुर में कुशक पवित्री(अंकुठी) धारण करी-ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छक्रेयम्॥ पुनः जल लय आसन कें सिक्त करी (आसन पर छींटी)- ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। दहिना हाथ **सँ आसन स्पर्श कय मन्त्र पढ़ि आसन पवित्र करी-**

ॐ पृथ्व त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥  
**शिखा स्पर्श करी-** चिद्रूपिणि! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥

**चन्दन करी-** ॐ चन्दनं वन्दयते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा। **तकर बाद कुश आ जल लय सन्ध्याक**  
● **सकल्प करी-** ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॐ अद्य... उपात्तदुरितक्षयपूर्वक-श्रीपरमेश्वर-प्रीत्यर्थं संध्योपासनं करिष्ये।

**आचमन-** अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः।  
ॐ ऋतञ्च सत्यचाभीद्धत्तपसोध्यजायत। तत्तोर यजायत। ततः समुद्रोः अर्णवः॥

समुद्रादर्णवादधि सम्वत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत्। दिवञ्च पृथिवीञ्चान्तरिक्षमथे स्वः॥

**एहि मन्त्रें जल कें अभिमन्त्रित कए ओहि जल सँ तीन बेर आचमन करी। तकर बाद निम्न मन्त्रें जल के अभिमन्त्रित कए रक्षा हेतु ओहि जल सँ देह कें दहिना सँ पाछू दिश दए वेष्टित करी-** ॐ आपो मामभिरक्षन्तु।

**तदुत्तर • प्राणायाम सँ पूर्व ऋष्यादिक स्मरण करी-** ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दोऽग्निर्देवता शुक्लो वर्णः सर्वकर्मारम्भे विनियोगः। गायत्र्या विश्वामित्रऋषिर्गायत्रीछन्दः सविता देवताः उपनयने प्राणायामे विनियोगः। शिरसः प्रजापतिऋषिः ब्रह्माग्नि-वायुसूर्यो देवताः यजुः प्राणायामे विनियोगः।

**ई विनियोग पढ़ैत ऋष्यादि स्मरण कय आसन स्थिर कय आँखि मूनि मौन भय अगिला मन्त्र तीन-तीन बेर अथवा एक-एक बेर पढ़ैत पूरक, कुम्भक आ रेचक नामक प्रणायाम करी-**

● **प्राणायाम मन्त्रः-** ॐ भूः ॐ भुवः ॐ स्वः ॐ महः ॐ जनः ॐ तपः ॐ सत्यम् ॐ। तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। ॐ आपो ज्योती रसोऽमृतं ब्रह्मभूर्भुवः स्वरोम्।

१ दहिना हाथक अँगूठा सँ नाकक दहिना पूड़ाकँ दाबि वाम पूड़ा सँ वायु ग्रहण करैत नाभिमे श्यामवर्ण चतुर्भुज विष्णुक ध्यान करैत पूरक नामक प्राणायाम करी।  
२. द्वितीय अनामिका आंगुर सँ वाम पूड़ा कँ दाबि वायुकँ धारण करैत हृदयसँ कमलासनस्थ रक्तवर्ण चतुर्भुज ब्रह्माक ध्यान करैत कुम्भक नामक प्राणायाम करी।  
३. तृतीय दहिना पूड़ा सँ अंगूठा छोड़ाय शनैः शनैः वायु छोड़ैत, ललाटमे शुक्लवर्ण त्रिनेत्र शिवक ध्यान करैत रेचक नामक प्राणायाम करी।  
प्राणायामक बाद तीन बेर आचमन कए वाम हाथ मे जल राखि तेकुशा लए चारि बेर मार्जन करी अर्थात् ओहि जल सँ माथ कें सिक्त करी-

● **पहिल बेर-** ॐ ई पढ़ी। ● **दोसर बेर-** भूर्भुवःस्वः ई पढ़ी।  
● **तेसर बेर-** ॐ तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ई पढ़ी।  
● **चारिम बेर-** ॐ आपो हिष्ठेत्यादित्यूचस्य सिन्धुद्वीप ऋषिर्गायत्री छन्दः आपो देवता मार्जने विनियोगः।  
१. ॐ आपो हिष्ठा मयोभुवः। २. ॐ ता न ऊर्जे दधातन। ३. ॐ महेरणाय चक्षसे। ४. ॐ यो वः शिवतमो रसः। ५. ॐ तस्य भाजयतेह नः। ६. ॐ उशतीरिव मातरः।

७. ॐ तस्मा अरं गमाम वः। ८. ॐ यस्य क्षयाय जिन्वथ। ९. ॐ आपो जनयथा च नः ई पढ़ी। तदुत्तर दहिना हाथक तरहत्थी मे जल लए नाक मे जल के स्पर्श करैत श्वास धारण कएने निम्नलिखित मन्त्र पढ़लाक बाद ओहि जल कें अपन वाम भाग में विना देखने नीचा खसा दी-

अघमर्षण-सूक्तस्याघमर्षण ऋषिरनुष्टुप् छन्दो भाववृत्तो देवता अश्वमेधाऽवभृथे विनियोगः। ॐ ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत। ततो रात्र्यजायत। ततः समुद्रो अर्णवः। समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत। अहोरात्राणि विदधद्- विश्वस्य मिषतो वशी। सूर्या-चन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्। दिवं च पृथिवीं चाऽन्तरिक्षमथो स्वः॥ **तदुत्तर दहिना हाथ मे जल लए निम्नलिखित मन्त्र पढ़ि ओहि जल सँ आचमन करी-** ॐ अन्तश्चरसीति तिरश्चीन ऋषिरनुष्टुप् छन्दः आपो देवता अपामुपस्पर्शने विनियोगः। ॐ अन्तश्चरसि भूतेशु गुहायां विश्वतोमुखः। त्वं यज्ञस्त्वं वषट्कार आपो ज्योती रसोऽमृतम्॥ **तदुत्तर सूर्यसम्मुख ठाड़ भए अगिला मन्त्रें अर्घ्य दी-** ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्। एहि मन्त्र सँ सूर्य के अर्घ्य प्रदान कए प्रातः आ सायं काल में बद्धाञ्जलि भए आ मध्याह्न काल मे ऊर्ध्वबाहु भए निम्नलिखित मन्त्र सँ सूर्योपस्थान करी-

● **प्रातः' कालीन सन्ध्याक समय में सूर्योपस्थापनः-**  
ॐ उदुत्यं जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः। दृशे विश्वाय सूर्यम् ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकज्वक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याऽग्नेः। आप्रा द्यावपृथिवी अन्तरिक्षं सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च। ॐ उद्वयं तमसः परिस्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।  
**( नोट तर्पणाधिकरी व्यक्ति तर्पण कयलाक बाद गायत्री मन्त्रक जप करथि )**

### ● गायत्री जप विधिः-

षडङ्गन्यासः- गायत्री मन्त्रकें जपसँ पूर्व षडङ्गन्यास करवा क विधान अछि। अतः आगू लिखल एक-एक मन्त्रकें उच्चारण करैत नीचा देल क्रमश हृदयादि अंगक स्पर्श करी।  
१. ॐ हृदय नमः २. ॐ भूः शिरसे स्वाहा। ३. ॐ भुवः शिखायै वषट्। ४. ॐ स्वः कवचाय हुम्। ५. ॐ भूर्भुवः स्वः नेत्राभ्यां वौषट्। ६. ॐ भूर्भुवः स्वः अस्त्राय फट् तदनन्तर कलजोड़ि ई विनियोग वाक्य पढ़ी- ॐ कारस्य ब्रह्मा ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः अग्निर्देवता सर्वकर्मारम्भे विनियोगः।

- व्याहृतित्रयस्य प्रजापतिऋषिर्गायत्री उष्णिग्-अनुष्टुभश्छन्दांस्यग्नि वाय्वादित्या देवता जपे विनियोगः।
- गायत्र्या विश्वामित्र ऋषिर्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता जपे विनियोगः।

**तदुत्तर कलजोड़ि गायत्रीक ध्यानमन्त्र पढ़ी-**  
ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा। श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च शोभिता॥  
आदित्यमण्डलान्तस्था ब्रह्मलोकगताऽथवा। अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा॥  
कलजोड़ि अगिला मन्त्रें गायत्रीक आवाहन करी- ॐ आगच्छ वरदे देवि त्र्यक्षरे ब्रह्मादिनि। गायत्रीच्छन्दसां मातर्जपे मे सन्निधीभव॥ गायन्तं त्रायसे यस्माद् गायत्री त्वं ततः स्मृता॥

तदुत्तर न्यूनतम १० बेर अथावा यथासाध्य १०८ अथवा १००० बेर गायत्री मन्त्र जपी- **ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्॥**

तदनन्तर एहि मन्त्र सँ कलजोड़ि भगवती गायत्री कें जप समर्पित करी- **ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥**

तदनन्तर अर्घा मे जल लए ओहि जल सँ अगिला मन्त्रें गायत्री देवीक विसर्जन करी- ॐ उत्तरे शिखरे जाते भूम्यां पर्वतवासिनि। ब्रह्मणा समनुज्ञाते गच्छ देवि यथासुखम्॥

तदनन्तर अर्घा वा हाथ मे जल लए अगिला मन्त्रें सूर्य कें अर्घ्य दए प्रणाम करी- ॐ नमो विवस्वते ब्रह्मन्! भास्वते विष्णुतेजसे। जगत्सवित्रे शुचये सवित्रे कर्मदायिने॥ एषोऽर्घः ॐ भगवते श्रीसूर्याय नमः।  
**तदुत्तर सूर्य कें प्रणाम करी-ॐ जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। ध्वान्तारिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्॥**

॥ इति सन्ध्या वन्दना विधि॥



नित्य पार्थिव पूजन विधि:-

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करें। (सधवा विष्णु की जगह गौरी पूजा करें। गौरि इहा, गौर्ये नमः)

**१. पञ्चदेवता पूजा-** तेकुशा, अक्षत् लेकर आवाहन करी **ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्यादिपञ्चदेवताः इहागच्छत इह तिष्ठत। जल लेकर-** एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। चन्दन-** इदमनुलेपनम् **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। अक्षत्-** इदमक्षतम् **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। पुष्प-** एतानि पुष्पानि **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। अक्षत्-इदमक्षतम् ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। पुष्प-** एतानि पुष्पाणि **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। जल** से प्रसाददि उत्सर्ग करें- एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध-नैवेद्यानि **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। जल-** इदमाचमनीयम् **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः। फूल लें पुष्पांजलि दें-** एष पुष्पाञ्जलिः **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नमः।**

**२. विष्णु पूजा':** जौ तिल लेकर आवाहन करें- **ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन् श्रीविष्णोः इहागच्छ इह तिष्ठ। जल-**एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय- स्नानीय पुनराचमनीयानि **ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। चन्दन-**इदमनुलेपनम् **ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। यवतिल-यते यवतिलाः ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। पुष्प लय-**इदं पुष्पम् **ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। तुलसी पत्र-**इदं तुलसी पत्रम् **ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें-** एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप- ताम्बूल-यथाभाग-नानाविध नैवेद्यानि **ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः। जल-**इदमाचमनीयं भगवते श्रीविष्णवे नमः। **दुनू हाथ में फूल ले-**एष पुष्पाञ्चलिः **ॐ भगवते श्रीविष्णवे नमः।** (मूर्ति या शालग्राम हो तो आवाहन-विसर्जन नहीं करें) इसके बाद स्वेष्टदेवता की पूजा जप आदि करें।)

**३. कीर्त्तिमुख पूजा':** तेकुशा अक्षत् लेकर आवाहन करी- **ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ। जल लेकर - एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय- पुनराचमनीयानि ॐ भूर्भुवः स्वः कीर्त्तिमुख नमः। पुष्प-एतानि पुष्पाणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। विल्वपत्र-एतानि विल्वपत्राणि ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करें-** एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-यथाभाग नानाविध-नैवेद्यानि **ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। जल- इदमाचमनीयम् ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः। फूल लें पुष्पांजलि दें- एष पुष्पाञ्जलिः ॐ कीर्त्तिमुखाय नमः॥**

**४. पार्थिव पूजन-** **ॐ हराय नमः** इस मंत्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण कर **ॐ महेश्वराय नमः** इस मंत्र से महादेव बनाकर **शूलपाणये नमः ॐ शूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव।** इस मन्त्र से अक्षत् लगाकर पात्र में शिव को सामने रख ध्यान करें-

**ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।**

**रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्॥**

**पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं।**

**विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥**

पश्चात्-**ॐ पिनाकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ** से आवाहन कर। जल लेकर एतानि पाद्य-अर्घ्य-आचमनीय-स्नानीय-पुनराचमनीयानि **ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। चन्दन-इदमनुलेपनम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, अक्षत्- इदमक्षतम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। पुष्प-एतानि पुष्पाणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। विल्वपत्र-एतानि विल्वपत्राणि ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। जल से प्रसादादि उत्सर्ग करे- एतानि गन्धपुष्प-धूपदीपताम्बूल-यथाभागनानाविधनैवेद्यानि **ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः। जल-इदमाचमनीयम् ॐ साम्बसदाशिवाय नमः, पशुपतये नमः॥** इसके बाद पुष्पाक्षत चन्दन-जल से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर तथा अन्त में महादेव के उपर अष्टमूर्ति की पूजा करे-**

- १. **ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नमः** पूर्व मे।
- २. **ॐ भवाय जलमूर्त्तये नमः** ईशानकोण में।
- ३. **ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नमः** उत्तर दिशा में।
- ४. **ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नमः** वायव्यकोण में।
- ५. **ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नमः** पश्चिम में।
- ६. **ॐ पशुपतये यजमानमूर्त्तये नमः** नैऋत्यकोण में।
- ७. **ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नमः** दक्षिण में।
- ८. **ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नमः** अग्निकोण में।
- ९. **ॐ महादेवाय नमः** पार्थिव लिंग पर। अन्त में जलपुष्पाक्षतचन्दनादि से **ॐ ब्रह्माणे नमः** इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा भूमि पर करें। उसके यथा योग्य पाठ-जप स्तुत्यादि कर, पूजाक्रम से जल लेकर विसर्जन करें। **ॐ सूर्यादिपञ्चदेवताः पूजिताः स्थः क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्त्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ साम्बसदाशिव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। तदुत्तर ॐ विष्वक्सेनाय नमः** मन्त्र से भगवान पर से तथा **ॐ चण्डेश्वराय नमः** इससे महादेव पर से निर्माल्य हटावें।

अथ कलश-स्थापन

**व्रती अर्थात् पूजन कर्त्ता नित्यकर्म ( सन्ध्या-वन्दन आदि ) कय पूजास्थान आबि शुद्धासन पर वैसि, तीन वेरि आचमन करथि** १. **ॐ** केशवाय नमः, २. **ॐ** नारायण नमः, ३. **ॐ** माधवाय नमः। **हाथ बोली ॐ** गोविन्दाय नमः, **ॐ** हृषिकेशाय नमः। **पुनः दहिन हाथ में जल लय ॐ** अवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ् गतोऽपिवा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ **ॐ** पुण्डरीकाक्षः पुनातु, गंगा विष्णुः हरिर्हरिः। अपना ऊपर जल से सिक्त कय सभ वस्तु कें सिक्त करी। **‘तकर बाद दहिना हाथक अनामिका आंगुर मे कुशक पवित्री ( अंकुठी ) धारण की-** **ॐ** पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाभ्य छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयु॥ **पुनः जल लब आसन के सिक्त करी( आसन पर छीटी )-****ॐ** पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु पृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः। **आसन पवित्र करथि-** **ॐ** पृथ्वी त्वया धृता लोका देवित्वं विष्णुना धृता। त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥ शिखा स्पर्श करी- चिद्रूपिणि! महामाये! दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि! शिखामध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे॥ तकर बाद चन्दन करी-**ॐ** चन्दनं वन्दयते नित्यं पवित्रं पाप नाशनम् आपदं हरते नित्यं लक्ष्मीर्वसतु सर्वदा।

कलश-स्थापन

सोन चाँनी वा माटिक छिद्र, रहित चिक्कन कलश पखारि कऽ, २१ आंगुर वा ८ आंगुर चाकर ६ आंगुर ऊँच पीड़ी ( वेदी ) वनाय पहिने अक्षत् पुष्प, चन्दन, जल लय **ॐ** आधारशक्तये नमः **एहि मन्त्र सँ वेदी क पूजन कय तदुत्तर मध्यमा आ अनामिका आंगुर सँ भूमि स्पर्श-** **ॐ** भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवी दृ १ ह पृथिवीं माहि गुं सीः॥

- **आगुक मन्त्र सँ गोवरसँ वेदी के नीपथि-** **ॐ** मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषुरीरिषः मानो वीरान्द्रभामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे।
- **आगुक मन्त्रें गंगाजल सँ सिक्त करथि-** **ॐ** वेद्या वेदिः समाप्यते बर्हिषा बर्हिरिन्द्रयम्। यूपेन यूप आच्यायते प्रणीतो अग्निरग्निना।
- **आगुक मन्त्र सँ यव वा धान देखि। धान्यप्रक्षेपणः-** **ॐ** धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसितिमायुषेधां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रति गृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि॥ **ॐ** यव त्वं यवरूपोऽसि यज्ञार्थे निर्मितो विधेः देवानां तृप्तिकृद्यस्मात् तस्मात्त्वं वरदो भव॥ तखन अगिला मन्त्र सँ सुन्दर अलंकृत सुदृढ कलश पीड़ी ( वेदी ) पर मध्य मे राखथि-कलश स्थापन-**ॐ** आजिघ्न कलशं मह्या त्वा व्विशन्तिवन्दवः। पुनरूर्जा निवर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः॥
- **कलश मे दही-अक्षत् मिलाक लगावथि-** **ॐ** दधिक्राव्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः। सुरभि नो मुखाकरत् प्रणऽआयू १ षि तारिषत्॥

- **जलपूर्ण कलश मे वरूण के आवाहन करथि-कलशमें जल-** **ॐ** व्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो व्वरुणस्य ऋतसदन्यसि व्वरुणस्य ऋतसदनमसि व्वरुणस्य ऋतसदनमासीद॥
- **कलश में गंगा जल देखि-** **ॐ** गङ्गाद्याः सरितः सर्वाः समुद्राश्च सरांसि च। सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः। आयान्तु मम(यजमानस्य) दुरितक्षयकारकः॥
- **सप्तमृत्तिकाः-** **ॐ** स्योना पृथिवि नो भवा नृक्षरा निवेशनी यच्छा नः शर्म सप्रथाः॥
- **सर्वोषधीः-** **ॐ** या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रुनावहा शतं धामानि सप्त च॥
- **पञ्चरत्न-** **ॐ** परिव्राज पतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।
- **सुपाड़ी और जायफलः-** **ॐ** याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व १ हसः॥
- **द्रव्य( पैसा )-** **ॐ** हिरण्य गर्भः समवर्त ताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥
- **दूभी( दूर्वा )देथिः-** **ॐ** काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥
- **पञ्चपल्लव या आम्रपल्लव दे-** **ॐ** अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वंसतिष्कृता। गोभाजऽइत्तिकलासथ यत्सनवथ पूरुषम्। ये वृक्षेष्ट शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा विलोहिताः। तेषा ग्नुं सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि॥
- **पूर्णपात्र राखथिः-** **ॐ** पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनर पत। वस्नेव विक्रीणावहा ईषमूर्ज १ शतक्रतो॥
- **नारियलः-** **ॐ** श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्ण त्रिषाणा मुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण॥
- **वस्त्रक स्पर्श करथि-** **ॐ** युवा सुवासाः परिवीत आगात् सउश्रेयान् भवति। जायमानः। तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः
- **दुनु हाथ सँ कलश स्पर्शक स्थिर करथि-** **ॐ** स्थिरो भव वीडवङ्ग आशुर्भव वाज्यवन्। पृथुर्भव सुखदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः।
- **पुष्प अर्पण करथि-** **ॐ** श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहो रात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णत्रिषाणमुम्म इषाण सर्वलोकम्म इषाण॥
- **चन्दन-** **ॐ** गन्धद्वारां दुराधर्षा नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोपहये श्रियम्॥
- **पुन यवादि ( सप्तधान्य ) जयन्तीनिमित वपन करथि-** **ॐ** ब्रीहयश्च मे यवाश्च मे तिलाश्च मे मुद्रगाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मे प्रणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।
- **अल्टा अर्पण करथि-** **ॐ** आकृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।



|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>● <b>सिन्दुर</b>-ॐ सिन्धोरवि प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यद्वाः। घृतस्य धारा आरूषेन वाजीकाष्ठा भिन्दन्मूर्मिभिः पिन्वमानः।</p> <p><b>कलश क स्पर्श क</b> - ॐ मनोजूतिर्जुषता-माज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो-त्वरिष्टं यज्ञं श्ं समिमं दधातु विश्वे देवा स इहमादयन्तामों प्रतिष्ठ॥</p> <p><b>प्राण-प्रतिष्ठा क शान्तिकलश के पूजन करथि-</b> ॐ शान्तिकलश इहागच्छ</p> <p>इह तिष्ठ आवाहन क ॐ शान्तिकलशाय नमः</p> <p>सँ पञ्चोपचार पूजन क पुष्प सँ पुष्पाञ्जलि देथि-</p> <p>ॐ शान्तिकुम्भ महाभाग सर्वकामफलप्रद।</p> <p>पुष्पं गृहाण शुभं यच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते॥</p> <p><b>कलश पर गणपति क आवाहन आ पूजन करथि -अक्षत् पुष्प लऽ-</b></p> <p>गणानान्तवा गणपति श्ं हवामहे व्वसो मम ऽआहम जानि</p> <p>गर्भधमात्वमजासि गर्भधम्। ॐ सर्वविघ्नहरो देव एकदन्त गजानन।</p> <p>पुष्पं गृहाण शुभं यच्छ देवाधार नमोऽस्तु ते॥ ॐ भूर्भुवः स्वर्भगवन्</p> <p>गणपते इहागच्छ इह तिष्ठ सँ आवाहन क ॐ गं गणपतये नमः सँ पंचोपचार पूजन क पुष्पाञ्जली देथि- ॐ एकदन्तं महाकायं लंबोदरगजाननम्। विघ्ननाशकरं देवं हेरम्बं प्रणमाम्यहम्॥ एष पुष्पाञ्जलिः ॐ गंगणपतये नमः।</p> <p>॥ इति कलश स्थापनम्॥</p> | <p><b>हवन-विधि</b></p> <p>बनायल हवन कुण्ड या हवन वेदी क कुश सँ बहारि ओहि कुश के ईशान कोन में फेकि गोबर जल सँ नीपि सुवक जड़ि सँ पहिने दक्षिण भाग प्रादेश मात्र पूर्वाग्र रेखा कय पुनः ताहि सँ उत्तर द्वितीय रेखा ताहि सँ उत्तर तृतीय रेखा कऽ तीनू रेखाक मध्य सँ दहिना हाथ क अनामिका अंगुष्ठा सँ माटि फेकि जल सँ सिक्त कऽ कासाक पात्र मे आगि लऽ अपना सम्मुख चूप्पहि रेखा पर अग्नि स्थापित करथि।</p> <p><b>ब्रह्मास्थापन-</b> अग्निक दक्षिण भाग कुश पर अक्षत-चन्दन-पुष्पादि लय-ॐ अस्मिन्कर्मणि त्वम्मे ब्रह्मा भव।</p> <p>● <b>प्रणीता</b> पात्र आगाँ राखि जल सँ भरि कुश सँ झाँपि ब्रह्मादिश देखैत आगिक उत्तर कुश पर प्रणीता पात्र राखि देथि।</p> <p>● तखन ६४ कुश सँ अग्नि केँ परिस्तरण करी तदुत्तर सोलह कुा हाथ में लऽ अग्निकोन सँ ईशान कोन धरि कुश राखि पुनः ब्रह्मा सँ अग्नि पर्यन्त, नैऋत्य कोन सँ वायव्य कोन धरि, अग्नि सँ प्रणिता पर्यन्त कुश राखथि।</p> <p>● <b>तखन पैता</b> वनेवाक कुश दोसर कुश सँ लगाय तोड़ि प्रादेश मात्रक दू गोट पैता वनाय पैता सहित दहिना हाथें प्रणीताक जल तीनि वेरि प्रोक्षणीपात्र में दऽ दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ उतराग्र पैता धऽ प्रोक्षणीक जल तीनि वेरि अपना ऊपर छीटथि।</p> <p>● <b>तखन प्रोक्षणीपात्र</b> वाम हाथ से लऽ दहू पैता दहिन हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ धऽ पुनः तीनि वेरि प्रोक्षणीक जल अपना ऊपर छीटथि।</p> <p>● <b>तखन प्रणीताक</b> जल सँ प्रोक्षणी केँ सिक्त केँ प्रोक्षणीक जल सँ संघटित सभी वस्तु केँ सिक्त करथि।</p> <p>● <b>तखन अग्नि प्रणीताक</b> बीच प्रोक्षणी पात्र राशि देथि।</p> <p>● <b>घृतक पात्र</b> मे भी दऽ आगि पर चढ़ाय जरैत खढ़ घीक ऊपर प्रदक्षिणक क्रमे घुमाय आगि में छोड़ि देथि। तखन सुव केँ तपावथि</p> <p>● <b>कुश सँ सुव</b> के जड़ि सँ जड़ि बीच सँ बीच अन्त सँ अन्त भाग के झाड़ि सुव के पुनः तीन वेरि तपाय दहिन भाग सुव केँ राखि देथि।</p> <p>● <b>घी केँ तीन</b> वेरि आगि पर सँ उतारि दुहू हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ पैता लऽ प्रीक्षणी जेकाँ घी केँ तीन वेरि अपना ऊपर छीटि पुनः दुहू पैता दहिना हाथक अनामिका अंगुष्ठा सँ लऽ वाम हाथें घीक पात्र धयने पैता सँ तीनि वेरि अपना उपर छीटि पैता प्रोक्षणी मे दऽ</p> <p>● <b>घी केँ देखि</b> किछु अधलाह वस्तु होतैं बाहर कऽ विरनी कुश वाम हाथ में लऽ तीनि गोट आमक काठी पे घी लगाय ऊठि मन सँ प्रजापतिक ध्यान कऽ चुप्पहि आगि मे छोड़ि देथि। तखन वैसि पैता सहित प्रोक्षणीक जल सँ प्रदक्षिण क्रमें आगि केँ कऽ प्रणीता पात्र मे पैता राखि</p> <p>● घी सँ बारह आहुति हवन करथि-</p> <p>ॐ प्रजापतये स्वाहा इंद प्रजापतये॥ (एहि मंत्र क मन मे ही उच्चारण करी)</p> <p>ॐ इन्द्राय स्वाह इंद इन्द्राय। ॐ अग्नये स्वाह इंद अग्नये॥</p> <p>ॐ सोमाय स्वाहा इंद सोमाय। ॐ भूः स्वाहा इंद भूः।</p> <p>ॐ भुवः स्वाहा इंद भुवः ॐ स्वः स्वाहा इंद स्वः। ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा, इंद भूर्भुवः स्वः।</p> <p>ॐ त्वन्नोऽअग्ने व्वरूणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा श्सि प्रमुमुग्ध्य स्मत् स्वाहा इदमग्निवरूणाभ्याम्। (प्रत्येक बेर सुवक अवशेष.... जल में त्यागिदी)</p> <p>ॐ सत्त्वन्नोऽअग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठोऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरूणश्ं रराणो व्वीहिमृडीक श्सि प्रमुमुग्ध्य स्मत् स्वाहा इदमग्निवरूणाभ्याम्।</p> <p>ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभि शस्ति पाश्चसत्य मित्त्व मया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज श्ंस्वाहा इदमग्नये। ॐ ये ते शतं वरूण ये सहस्रं यज्ञिताः पाशा वितता महान्तः तेभिन्नोऽअद्य सवितोत विष्णुर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरूतः स्वर्काः स्वाहा इंद वरूणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरूद्भ्यः स्वर्कभ्यः।</p> <p>ॐ उदुत्तमं वरूण पाशमस्मदवाधमं विमध्यम श्ंश्रथाय। अथावयमादित्यव्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा, इंद वरूणाय।</p> | <p>● <b>नवग्रह समिधा सँ हवन-</b></p> <p>● <b>सूर्य-अर्क( आकन ) लकड़ी लऽ-</b>ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेनादेवो याति भुवनानि, स्वाहा, इंद सूर्याय।</p> <p>● <b>चन्द्रपलाशक लकड़ी लऽ-</b>ॐ इमं देवा असपत्नग्वं सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाश्ंराजा स्वाहा, इंद चन्द्राय।</p> <p>● <b>मंगल-खैरक लकड़ी लऽ-</b>ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् अपाश्ं रेताश्ं सि जिन्वति स्वाहा, इंद कुजाय।</p> <p>● <b>बुधु-चिरचिर लकड़ी लऽ-</b>ॐ उद्बुध्यस्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सश्ं सृजेथामयञ्च। असमिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत स्वाहा इंद बुधाय।</p> <p>● <b>बृहस्पति-पीपरक लकड़ी लऽ-</b>ॐ वृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रग्वं स्वाहा, इंद बृहस्पतये</p> <p>● <b>शुक्र-गुलरकके लकड़ी लऽ-</b>ॐ अन्नात्परिसुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिवत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानश्ं शुक्रमन्थास इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु स्वाहा, इंद शुक्राय</p> <p>● <b>शनि-समि लऽ-</b> ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्त्रवन्तु नः स्वाहा, इंद शनैश्चराय।</p> <p>● <b>राहु-दूवि लऽ-</b> ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता स्वाहा, इंद राहवे</p> <p>● <b>केतु-कुश लऽ-</b> ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः स्वाहा इंद केतवे</p> <p>● शाकल्य सँ प्रधान देवता क हवन प्रारम्भ करी तदुपरान्त आवाहित पूजितादि देवता क हवनोपरान्त तर्पण, मार्जन कऽ</p> <p>● तदुत्तर परिस्तरण वला कुश सभ समेटि घी लगाए आगुक मंत्र सँ हवन से देथि- ॐ देवा गातुविदो गातुं वित्वा गातुमित। मनसस्पतऽइमं देव यज्ञश्ं स्वाहा वाते धाः स्वाहा।</p> <p>ब्रह्मा क दक्षिणा ● <b>ब्रह्मदक्षिणा-</b> कुश, तिल, यव, द्रव्य लऽ- ॐ अद्य अमुके मासे अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुकवासरे अमुक गोत्रोत्पन्न (यजमानक गोत्र) अमुकशर्मा (यजमानक नाम), कृतैतत् अमुक (जप, पाठ) होमवर्क प्रतिष्ठार्थम् इंद पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतम् अमुक- गोत्राय (ब्राह्मण क गोत्र नाम) अमुकशर्मणेब्राह्मणाय ब्रह्मणे दक्षिणान्तुभ्यमहं सम्प्रददे। इ कहि ब्रह्मा केँ देथि।</p> <p>● <b>प्रणीता</b> सँ दुहू पैता दुहू हाथक अनामिका अंगूष्ठा सँ उत्तराग्र धऽ- ॐ सुमित्रियानऽ आप ओषधयः सन्तु। <b>एहि मन्त्र सँ दुहू पैता सँ प्रणीताक जल अपना ऊपर छीटि शेष जल-</b> ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्मः। कहि ईशान कोन में पलटि देथि।</p> <p>● <b>पूर्णाहुति-</b> सुव मे पान, नारियल दहिन हाथें लऽ ऊठि आगु क मंत्र सँ पूर्णाहुति करी-ॐ मूर्द्धानं दिवो ऽअरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृतऽ आजातमग्निम्। कविश्ं सम्राजमतिथिञ्जनानामासन्नापात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा।</p> <p>● तदुत्तर घी सँ अखण्ड धार सँ वसोधारा करी- ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुत्वा कामधुक्षः स्वाहा। वसुभ्यः। अग्नि में अखण्ड घीक धार देथि, आ सुवक अवशेष प्रोक्षणीक पात्र में त्यागी।</p> <p>● <b>स्रवक पृष्ठ भाग सँ भस्म लऽ त्रायुष करथि-</b> ॐ त्रायुषं जमदग्नेः इति ललाटे। लालट मे लगावथि।</p> | <p><b>सर्व कर्म उपयोगी शान्तिकलश</b> <span>१४</span></p> <p><b>अभिषेक मंत्र-</b></p> <p>कलश हाथ में उठवैत- ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्ये महे। उपप्रयन्तु मरूतः सुदानव इन्द्रप्राशुर्भवासवाः। आमक पल्लव सँ कलशक जल में घुमवैत आगुक मंत्र पढ़ि-</p> <p>ॐ सुरास्त्वामभिषिञ्न्तु ब्रह्मविष्णु महेश्वराः। वासुदेवी जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः॥</p> <p>प्रद्युम्नश्चानिरूद्धश्च भवन्तु विजयाय ते। आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निऋतिस्तथा॥</p> <p>वरूणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः। ब्रह्मणा सहितः शेषो दिक्पालाः पान्तु ते सदा॥</p> <p>कीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः। बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः तुष्टिः कान्तिश्च मातरः॥</p> <p>एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः सभागताः। आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधजीवसितार्कजाः॥</p> <p>ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः। देवदानवगन्धर्वा यक्षराक्षसपन्नगाः॥</p> <p>ऋषियो मनवो गावो देवमातर एव च। देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः॥</p> <p>अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च। औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्च ये॥</p> <p>सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः। एते त्वामभिषिञ्चन्तु सर्वकामार्थ सिद्धये॥</p> <p>ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः ॐ शान्तिः।</p> <p>॥ इति व्यास रचित अभिषेकम्॥</p> |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|



१४

३१

२

२८

२०

३०

१५

१४

२०

१५

१६

१९

४४

६

१९

१९

रोग भगाने का यंत्र-

इस यंत्र को भोजपत्र पर शुभ मुहूर्त में लिखकर काले धागे में बांधकर रोगी के गले में धारण कराने से रोग जल्द ठीक हो जाता है।

गर्भ संबंधि प्रश्न:-

नवद्वयं गर्भिणीनामयुक्तं तिथिप्रयुक्तं रसंसंयुतञ्च।  
एकेन उनं नवभागधेयं समे कुमारी विषमे कुमारः॥

स्त्री के नाम राशि को ७ से गुणाकर तत्कालिक तिथि का योगकर उसे ९ का भाग दे। भाग देने पर समराशि, २, ४, ६, ८ शेष रहे तो कन्याजन्म, विषम राशि १, ३, ५, ७ शेष रहे तो पुत्र जन्म और शून्य रहने पर गर्भस्य जातक की मृत्यु होगी ऐसा कहना चाहिये।

अपर विधि:- तिथिवारं च नक्षत्रं गर्भिणी नामसंयुतम्। सप्तभिश्च हरेद्भागं शेषं च फलमादिशेत्॥ समे च कन्या विषमे पुत्रो निःशेषभागं मरणाय नूनम्।

पुत्र पुत्री जन्म विचार:- प्रश्नवणीमात्रौतिथिवारर्क्षं च संयुतम्। सप्तभर्विशेषेण समेस्त्री विषमे पुमान्। सन्तानचिन्ता प्रश्न:- प्रश्न के दिन की संख्या को ३ से गुणा करके उसमें प्रश्नकाल की तिथि को भी जोड़ देवे और उसमें २ से भाग दे यदि १ शेष बचे तो सन्तान की सम्भावना होगी, किन्तु २ या ० शून्य बचे तो संतान की सम्भावना नहीं करनी चाहिये।

गर्भ स्थिर रहने का यंत्र-

|       |        |                                                                                                                                                                                                     |    |
|-------|--------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----|
| जिस   | रविवार | को मूल नक्षत्र पड़े, उसी दिन यह यंत्र बनाकर गर्भवती स्त्री को धारण कराने से गर्भ खण्डन (गर्भपात) नहीं होता है और गर्भ स्थिर रहता है। यंत्र, भोजपत्र पर अष्ट गनध की स्याही तथा अनार की कलम से लिखें। |    |
| ओं    | ओं     | ओं                                                                                                                                                                                                  | ओं |
| ओं    | ओं     | ओं                                                                                                                                                                                                  | ओं |
| ह्रीं | ह्रीं  | ह्रीं                                                                                                                                                                                               | १  |
| ह्रीं | ह्रीं  | ह्रीं                                                                                                                                                                                               | ७  |

गर्भवती स्त्री की पीड़ा ( प्रसव पीड़ा ) दूर करने का यंत्र-

कांसे की थाली में इस यंत्र को लिखें और उसमे जल भरकर पिलाने से गर्भवती स्त्री की पीड़ा या प्रसव पीड़ा दूर होती है।

कार्य भविष्यतिनवा:-

दिशा प्रहर संयुक्तम् तारकावारमिश्रिततम्।  
अष्टाभिश्च हरेद्भागं शेषं प्रश्नस्य लक्षणम्॥  
पंचैके त्वरिता सिद्धिः षटतुर्ये च दिनत्रयम्।  
त्रिसप्तके विलम्बं च द्वौ चाष्टौ न च सिद्धिदौ॥

वरप्राप्ति हेतु उपाय:-

प्रथमविधि- स्वयं कन्या स्नान करके दीपक व धूप जलाकर गन्धाक्षत पुष्प से श्री माँ पार्वती की अर्चना कर वं पं क्लीं का १०८ वार जप करें तदन्तर अधोलिखित मंत्र का प्रतिदिन प्रातः व सायं पाँच पाँच माला जप करें। यह प्रयोग ४५ दिन का है। रजस्वला समय में पाँच दिनों तक बन्द रखें। मन्त्र:- ॐ क्लीं कात्यायनी महामाये महायोगिन्य धीश्वरी क्ली ॐ दं पं नन्दगोप सुतं देवि पतिं मे कुरुते नमः पं दं। अन्त में ७ कन्याओं एवं २ बटुक को खीर व बेसन के बने पदार्थों का भोजन करावें।

|   |    |    |    |       |       |
|---|----|----|----|-------|-------|
| ८ | ३  | १० | पं | लं    | ह्रीं |
| ९ | ७  | ५  | ऐं | क्लीं | पं    |
| ४ | ११ | ६  | दं | लं    | पं    |

द्वितीय विधि- इस मंत्र को कन्या प्रारम्भ कर मृगशिरा नक्षत्र में केला के पत्ते पर प्रतिदिन नौ वार लिखें। यह प्रयोग ७२ दिन का है। ५ दिनरजस्वला काल के समय में बन्द रखें। अन्तमें ९ कन्या तथा ५ बटुक को दूध से बने पदार्थों का भोजन करावें एवं वस्त्र, श्रीफल, द्रव्यादि दक्षिणा दें। लिख मंत्र को ॐ क्लीं पं दं लं मंत्र का उच्चारण करते हुए देवी पार्वती के चरणों में अर्पित करें।

अथ विवाह प्रश्न:-

कर्क तौली वषाश्चन्द्रयुक्ताः शुभनिरीक्षिताः। पृच्छाकाले तदा नृणां कन्या लाभो भवेद् ध्रुवम्॥ योषिद् ग्रहस्थिताः शेषाः पश्यन्ति स्त्रीनवांशकम्। लग्ने च स्यात्तदा लाभः स्त्रियां पुंसोऽपि तादृशः॥

वशीकरणमंत्र-

ॐ नमो महायक्षिणी पतिं वश्यं आनय कुरू कुरू स्वाहा इस मंत्र को गुरु पुष्प योग में या शुभ मुहूर्त में ११ माला जप ११ दिन तक करें। तदनन्तर कपूर, चन्दन और तुलसीदल को गो दुध में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से पति वश में हो जाता है।

तिल-विचार:-

मस्तकपर - धनवान  
दाहिने आँखपर- स्त्री से प्रेम  
बायी आँखपर- स्त्री से कलह  
दोनों भौहों के बीच- अधिक यात्रा  
टुड्ढी में- स्त्री से कटुता  
दाहिने गाल पर- धनवान  
बाये गाल पर- खर्चअधिक  
ओष्ठ पर- कामसक्ति  
गर्दनपर- आराम-मयजीवन।  
कानपर- अल्पायु  
नाकपर- अधिकयात्रा  
नाक के अग्रभागपर- काम मे सरलता  
ओष्ठ के नीचे- निरधनता  
नाक के अग्रभाग पर- कार्यसिद्धि  
ओष्ठ के नीचे की भाग पर- निरधनता  
नाक के बाईं तरफ- धूर्त  
दाहिने भुजा पर- सम्मान व यशप्राप्ति  
बायी भुजा पर- झगडालू  
दाहिनी छाती पर- स्त्री से प्रेम।  
बांयीछातीपर- स्त्री से कलह।  
दोनों छाती के बीच- सुखमयजीवन।  
कमर मे- कष्टमय जीवन।  
पीठपर- उत्तमभोजनप्रिय  
दाहिने हाथ के पृष्ठपर- यात्रामय जीवन  
बायी हाथ के पृष्ठपर- धनवान।  
दाहिने हथेलीपर- अल्पव्ययी।  
बायीं हथेलीपर- शक्तिशाली  
पेट के मध्य में- अधिक खर्चालु  
दाहिने पैर पर- डरपोक  
वाये पैरपर- बुद्धिमान  
अधिककव्ययी।

ग्रहों का विशेष विवरण तथा यंत्र

ग्रह-सूर्य (Sun)

रत्न- माणिक्य (Ruby)

उपरत्न- लालड़ी, लालतामड़ा, लालहकीक

धातु- स्वर्ण, ताम्बा

अंगुली- तर्जनी, अनामिका

रत्ती में- ३, ५

दिन- रवि, सोम, गुरू

अंगुली- तर्जनी, अनामिका

दानवस्तु- गोहूँ, गुड़, कमल,

पुष्प, लालचन्दन, लालवस्त्र, सोना, ताँबा, दक्षिणा

दान समय - रविवार सूर्योदय समय।

जपसंख्या - ७०००। कलियुग में - २८०००

ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- सूर्य के अरिष्ट निवारण एवं कुष्ठरोग, क्षदयरोग, सिर दर्द, रक्तचांप, नेत्रदोष, रक्तविकार आदि रोगों में लाभ

चन्द्रमा (Moon)

रत्न - मोती (Pearl)

उपरत्न- शंखमूंगा, दुधिया, हकीक, सीप

लग्न से शुभ - १, ४, ८, १२

धातु- चाँदी

अँगुली- अनामिका

रत्ती - २, ४, ६, ११

दिन - सोम

दानवस्तु- घृत, चावल,

श्वेतवस्त्र, श्वेतचन्दन, श्वेतपुष्प, चाँदी, शंख, दक्षिण

जपसंख्या - ११००० कलियुग में ४४०००

ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- चन्द्रमा जन्यअरिष्ट, मानसिकरोग, मुर्च्छा, मिर्गी, उन्माद, दमा, श्वांस, कैंसर आदि।

मंगल (Mars)

रत्न- मूंगा (Coral)

उपरत्न- गारनेट, लाहकी लालगोमेद

धातु- स्वर्ण, ताम्बा

अंगुली- अनामिका,तर्जनी

रत्ती - ६, ८, १०, १२

दानवस्तु - मूँगा, भूमि, मसूरदाल, लालवृष, गुड़, लालचन्दनवस्त्रपु प, सुवर्ण

जपसंख्या - १०००० कलियुग में ४०,०००

ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- रक्तविकार, भूतप्रेतबाधा, हृदयरोग, वायु, कफ, विकार, पित्तादि, उदर, विकार आदि।

बुध (Mercury)

रत्न- पन्ना (Emerald)

उपरत्न- फिरोजा,हरा हकीक,मरगज, ओनेक्स

धातु - स्वर्ण या कांसा

अंगुली - कनिष्ठा

रत्ती - ३, ५, ७,

दिन - बुधवार

दानवस्तु - कांस्यपात्र, हरित वस्त्र, गजदन्त

घृत मूँग सुवर्ण, सर्वपुष्प, कपूर

जपसंख्या - ८००० कलियुग में- ३२,०००

ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- त्वचा विकार, पथरी, ब्रहमूत्र, दमा, गुर्दा रोग, पाण्डुरोग या मानसिक रोग में लाभ।

व्यापार वृद्धि यंत्र-

इस यंत्र को भोजपत्र पर केसर की स्याही एवं अनार की कलम से दीपावली को रात्रि में लिखकर सविधि पूजन कर- ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ह्रीं महालक्ष्म्यै नमः मंत्र का ११०० सौ जप करें। तदनन्तर यंत्र को दुकान में रखकर प्रतिदिन पूजन करें।

बृहस्पति (Jupiter)

रत्न- पुखराज (Sapphire)

उपरत्न-पीला मोती, सुनैलापीला, जिरकान

धातु-स्वर्ण

अंगुली-तर्जनी

रत्ती-८,७

दिन- गुरूवार

दानवस्तु-चने की दाल, पीतवस्त्रपुष्प, हरदी, पुस्तक, मधु, लवणादि

जप संख्या २६०००।

ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- जप संख्या १६००० कलियुग में - ६४,०००

ग्रहजन्य बाधा-मधुमेह, लीवर, पीलिया, प्रेत बाधा।

शुक्र (Venus)

रत्न- हीरा (Diamond)

उपरत्न- सफेदहकीक, स्फटिक, ओपल

धातु- प्लेटेनम

अंगुली- मध्यमा/कनिष्ठा

रत्ती- ३,५

दिन- शुक्र

दानवस्तु-तण्डुल, श्वेतचन्दनवस्त्र, घृत, दधि, श्वेतगौ

जप-संख्या ११००० कलि में - ४४,०००

ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ -वीर्य विकार, दौर्बल्य, नपुंसकता, वायु प्रकोप, प्रमेह, श्वेदप्रदर, हृदय रोग, मानसिक कमजोरी आदि।

कामना पूरक यन्त्रम्-

इस मंत्र को लाल चन्दन से बिल्व पर १०८ बार लिखकर श्रावण मास के सोमवार को शिव लिंग पर चढ़ाने से इच्छा शक्ति एवं मनो कामना पूर्ति होती है।

|    |    |    |    |
|----|----|----|----|
| वं | वं | वं | वं |
| पं | पं | पं | पं |
| दं | दं | दं | दं |
| लं | लं | लं | लं |

सौभाग्य वृद्धि यंत्र-

इस यंत्र को गुरू पुष्प योग में अष्ट गन्ध की स्याही एवं अनार के कलम से भोजपत्र पर लिखकर तथा सविधि त्रिगुणात्मिका दुर्गा की पूजन कर स्त्री धारण करें तो सौभाग्य की वृद्धि होती है।

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| ५ | ६ | ३ | ६ |
| ४ | ४ | ७ | ७ |
| ६ | ६ | ३ | ५ |
| ५ | ४ | ७ | ४ |

शनि (Saturn)

रत्न- नीलम (Sapphire)

उपरत्न-नीलाजिरकान, कटैला पाइनल

धातु-पंचधातु धातुया स्टील।

अंगुली-मध्यमा। रत्ती-५,७, ९,१२। दिन- शनिवार

दानवस्तु-माष, तैल, तिल, कालवस्त्रगौपुष्प कुरथी, लोहा, कस्तूरी। सुवर्णादि

जप संख्या २६०००।ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- दमा, क्षय, ग्रन्थीय, अर्जीण, हृदय रोग, कुष्ठ रोग आदि।

राहु (Rahu)

रत्न- गोमेद (Zircon)

उपरत्न- गोमेद रंग का हकीक

धातु-अष्टधातु या चाँदी अंगुली-मध्यमा।

रत्ती-७, ९। दिन- शनि, दानवस्तु-माषात्र, कस्तूरी, हेमनाग, नीलवल्ली, तिलतैल, लोहासूप, कम्बल।

जप संख्या १८००० ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ -लकवा, त्वचा रोग, मस्तिष्क दुर्बलता, वातजन्य रोग आदि।

केतु (Ketu)

रत्न- लहसुनिया Cats Eye

धातु- पंचधातुया चांदी

अंगुली-मध्यमा। रत्ती-७,९ दिन- शनि-बुध,

दानवस्तु-माषात्र, कम्बल, कस्तूरी, तिल, लोहा, बकरा, शास्त्र, सप्तधानादि जप संख्या ७०००। ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ -वायु विकार, प्रमेह, हृदयरोग, श्वेदप्रदर, मानसिक दुर्बलता, आँत की बीमारी आदि।

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| ५ | ६ | ३ | ६ |
| ४ | ४ | ७ | ७ |
| ६ | ६ | ३ | ५ |
| ५ | ४ | ७ | ४ |

गये हुए व्यक्ति को वापस बुलाने का यंत्र-

इस यंत्र को जमीन पर उंगली से लिखें, तो गया आदमी शीघ्र घर लौटा आता है। वापसी तक प्रतिदिन यंत्र लिखा करें।

शनि (Saturn)

रत्न- नीलम (Sapphire)

उपरत्न-नीलाजिरकान, कटैला पाइनल

धातु-पंचधातु धातुया स्टील।

अंगुली-मध्यमा। रत्ती-५,७, ९,१२। दिन- शनिवार

दानवस्तु-माष, तैल, तिल, कालवस्त्रगौपुष्प कुरथी, लोहा, कस्तूरी। सुवर्णादि।

जप संख्या २६०००।

ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ- दमा, क्षय, ग्रन्थीय, अर्जीण, हृदय रोग, कुष्ठ रोग आदि।

राहु (Rahu)

रत्न- गोमेद (Zircon)

उपरत्न- गोमेद रंग का हकीक

धातु-अष्टधातु या चाँदी

अंगुली-मध्यमा।

रत्ती-७, ९। दिन- शनि, दानवस्तु-माषात्र, कस्तूरी, हेमनाग, नीलवट्टूरी, तिलतैल, लोहासूप, कम्बल।

जप संख्या १८०००

ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ -लकवा, त्वचा रोग, मस्तिष्क दुर्बलता, वातजन्य रोग आदि।

केतु (Ketu)

रत्न- लहसुनिया Cats Eye

धातु- पंचधातुया चांदी

अंगुली-मध्यमा। रत्ती-७,९ दिन- शनि-बुध,

दानवस्तु-माषात्र, कम्बल, कस्तूरी, तिल, लोहा, बकरा, शास्त्र, सप्तधानादि

जप संख्या ७०००।

ग्रहजन्य अरिष्ट एवं रोगों में लाभ -वायु विकार, प्रमेह, हृदयरोग, श्वेदप्रदर, मानसिक दुर्बलता, आँत की बीमारी आदि।

|   |   |   |   |
|---|---|---|---|
| ५ | ६ | ३ | ६ |
| ४ | ४ | ७ | ७ |
| ६ | ६ | ३ | ५ |
| ५ | ४ | ७ | ४ |

गये हुए व्यक्ति को वापस बुलाने का यंत्र-

इस यंत्र को जमीन पर उंगली से लिखें, तो गया आदमी शीघ्र घर लौटा आता है। वापसी तक प्रतिदिन यंत्र लिखा करें।



|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |
|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <div>महामृत्युञ्जय मन्त्र जपविधि:-</div> <div>श्री गणेशादिरमरणपूर्वकंशान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रय तिलजलान्यादाय <b>संकल्पः-</b> ॐ अद्य अमुके मासि अमुके पक्षे अमुक तिथौ अमुक गोत्रस्य श्री अमुक शर्मणः उपस्थित शरीरा-विरोधेन अखिलारिष्टझटिति प्रशमनपूर्वक-दीर्घायुष्ट्व-बलपुष्टिनैरूज्य-प्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गत माध्यन्दिनशाखीय <b>‘ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवधर्मनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरो जूं सः हौं ॐ’</b> इति महामृत्युंजय मन्त्रस्य एतत्सहस्र-संख्यकजपमहं करिष्ये।</div> <div><b>विनियोगः-</b> ॐ हौं ॐ जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरो जूं सः हौं ॐ अस्य श्री महामृत्युञ्जय मन्त्रस्य वामदेवकहोल-वशिष्ठाः ऋषयः, पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युंजयरूद्रा देवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युंजयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।</div> <div><b>ऋष्यादिन्यासः-</b> वामदेव-कहोल-वशिष्टऋषिभ्यो नमः शिरसि। पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। सदाशिवमहामृत्युञ्जय- रूद्रदेवताभ्यो नमः हृदि। हौं बीजाय नमः नाभौ। जूं शक्तये नमः पादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे।</div> <div><b>हृदयादिन्यासः-</b> ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रूद्राय शूलपाणये स्वाहा <b>हृदयाय नमः।</b> ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामह ॐ नमो भगवते रूद्राय अष्टमूर्तये मां जीवय <b>शिरसि स्वाहा</b>, ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रूद्राय चन्द्रशिरशि जटिने स्वाहा <b>शिखायै वषट्।</b> ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः उर्वारूकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रूद्राय त्रिपुरान्तकाय हौं ह्रीं ह्रौं <b>कवचाय हुम्।</b> ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवतेरूद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रत्रयाय <b>नेत्रत्रयाय वौषट्।</b> ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमोभगवते रूद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्वालनाय मां रक्ष रक्ष अघोराय <b>अस्त्राय फट्।</b> इति षडङ्गन्यासः</div> <div><b>ध्यान-चन्द्रोद्रासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं वहद्वस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्पपंकेरूहम्। सूर्यन्दग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत्</b> इत्यनेन ध्यातवा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ शाकल्यादिभिः दशांशक्रमेण होम तर्पणमार्जनं ब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्।</div> <div><b>लघुमृत्युंजयमन्त्रः ॐ जूं सः।</b></div> | <div>यजुर्वेदीय न्यास सहित शान्ति मंत्र-</div> <div><b>सूर्य मन्त्र-</b> ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्न-मृतम्मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥</div> <div><b>विनियोगः-</b> ॐ आकृष्णेति मन्त्रस्य हिरण्यस्तूपाङ्गिरा ऋषिस्त्रिष्टुप्छन्दः सूर्यो देवता सूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।<br/>❖ <b>देहाङ्गन्यास-</b> आकृष्णेन शिरसि। रजसा ललाटे। वर्तमानो मुखे। निवेशयन् हृदये। अमृतं नाभौ। मर्त्यं च कट्याम्। हिरण्ययेन सविता ऊर्वोः। रथेना जान्वोः। देवो याति जंघयोः। भुवनानि पश्यन् पादयोः।<br/>❖ <b>करन्यासः-</b> आकृष्णेन रजसा अंगुष्ठाभ्यां नमः। वर्तमानो निवेशयन् तर्जनीभ्यां नमः। अमृतं मर्त्यं च मध्यमाभ्यां नमः। हिरण्ययेन अनामिकाभ्यां नमः। सविता रथेना कनिष्ठिकाभ्यां नमः। देवो याति भुवनानि पश्यन् करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।<br/>❖ <b>हृदयादिन्यासः-</b> आकृष्णेन रजसा हृदयाय नमः। वर्तमानो निवेशयन् शिरसे स्वाहा। अमृतं मर्त्यं च शिखायै वषट्। हिरण्ययेन कवचाय हुँ। सविता रथेना नेत्रत्रयाय वौषट्। देवो याति भुवनानि पश्यन् अस्त्राय फट्। ध्यानम्- पद्मासनः पद्मकरो द्विबाहुः पद्मद्युतिः सप्ततुरङ्गवाहनः। दिवाकारो लोकगुरुः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥</div> <div>❖ <b>चन्द्र का वैदिक मन्त्र-</b> ॐ इमन्देवा असपत्नश् सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै त्विशऽएष वोऽमी राजा सोमोस्माकं ब्राह्मणानाश् राजा।<br/>❖ <b>विनियोगः-</b> इमन्देवेतिमन्त्रस्य गौतम ऋषिः, सोमो देवता, विराट् छन्दः, सोमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।<br/>❖ <b>देहाङ्गन्यास-</b> इमं देवा शिरसि। असपत्न ग्वंग ललाटे। सुवध्वं नासिकायाम्। महते क्षत्राय मुखे। महते ज्येष्ठ्याय हृदये। महते जानराज्याय उदरे। इन्द्रस्येन्द्रियाय नाभौ। इममुष्य कट्याम्। पुत्रममुष्यै मेढ्रे। पुममस्यै ऊर्वोः। विशऽएष के जान्वोः। मीराजा जंघयोः। सोमोऽस्माकं गुल्फयोः। ब्रह्मणानां गवड राजा पादयोः।<br/>❖ <b>करन्यास-</b> इमं देवा असपत्न गवड सुवध्वं अंगुष्ठाभ्यां नमः। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय तर्जनीभ्यां नमः। महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय मध्यमाभ्यां नमः। इमममुष्य पुत्रममस्यै पुत्रमस्यै अनामिकाभ्यां नमः। विशऽएष वो-मीराजा कनिष्ठिकाभ्यां नमः। सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां गवङ्ग राजा करतलकरपृष्ठा भ्यां नमः।<br/><b>हृदयादिन्यासः-</b> इमं देवा असपत्न गवड सुवध्वं हृदयाय नमः। महते क्षत्राय महते ज्येष्ठ्याय शिरसे स्वाहा। महते जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय शिखायैवौषट्। इमममुष्य पुत्रममस्यै पुत्रमस्यै कवचाय हुम्। विशऽएष वो मीराजा नेत्रत्रयायवौषट्। सोमोऽस्माकं ब्रह्मणानां गवड राजा अस्त्राय फट्।<br/>❖ <b>ध्यानम्-</b> श्वेताम्बरः श्वेतविभूषणश्च श्वेतद्युतिर्दण्डधरो द्विबाहुः। चन्द्रोऽमृतात्मा वरदः किरीटी मयि प्रसादं विदधातु देवः॥</div> <div>❖ <b>मंगल वैदिक मंत्र-</b><br/>ॐ अग्निमूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या, अपाश् रेताश्सि जिन्वति।<br/>❖ <b>विनियोगः-</b> ॐ अग्निमूर्द्धेति मन्त्रस्य विरूपाङ्गिरस ऋषिः, अग्निर्देवता, गायत्री छन्दः भौमप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।<br/>❖ <b>देहांगन्यासः-</b> ॐ अग्निः शिरसि। मूर्द्ध ललाटे, दिवः मुखे, ककुत् हृदये, पतिः उदरे। पृथिव्या नाभौ, अयं कट्याम्, अपागवं जान्वो, रेताग्वंसि गुल्फयोः, जिन्वति पादयोः। ❖ <b>करन्यासः</b> ॐ अग्निः मूर्द्धा</div> | <div>अंगुष्ठाभ्यां नमः, दिक्क ककुत् तर्जनीभ्यां नमः पतिः मध्यमाभ्यां नमः। पृथिव्या अयम् अनामिकाभ्यां नमः, अपागवं रेताग्वंसि कनिष्ठिकाभ्यां नमः, जिन्वति करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ❖ <b>हृदयादिन्यासः-</b> ॐ अग्निः मूर्द्धा हृदयाय नमः, दिवः ककुत् शिरसे स्वाहा, पतिः शिखायै वषट्। पृथिव्या अयं कवचाय हुम्। अपागवं रेताग्वंसि नेत्रत्रयाय वौषट्, जिन्वति अस्त्राय फट्। ध्यान- रक्तम्बरो रक्तवपुः किरीटी चतुर्भुजो मेघगतो गदाभृत्। धरासुतः शक्तिधरश्च शूली सदायमस्मद्वरदः प्रसन्नः॥</div> <div>❖ <b>बुध का वैदिक मंत्र-</b><br/>ॐ उद्बुध्स्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वामिष्ठापूर्ते सश् सृजेथामयञ्च। अस्मिन्तसधस्थे अध्येत्तरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥<br/>❖ <b>विनियोगः-</b> ॐ उदुध्यस्वेति मन्त्रस्य परमेष्ठी प्रजापति ऋषि, त्रिष्टुप्छन्दः बुधो देवता, बुधप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।<br/><b>देहांगन्यासः-</b> ॐ उद्बुध्स्वेति शिरसि, अग्नेः प्रति ललाटे, जागृहि त्वं मुखे, इष्ठापूर्ते हृदये, सग्वं सृजेथामयञ्च नाभौ, अस्मिन्तसधस्थे कट्याम्, अध्येत्तरस्मिन् ऊर्वोः, विश्वेदेवा जान्वोः यजमानश्च गुल्फल्योः सीदत पादयोः।<br/>❖ <b>करन्यासः</b> ॐ उद्बुध्स्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वम् अंगुष्ठाभ्यां नमः, इष्ठापूर्ते तर्जनीभ्यां नमः, सग्वं सृजेथामयञ्च मध्यमाभ्यां नमः, अस्मिन्तसधस्थे अध्येत्तरस्मिन् अनामिकाभ्यां नमः, विश्वेदेवा यजमानश्च कनिष्ठिकाभ्यां नमः, सीदत करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।<br/>❖ <b>हृदयादिन्यासः-</b> ॐ उद्बुध्स्वाग्नेः प्रतिजागृहि त्वम् हृदयाय नमः, इष्ठापूर्ते शिरसे स्वाहा, सग्वं सृजेथामयञ्च शिखायै वषट् , अस्मिन्तसधस्थे अध्येत्तरस्मिन् कवचय हुम्, विश्वेदेवा यजमानश्च नेत्रत्रयाय वौषट्, सीदत अस्त्राय फट्। <b>ध्यानम्</b> - पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दण्डधरश्च हारी। चर्मासिधृक् सोमसुतो गदाभृत् सिंहाधिरूढो वरदो बुधश्च॥</div> <div>❖ <b>गुरु( बृहस्पति ) वैदिक मंत्र-</b><br/>ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणस्येहि चित्रम्॥<br/>❖ <b>विनियोग-</b>बृहस्पतेति मन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः अनुष्टुप्, ब्रह्मा देवता, बृहस्पतिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।<br/>❖ <b>देहांगन्यासः-</b> ॐ बृहस्पते शिरसि, अतिदर्यो ललाटे, अर्हाद्युमत् मुखे, विभाति क्रतुमत् हृदये, जनेषु नाभौ, यद्दीदयत् कट्याम्, शवसऋतप्रजात ऊर्वो, तदस्मासु द्रविणं जान्वोः, धेहि गुल्फयोः चित्रं पादयोः। ❖ <b>करन्यासः-</b> ॐ बृहस्पते अतियदर्यो अंगुष्ठाभ्यां नमः, अर्हाद्युमत् तर्जनीभ्यां नमः, विभाति क्रतुमत् मध्यमाभ्यां नमः, जनेषु अनामिकाभ्यां नमः, यद्दीदयत् शवसऋतप्रजात-तदस्मासु कनिष्ठिकाभ्यां नमः, द्रविणं धेहि चित्रम् करतल करपृष्ठाभ्यां नमः ❖ <b>हृदयादिन्यासः-</b>ॐ बृहस्पते अतियदर्यो हृदयाय नमः, अर्हाद्युमत् शिरसे स्वाहा, विभाति क्रतुमत् शिखायै वषट्, जनेषु कवचाय हुम्, यद्दीदयत् शवसऋतप्रजात-तदस्मासु नेत्रत्रयाय वौषट्, द्रविणं धेहि चित्रम् अस्त्राय फट्।<br/><b>ध्यानम्-</b> पीताम्बरः पीतवपुः किरीटी चतुर्भुजोः देवगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रं च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्॥</div> <div>❖ <b>शुक्र का वैदिक मन्त्र-</b><br/>ॐ अन्नात् परिसृतो रसं ब्रह्मणा व्यतिबत्क्षरम्पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं वि्वपानश् शुक्रमन्धस इन्द्रस्ये-न्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु॥<br/>❖ <b>विनियोगः</b> अन्नात्परिसृतेति मन्त्रस्य प्रजातिऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, शुक्रो देवता, शुक्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।</div> | <div>❖ <b>देहांगन्यासः-</b> ॐ अन्नात् परिसृतः शिरसि, रसं ब्रह्मणा ललाटे, व्यपिबत्क्षत्रं मुखे, पयःसोमं हृदय, प्रजापतिः नाभौ, ऋतेन सत्यं कट्याम्, इन्द्रियं वि्वपानग्वं गुदे, शुक्रमन्धस ऊर्वो, इन्द्रस्ये-न्द्रियं जानुनोः, इदं पयः गुल्फयोः, अमृतं मधु पादयोः। ❖ <b>करन्यासः-</b> ॐ अन्नात् परिसृतः रसं अंगुठाभ्यां नमः, ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं तर्जनीभ्यां नमः, पयःसोमं प्रजापतिः मध्यमाभ्यां नमः, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं अनामिकाभ्यां नमः, वि्वपानग्वं शुक्रमन्धस कनिष्ठाभ्यां नमः, इन्द्रस्योन्द्रियामिदम्पयोमृतं मधु करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः। ❖ <b>हृदयादिन्यासः-</b> ॐ अन्नात् परिसृतः रसं हृदयाय नमः, ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं शिरसे स्वाहा, पयःसोमं प्रजापतिः शिखायै वषट्, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं कवचाय हुम्, वि्वपानग्वं शुक्रमन्धस नेत्रत्रयाय वौषट्, ऋतेन सत्यमिन्द्रियं कवचाय हुम्, वि्वपानग्वं शुक्रमन्धस नेत्रत्रयाय वौषट्, इन्द्रस्येन्द्रियमिदम्पयोमृतं मधु अस्त्राय फट्।<br/>❖ <b>ध्यानम्-</b> श्वेताम्बरः श्वेतवपुः किरीटी चतुर्भुजो दैत्यगुरुः प्रशान्तः। तथाऽक्षसूत्रञ्च कमण्डलुञ्च दण्डञ्च बिभ्रद्वरदोऽस्तु मह्यम्॥</div> <div>❖ <b>शनि का वैदिक मन्त्र-</b><br/>ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिःस्रवन्तु नः।<br/>❖ <b>विनियोगः-</b> शन्नो देवीति मन्त्रस्य सिन्धुद्वीप ऋषिः गायत्रीछन्दः, आपो देवता, शनिप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖ <b>देहांगन्यासः-</b> शन्नो शिरसि, देवीः ललाटे, अभिष्टय मुखे, आपो कण्ठे, भवन्तु हृदये, पीतये नाभौ, शं कट्याम्। योः ऊर्वो, अभि जान्वोः, स्रवन्तु गुल्फयोः नः पादयोः।<br/>❖ <b>करन्यासः-</b> शन्नो देवीः अंगुष्ठाभ्यां नमः, रभिष्टये तर्जनीभ्यां नमः, आपो भवन्तु मध्यमाभ्यां नमः, पीतये अनामिकाभ्यां नमः, शंय्योरभि कनिष्ठिकाभ्यां नमः, स्रवन्तु नः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖ <b>हृदयादिन्यासः-</b> शन्नो देवीः हृदयाय नमः, रभिष्टये शिरसे स्वाहा, आपो भवन्तु शिखायै वषट्, पीतये कवचाय हुम्, शंय्योरभि नेत्रत्रयाय वौषट्, स्रवन्तु नः अस्त्राय फट्।<br/>❖ <b>ध्यानम्-</b> नीलाम्बर शूलधरः किरीटी गृध्रस्थितस्त्रासकरो धनुष्मान्। चतुर्भुजः सूर्यसुतः प्रशान्तः सदाऽस्तु मह्यं वरदोऽल्पगामी॥</div> <div>❖ <b>राहु का वैदिक मंत्र-</b><br/>ॐ कया नश्चित्र आभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥<br/>❖ <b>विनियोगः-</b> कया नश्चित्रेति मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, गायत्री छन्दः, राहुर्देवताः, राहुप्रीत्यर्थे जप विनियोगः। ❖ <b>देहांगन्यासः-</b> कया शिरसि, न ललाटे, चित्र मुखे, आ कण्ठे, भुव हृदये, दूती नाभौ, सदा कट्याम्। वृधः मेढ्रे, सखा ऊर्वोः। कया जान्वोः, शचिष्ठया गुल्फयोः, वृता पादयोः।<br/>❖ <b>करन्यासः-</b> कया नः अंगुष्ठाभ्यां नमः, चित्र आ तर्जनीभ्यां नमः, भुवदूती मध्यमाभ्यां नमः, सदावृधः सखा अनामिकाभ्यां नमः। कया कनिष्ठिकाभ्यां नमः, शचिष्ठया वृता करतल करपृष्ठाभ्यां।<br/>❖ <b>हृदयादिन्यासः-</b> कया नः हृदयाय नमः चित्र आ शिरसे स्वाहा, भुवदूती शिखायै वषट्, सदावृधः सखा कवचाय हुम्। कया नेत्रत्रयाय वौषट्, शचिष्ठया वृता अस्त्राय फट्।<br/><b>ध्यानम्-</b> नीलाम्बरो नीलवपुः किरीटी करालवक्त्रः करवालशूली। चतुर्भुजश्चक्रधरश्च राहुः सिंहाधिरूढो वरदोऽस्तु मह्यम्॥</div> |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                              |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                     |



|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |  |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                           |  |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                               |  |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                   |  |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |  |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--|
| <div>केतु का न्यास सहित वैदिक मंत्र-</div> <div>ॐ केतुङ् कृण्वन्नकेतवे पेशा मर्याऽअपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।</div> <div>❖ विनियोग:- केतुं कृण्वन्निति मन्त्रस्य मधुच्छन्द ऋषिः, गायत्रीछन्दः, केतुर्देवता, केतुप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ❖ देहांगन्यास:- केतुं शिरसि, कृण्वन् ललाटे, अकेतवे मुखे, पेशो हृदये, मर्या नाभौ, अपेशसे कट्याम्। सं ऊर्ध्वोः। उषद्भिः जान्वोः, अजायथाः पादयोः।</div> <div>❖ करन्यास:- केतुं कृण्वन् अंगुष्ठाभ्यां नमः, अकेतवे तर्जनीभ्यां नमः, पेशो मर्या मध्यमाभ्यां नमः, अपेशसे अनामिकाभ्यां नमः, समुषद्भिः कनिष्ठिकाभ्यां नमः, अजायथाः करतल पृष्ठाभ्यां।</div> <div>❖ हृदयादिन्यास:- केतुं कृण्वन् हृदयाय नमः, अकेतवे शिरसे स्वाहा, पेशो मर्या शिखाये वषट्, अपेशसे कवचाय हुम्, समुषद्भिः नेत्रत्रयाय वौषट्, अजायथाः अस्त्राय फट्।</div> <div>ध्यानम्- धूम्रो द्विबाहुर्वरदो गदाधरो गृधानस्थो विकृताननश्च। किरीट- केयूरविभूषितो यः सदाऽस्तु में केतुगणः प्रशान्तः।</div>                                                                                                  |  | <div>मंगल का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र- ॐ अं अंगारकाय नमः।</div> <div>विनियोग:- ॐ अस्य श्रीभौममन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, अंगारको देवता, अं बीजं, आपः शक्तिः, अंगारकप्रीतये जपे विनियोगः। ❖ देहांगन्यास:- ॐ ब्रह्माऋषये नमः शिरसि, ॐ गायत्री छन्दसे नमः मुखे, ॐ अंगारक देवतायै नमः हृदये, ॐ अं बीजाय नमः गुह्ये, ॐ आपः शक्तये नमः पादयोः। ❖ करन्यास:- ॐ आं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॐ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः, ❖ हृदयादिन्यास - ॐ आं हृदयाय नमः, ॐ ई शिरसे स्वाहा, ॐ ऊं शिखाये वषट्, ॐ ऐ कवचाय हुम्, ॐ औं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ अः अस्त्राय फट्।</div> <div>ध्यानम् - नमाम्यंगारकं देवं रक्ताम्बरविभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताद्वयं साभयेतरपाणिकम्।</div>                                                                                                                              |  | <div>शनि का मंत्र- ॐ शं शनैश्चराय नमः।</div> <div>❖ विनियोग:- ॐ अस्य श्रीशनैश्चरमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, गायत्री छन्दः, शनैश्चरो देवता, शं बीजम्, आपः शक्तिः, श्रीशनैश्चरप्रीतये जपे विनियोगः।</div> <div>❖ हृदयादिन्यास:- ॐ शं हृदयाय नमः, ॐ शं शिरसे स्वाहा, ॐ सं शिखायै वषट्, ॐ शं कवचाय हुम् ॐ शं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ शं अस्त्राय फट्।</div> <div>ध्यानम्- ॐ नीलांजनाभं मिहिरस्य पत्रं ग्रहेश्वरं पाशभुजंगपाणिम्। सुरासुराणां भयदं द्विबाहुं भजे शनिं मानस पंकजेऽहम्॥</div>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |  | <div>ग्रहों का सामवेदीयशान्ति मन्त्र-</div> <div>सूर्य-ॐ उदुत्यज्जातवेदसं देवं वहन्ति केवतः। दृशे विश्वायसूर्यम्।</div> <div>चन्द्र- ॐ सन्ते पयांसि समयन्तुबाजाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः।</div> <div>आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व॥</div> <div>कुजस्य- ॐ अग्निमूर्द्धादिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयमपागुं रेतागुंसि जिन्वति बुधः- ॐ अग्ने विश्वदुषसश्चित्रां राहनो अमर्त्य आदाशुषे।</div> <div>जातवेदो वहात्वमद्या देवो उषर्बुधः॥</div> <div>गुरोः- ॐ वृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्रां अपबाधमानः।</div> <div>प्रभञ्जत्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकमेध्यविता रथानाम्॥</div> <div>शुक्रस्यः- शुक्रन्ते अन्यद्यजन्ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वाहि माया।</div> <div>अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु।</div> <div>शनेः- ॐ शन्नो देवीरभिष्टय शन्नो भवन्तु पीतये। संयोरभिस्रबन्तु नः।</div> <div>राहोः- ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा। कयाशचिष्टया वृता।</div> <div>केतोः- ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।</div> |  | <div>ग्रहों का बीज मन्त्र-</div> <div>सूर्य-ॐ ह्रीं हौं सूर्याय नमः।</div> <div>चन्द्र- ॐ ऐं क्ली सोमाय नमः।</div> <div>मंगल- ॐ हुं श्रीं भौमाय नमः।</div> <div>बुध- ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।</div> <div>गुरू- ॐ ह्रीं क्लीं हुं वृहस्पतये नमः।</div> <div>शुक्र- ॐ ह श्रीं शुक्राय नमः।</div> <div>शनि- ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।</div> <div>राहु- ॐ ऐं ह्रीं राहवे नमः।</div> <div>केतु- ॐ ह्रीं ऐं केतवे नमः।</div> |  |
| <div>सूर्यादि ग्रहो का न्यास सहित तान्त्रिक मन्त्र-</div> <div>सूर्य का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ हाँ ह्रीं सः</div> <div>विनियोग:- ॐ श्रीसूर्यमन्त्रस्य अज ऋषिः, गायत्री छन्दः, सूर्यो देवता हां बीजम्, ह्रीं शक्तिः, सः कीलकम् श्रीसूर्यप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ॠष्यादिन्यास-ॐ अज ऋषये नमः शिरसि। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः मुखे। ॐ सूर्यदेवतायै नमः हृदि। ॐ हाँ बीजाय नमः गुह्ये। ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादपोः।</div> <div>ॐ सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। अंगन्यास- ॐ आं ह्रीं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ई ह्रीं तर्जनीभ्या नमः। ॐ ऊँ ह्रीं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ औं ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अः ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।</div> <div>हृदयादिन्यास:- ॐ आं ह्रीं हृदयाय नमः। ॐ ई ह्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ ऊँ ह्रीं शिखायै वषट्। ॐ ऐं ह्रीं कवचाय हुम्। ॐ औं ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अः ह्रीं अस्त्राय फट्।</div> <div>ध्यानम्- ॐ रक्ताम्बुजासनमशेषगुणैकसिन्धु, भानुं समस्त जगतामधिपं भजामि।</div> <div>पद्मद्वयाभय-वरान्द- धत्तं कराब्जैर्माणिक्य-मौलिमरूणाङ्गरूचिं त्रिनेत्रम्॥</div> |  | <div>गुरू ( बृहस्पति ) का तान्त्रिक मंत्र - ॐ वृं बृहस्पतये नमः।</div> <div>विनियोग:- ॐ अस्यश्रीबृहस्पतिमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, अनुष्टुप्छन्दः, बृहस्पतिर्देवता, वृं बीजाम्, नमः शक्तिः, श्रीबृहस्पतिप्रीतये जपे विनियोगः। ❖ देहांगन्यास:- ब्रह्माऋषये नमः शिरसि। ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे। ॐ बुधदेवतायै नमः हृदये। ॐ वृं बीजाय नमः गुह्ये। ॐ आपः शक्तये नमः पादयोः। ❖ करन्यास:- ॐ वृं अगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ वृं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ वृं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ वृं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ वृं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ वृं करतलकर- पृष्ठाभ्यां नमः। ❖ हृदयादिन्यास:- ॐ वृं हृदयाय नमः। ॐ वृं शिरसे स्वाहा, ॐ वृं शिखायै वषट्, ॐ वृं कवचाय हुम्, ॐ वृं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ वृं अस्त्राय फट्।</div> <div>ध्यानम्:- ॐ बन्दे बुधं सदा देवं पीताम्बरसुभूषणम्। जानुस्थवामहस्ताद्वयं साभयेतरपाणिकम्॥</div> |  | <div>राहु का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ रां राहवे नमः।</div> <div>❖विनियोग:- ॐ अस्य श्रीराहु मन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, राहुर्देवता, रां बीजम्, वेशः शक्तिः, श्रीराहुप्रीतये जपे विनियोगः। ❖ देहांगन्यास:-ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, ॐ पंक्तिछन्दसे नमः मुखे, औं राहुदेवतायै नमः हृदय, औं रां बीजाय नमः गुह्ये, औं वेशः शक्तये नमः पादयोः।</div> <div>❖ करन्यास:-ॐ रां अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ रां तर्जनीभ्यां नमः, ॐ रां मध्यमाभ्यां नमः, ॐ रां अनामिकाभ्या नमः, ॐ रां कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ रां करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖ हृदयादिन्यास:-ॐ रां हृदयाय नमः, ॐ रां शिरसे स्वाहा, ॐ रां शिखायै वषट्, ॐ रां कवचाय हुम्, ॐ रां नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ रांग अस्त्राय फट्।</div> <div>ध्यानम्- वन्दे राहुं धूम्रवर्णं अर्धकायं कृताञ्जलिम्।</div> <div>विकृतास्यं रक्तनेत्रं धूम्रालङ्कारमन्वहम्॥</div> |  | <div>केतु का तान्त्रिक मन्त्र- ॐ कै केतवे नमः</div> <div>❖ विनियोग:- ॐ अस्य श्रीकेतुमन्त्रस्य श्रीब्रह्माऋषिः पंक्तिश्छन्दः, केतुर्देवता, कै बीजं, वेशः शक्तिः, श्रीकेतुप्रीतये जपे विनियोगः।</div> <div>❖ ऋष्यादिन्यास:- ॐ ब्रह्मऋषये नमः शिरसि, ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे, ॐ केतुर्देवतायै नमः हृदये, ॐ कै बीजाय नमः गुह्ये, ॐ वेशः शक्तये नमः पादयोः</div> <div>❖ करन्यास:- ॐ कै अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ कै तर्जनीभ्यां नमः, ॐ कै मध्यमाभ्यां नमः, ॐ कै अनामिकाभ्यां नमः, ॐ कै कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ कै करतल करपृष्ठाभ्यां नमः। ❖ हृदयादिन्यास:- ॐ कै हृदयाय नमः, ॐ कै शिरसे स्वाहा, ॐ कै शिखायै वषट्, ॐ कै कवचाय हुम्, ॐ कै नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ के अस्त्राय फट्।</div> <div>ध्यानम्- ॐ वन्दे केतुं कृष्णवर्णं कृष्णवस्त्रविभूषणम्।</div> <div>वामोरून्यस्ततद्धस्तं साभयेतरपाणिकम्।</div>                                                                                                                                                                                        |  |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                 |  |



|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                          |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                             |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                      |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p><b>विष्णु द्वादश अक्षर मन्त्रजप प्रयोग</b></p> <p><b>मन्त्र- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।</b></p> <p><b>विनियोग:-</b> ॐ अस्य श्रीद्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापति ऋषिर्गायत्रीछन्दः, श्रीविष्णुः परमात्मा देवता, मम सर्वपापविनाश-पूर्वक श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।</p> <p>❖ <b>करन्यास:-</b> ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः, नमो तर्जनीभ्यां नमः, ॐ भगवते मध्यमाभ्या नमः, ॐ वासुदेवाय अनामिकाभ्यां नमः, ॐ नमो भगवते कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ वासुदेवाय करतल करपुष्ठाभ्यां नमः,।</p> <p>❖ <b>हृदयादिन्यास:-</b> ॐ हृदयाय नमः, नमो शिरसे स्वाहा, ॐ भगवते शिखायै वषट्, ॐ वासुदेवाय कवचाय हुम्, ॐ नमो भगवते नेत्रत्रयाय वीषट्, ॐ वासुदेवाय अस्त्राय फट्।</p> <p>❖ <b>ध्यानम्-</b> ॐ विष्णु शरदचन्द्रकोटिसदृशं शंखं रथाङ्गदहारकुण्डलं- महामौलिं स्फुरत्कंकणं श्रीवत्सांकमुदार-कौस्तुभधरं वन्दे मनीन्द्रैः स्तुतम्॥</p> | <p><b>न्यास सहित नवार्ण मन्त्र जप:- ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।</b></p> <p><b>विनियोग:-</b> ॐ अस्य श्रीनवार्णमन्त्रस्य ब्रह्माविष्णुरूद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, श्रीमहाकालीमहालक्ष्मी महासरस्वत्योः देवताः, बीजम् ह्रीं शक्तिः क्ली कीलकम्, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीप्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।</p> <p>❖ <b>ऋष्यादिन्यास:-</b> ब्रह्माविष्णुरूद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि, गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे, श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीदेवताभ्यो नमः हृदि, ऐं बीजाय नमः गुह्ये, ह्रीं शक्तये नमः पादयोः, क्ली कीलकाय नमः नाभौ, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मूल मन्त्र से हाथोंकी शुद्धि करके करन्यास करें।</p> <p>❖ <b>करन्यास:-</b> ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ क्लीं मध्यमाभ्यां नमः, ॐ चामुण्डायै अनामिकाभ्यां नमः, ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल करपृष्ठाभ्यां नमः।</p> <p>❖ <b>हृदयादिन्यास-</b> ॐ ऐं हृदयाय नमः, ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा, ॐ क्लीं शिखायै वषट्, ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्, ॐ विच्चे नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे अस्त्राय फट्।</p> <p>❖ <b>अक्षरन्यास:-</b> ॐ ऐं नमः शिखायाम्, ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे, ॐ क्ली नमः वामनेत्रे, ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे ॐ मुं नमः वामकर्णे, ॐ डां नमः दक्षिणनासापुटे ॐ यैं नमः वामनासापुटे, ॐ विं नमः मुखे, ॐ च्वें नमः गुह्ये।</p> <p>❖ <b>दिङ्न्यास:-</b> ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आगनेय्यै नमः, ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः। ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै न मः।</p> <p><b>ध्यानम्-</b> खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः, शङ्खं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्। नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम्॥ अक्षस्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां, दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्। शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां, सेवे सैरिभर्मादिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥ घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं, हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्। गौरीदेहसमुद्रभवां त्रिजगतामाधारभूतां महापूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यादिनीम्॥</p> <p>मालापूजन- ॐ ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः इस मन्त्र से मालाकी पूजा करके प्रार्थना करे- ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि। चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव॥ ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध्यर्थं प्रसीद मम सिद्ध्ये॥ ॐ अक्षमालाधिपतये सुसिद्धिं देहि देहि सर्वमन्त्रार्थसाधिनि साधय साधय सर्वसिद्धिं परिकल्पय मे स्वाहा। इसके बाद ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे इस मन्त्र का जप करे। गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥ इस श्लोक से भगवति को जप अर्पण करदें।</p> | <p><b>नवार्ण महामन्त्र स्वरूप-</b> यह महानवार्ण मन्त्र अचूक फल दायक है इसका न्यासादि पूर्ववत् ही होगा।</p> <p>ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महादुर्गे नवाक्षरीनवदुर्गे नवात्मिके नवचण्डीमहामाये महामोहे महायोगनिद्रे जये मधुकैटभ विदद्राविणि महिषासुरमर्द्दिनि धूमलोचनसंहन्त्रि चंडमुंडविनाशिनि रक्तबीजांतके निशुंभध्वंसिनि शुंभदर्पघ्नि देवि अष्टादशबाहुके कपाल-खट्वांग-शूलखड्ग-खेटकधरिणि छिन्नमस्तक धारिणि रूधिरमांसभोजिनि समस्तभूत प्रेतादियोगध्वंसिनि ब्रह्मेन्द्रादिस्तुते देव मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् नाशय नाशय ह्रीं फट् हूँ फट् ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।</p> <p><b>संपुटित पाठ मे होम आहुति विचार-</b></p> <p>संपुटित पाठ होम में किसी आचार्य का मत हैं</p> <p>संपुटे हवनं नास्ति के अनुसार ७०० होम आहुति होगी तो किसी आचार्य के अनुसार संपुट होम आहुति संख्या २१०० होगी। कर्मठगुरू- सम्पुटे हवनं नास्ति प्रत्यहेऽपि तथैव च। नानार्थसिद्धिवैकल्ये होमन्तु विपुलं चरेत्॥ अर्थात् संपुट का हवन नहीं करे परन्तु बहुधा करते हैं, दुर्गाकल्पतरु एवं अनुष्ठान प्रकाश मे आहुति संख्या २१०० स्पष्ट लिखी गई है। यथा- होमकाले बीजसंयोगे दुर्गा मन्त्रेण पृथक् हुनेत्। कामना बीज संयोगो दुर्गा मन्त्रेण हुनेत्॥ दुर्गास्तवन मन्त्राणां संख्यां सप्तशतं भवेत्। कामना मन्त्र संख्या च शतं चैव चतुर्दश॥ मध्ये मन्त्रान् सप्तशतं होमकाले तु योजयेत्। पाठे मन्त्रं पुटं वाच्यं होम मन्त्राः पृथक् पृथक्। होमसंख्या च मन्त्राणां शतं वै चैकविंशतिः। पाठे बीजं पुटं वाच्यं होमे बीज पुटं हुनेत्। दुर्गापाठ मन्त्र को अगर किसी ऐं, ह्रीं, श्रीं, या किसी बीज मन्त्र से संपुटित किया जाता हैं तो सम्पुटित कामना मन्त्र के अलग होम की आवश्यकता नहीं है। बीज मंत्र एकाक्षरी हो या ५-७ बीजाक्षर होवे तो भी एक ही आहुति होगी। अतः ७०० आहुति देवे। अस्त संपुट- में एक ही आहुति होगी क्यों कि इसमें अंत में आहुति देवे। अस्त संपुट- में एक ही आहुति होगी क्यों कि इसमें अंत में कामना मंत्र या बीजाक्षर विलोम होगा। व्याहृति व बीजाक्षरों का संपुट मंत्र के आदि व अंत में लोम विलोम ही लगता है अतः विलोमाक्षर का पृथक् होम नहीं करने पर केवल ७०० आहुति देवे। मरणादि मंत्रों में लोम कामना मंत्र फिर दुर्गा मंत्र फिर विलोमाक्षर कामना मन्त्र की आहुति देने पर २१०० आहुति देवे।</p> <p><b>निष्कर्ष-</b> प्राय उदय संपुट पाठ ही करते हैं अर्थात् दुर्गा मन्त्र के आदि-अंत में कामना मंत्र लोम ही लगाते हैं अतः २१०० आहुति देवे।</p> | <p><b>संपुटित पाठ प्रकार एवं विधि-</b> पाठ मंत्र से आगे पीछे कामना मंत्र लगाने से संपुटीकरण कहते है।</p> <p>संपुट पाठ १. उदय संपुट, २. अस्त संपुट, ३. अर्द्धसंपुट</p> <p>१. उदय संपुट- उदय संपुट में कामना मंत्र सप्तशतीपाठ मंत्र के आदि व अंत में लगाया जाता है।</p> <p>२. अस्त संपुट- अस्तसंपुट बीजमंत्र या कामना मंत्र पाठ के आदि में पढे फिर दुर्गापाठ मंत्र पढे अंत में कामना मंत्र विलोम रूप से उच्चारण करे यथा- हौ जूं सः ऐं मार्कण्डेय उवाच सः जूं हौं। ३. अर्द्धसंपुट- कामनामंत्र दुर्गापाठ मंत्र के आदि या अन्त में केवल एक बार पढ़े। इसका फल न्यून हैं परन्तु विपरीत प्रभाव नहीं होता है। प्राय सर्वत्र उदय संपुट का ही प्रचलन है। ४. तंत्र मार्ग के अनुसार व्याहृति व बीजाक्षर का संपुट प्रारंभ में लोभ तथा कामना मंत्र इष्ट के बाद विलोम क्रम से होता है तथा इनकी आहुति भी एक ही होती है। ५. भिन्नपाद प्रयोग - मंत्र के चरण भेद मध्य में बीजमंत्र या अन्य मन्त्र के संयोजन से मंत्र उपासना या दुर्गा उपासना की जा सकती है।</p> <p><b>कामनानुसार दुर्गा पाठ के द्वादश क्रमभेद-</b> दुर्गा सप्तशती में तीन चरित्र है, इनको अलग अलग क्रम से करने पर अलग-अलग कामना फल विशेष रूप से मिलता है। जो निम्न प्रकार हैं- (तन्त्रग्रन्थ एवं निर्णय सिन्धु),</p> <p>१. महाविद्या क्रम- प्रथम, मध्यम उत्तर चरित्र- सर्वकामना हेतु। २. महातन्त्री- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र- शत्रुनाश, लक्ष्मीप्राप्ति हेतु। ३. चण्डी- उत्तर, मध्यम, प्रथम चरित्र-शत्रुनाश। ४. महाचण्डी- उत्तर, प्रथम, मध्यम चरित्र-शत्रुनाश, लक्ष्मीप्राप्ति हेतु। ५. सप्तशी- मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र-लक्ष्मी व ज्ञान प्राप्ति एवं उत्कीलन। ६. मृतसंजीवनी- मध्यम, उत्तर, प्रथम चरित्र-आरोग्यलाभ। ७. रूप दीपिका- प्रथम, उत्तर, मध्यम चरित्र-विजय व आरोग्य। ( रूपं देहि जयं देहि से संपुटित )। ८. निकुंभला- मध्यम, प्रथम, उत्तर चरित्र-रक्षा हेतु, विजय हेतु ( शूलेन पाहि नो देवि से संपुटित )। ९. योगिनी- बालोपद्रव शमन। (प्रत्येक चरित्र से पहले सम्बधित योगनियों का पाठ एवं प्रत्येक मंत्र को वं शं षं सम्पुटित। १०. विलोम ( संहार क्रम)- ७०१ वें श्लोक से प्रथम श्लोक तक विलोम क्रम से। ११. अक्षरशः विलोम पाठ- १३ वें अध्याय से प्रथम अध्याय तक काशी के पुराने विद्वानों के पास मिल सकती है १०० वर्ष पहले छपी हुई है। इसी तरह प्रत्येक चरित्र के पहले भैरव नामावलि पाठ का विधान भी मिलता। गढ़वाल क्षेत्र व अन्य सम्प्रदायों में हर अध्याय पहले भैरव नामावलि का पाठ करने का क्रम भी मिलता है। कई विद्वान कहते है कि सप्तशती के बाहर के मंत्र का संपुट नहीं लग सकता, परन्तु योगिनी क्रम से यह साफ जाहिर है कि अन्य मंत्रों के संपुट लग सकते है। दुर्गा सप्तशती के सभी दशमहाविद्याओं के मंत्र, गायत्री मन्त्र, भागवत के मन्त्रों का, वैदिक मंत्रों का व अन्य कोई मंत्रों का संपुट लगाया जा सकता है दुर्गार्चनसृतिः, अनुष्ठान प्रकाश में दुर्गा के बाहर के मंत्रों के संपुट के विषय में लिखा है। स्वयं रावण भी निकुंभला का उपासक था वह भी सप्तशतीक्रम से पाठन शूलेन पाहिनो...। का संपुट लगाता था।</p> <p><b>दुर्गापाठ मे निषिध आहुति विचार-</b></p> <p>चण्डी स्तवे प्रतिश्लोकमेकाहुतिरिहेष्यते। रक्षा कवचागैमन्त्रै तत्र न कारयेत्॥ अर्थात्-</p> <p>१. कवच मंत्र एवं अस्त्र शस्त्र मंत्रों का हवन नहीं होत हैं। वैसे अगर कवच सिद्ध करना हो तो गुग्गुल व घृत से होम करे। क्यों कि घृत से अग्नि का आचमन होता है। २. सौभाग्य द्रव्य सिन्दुरादि का भी होम नहीं होता है मरण कर्म में सिन्दुरादि से हवन अवश्य होता हैं उसमें तो अग्नि का १६ वां मृतक संस्कार कुण्डानि का होता है पश्चात् विधि होम प्रारम्भ होता है। ३. चतुर्थ अध्याय के शूलेन पाहिनो देवि इत्यादि चार मन्त्रों का हवन नहीं होता, इसी तरह खड्गिनी शूलिनी मन्त्र का भी उच्चारण कर हवन नहीं करना चाहिए उक्त मन्त्र के स्थान पर नवार्ण मन्त्र अथवा श्री महालक्ष्म्यै स्वाहा से हवन करें अथवा मन्त्र को मानसिक उच्चारण कर हवन करें। ४. पांचवे अध्याय में दूत उवाच दो बार आया हैं इस मन्त्र से आहुति देने से फल का भाग दूत को जाता हैं अतः कर्मफल में न्यूनता आती है। अतः मनसा पढकर ऐं सरस्वत्यै नमः से आहुति प्रदान करें।</p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|



## वास्तु विचार

**ग्रामवास. विचार-** मस्तकक्त पञ्चलाभाय मुखे त्रीणि धनक्षयः। कुक्षी पञ्च धनं धान्यं षटपादे स्त्री दरिद्रता॥ पृष्ठे चैक पादहानिर्नाभौ चत्वारि संपदः। गृहये चैक भयं पीडा हस्ते चैक तु क्रन्दनम्। वामे चैक करे भेदो ग्राम चक्रं नरां कृतिः।

**गणयेज्जन्मनक्षत्रं ग्राम नक्षत्रतः सदा॥**

-ग्राम के नक्षत्र से वास पुरुष के नक्षत्र तक गिने तदनन्तरं अधोलिखित चक्र में

|                 |       |         |          |          |             |               |           |          |         |          |
|-----------------|-------|---------|----------|----------|-------------|---------------|-----------|----------|---------|----------|
| ग.न.से. पु.ज.न. | ५     | ३       | ५        | ५        | ६           | १             | ४         | १        | १       | १        |
| अवयव            | मस्तक | मुख     | पेट      | पेट      | पैर         | पीठ           | नाभि      | गुर्दा   | दाय हाथ | बाया हाथ |
| फल              | लाभ   | धन हानि | धन धान्य | धन धान्य | स्त्री अभाव | पैर में पीड़ा | धन सम्पति | भय भीड़ा | युद्ध   | मत भेद   |

**भूमिपरीक्षणः-**गृह निर्माण के पूर्व भूमि परीक्षण आवश्यक है। वास्तुशास्त्र के अन्तर्गत भूमिकी बहुत सी विधियां दी गयी है। किन्तु लोकव्यवहार में ये विधियां अत्यधिक प्रचलित हैं जो अधोलिखित है।

**मध्येगृहे हस्तमितं खनित्वा सम्पूरयेत्पांशुभिराश्रुतस्य।**

**सम्पूरयित्वा धिकतामुपेतः पांशुर्यदा तद्गृहमुत्तम स्यात्॥**

**समे समं न्यूनतरे सदोषं न कारयेत्तत्र गृहं दाचित्।**

जिस भूमि पर मकान बनाना हो तो उसके बीचों बीच एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा, एक हाथ गहरा गड्ढा खोदना फिर उसी निकली हुई मिटी से उस गड्ढे को भर देना चाहिये यदि गड्ढा भरने से मिट्टी बच जाय तो उत्तम, बराबर हो जाय तो सम और मिट्टी कम हो जाय तो निषिद्ध होता है। इस भूमि पर मकान नहीं बनवाना चाहिये।

**तदा निशादै तत्कृत्वा पानीयेन प्रपूरयेत्।**

**प्रातर्दृष्टे जले वृद्धिः समः पौ व्रणे क्षयः।**

पूर्व विधि से गड्ढा खोदकर पानी से सायं काल मे पूर्णरूप से भरकर प्रातःकाल देखने पर यदि जल दिखाई पड़े तो शुभ, केवल कीचड़ बचा रहे तो सम और मिटी फट जाय तो भूमि हानिकारक होती है। वास्तुरत्नाकार के अनुसार जिस भूमि पर ओषधियाँ, वृक्ष, लतायें तथा हरी भरी घासें हों एवं भूमि समतल हो ऐसी भूमि निवास के लिये प्रशस्त मानी गयी है।

**गजपृष्ठादि भूमि विचारः-**गजपृष्ठ जिस स्थान में दक्षिण, पश्चिम, नैऋत्य और वायव्य कोण की ओर भूमि ँची हो उसके गज पृष्ठ कहा गया है। उस भूमि पर घर बनाकर रहने से धन-धान्य, संतान, आयु की वृद्धि होती है।

**कर्मपृष्ठः-** जहां की भूमि मध्य में उँच हो और चारों दिशाओं में झुकाव हो, वह कर्मपृष्ठ भूमि कहलाती है। उस स्थान पर वास करने से नित्य उत्साह, धन-धान्य, संतान, आयु, आरोग्य, यश और प्रतिष्ठा की वृद्धि होती है।

**दैत्यपृष्ठाः-** ईशानकोण, पूर्व और अग्निकोण में भूमि उच्च हो और पश्चिम में नीच हो तो वह दैत्यपृष्ठ कहलाती है। उसमें निवास करने से अशुभ फल मिलता है।

**नागपृष्ठः-** जहाँ दक्षिण और उत्तर दोनों दिशा में भूमि उच्च हो, बीच में नीच हो तो वह भूमि नागपृष्ठ कहलाती है। यहाँ वास करने से सभी प्रकार की हानि होती है।

**चारों वर्णों के आधार पर भूमि विवेचनः-**

मधुरा दर्भसंयुक्ता घृतगन्धा च या मही। अन्तरप्रवणा ज्ञेया ब्राह्मणानां च सा शुभा। रक्तगान्धा कषाया च शरवीरेण संयुता। रक्ताप्राक्प्रावणज्ञेया क्षत्रियाणां च सा मही॥ दक्षिण प्रवणा भूमिर्याऽम्ला दूर्वाभिरन्विता। अन्नगन्धा च वैश्यानां पीत वर्णा प्रशस्यते॥ पश्चिमप्रवणा कृष्णा विकुण्ठा काश संयुता॥ मद्यगन्धा मही धन्या शूद्राणां कटुका तथा॥

| ब्रह्मण   | क्षत्रिय  | वैश्य      | शूद्र      | वर्ण |
|-----------|-----------|------------|------------|------|
| उत्तरप्लव | पूर्वप्लव | दक्षिणप्लव | पश्चिमप्लव | प्लव |
| मधुर      | कषाय      | अम्ल       | कटु        | रस   |
| घृतगन्ध   | रक्तगन्ध  | अन्नगन्ध   | मद्यगन्ध   | गन्ध |
| दर्भयुक्त | शपतयुत    | बूवयुक्त   | कशुयुक्त   |      |
| श्वेतवण   | रक्तवर्ण  | पीतवर्ण    | कृष्णवर्ण  | वर्ण |

**सूर्य-चन्द्र वेध विचारः-** चन्द्र वेधी मकान एवं जलाशय सूर्य वेधी शुभ होता है। हद या वाटिका सूर्य एवं चन्द्र वेधी दानों से शुभ होता है। पूर्व पश्चिम लम्बा मकान सूर्य वेधी और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है- चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि एवं सूर्यवेधी मकान में धन-धान्य एवं संतति की क्षति होती है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय आदि के लिये सूर्यवेध और चन्द्रवेध का विचार नहीं होता। (वास्तुरत्नाकरे)

**पिण्ड ज्ञान-** मकान की लम्बाई X चौड़ाई = मकान का पिण्ड होता है।

**भवन के आय आदि का विचारः-**

गृहपिण्ड को नव स्थानों में रखकर क्रम से ९।९।६।८।३।८।८।४।८। इन अंको से अलग अलग दो २ का गुणा करके गुणनफल मे क्रमशः-८।७।९।१२।८।२७।१५।२७।१२०।

इन अंको से भाग देने पर जो शेष बचे वह कम से आय, वार, अंश, द्रव्य, ऋण, नक्षत्र, तिथि, योग और आयु होती है। कम आयु वाला मकान शुभ नहीं होत है।

**१. आयः-**ध्वज, धूम, सिंह, श्वान, वृष, खर, गज, उष्ट्र अथवा काक ये आठ प्रकार के होते है इसमें विषय आय १, ३, ५, ७ हो तो शुभ एवं सम हो २, ४, ६, ८ तो अशुभ होता है।

**वार तथा अंश-** सूर्य मंगल के वार राशियां और अंश मेषादिनवांश सर्वदा अग्नि भय करने वाले होते है। तथा शेष ग्रहो का वारादि अभीष्ट सिद्धि दायक होता है।

**द्रव्य या धनः-** यदि ऋण की अपेक्षा धन अधिक हो तो गृह शुभ होता है। ऋण अधिक हो तो अशुभ होता है।

**नक्षत्र-** गृह और गृह स्वामी का नक्षत्र एक हो तो गृह स्वामी की मृत्यु होती है। **तिथिः-** शुक्ल प्रतिपदा से आरम्भ करके अमान्त तक ३० तिथियां होती है, उनमे ये ४, ९, १४, १९, १४, १७, १९, ३० तिथियां अशुभ होती हैं तथा शेष शुभ होती हैं। **योगः-** अतिगण्ड, शूल, गण्ड, व्याघात, वज्र, व्यतीपात, परिघ एवं वैधृति ये योग गृह में वर्जित है। **आयुः-** दीर्घायु मकान शुभ होता है एवं अल्पायु अशुभ होता है। आयु विहीन गेहे तु दुर्भगत्वं प्रजायते। **राशिः-** वासकर्ता का नाम राशि से २, ९, ५, १०, ११ स्थानो में ग्राम की राशि हो तो वास कर्ता के लिये वह ग्राम, मुहल्ला शुभ एवं १, ३, ४, ७, ८ और १२ स्थानो में हो तो अशुभ होता है।

**भवन के लाभ आदि का विचारः-** अपनी २ वर्ग संख्या को द्वि गुणित कर उसमें ग्रामादि वर्ग संख्या को जोड़कर उसमें ८ का भाग देने से जिसका शेष अधिक हो वह ऋणि होता है। अतः वासकर्ता की काकणी से गाँव, मुहल्ला या शहर की काकणी हमेशा अधिक होनी चाहिये।

| क्र. | वर्ग  | नामाक्षर      | वर्गेश  | वर्ग संख्या | वर्ग की दिशा या कोण |
|------|-------|---------------|---------|-------------|---------------------|
| १.   | अवर्ग | अ,इ,उ,ए,ऐ,ओ,औ | गरूण    | १           | पूर्व दिशा          |
| २.   | कवर्ग | क,ख,ग,घ,ङ     | मार्जार | २           | अग्नेय कोण          |
| ३.   | चवर्ग | च,छ,ज,झ,ञ     | सिंह    | ३           | दक्षिण              |
| ४.   | टवर्ग | ट,ठ,ड,ढ,ण     | श्वान   | ४           | नैऋत्य कोण          |
| ५.   | तवर्ग | त,थ,द,ध,न     | सर्प    | ५           | पश्चिम              |
| ६.   | पवर्ग | प,फ,ब,भ,म     | मूषक    | ६           | वायव्य कोण          |
| ७.   | यवर्ग | य,र,ल,व       | मृग     | ७           | उत्तर               |
| ८.   | शवर्ग | श,ष,स,ह       | मेष     | ८           | ईशान कोण            |

**मण्डलानयनः-** पिण्ड की लम्बाई + चौड़ाई में नव से भाग देने पर क्रम से १. दाता २. भूपति ३. क्लीब ४. चोर ५. पण्डित ६. भोगी ७. धनाढ्य ८. दरिद्र ९. कुबेर ये नव प्रकार के मण्डल होते है। इनका फल नामके सदृश होता है।

**मण्डलेशानयनः-** स्वामिहस्तप्रमाणेन दीघाविस्तारसंयुतम्। द्विगुणं चाष्टभिर्भक्त मण्डलाधिप उच्यते॥ इन्द्रो विष्णुर्यमो वायुः कुबेरो धूर्जटिस्तथा। विधाता विघ्नराजश्च मण्डलेशाः प्रकीर्तिताः॥ इन्द्र सौख्यं यशो विष्णुर्यमो दुःखं निरन्तरम्। वायश्चोच्चाटनं कुर्यात् कुबेरो धनदो भवेत्। धूर्जटिः कलहो नित्यं धाता सौख्यप्रवृद्धिदम्। सर्वसिद्धिं गणाधीशः फलमुक्तं मनीषिभिः॥

| स्पष्ट चक्र         |                   |                 |                      |                  |                    |                          |                         |                  |
|---------------------|-------------------|-----------------|----------------------|------------------|--------------------|--------------------------|-------------------------|------------------|
| १<br>इन्द्र<br>सुखद | २<br>विष्णु<br>यश | ३<br>यम<br>दुःख | ४<br>वायु<br>उच्चाटन | ५<br>धन<br>कुबेर | ६<br>महादेव<br>कलह | ७<br>विधाता<br>सुखशान्ति | ८<br>गणेश<br>सर्वसिद्धि | शेष<br>देव<br>फल |

**आँगन विचार-** आँगन की लम्बाई चौड़ाई को आठ से गुणा करके नव से भाग देने पर क्रम से १. तस्कर २. भोगी ३. पण्डित ४. दाक्षा ५. नृपति ६. नपुंसक ७. कुबेर ८. दरिद्र ९.भयदाता ये नव प्रकार के आँगन होते हैं। इनका फल नाम के समान होता है। बीच में आँगन उँचा और चारो तरफ नीचा शुभ फल दायक होता है। इसके विपरीत होने पर सन्तान नाशक होता है।

**राहु दिशा विचार-** देवालय, जालशय और मकान के नींव खोदते समय राहु की दिशा का विचार आवश्यक होता है।

**देवालये गेहे विधौ जलाशये राहोर्मुखं शम्भुदिशोर्विलोमतः।**

**मीनार्कः सिंहार्कः मृगार्कतस्त्रिभेखाते मुखात्पृष्ठविदिवशुभाभवेत्।**

नींव या जलाशय आदि खोदते समय राहु के मुख भाग को छोड़कर पृष्ठ भाग से खोदना शुभ होता है।

**कक्ष विवेचनं मुहूर्त चिन्तामणौः-**

**स्नानाग्निपाकशयनास्त्रभुजश्च धान्यभांडारदैवतगृहाणि च पूर्वतःस्युः।**

**तन्मध्यतस्तुमथनाज्यपुरीषविद्याभ्यासख्यरोदनरतौषध सर्वधाम्॥**

**स्नान कक्षः-** वास्तुशास्त्र के अनुसार स्नान घर बाथरूम भवन के पूर्व मे होना चाहिये। स्नान घर में गिजर वाल सुखाने की मशीन आग्नेय कोण में स्थापित करना चाहिये। कक्ष के फर्श की ढाल उत्तर दिशा या पूर्व दिशा में रखनी चाहिये। शौचालय स्नान कक्ष के अन्दर नहीं होना चाहिये। किन्तु देशकाल के अनुसार स्नान कक्ष में शौचालय रखना हो तो नैऋत्य कोण व दक्षिणा दिशा के मध्य तथा नैऋत्य कोण व पश्चिम दिशा के मध्य में बनवाना चाहिये। नल फव्वारा इत्यादि उत्तर पूर्वी क्षेत्र में साफ करने के लिये स्थान पश्चिम दिशा में होना चाहिये। यदि कपड़े धोने की मशीन स्नान घर में रखनी है तो केवल दक्षिण पूर्व कोने में रखनी चाहिये।

**भोजनालयः-** इसके लिये सबसे उत्तम स्थान भवन को अग्नेय कोण में होता है। यह सम्भव न हो सके तो दूसरा स्थान अग्नेय कोण या पूर्व के मध्य में रखना चाहिये। भोजनालय में शुद्धजल हेतु नल ईशान कोण में व पूर्व दिशा के मध्य में गैस सिलेण्डर व गैसचूल्हा आग्नेय कोण में, खाद्यान्य भण्डार

पूर्व दिशा में बरतन आदि दक्षिण यापश्चिम दिशा में रखना चाहिये। भोजन कक्ष पश्चिम दिशा में बनवाना चाहिये। अगर भोजनालय मे ही भोजन करना है तो पश्चिम दिशा में उत्तम स्थान माना जाता है। भण्डार रूम स्टोर रूम वायव्य मे उत्तम होता है।

**शयन कक्षः-** गृह स्वामी का शयन कक्ष दक्षिण व पश्चिम में होना चाहिये। सर्वदा पूर्व या दक्षिण की तरफ शिरा सोना चाहिये।

**प्राकशिरः शयने विद्याद् धनमायुश्च दक्षिणे।**

**पश्चिमे प्रबला चिन्ता हानि मृत्युर्तथोत्तरे॥**

**पूजाघरः-** ईशान कोण में देवताओं का वास होता है। इसलिये ईशान में पूजा घर शुभ होता है। पूजा के समय उत्तर दिशा या पूर्वदिशा की तरफ मुख होना चाहिये। पूजा घर में शयन नहीं करना चाहिये। स्थानाभाव में यदि शयन करना हो तो पूजा स्थल पर लाल परदा डाल कर रखें। हवन आदि की व्यवस्था अग्नि कोण में करना चाहिये। पूजा की दीवार एवं फर्श सफेद या हल्के पीला रंग का होना चाहिये। नैऋत्य कोण में अस्त्रशस्त्र कक्ष, अग्नि कोण में बिजली, जनरेटर अर्थात् ऊर्जा से संबंधित कक्ष, उत्तर दिशा में कोषाघर, वायव्य में पशु गृह, अग्निकोण तथा पूर्व दिशा के मध्य मे घृत दधिमथन आदि का कक्ष उत्तर पश्चिम में अतिथि कक्ष या सामान्य कक्ष, नैऋत्य पश्चिम में अध्ययन कक्ष, वायव्य उत्तर में रति कक्ष, ईशान कोण मे चिकित्सा कक्ष, एवं नैऋत्य कोण में प्रसूति कक्ष बनवाना चाहिये।

**द्वार विवेचनः-** मकान की लम्बाई जिस दिशा में द्वार बनाना हो उस दिशा की लम्बाई बराबर-बराबर नव ८ भागो करके पाँच भाग दाहिने और तीन भाग वायें की तरफ छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिये।

**शिलान्यासः-** पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अंदरपूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिये, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिये।

**गृहारम्भे वास्तु पुरुष स्थिति ज्ञानम्-** गृहारम्भ की तिथि संख्या में ४ जोड़कर दूना करके उसमे गृहपति के नामाक्षर संख्या को जोड़कर ३ का भाग देना, यदि १ शेष बचे तो स्वर्ग में, २ शेष बचे तो पाताल में एव ० शून्य शेष बचे तो मृत्युलोक में वास्तु पुरुष का निवासी होता है। स्वर्ग एवं पताल में वास्तु पुरुष का निवास होने पर लाभ एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती है तथा मृत्युलोक में निवास होने पर कष्टदायक एवं मृत्युदायक होता है।

**देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का-** ब्रह्मा के मन्दिर के बगल में तथा वि णु, सूर्य, शिव-मन्दिर के सामने, जैन-मन्दिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

**वास्तुदोष निवारण के उपायः-** १. घर में वास्तुदोष होने पर उचित यही है कि उसे यथा संभव वास्तुशास्त्र के अनुसार ठीक करके ध्यान रहे निर्मित मकान का अधिक तोड़ फोड़ करने से वास्तुभंग दोष लगता है, ऐसी स्थिति में उसे बँच कर दुसरा मकान बनाकर रहना उचित होता है। ऐसा संभव न हो सके तो वास्तुदोष के निवारणार्थ वर्ष में कम से कम एक बार नौरात्रि में दुर्गासप्तशती का पाठ, श्रीरामचरितमानस का पाठ अखण्ड कीर्तन या भागवत यज्ञ आदि अवश्य करें। २. अमावस्या तिथि को गाय के उपले एवं समी की लकड़ी, तिल, चावल, जौ, शक्कर, गुग्गुल, जटामाशी तथा चन्दन चूर्ण मिलाकर मन्त्र द्वारा ११०० आहूति करने से वास्तुदोष दूर हो जाता है। यह वर्ष में एक बार करना चाहिये। घर में तुलसी का पौधा लगाने से गृह में सुखशान्ति रहती है।



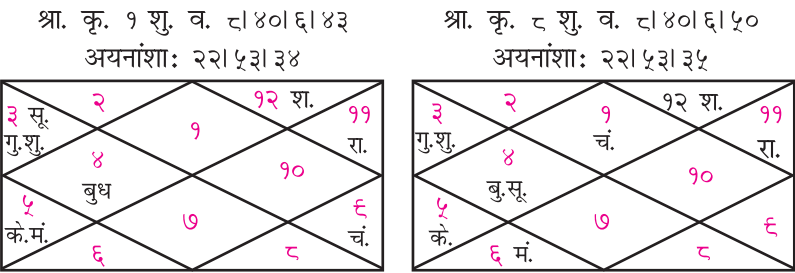
| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः  | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|--------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | शुक्र  | ५२।१६          | रा.२।८         | पू.षा.५।४५           | दि.७।३२               | वै.४२।३८       | वा.३०।१३         | ध.दि.१।३१    | रा.२४।५५।३३              | ३३।५२    | ५।१४                 | ६।४६                  | १५         | २७         | ११         |
| २     | शनि    | ५१।२३          | रा.१।४७        | उ.षा.५।४२            | दि.७।३१               | वि.३६।३६       | तै.२६।३३         | मकर          | रा.२५।५३।२१              | ३३।५०    | ५।१४                 | ६।४६                  | १६         | २८         | १२         |
| ३     | रवि    | ४९।१८          | रा.१२।५७       | श्र.६।१३             | दि.७।४३               | प्री.३५।४२     | व.२८।५२          | म.सं.७।३६    | रा.२६।५१।६               | ३३।४८    | ५।१४                 | ६।४६                  | १७         | २९         | १३         |
| ४     | सोम    | ४६।१०          | रा.११।४३       | घ.५।५३               | दि.७।३६               | आ.३०।५४        | वव.२८।२६         | कुम्भ        | रा.२७।४८।५७              | ३३।४६    | ५।१५                 | ६।४५                  | १८         | ३०         | १४         |
| ५     | मंगल   | ४२।६           | रा.१०।५        | शत.४।२०              | दि.६।५६               | सौ.२५।०५       | कौ.२७।५८         | कु.रा.१२।१७  | रा.२८।४६।४५              | ३३।४५    | ५।१५                 | ६।४५                  | १९         | ३१         | १५         |
| ६     | बुध    | ३७।१२          | रा.८।८         | पू.भा.१।५६           | दि.६।३                | शो.१८।५७       | गर.२७।३३         | मीन          | रा.२९।४४।३३              | ३३।४४    | ५।१५                 | ६।४५                  | २०         | ३२         | १६         |
| ७     | गुरु   | ३१।४०          | सं.५।५५        | रे.५५।०६             | रा.३।१६               | अ.१२।०३        | वि.२७।१४         | मी.रा.३।१६   | ३।०।४२।२१                | ३३।४३    | ५।१५                 | ६।४५                  | २१         | १          | १७         |
| ८     | शुक्र  | २५।४३          | दि.३।३३        | अ.५१।०४              | रा.१।४२               | सु.०४।०५       | कौ.२५।४३         | मेष          | ३।१।४०।६                 | ३३।४२    | ५।१६                 | ६।४४                  | २२         | २          | १८         |
| ९     | शनि    | १९।३२          | दि.१।४         | भ.४७।०३              | रा.१२।५               | शू.४९।३२       | गर.१९।३२         | मेष          | ३।२।३७।६                 | ३३।४०    | ५।१६                 | ६।४४                  | २३         | ३          | १९         |
| १०    | रवि    | १३।२०          | दि.१०।३६       | क्र.४२।४७            | रा.१०।२३              | गं.४२।०        | वि.१३।२०         | मे.प्रा.५।४२ | ३।३।३४।६                 | ३३।३८    | ५।१६                 | ६।४४                  | २४         | ४          | २०         |
| ११    | सोम    | ७।१७           | दि.८।१२        | रो.३८।५८             | रा.८।५२               | वृ.३४।४०       | बा.७।१७          | वृष          | ३।४।३१।८                 | ३३।३६    | ५।१७                 | ६।४३                  | २५         | ५          | २१         |
| १२    | मंगल   | १।३६           | प्रा.५।५५      | मृ.३५।३५             | रा.७।३१               | ध्रु.२७।४३     | तै.१।३६          | वृ.दि.८।११   | ३।५।२८।७                 | ३३।३५    | ५।१७                 | ६।४३                  | २६         | ६          | २२         |
| १४    | बुध    | ५२।७           | रा.२।८         | आ.३२।५०              | सं.६।२५               | व्या.२१।१५     | वि.२४।१७         | मिथुन        | ३।६।२५।६                 | ३३।३४    | ५।१७                 | ६।४३                  | २७         | ७          | २३         |
| ३०    | गुरु   | ४८।३५          | रा.१२।४३       | पुन.३१।००            | सं.५।४१               | ह.१५।२१        | च.२१।२१          | मि.दि.११।५२  | ३।७।२२।५                 | ३३।३३    | ५।१७                 | ६।४३                  | २८         | ८          | २४         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क. अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. शुक्र         | ४।१९।००।१८       | ३।१५।२४।३३      | २।१३।४०।०२       | १।१४।२१।५१        | ११।६।२३।०६      | १०।१९।२२।१५      | ४६।५६    | १।३८            | ३।५३            | ५।४५             | ८।२              | १०।२१              | १२।३६               | १४।५१              | १७।९             | १९।२७           | २१।२९           | २३।९             | २४।३६            |
| २. शनि           | ४।१९।३६।२६       | ३।१५।०२।२६      | २।१३।५४।०१       | १।१५।३१।५७        | ११।६।२२।११      | १०।२९।१८।४       | ४६।५५    | १।३३            | ३।३८            | ५।४०             | ७।५७             | १०।१६              | १२।३१               | १४।४६              | १७।४             | १९।२२           | २१।२८           | २३।४             | २४।३१            |
| ३. रवि           | ४।२०।१२।३६       | ३।१४।४०।१९      | २।१४।०८।००       | १।१६।४२।०३        | ११।६।२१।१८      | १०।२९।१४।५३      | ४६।५४    | १।२८            | ३।३३            | ५।३५             | ७।५२             | १०।११              | १२।२६               | १४।४१              | १६।५६            | १९।१७           | २१।१९           | २३।५६            | २४।२६            |
| ४. सोम           | ४।२०।४८।४४       | ३।१४।१६।५२      | २।१४।२१।५९       | १।१७।५२।०६        | ११।६।१९।२६      | १०।२९।११।४२      | ४६।५३    | १।२३            | ३।२८            | ५।३०             | ७।४७             | १०।६               | १२।२१               | १४।३६              | १६।५४            | १९।१३           | २१।१४           | २२।५४            | २४।२१            |
| ५. मंगल          | ४।२१।२४।५२       | ३।१३।५६।२५      | २।१४।३५।२८       | १।१९।०२।१५        | ११।६।१६।३३      | १०।२९।८।३६       | ४६।५२    | १।१८            | ३।२३            | ५।१५             | ७।४२             | १०।०१              | १२।१६               | १४।३१              | १६।४९            | १९।७            | २९।९            | २२।४९            | २४।१६            |
| ६. बुध           | ४।२२।०१।००       | ३।२३।३३।५२      | २।१४।४९।५७       | १।२०।१२।२१        | ११।६।१७।३६      | १०।२९।५।२०       | ४६।५१    | १।१३            | ३।१८            | ५।२०             | ७।३६             | ९।५६               | १२।११               | १४।२६              | १६।४४            | १९।२            | २१।४            | २२।४४            | २४।११            |
| ७. गुरु          | ४।२२।३६।०८       | ३।१३।११।५२      | २।१५।०३।५६       | १।२१।२२।२७        | ११।६।१८।३६      | १०।२९।२।९        | ४६।५१    | १।४२            | ३।२८            | ५।३०             | ७।३२             | ९।५१               | १२।६                | १४।२१              | १६।३६            | १८।५७           | २१।००           | २२।३६            | २४।६             |
| ८. शुक्र         | ४।२३।१३।१६       | ३।१२।४९।४६      | २।१५।१७।५५       | १।२२।३२।३२        | ११।६।१९।४२      | १०।२८।५९।५८      | ४६।५१    | १।२८            | ३।८             | ५।१०             | ७।२७             | ९।४६               | १२।१                | १४।१६              | १६।३४            | १८।५२           | २०।५५           | २२।३४            | २४।०६            |
| ९. शनि           | ४।२३।४९।५२       | ३।१२।०२।४१      | २।१५।३१।३४       | १।२३।४१।४१        | ११।६।१८।१८      | १०।२८।५६।४७      | ४६।५१    | १।२३            | ३।३             | ५।५              | ७।२२             | ९।४१               | ११।५६               | १४।११              | १६।२९            | १८।४७           | २०।५०           | २२।२९            | २३।५६            |
| १०. रवि          | ४।२४।२६।२८       | ३।११।१५।३६      | २।१५।४५।१२       | १।२४।५०।५०        | ११।६।१६।४७      | १०।२८।५३।३६      | ४६।५१    | १।१९            | २।५९            | ५।००             | ७।१७             | ९।३६               | ११।५१               | १४।७               | १६।२५            | १८।४२           | २०।४६           | २२।२५            | २३।५१            |
| ११. सोम          | ४।२५।०३।०४       | ३।१०।२८।३२      | २।१५।५८।५०       | १।२५।५९।५८        | ११।६।१५।१५      | १०।२८।५०।२५      | ४६।५०    | १।१५            | २।५५            | ४।५६             | ९।१३             | ९।३२               | ११।४७               | १४।३               | १६।२१            | १८।३८           | २०।४२           | २२।२१            | २३।४६            |
| १२.मंगल          | ४।२५।३९।४०       | ३।९।४१।२८       | २।१६।१२।२८       | १।२७।०९।०६        | ११।६।१३।४३      | १०।२८।४७।१४      | ४६।५०    | १।११            | २।५०            | ४।५२             | ७।९              | ९।२८               | ११।४३               | १३।५९              | १६।१७            | १८।३४           | २०।३८           | २२।१७            | २३।४२            |
| १४. बुध          | ४।२६।१६।१६       | ३।८।५४।२४       | २।१६।२६।०६       | १।२८।१८।१४        | ११।६।१२।११      | १०।२८।४४।०३      | ४६।४९    | १।७             | २।४६            | ४।४८             | ७।५              | ९।२४               | ११।३९               | १३।५५              | १६।१३            | १८।३०           | २०।३४           | २२।१३            | २३।३८            |
| ३०. गुरु         | ४।२६।५२।५२       | ३।८।७।२०        | २।१६।३९।४४       | १।२९।२७।२२        | ११।६।१०।३६      | १०।२८।४०।५२      | ४६।४९    | १।३             | २।४२            | ४।४४             | ७।१              | ९।२०               | ११।३५               | १३।५१              | १६।९             | १८।२५           | २०।३०           | २२।९             | २३।३४            |

|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         |                                                                                                                                      |    |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----|
| <b>श्रावण कृष्ण पक्ष</b>                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                | सन् १४३३ साल, शाके-१९४७, सम्वत् २०८२, अशुद्धसमयः ता. १४ तः - शुद्ध ग्रीष्मर्तु ता. १७ वर्षार्तुः सौम्यगोलायन याम्यायनम् पश्चिमे कालः | २० |
|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                         | दिनांक: ११ जुलाई से २४ जुलाई २०२५ ई०                                                                                                 |    |
| श्रावणवर्जयेच्छाकम्, जनसंख्या दिवसः, पूर्वोदितः गुरुः १४।११, शिववासः रा. २।८ या. सिद्धियोगः अग्निवासः<br>अशून्यशयन व्रतं, पूर्वाब्बिना यात्रा श्रावणयां, सर्वार्थसिद्धियोगः दि. ७।३१ उ.<br>भद्रा २८।५२ उ. ४९।१८ या., भदवारम्भः दि. ७।४३ उ. पश्चिमार्बिना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रं, सिद्धियोगः, दीक्षाग्रहणं दि. ४।४६ या. अग्निवासः<br>सोमवारी व्रतं, पुष्ये गुरुः १८।११ शुद्धारम्भः, श्रीगणेश ४ व्रतं, शिववासः<br>मौना पंचमी, मनसा देव्युब्धानं-मधुश्रावणी पूजारम्भः पश्चिचात्रा पंचम्यां पूर्वभाद्रे, शिववासः रा. १०।५ या.<br>उ.भा. नक्षत्रः ५६।५१, भद्रा ३७।१२ उ., मासान्तः सिद्धियोगः रा. ८।२ उ.<br>भद्रा २७।१४ या, याम्यायनम् संक्रान्ति पु. कालः दि. घं. १२ या, भदवा समाप्तिः रा. ३।१९ उ., दीक्षाग्रहणं दि. ४।७ उ. सूतिकास्नानं, कर्के रविः १।१८ शिववासः सं. ५।५५ उ., अग्निवासः सं. ५।५५ या.<br>धृतियोगः ५२।२९, मन्वन्तरादि, मासादिः, शिववासः दि. ३।३३ या. सर्वार्थसिद्धियोगः रा. १।४२ या.<br>श्रावणे नवमी युता शनिः संतापकारकः, (९-१०) एकोदिष्टं, अग्निवासः दि. १।४ या. सिद्धियोगः दि. १।४ या.<br>पुष्ये रविः ३१।५९ चं. चं. पु. स्त्री. योगः चातक वाहनं चंद्रनाडीशो शनिः मध्यम वृष्टिः, शिववासः दि. १०/३६ उ., अग्निवासः मृत्युयोगः दि. १०।३६ उ.<br>कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, सोमवारी व्रतं, शिववासः, मृत्युयोगः दि. ८।१२ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः, दीक्षाग्रहणं<br>१३ ति.-५४।५०, भद्रा. ५६।२६ उ. दूर्वादलेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, सूतिकास्नानं, उत्तराविना यात्रा मृगशिरसि, अग्निवासः, शिववासः प्रा. ५।५५ या. सिद्धियोगः प्रा. ५।५५ उ.<br>भ. २४।१७ या. प्रदोष १४ व्रतं<br>श्रावणी ३०, स्नानदानादिः, पार्वणं, शुभवारान्विते दर्शे सुभिक्षं च प्रजासुखं, दक्षिणां विना यात्रा प्रतिपदि. शिववासः रा. १२।४३ या. सर्वार्थ सिद्धियोगः, अग्निवासः |                                                                                                                                      |    |



**रुद्राभिषेक में विशेष द्रव्य विचार-** ज्वरप्रकोपशान्त्यर्थ जलधारा शिवप्रिया॥ घृतधारा शिवे कार्या यावन्मन्त्रसहस्रकम्। तदा वंशस्य विस्तारो जायते नात्र संशयः। प्रमेहरोगशान्त्यर्थ प्राप्नुयान्मानसेप्सितम्। केवलं दुग्धधारा च तदा कार्या विशेषतः॥ शर्करामिश्रिता तत्र यदा बुद्धिर्जडा भवेत्। श्रेष्ठा बुद्धिर्भवेत्तस्य कृपया शंकरस्य च॥ सार्षपेणैव तैलेन शत्रुनाशो भवेदिह। मधुना यक्ष्मराजोऽपि गच्छेद्वै शिवपूजनात्॥ पापक्षयार्थी मधुना निर्व्याधिः सर्पिषा तथा। जीवनार्थी तु पयास श्रीकामीक्षुरसेन वै॥ पुत्रार्थी शर्करायास्तु रसनेनार्चेच्छिवं तथा। महालिंगाभिषेकेण सुप्रीतः शंकरो मुदा। कुर्याद्विधानं रुद्राणां यजुर्वेदविनिर्मितम्॥



तिथयः

दिनानि

तिथि  
दं. प.

तिथि  
घ. मि.

नक्षत्राणि  
दं. प.

नक्षत्राणि  
घं. मि.

योगः  
दं. प.

करणानि  
दं. प.

चन्द्रराश्यः

स्पष्टसूर्यः  
राश्यादि

दिनमानम्

सूर्योदयः  
घं. मि.

सूर्यास्तः  
घं. मि.

रा०  
ता०

ने०  
ता०

अं०  
ता०

१

शुक्र

४६।०८

रा.११।४५

पु.३०।०६

सं.५।२०

व.१०।६

किं.१७।२१

कर्क

३।०८।१६।०४

३३।३२

५।१८

६।४२

२६

६

२५

२

शनि

४४।५४

रा.११।१६

श्ले.३०।२३

सं.५।२७

सि.८।०६

वा.१५।३१

क.सं.५।२७

३।०६।१६।१२

३३।२८

५।१८

६।४२

१

१०

२६

३

रवि

४४।५५

रा.११।१७

मघ.३१।५३

सं.६।०४

व्य.७।०६

तै.१४।५५

सिंह

३।१०।१३।२०

३३।२५

५।१६

६।४१

२

११

२७

४

सोम

४६।१६

रा.११।५०

पू.फा.३६।०१

रा.७।४४

व.७।०८

व.१५।३६

सि.रा.२।००

३।११।१०।२८

३३।२२

५।२०

६।४०

३

१२

२८

५

मंगल

४८।४३

रा.१२।४६

उ.फा.३८।३६

रा.८।४६

परि.७।४८

बव.१७।२६

कन्या

३।१२।०७।३५

३३।१६

५।२०

६।४०

४

१३

२९

६

बुध

५२।२३

रा.२।१८

ह.४३।३६

रा.१०।४६

शि.६।०३

कौ.२०।३३

कन्या

३।१३।०४।४२

३३।१६

५।२१

६।३६

५

१४

३०

७

गुरु

५६।४७

रा.४।४

चि.४६।३२

रा.१।१०

सि.१०।४०

गर.२४।३५

क.दि.१२।००

३।१४।०१।४६

३३।१३

५।२१

६।३६

६

१५

३१

८

शुक्र

६०।००

अहो.रा.

स्वा.५५।५५

रा.३।४४

सा.१२।१७

वि.२६।१६

तुला

३।१४।५८।५६

३३।१०

५।२२

६।३८

७

१६

१ अग.

८

शनि

१।४४

प्रा.६।५

वि.६०।००

अहोरात्र

शुभ.१३।३१

बव.१।४४

तु.रा.११।३७

३।१५।५६।०६

३३।०६

५।२३

६।३७

८

१७

२

९

रवि

६।४६

दि.८।५

वि.२।२८

दि.६।२२

शु.१४।१७

को.६।४६

वृश्चिक

३।१६।५३।२२

३३।०३

५।२३

६।३७

९

१८

३

१०

सोम

११।२६

दि.१०।००

अनु.८।४२

दि.८।५३

ब्र.१४।१२

गर.११।२६

वृश्चिक

३।१७।५०।३५

३३।००

५।२४

६।३६

१०

१९

४

११

मंगल

१५।३२

दि.११।३८

ज्ये.१४।१५

दि.११।०७

ऐं.१३।१६

वि.२५।३२

वृ.दि.११।७

३।१८।४७।४८

३२।५७

५।२५

६।३५

११

२०

५

१२

बुध

१८।३०

दि.१२।४६

मूल.१८।५२

दि.१२।५८

वै.११।१६

बा.१२।४६

धनु

३।१९।४५।०१

३२।५४

५।२५

६।३५

१२

२१

६

१३

गुरु

२०।२६

दि.१।३६

पू.षा.२२।२२

दि.२।२३

वि.८।१८

तै.२०।२६

ध.रा.८।३५

३।२०।४२।१३

३२।४८

५।२६

६।३४

१३

२२

७

१४

शुक्र

२१।००

दि.१।५०

उ.षा.२४।२६

दि.३।१२

प्री.४।१६

व.२१।००

मकर

३।२१।३६।२५

३२।४८

५।२६

६।३४

१४

२३

८

१५

शनि

२०।१३

दि.१।३५

श्रव.२५।३२

दि.३।४०

सौ.५३।४८

बव.२०।१३

म.रा.३।३७

३।२२।३६।५०

३२।४५

५।२७

६।३३

१५

२४

९

तिथयः

दिनानि

मंगल  
राश्यादि

बुध  
राश्यादि

गुरु  
राश्यादि

शुक्र  
राश्यादि

शनि  
राश्यादि

राहु  
राश्यादि

मिश्रमान

मे.अ.  
घ. मि.

वृ.अ.  
घ. मि.

मि.अं.  
घ. मि.

क. अं.  
घ. मि.

सिंह.अं.  
घ. मि.

कन्या.अं.  
घ. मि.

तुला.अं.  
घ. मि.

वृ.अं.  
घ. मि.

ध.अं.  
घ. मि.

म.अं.  
घ. मि.

कु.अं.  
घ. मि.

मी.अं.  
घ. मि.

१. शुक्र

४।२७।२६।२८

३।०६।२०।१६

२।१६।५३।२२

२।००।३६।३०

११।०६।०६।०७

१०।२८।३७।३१

४६।४०

१।००

२।३८

४।४०

६।५७

६।१६

११।३१

१३।४७

१६।५

१८।२१

२०।२६

२२।५

२३।३०

२. शनि

४।२८।०६।३३

३।६।५४।४१

२।१७।०६।४८

२।१।४६।००

११।६।७।०६

१०।२८।३१।३०

४६।४७

०।५६

२।३४

४।३६

६।५३

६।१२

११।२७

१।४३

४।१

१८।१७

२०।२२

२२।१

२३।२६

३. रवि

४।२८।४३।३७

३।६।२६।०६

२।१७।२०।१४

२।२।५५।२६

११।६।५।८

१०।२८।३१।१६

४६।४५

०।५२

२।३०

४।३२

६।४६

६।८

११।२३

१।३६

३।५७

१८।१३

२०।१८

२२।५७

२३।२२

४. सोम

४।२६।२०।४१

३।६।०३।३२

२।१७।३३।४०

२।४।४।५८

११।६।३।१०

१०।२८।२८।८

४६।४३

०।४८

२।२६

४।२८

६।४५

६।४

११।१६

१।३५

३।५३

१८।०६

२०।१४

२१।५२

२३।१८

५. मंगल

८।२६।५७।४५

३।५।३७।५८

२।१७।४७।०६

२।५।१४।२७

११।६।१।१२

१०।२८।२४।५१

४६।४१

०।४४

२।२२

४।२४

६।४१

६।००

११।१५

१।३१

३।४६

१८।५

८।१०

२१।३८

२३।१४

६. बुध

५।००।३४।४६

३।५।१२।२४

२।१८।००।३१

२।६।२३।५६

११।५।५६।१४

१०।२१।२१।४६

४६।३६

०।४०

२।१८

४।२०

६।३७

८।५६

११।११

१।२७

३।४५

१८।०१

८।६

२१।३४

२३।१०

७. गुरु

५।०१।११।५३

३।४।४६।५०

१।१८।१३।५६

२।७।३३।२५

११।५।५७।१७

१०।२८।१८।३५

४६।३७

०।३६

२।१४

४।१६

६।३३

८।५२

११।७

१।२३

३।४१

१७।५७

८।२

२१।३०

२३।६

८. शुक्र

५।०१।४८।५७

३।४।१६।१६

२।१८।२७।२१

२।८।४२।५४

११।०५।५५।२०

१०।२८।१५।२४

४६।३५

०।३२

२।१०

४।१२

६।२६

८।४८

११।३

१।१६

३।३७

१७।५३

७।५६

२१।२६

२३।२

८. शनि

५।०२।२६।१७

३।४।३६।५७

२।१८।४०।२५

२।६।५३।१५

११।५।५२।२६

१०।२८।१२।१३

४६।३३

०।२८

२।६

४।८

६।२५

८।४४

१०।५६

१।१५

३।३३

१७।४६

७।५२

२१।२२

२२।५८

९. रवि

५।०३।०३।३६

३।४।५५।३५

२।१८।५३।२६

२।११।३।३६

११।५।४६।३८

४०।२८।१।०२

४६।३१

०।२४

२।२

४।४

६।२१

८।४०

१०।५५

१।११

३।२६

१७।४५

७।४८

२१।१८

२२।५४

१०. सोम

५।०३।४०।५५

३।५।१२।१३

२।१६।०६।३३

२।१२।१३।५६

११।५।४६।४८

१०।२८।५।५१

४६।२६

०।२०

१।५८

४।००

६।२७

८।३६

१०।५१

१।७

३।२५

१७।४१

७।४८

६।१४

२२।५०

११.मंगल

५।०४।१८।१४

३।५।२६।५०

२।१६।१६।३७

२।१३।२४।१६

११।५।४३।५८

१०।२८।२।४०

४६।२७

०।१६

१।५४

३।३६

६।२३

८।३२

१०।४७

१।३

३।२१

१७।३७

७।४०

६।१०

२२।४६

१२. बुध

५।४।५५।३३

३।५।४७।२७

२।१६।



| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | रवि    | १८।१७          | दि.१२।४७       | ध.२५।१७              | दि.३।३५               | शो.४७।२८       | कौ.१८।१७         | कुम्भ       | ३।२३।३४।१५               | ३२।४२    | ५।२८                 | ६।३२                  | १६         | २५         | १०         |
| २     | सोम    | १५।१५          | दि.११।३४       | शत.२३।५७             | दि.३।०३               | अ.४०।३२        | गर.१५।१५         | कुम्भ       | ३।२४।३१।४०               | ३२।३६    | ५।२८                 | ६।३२                  | १७         | २६         | ११         |
| ३     | मंगल   | ११।१५          | दि.९।५६        | पू.भा.२१।४८          | दि.२।१२               | सु.३३।१२       | वि.११।१५         | कु.दि.८।२५  | ३।२५।२६।०५               | ३२।३६    | ५।२६                 | ६।३१                  | १८         | २७         | १२         |
| ४     | बुध    | ६।२४           | दि.८।०३        | उ.भा.१८।४६           | दि.१२।५६              | धृ.२५।३६       | बा.६।२४          | मीन         | ३।२६।२६।३०               | ३२।३३    | ५।२६                 | ६।३१                  | १९         | २८         | १३         |
| ५     | गुरु   | ०।५६           | प्रा.५।५४      | रे.१५।१२             | दि.११।३५              | शू.१७।५७       | तै.०।५६          | मी.दि.११।३५ | ३।२७।२३।५५               | ३२।३०    | ५।३०                 | ६।३०                  | २०         | २९         | १४         |
| ७     | शुक्र  | ४९।०           | रा.१।०६        | अ.११।११              | दि.९।५८               | गं.१०।२०       | वि.२२।२७         | मेष         | ३।२८।२१।२०               | ३२।२८    | ५।३०                 | ६।३०                  | २१         | ३०         | १५         |
| ८     | शनि    | ४२।४५          | रा.१०।३७       | भ.६।५६               | दि.८।१६               | वृ.२।५७        | वा.१५।५२         | मे.दि.१।१४  | ३।२९।१८।५६               | ३२।२४    | ५।३१                 | ६।२६                  | २२         | ३१         | १६         |
| ९     | रवि    | ३६।४३          | रा.८।१२        | कृ.२।५०              | दि.६।३१               | व्य.४९।२६      | तै.९।४४          | वृष         | ४।००।१६।३१               | ३२।२१    | ५।३१                 | ६।२६                  | २३         | १          | १७         |
| १०    | सोम    | ३१।०४          | सं.५।५८        | मृ.५५।२२             | रा.३।४१               | ह.४९।४८        | व.३।५४           | वृ.दि.४।२५  | ४।०१।१४।०६               | ३२।१८    | ५।३२                 | ६।२८                  | २४         | २          | १८         |
| ११    | मंगल   | २५।४३          | दि.३।५४        | आ.५२।२७              | रा.२।३२               | व.४३।०६        | बव.१।३१          | मिथुन       | ४।०२।११।४१               | ३२।१५    | ५।३३                 | ६।२७                  | २५         | ३          | १९         |
| १२    | बुध    | २१।२९          | दि.२।१०        | पुन.५०।२६            | रा.१।४४               | सि.३७।१०       | तै.२१।२६         | मि.रा.७।५६  | ४।०३।०९।१६               | ३२।१२    | ५।३४                 | ६।२६                  | २६         | ४          | २०         |
| १३    | गुरु   | १७।५७          | दि.१२।४५       | पु.४९।१४             | रा.१।१६               | व्य.३१।५४      | व.१७।५७          | कर्क        | ४।०४।०६।५१               | ३२।०९    | ५।३४                 | ६।२६                  | २७         | ५          | २१         |
| १४    | शुक्र  | १५।२६          | दि.११।४५       | श्लेष.४९।१२          | रा.१।१६               | व.२७।४८        | श.१५।२६          | क.रा.१।१६   | ४।०५।०४।२६               | ३२।०५    | ५।३५                 | ६।२५                  | २८         | ६          | २२         |
| ३०    | शनि    | १४।१०          | दि.११।१६       | म.५०।२१              | रा.१।४४               | परि.२४।०२      | ना.१४।१०         | सिंह        | ४।०६।०२।१६               | ३२।०२    | ५।३६                 | ६।२४                  | २९         | ७          | २३         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

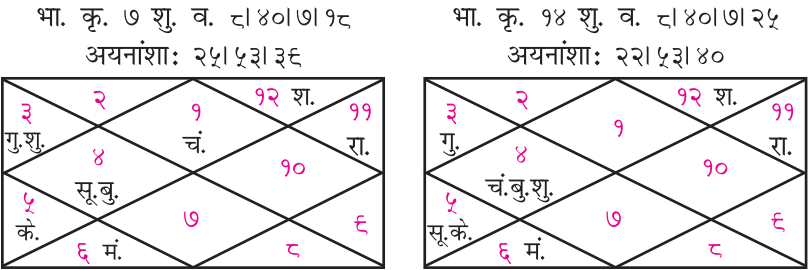
| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. रवि           | ५।७।२६।११        | ३।८।१०।१५       | २।२०।२४।१३       | २।१९।२१।२७        | ११।५।२८।३३      | १०।२७।४६।४५      | ४६।२१    | ११।५७           | १।३५            | ३।७              | ६।४             | ८।१३               | १०।२८               | ११।५४              | ३।२              | १७।१८           | ७।३१            | ८।४६             | २२।२७            |
| २. सोम           | ५।८।४।११         | ३।९।४।१७        | २।२०।३६।५५       | २।२०।४६।३२        | ११।५।२५।०६      | १०।२७।४३।३४      | ४६।२०    | ११।४४           | १।३२            | ३।४              | ६।१             | ८।९                | १०।२४               | ११।५१              | २।५६             | १७।२५           | ७।१८            | ८।४२             | २२।२४            |
| ३. मंगल          | ५।८।४२।११        | ३।९।५८।९        | २।२०।४९।३७       | २।२२।३।३७         | ११।५।२१।३६      | १०।२७।४०।२३      | ४६।१९    | ११।५१           | १।२९            | ३।१              | ५।५८            | ८।६                | १०।२२               | ११।५६              | २।५६             | १७।२२           | ७।२५            | ८।४४             | २२।२१            |
| ४. बुध           | ५।९।२०।११        | २।१०।५२।१       | २।२१।०२।१९       | २।२३।२०।४२        | ११।५।१८।१२      | १०।२७।३७।१२      | ४६।१८    | ११।४८           | १।२६            | २।५८             | ५।५५            | ८।३                | १०।११               | ११।५३              | २।५३             | १७।१९           | ७।१२            | ८।४०             | २२।१८            |
| ५. गुरु          | ५।९।५८।११        | ३।११।४५।५३      | २।२१।१५।३        | २।२४।३७।४७        | ११।५।१४।४५      | १०।२७।३४।१       | ४६।१७    | ११।४५           | १।२५            | २।५५             | ५।५२            | ८।००               | ४०।१६               | ११।५०              | २।५०             | १७।१८           | ७।१९            | ८।३५             | २२।१५            |
| ७. शुक्र         | ५।१०।३५।११       | ३।१२।३९।४५      | २।२७।२७।४३       | २।२५।५४।५२        | ११।५।११।१८      | १०।२७।३०।५०      | ४६।१६    | ११।४२           | १।२०            | २।५२             | ५।४९            | ७।५७               | १०।१३               | ११।४९              | २।४७             | १७।१३           | ७।१६            | ८।३१             | २२।१२            |
| ८. शनि           | ५।११।१३।२८       | ३।१३।५।५        | २।२१।३९।५८       | २।२६।५९।५८        | ११।५।७।१२       | १०।२७।२७।३६      | ४६।१५    | ११।३९           | १।१७            | २।४९             | ५।४६            | ६।५४               | १०।१०               | ११।४४              | २।४४             | ७।१०            | ७।१३            | ८।३१             | २२।९             |
| ९. रवि           | ५।११।५१।४५       | ३।१५।१६।२०      | २।२१।५२।३        | २।२८।५।४          | ११।५।३।७        | १०।२७।२४।२८      | ४६।१३    | ११।३६           | १।१४            | २।४६             | ५।४३            | ७।५१               | १०।७                | ११।४१              | २।४१             | ४।७             | ७।१०            | ८।२८             | २२।६             |
| १०. सोम          | ५।१२।३०।५        | ३।१६।३४।३७      | २।२२।४।२८        | २।२९।१०।१०        | ११।४।५९।२       | १०।२७।२१।१७      | ४६।११    | ११।३२           | १।१०            | २।४२             | ५।३९            | ७।४७               | १०।४                | ११।३८              | २।३८             | ४।४             | ७।७             | ८।२५             | २२।३             |
| ११.मंगल          | ५।१३।८।१९        | ३।१७।५२।५४      | २।२२।१६।४३       | ३।०।१५।१६         | ११।४।५४।५७      | १०।२७।१८।६       | ४६।०९    | ११।२८           | १।६             | २।३८             | ५।३५            | ७।४३               | १०।००               | ११।३४              | २।३४             | ५।००            | ७।३             | ८।२१             | २१।५९            |
| १२. बुध          | ५।१३।४६।३६       | ३।१९।११।११      | २।२२।२८।५७       | ३।१।२०।२२         | ११।४।५०।५२      | १०।२७।१४।५५      | ४६।०७    | ११।२४           | १।२             | २।३४             | ५।३१            | ७।३९               | ९।५६                | ११।४०              | २।३०             | २।५६            | ७।००            | ८।१७             | २१।५५            |
| १३. गुरु         | ५।४४।३४।५२       | ३।२०।२९।२८      | २।२२।४१।११       | ३।२।२५।२८         | ११।४।४६।४७      | १०।२७।११।४४      | ४६।०५    | ११।२०           | १।५८            | २।३०             | ५।२७            | ७।३५               | ९।५४                | ११।२६              | २।२६             | ३।२२            | ६।५८            | ८।१३             | २१।५१            |
| १४. शुक्र        | ५।१५।०३।०८       | ३।२१।४७।४५      | २।२२।५३।५५       | ३।३।३०।३३         | ११।०४।४२।४२     | १०।२७।०८।३३      | ४६।०३    | ११।१६           | १।५२            | २।२६             | २।२३            | ७।३१               | ९।५०                | ११।२२              | १३।२६            | १५।५२           | १८।५२           | २०।९             | २१।५७            |
| ३०. शनि          | ५।५।४१।४१        | ३।२३।२०।१४      | २।२३।५।१३        | ३।४।४२।३२         | ११।०४।३८।१८     | १०।२७।०५।२२      | ४६।०२    | २३।१२           | १।५०            | २।२२             | ५।१९            | ७।२७               | ९।४६                | ११।१८              | १३।२२            | १५।४८           | १८।४८           | २०।५             | २१।५३            |

भाद्र कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४७, सम्वत् २०८२, शुद्ध समयः ता. १७ तः अशुद्ध वर्षार्तु सोम्यगोलः याम्यायनम् पश्चिमे कालः ता. १७ तः उत्तरे कालः

दिनांकः १० अगस्त से २३ अगस्त २०२५ ई०

भाद्रपदे दधित्याजेत्, श्रीदुर्गारथयात्रा, (१-२) एकोदिष्टं, शिववासः दि. १२।४७ या., अग्निवासः दि. १२।४७ उ., मृत्युयोगः दि. १२।४७ या.  
भ. ४३।१५ उ. गृहारम्भः शतभिषायां, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रपदे, अग्निवासः दि. ११।३४ या., मृत्युयोगः दि. ११।३४ या.  
भ. ११।१५ या., कज्जल तृतीया, श्री विनायक ४ व्रतं, बहुला चतुर्थी, पश्चिम यात्रा पूर्वभाद्रे, शिववासः दि. ९।५९ उ., अग्निवासः दि. ९।५९ उ. सिद्धियोगः दि. ९।५९ या.  
**गुरुपंचमी**, गृहारम्भः पंचम्यां, उत्तरभाद्रे, पश्चिम यात्रा रेवत्यां, शिववासः, अग्निवासः दि. ८।३ या.  
षष्ठी तथि मानं-५४।५६, भ. ५५।५५ उ., **वरूणषष्ठि**, भदवा समाप्तिः दि. ११।३५ उ., सूतिकास्नानं, गं. ३।१० उ.-१८।१० या., अग्निवासः प्रा. ५।५४ उ. शिववासः प्रा. ५।५४ या. सर्वार्थसिद्धियोगः  
भ. २२।२७ या., स्वतंत्रता दिवसः, मृत्युयोगः रा. १।६ या. सर्वार्थसिद्धियोगः दि. ९।५८ या.  
ध्रुवयोगः-५२।५९, मासान्तः, **कृष्णजयन्ती कृष्णष्टमी व्रतं**, मोहरात्रिनिशीथे श्रीकृष्ण पूजनं जयन्ती व्रतं च, अग्निवासः, सिद्धियोगः रा. १०।३७ उ. शिववासः रा. १०।३७ या.  
रोहिणी नक्षत्र ५६।१४, **मघायां सिंहं च रवि २८।८** पु. स्त्री. सू. चं. योगो मेष वाहन वातानाडीशो सूर्य वायु वृष्टि योगः, अशुद्धारम्भः २८।८ उ. मु. ५५ फलं महर्घं विष्णुपदी सं. पु. काल १२ उ.  
भ. ३।५४ उ. ३१।०४ या., मासादिः शिववासः सं. ५।५८ उ., अग्निवासः सं. ५।५८ या., सिद्धियोगः सं. ५।५८ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा. ३।४१ या.  
**जया ११ व्रतं सर्वेषां**, कर्क शुक्रः ४८।२१, पश्चिम दक्षिण यात्रा पुनर्वसौ, शिववासः, अग्निवासः दि. ३।५४ उ., मृत्युयोगः दि. ३।५४ या.  
**कुष्माण्डेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं**, झल्की देवी स्मृति दिवसः, पश्चिम दक्षिण यात्रा द्वादश्यां, सद्भावना दिवसः, अग्निवासः दि. २।१० या. शिववासः दि. २।१० या. सिद्धियोगः दि. २।१० या. ततः मृत्युयोगः  
भ. १७।५७ उ. ४६।४२ या., **प्रदोष १४ व्रतं**, द्वापरयुगादिः, **महाभर १४** श्री भैरवपूजनं, दक्षिणां विनायात्रा त्र्योदश्यां, अग्निवासः दि. १२।४५ उ. मृत्युयोगः दि. १२।४५ उ., सर्वार्थसिद्धियोगः रा. १।१६ या.  
गं ३८।१२ उ. ५३।१२ या. शिववासः दि. ११।४५ उ., अग्निवासः दि. १५।२६ या.  
भाद्री कुशी अमावास्या, **कुशोत्पाटनं**, पापवारान्तिदर्शं दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्; शिववासः दि. ११।१६ या., बाबा गणिनाथ जयंत्युत्सवः, उत्तरयात्रा पूर्व फाल्गुन्यां



**मासाभक्षणफल महाभारत-** मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेतु शतं समाः। न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिरः। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम्। यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः॥  
कस्यापित कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता,  
**नन्दिपुराणे-** कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यत्तु तद्व्रतं निष्फलं भवेत्॥  
**श्रेष्ठामि-** ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यामामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वीर्यानीति निश्चयः॥

**कुशोत्पाटन-मन्त्रः-** कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि॥  
कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितःपुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम्॥  
**वर्ज्यकुशाः-** चितिदर्भाः पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्॥  
**विविधविषयाः-** भाद्रकृष्णचतुर्थ्यां बहुलापूजा। सा च तृतीयायुता ग्राह्या, परयुक्ताया दोषश्रवणात्। भादो कृष्ण चौथ को बहुला पूजा होती है, यह तृतीया युक्तग्राह्य है। परयुक्त दोषावह कहा गया है।  
भाद्रकृष्णाष्टम्यां कृष्णजन्माष्टमीव्रतम्-तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतं उदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यमेव कार्यमिति। भाद्रामायां  
**श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि** मात्स्ये- कुष्माण्डं महिषीक्षीरं विल्वपत्रमगद्विजाः।  
श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः।  
**श्राद्धे प्रशस्तानि-** उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः।  
**महिष्यादिप्रसवदोषः-** माघे बुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा।  
सिंह गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति॥  
**भादो मे गायप्रसव दोषकारक होता है-** भानौ सिंहगते चैव यस्य गौसम्प्रसूयते।  
मरणान्तस्य निर्दिष्टं षड्भिर्मासैर्न संशयः॥



तिथयः

दिनानि

तिथि

दं. प.

तिथि

घ. मि.

नक्षत्राणि

दं. प.

नक्षत्राणि

घं. मि.

योगः

दं. प.

करणानि

दं. प.

चन्द्रराश्यः

स्पष्टसूर्यः

राश्यादि

दिनमानम्

सूर्योदयः

घं. मि.

सूर्यास्तः

घं. मि.

रा०

ता०

ने०

ता०

अं०

ता०

१

रवि

१४।०८

दि.११।१५

पू.फ.५२।४८

रा.२।४३

शि.२१।३५

बव.१४।०८

सिंह

४।०७।००।०५

३१।५८

५।३६

६।२४

१

८

२४

चन्द्रर्शनं, त्रिपुष्कर योग, भाद्री रविवतं, पूर्वोत्तर यात्रा द्वितियायां पूर्वफाल्गुन्यां, अग्निवासः शिववासः दि. ११।१५ उ., मृत्युयोगः दि. ११।१५ या.

२

सोम

२५।२६

दि.११।४७

उ.फ.५६।२९

४।१३

सि.२०।१०

कौ.१५।२६

सिं.दि.१।६

४।०७।५७।५४

३१।५४

५।३७

६।२३

२

९

२५

दक्षिण यात्रा हस्ते, शिववासः दि. ११।४७ या., मृत्युयोगः दि. ११।४७ या.

३

मंगल

१७।५४

दि.१२।४८

हस्त६०।००

अहोरा.

सा.१९।३९

गर.१७।४४

कन्या

४।०८।५५।४३

३१।५०

५।३८

६।२२

३

१०

२६

भ. ५०।१३ उ., हरितालिका (तीज) व्रतं, चौटचन्द्रव्रतं, चन्द्रपूजनं, पूर्व दक्षिण यात्रा हस्ते, अग्निवासः

४

बुध

२१।३१

दि.२।१५

हस्त११।१६

प्रा.६।९

शुभ.२०।००

वि.२१।३१

क.सं.७।१८

४।०९।५३।३२

३१।४६

५।३९

६।२१

४

११

२७

भ. २१।३१ या., श्रीगणेश ४ व्रतं, श्री गणेशोत्सवारम्भः, पूर्वदक्षिण यात्रा पंचम्यां कन्यास्थेचन्द्रे ततः पश्चिम दक्षिण यात्रा शिववासः दि. २।१५ उ. सर्वार्थसिद्धियोगः प्रा. ६।९ या.

५

गुरु

२५।५७

दि.४।०२

चित्रा६।५९

दि.८।२७

शु.२०।५९

बा.२५।५७

तुला

४।१०।५१।२१

३१।४३

५।३९

६।२१

५

१२

२८

ऋषि पंचमी, सप्तर्षिपूजनं, पंचगव्यप्राशनं स्वात्यां, सूतिकास्नानं, पश्चिम यात्रा, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः दि. ४।२ या.

६

शुक्र

३०।५६

सं.६।०२

स्वा.१३।१६

दि.१०।५८

ब्र.२२।२५

तै.३०।५६

तुला

४।११।४९।१०

३१।४०

५।४०

६।२०

६

१३

२९

पर्पद षष्ठी, सूर्यषष्ठि व्रतं, श्री सूर्यपूजनं, श्री कार्तिकेय दर्शनं-दक्षिण यात्रा स्वात्यां, राष्ट्रिय खेल दिवसः शिववासः सं. ६।२ या. सिद्धियोगः सं. ६।२ या. ततः मृत्युयोगः

७

शनि

३६।०२

रा.८।०६

वि.१९।४७

दि.१।३६

ऐं.२३।५८

गर.३।२९

तु.दि.७।५७

४।१२।४७।११

३१।३६

५।४१

६।१७

७

१४

३०

भ. ३६।०२ उ., पश्चिमोत्तर यात्रा अनुराधायां, अग्निवासः

८

रवि

४०।४८

रा.१०।०१

अनु.२६।०७

दि.४।०९

वै.२५।२१

वि.८।२५

वृश्चिक

४।१३।४५।१२

३१।३२

५।४२

६।१८

८

१५

३१

भ. ८।२५ या., गोपाष्टमी, महालक्ष्मी कथारम्भः, पूर्व फाल्गुन्यां रविः १९।१२ सू.सू. पु. स्त्री योगे चन्द्रनाडीशो शनिः वायु वृष्टियोगः, भाद्रीरविव्रतं उत्तरे यात्रा अष्टम्यां, सिद्धियोगः रा. १०।१ या.

९

सोम

४४।५९

रा.११।४२

ज्ये.३१।४९

सं.६।२६

वि.२६।१५

व्य.१२।५३

वृ.रा.६।२६

४।१४।४३।१३

३१।३०

५।४२

६।१८

९

१६

१ सि.

सितम्बर मासारम्भः द. ति. ४४।५९ उ., गं. २५।४९ उ. ४०।४९ या., शिववासः रा. ११।४२ या., अग्निवासः

१०

मंगल

४८।०४

रा.१२।४२

मूल.३६।४१

रा.८।२२

प्री.२६।३२

तै.१६।३१

धनु

४।१५।४१।१४

३१।२४

५।४३

६।१७

१०

१७

२

अच्युतदशमी, द. ति. ४८।४ या.

११

बुध

५०।०५

रा.१।४६

पू.षा.४०।२८

रा.९।५५

आ.२५।५१

व.१९।५

ध.रा.४।१०

४।१६।३९।१५

३१।२०

५।४४

६।१६

११

१८

३

भ. १९।५ उ. ५०।५ या, हरेः पार्श्व परिवर्तनं-कर्माधर्मा ११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वयात्रा पूर्वाषाढे, अग्निवासः

१२

गुरु

५०।४९

रा.२।५

उ.षा.४२।५९

रा.१०।५७

सौ.२४।१८

बव.२०।२५

मकर

४।१७।३७।१६

३१।१७

५।४५

६।१५

१२

१९

४

इन्द्रोत्थानं इन्द्रपूजा, हृषिकेश द्वादशी, कुष्माण्डेन पारणं, सूतिकास्नानं, दक्षिणां विना यात्रा श्रवणयां, शिववासः

१३

शुक्र

५०।१०

रा.१।४९

श्रव.४४।११

रा.११।२५

शो.२१।४२

कौ.२०।३०

मकर

४।१८।३५।१६

३१।१४

५।४५

६।१५

१३

२०

५

प्रदोष १३ व्रतं भदवारम्भः रा. ११।२५ उ., शिक्षक दिवसः, पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा, शिववासः रा. १।४९ या., अग्निवासः सर्वार्थसिद्धियोगः रा. ११।२५ या.

१४

शनि

४८।२०

रा.१।६

धनि.४४।१३

रा.११।२७

अ.१८।०५

गर.१९।१५

म.दि.११।२५

४।१९।३३।३२

३१।१०

५।५४

६।१४

१४

२१

६

भ. ४८।२० उ., प्रदोष १४ व्रतं, श्रीअनन्त चतुर्दशी, अनंतपूजनं तद्दोरक धारणञ्च, श्रीगणेश विसर्जनं, सिद्धियोगः रा. १।६ या. ततः मृत्युयोगः

१५

रवि

४५।२४

रा.११।५७

शत४३।०६

रा.११।०१

सु.१३।३४

वि.१६।५२

कुंभ

४।२०।३१।४८

३१।६

५।४७

६।१३

१५

२२

७

भ. १६।५२ या., भाद्री पूर्णिमा, सत्ययुगान्तः, अगस्त्यार्घदानं, भाद्री रविव्रतं, शिवार्चनं, चन्द्रग्रहणं-स्पर्श-रात्रि ९।५० मोक्ष १।२६

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| तिथियः   | मंगल       | बुध        | गुरु       | शुक्र      | शनि         | राहु        | मिश्रमान | मे.अ.  | वृ.अ.  | मि.अं. | क.अं.  | सिंह.अं. | कन्या.अं. | तुला.अं. | वृ.अं. | ध.अं.  | म.अं.  | कु.अं. | मी.अं. |
|----------|------------|------------|------------|------------|-------------|-------------|----------|--------|--------|--------|--------|----------|-----------|----------|--------|--------|--------|--------|--------|
| दिनानि   | राश्यादि   | राश्यादि   | राश्यादि   | राश्यादि   | राश्यादि    | राश्यादि    |          | घ. मि. | घ. मि. | घ. मि. | घ. मि. | घ. मि.   | घ. मि.    | घ. मि.   | घ. मि. | घ. मि. | घ. मि. | घ. मि. | घ. मि. |
| १. रवि   | ५।१६।२०।१४ | ३।२४।५२।४३ | २।२३।१७।१  | ३।५।५४।३१  | ११।४।३३।५४  | १०।२७।२।११  | ४६।००    | २३।८   | २४।४६  | २।१८   | ५।१५   | ७।२३     | ९।४२      | ११।१४    | १३।१८  | १५।४४  | १८।४४  | २०।१   | २१।४९  |
| १. सोम   | ५।१६।५८।४७ | ३।२६।२५।१२ | २।२३।२८।४९ | ३।०।०६।३०  | ११।४।२१।३०  | १०।२६।५९।०० | ४५।५८    | २३।४   | २४।४२  | २।१४   | ५।११   | ७।१९     | ९।३८      | ११।१०    | १३।१४  | १५।४०  | १८।४०  | १९।५७  | २१।४५  |
| ३. मंगल  | ५।१७।३७।१९ | ३।२७।५७।४१ | २।२३।४०।३७ | ३।८।१८।२८  | ११।४।२५।०६  | १०।२६।५५।४९ | ४५।५६    | २३।०   | २४।३८  | २।१०   | ५।७    | ७।१५     | ९।३४      | ११।६     | १३।१०  | १५।३६  | १८।३६  | १९।५४  | २१।४१  |
| ४. बुध   | ५।१८।१५।५५ | ३।२१।३०।१० | २।२३।५२।२४ | ३।९।३०।२६  | ११।४।२०।४२  | १०।२६।५२।३८ | ४५।५४    | २२।५६  | २४।३४  | २।६    | ५।३    | ७।११     | ९।३०      | ११।०२    | १३।६   | १५।३२  | १८।३२  | १९।५०  | २१।३७  |
| ५. गुरु  | ५।१८।५४।२३ | ४।१।२।३९   | २।२४।४।११  | ३।१०।४२।२४ | ११।४।१६।१८  | १०।२६।४१।२७ | ४५।५२    | २२।५२  | २४।३०  | २।२    | ५।०    | ७।७      | ९।२६      | १०।५८    | १३।२   | १५।२८  | १८।२८  | १९।४६  | २१।३३  |
| ६. शुक्र | ५।१९।३२।५५ | ४।०२।३५।०७ | २।२४।१५।५८ | ३।११।५४।२२ | ११।०४।११।५४ | १०।२६।४६।१६ | ४५।५०    | २२।४८  | २४।२६  | १।५८   | ५।६    | ७।३      | ९।२२      | १०।५४    | १३।५८  | १५।२४  | १८।२४  | १९।४२  | २१।२७  |
| ७. शनि   | ५।२०।११।५३ | ४।४।१६।१५  | २।२४।२७।४  | ३।१३।६।२०  | ११।४।७।१५   | १०।२६।४३।५  | ४५।४९    | २२।४४  | २४।२२  | २।२४   | ५।२    | ७।००     | ९।१८      | ११।५०    | १३।५४  | १५।२०  | १८।२०  | १९।३८  | २१।२३  |
| ८. रवि   | ५।२०।५०।५१ | ४।५।५७।२३  | २।२४।३८।१० | ३।१४।१८।१८ | ११।४।२।३६   | १०।२६।३९।५४ | ४५।४७    | २२।४०  | २४।१८  | २।२०   | ४।५८   | ६।५६     | ९।१४      | ११।४६    | १३।५४  | १५।१६  | १८।१६  | १९।३४  | २१।१९  |
|          |            |            |            |            |             |             |          |        |        |        |        |          |           |          |        |        |        |        |        |



| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | सोम    | ४१ ३१          | रा.१० २४       | पू.भा.४१ ०६          | रा.१० १४              | धृ.८ १०        | बा.१३ २७         | कु.दि.४ २६  | ४ २१ ३० ०४               | ३१ ०२    | ५ ४८                 | ६ १२                  | १६         | २३         | ८          |
| २     | मंगल   | ३६ ४६          | रा.८ ३०        | उ.भा.३८ १६           | रा.८ ०६               | शू.२ ०६        | तै.८ १२          | मीन         | ४ २२ २८ २०               | ३० ५८    | ५ ४८                 | ६ १२                  | १७         | २४         | ९          |
| ३     | बुध    | ३१ २६          | सं.६ २३        | रेवती.३४ ४५          | रा.७ ४३               | वृ.४८ ०६       | व.४ ६            | मी.रा.७ ४३  | ४ २३ २६ ३५               | ३० ५४    | ५ ४९                 | ६ ११                  | १८         | २५         | १०         |
| ४     | गुरु   | २५ ३४          | दि.४ ४         | अ.३० ४९              | सं.६ १०               | ध्रु.४० ३५     | बा.२५ ३४         | मेष         | ४ २४ २४ ५०               | ३० ५०    | ५ ५०                 | ६ १०                  | १९         | २६         | ११         |
| ५     | शुक्र  | १९ ३२          | दि.१ ४०        | भर. २६ ३९            | दि.४ ३१               | व्या.३३ ५३     | तै.१९ ३२         | मे.रा.१० ५  | ४ २५ २३ ०५               | ३० ४६    | ५ ५१                 | ६ ०९                  | २०         | २७         | १२         |
| ६     | शनि    | १३ २३          | दि.११ १३       | क्र.२२ २७            | दि.२ ५१               | ह.२५ १२        | व.१३ २३          | वृष         | ४ २६ २१ ३६               | ३० ४२    | ५ ५२                 | ६ ०८                  | २१         | २८         | १३         |
| ७     | रवि    | ७ २५           | दि.८ ५१        | रो.१८ २५             | दि.१ १५               | व.१७ ३४        | बव.७ २५          | वृ.रा.१२ ३१ | ४ २७ २० ०७               | ३० ३८    | ५ ५३                 | ६ ०७                  | २२         | २९         | १४         |
| ८     | सोम    | १ ४७           | दि.६ ३६        | मृ.१४ ४७             | दि.११ ४८              | सि.१० १३       | कौ.१ ४७          | मिथुन       | ४ २८ १८ ३८               | ३० ३४    | ५ ५३                 | ६ ०७                  | २३         | ३०         | १५         |
| १०    | मंगल   | ५२ १६          | रा.२ ४८        | आ.११ ४१              | दि.१० ३४              | व्य.३ २१       | व.२४ २७          | मि.रा.३ ५४  | ४ २९ १७ ०९               | ३० ३०    | ५ ५४                 | ६ ०६                  | २४         | ३१         | १६         |
| ११    | बुध    | ४८ ४५          | रा.१ २५        | पुन.८ २७             | दि.८ ४२               | प.५१ ३५        | बव.२० ३०         | कर्क        | ५ ० १५ ४०                | ३० २६    | ५ ५५                 | ६ ०५                  | २५         | १          | १७         |
| १२    | गुरु   | ४६ १५          | रा.१२ २६       | पु.८ ००              | दि.८ ०८               | शि.४६ ५३       | कौ.१७ ३०         | कर्क        | ५ ०१ १४ २२               | ३० २२    | ५ ५६                 | ६ ०४                  | २६         | २          | १८         |
| १३    | शुक्र  | ४५ ००          | रा.११ ५६       | श्ले.७ ३९            | दि.८ ००               | सि.४३ ०८       | गर.२५ ३७         | क.दि.८ ००   | ५ ०२ १२ ४१               | ३० १८    | ५ ५६                 | ६ ०४                  | २७         | ३          | १९         |
| १४    | शनि    | ४४ ५८          | रा.११ ५६       | मघ.८ ३१              | दि.८ २१               | सा.४० २३       | वि.१४ ५९         | सिंह        | ५ ०३ ११ २८               | ३० १४    | ५ ५७                 | ६ ०३                  | २८         | ४          | २०         |
| ३०    | रवि    | ४६ १६          | रा.१२ २८       | पू.फ.१० ३७           | दि.१० १३              | शु.३८ ३७       | च.१५ ३७          | सि.सं.४ ३६  | ४ ०४ १० १५               | ३० १०    | ५ ५८                 | ६ ०२                  | २९         | ५          | २१         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

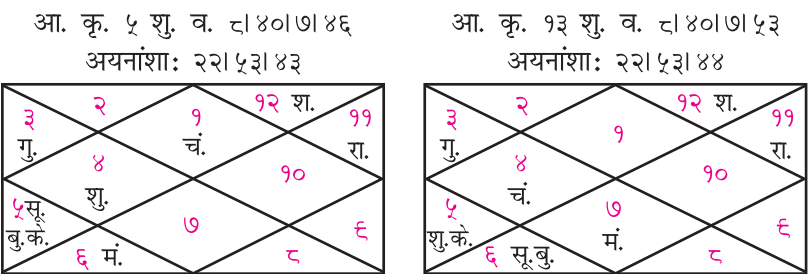
| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. सोम           | ५ २६ ०३ ५७       | ४ १९ ४० २४      | २ २६ ०४ ५१       | ३ २३ ५५ ३८        | ११ ३ २३ २२      | १० १६ १४ २६      | ४५ ३१    | २२ १०           | २३ ५०           | १ ५३             | ४ १०            | ६ ३०               | ८ ४४                | १० ५९              | १३ १८            | १५ ३५           | १७ ३७           | १९ १७            | २० ४४            |
| २. मंगल          | ५ २६ ४३ २४       | ४ २१ २६ ११      | २ २६ १५ १५       | ३ २५ ०८ ०७        | ११ ३ १८ २२      | १० २६ ११ १५      | ४५ २९    | २२ ६            | २३ ४६           | १ ४९             | ४ ६             | ६ २६               | ८ ४०                | १० ५५              | १३ १४            | १५ ३१           | १७ ३३           | १९ १३            | २० ४०            |
| ३. बुध           | ५ २७ २२ ५१       | ४ २३ ११ ५८      | २ २६ २५ ३९       | ३ २६ २० ३६        | ११ ३ १३ २२      | १० २६ ८ ०४       | ४५ २७    | २२ २            | २३ ४२           | १ ४५             | ४ २             | ६ २२               | ८ ३६                | १० ५१              | १३ १०            | १५ २७           | १७ २९           | १९ १९            | २० ३६            |
| ४. गुरु          | ५ २८ ०२ १८       | ४ २४ ५७ ४५      | २ २६ ३६ २        | ३ २७ ३३ ०५        | ११ ३ ८ २२       | १० २६ ४ ५३       | ४५ २५    | २१ ५८           | २३ ३८           | १ ४१             | ३ ५८            | ६ १८               | ८ ३२                | १० ४७              | १३ ६             | १५ २२           | १७ २५           | १९ १५            | २० ३२            |
| ५. शुक्र         | ५ २८ ४१ ४५       | ४ २६ ४३ ३२      | २ २६ ४६ २५       | ३ २८ ४५ ३४        | ११ ० ३ ० ३ २२   | १० २६ ० ९ ४२     | ४५ २३    | २१ ५४           | २३ ३४           | १ ३७             | ३ ५४            | ६ १४               | ८ २८                | १० ४३              | १३ २             | १५ १८           | १७ २१           | १९ १             | २० २८            |
| ६. शनि           | ५ २९ २१ २७       | ४ २८ २९ ३३      | २ २६ ५३ ५८       | ३ २९ ५८ २५        | ११ २ ५८ १८      | १० २५ ५८ ३१      | ४५ २१    | २१ ५०           | २३ ३०           | १ ३३             | ३ ५०            | ६ १०               | ८ २४                | १० ३९              | १२ ५८            | १५ १४           | १७ १७           | १८ ५७            | २० २४            |
| ७. रवि           | ६ ०० १ ९         | ५ ० १५ ३४       | २ २७ ५ ३१        | ४ ०१ ११ १५        | ११ २ ५३ १४      | १० २५ ५५ २०      | ४५ १९    | २१ ४६           | २३ २६           | १ २९             | ३ ४६            | ६ ६                | ८ २०                | १० ३५              | १२ ५४            | १५ १०           | १७ १३           | १८ ५३            | २० २०            |
| ८. सोम           | ६ ० ४० ५१        | ५ २ ०१ ३५       | २ २७ १५ ०४       | ४ ०२ २४ ०५        | ११ २ ४८ १०      | १० २५ ५२ ०९      | ४५ १७    | २१ ४२           | २३ २२           | १ २५             | ३ ४२            | ६ २                | ८ १६                | १० ३१              | १२ ५०            | १५ ६            | १७ ९            | १८ ४९            | २० १६            |
| ९. मंगल          | ६ १ २० ३३        | ५ ३ ४७ ३६       | २ २७ २४ ३७       | ४ ०३ ३६ ५५        | ११ २ ४३ ७       | १० २५ ४८ ५८      | ४५ १५    | २१ ३९           | २३ १९           | १ २२             | ३ ३९            | ५ ५९               | ८ १३                | १० २८              | १२ ४७            | १५ ३            | १७ ६            | १८ ४६            | २० १३            |
| १०. बुध          | ६ २ ० १५         | ५ ५ ३३ ३७       | २ २७ ३४ ०९       | ४ ४ ४९ ४५         | ११ २ ३८ ४       | १० २५ ४५ ४७      | ४५ १३    | २१ ३६           | २३ १६           | १ १९             | ३ ३६            | ५ ५६               | ८ १०                | १० २५              | १२ ४४            | १५ ००           | १७ ३            | १८ ४३            | २० १०            |
| ११. गुरु         | ६ २ ३९ ५६        | ५ ७ १९ ३८       | २ २७ ४३ ४१       | ४ ६ ०२ ३५         | ११ २ ३३ १       | १० २५ ४२ ३६      | ४५ ११    | २१ ३२           | २३ १२           | १ १५             | ३ ३२            | ५ ५२               | ८ ६                 | १० २१              | १२ ४०            | १४ ५६           | १६ ५९           | १८ ३९            | २० ६             |
| १२. शुक्र        | ६ ३ १९ ३७        | ५ ० ६ ०५ ३८     | २ २७ ५३ १३       | ४ ० ७ १५ २५       | ११ ० २ २७ ५८    | १० २५ ३९ १५      | ४५ ०९    | २१ २८           | २३ ८            | १ ११             | ३ २८            | ५ ४८               | ८ २                 | १० १७              | १२ ३६            | १४ ५२           | १६ ५५           | १८ ३५            | २० २             |
| १३. शनि          | ६ ३ ५९ ४६        | ५ १ ० ५५ १७     | २ २८ १ ५५        | ४ ८ २८ ३४         | ११ २ २३ ७       | १० २५ ३६ १४      | ४५ ०७    | २१ २४           | २३ ४            | १ ७              | ३ २४            | ५ ४४               | ७ ५८                | १० १३              | १२ ३२            | १४ ४८           | १६ ५१           | १८ ३१            | १९ ५८            |
| १४. रवि          | ६ ४ ३९ ५५        | ५ १ २ ४४ ५६     | २ २८ १ ३७        | ४ १ ४१ ४३         | ११ २ १८ १७      | १० २५ ३३ ०३      | ४५ ०५    | २१ २०           | २३ ००           | १ ३              | ३ २०            | ५ ४०               | ७ ५४                | १० ९               | १२ २८            | १४ ४४           | १६ ४७           | १८ २७            | १९ ५४            |

आश्विन कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४७, सम्वत् २०८२, अशुद्ध समयः १७ ता. शुद्धः वर्षार्तुः १७ तः शरद ऋतुः सौम्यगोलः याम्यायनम्-उत्तरे कालः

दिनांकः ०८ सितम्बर से २१ सितम्बर २०२५ ई०

दुग्धन्त्यजेतृशिवने, पितृपक्षीय पार्वणारम्भः महालयारम्भः, पश्चिम यात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततो उत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे अग्निवासः, शिववासः रा. १० २४ या, एकोदिष्टं १ गं. योगमानम्-५३ १३ अशून्यशयन व्रतं, सूतीस्नानं, पश्चिमयात्रा रेवत्यां, एकोदिष्टं २ भ. ४ ६ उ. ३१ २६ या., श्रीगणेश ४ व्रतं, भदवा समाप्तिः रा. ७ ४३ उ., इन्द्रविसर्जनं, गं. २५ ४५ उ. ३७ ४५ रा., अग्निवासः शिववासः सं. ६ २३ उ., मृत्युयोगः सं. ६ २३ या. एकोदिष्टं ३ शिववासः, मृत्युयोगः दि. ४ ४ या, सर्वार्थसिद्धियोगः सं. ६ १० या., एकोदिष्टं ४ वसुन्धरा पंचमी, शिववासः दि. १ ४० या., अग्निवासः, मृत्युयोगः दि. १ ४० उ. एकोदिष्टं ५ भ. १३ २३ उ. ४० २४ या., रात्र्यन्ते स्त्रीणां विशिष्टभोजनं (ओठगन्), दक्षिण यात्रा रोहिण्यां, एकोदिष्टं ६-७ सर्वार्थ सिद्धियोगः दि. २ ५१ उ. श्री जीमूत वाहन व्रतं, प्रदोष श्री जीमूतवाहन पूजनं, उत्तरफाल्गुन्यां रविः-४ १२, सू.सू. पु. स्त्री योगो वह्नि नाडीशो रविः वायु दृष्टि योगः, सूतीस्नानं या. शिववासः दि. ८ ५१ भाद्री रविव्रतं, पूर्व दक्षिण यात्रा❖ नवमी तिथिमानं ५४ ५१, महालक्ष्मी व्रतं, मातृनवमी, जीमूतवाहन व्रतपारणं सं. ६ ३६ उ., शिववासः प्रा. ६ ३६ या. अग्निवासः प्रा. ६ ३६ उ. सर्वार्थसिद्धियोगः दि. ११ ४८ या. एकोदिष्टं ९ वरीयानयोगः ५३ ४७, भ. २४ २७ उ. ५२ १६ या., मासान्तः, द. ति. ५२ १६ या. एकोदिष्टं १० इन्दिरा ११ व्रतं सर्वेषां, कन्यायां रविः-२९ २५, मु. ३० फलं साम्यंषडशीति सं. पु. दि. १२ उ., अग्निवासः, शिववासः, एकोदिष्टं ११ गुड्देन पारणं, मासादिः, गं. ५६ ३६ उ., शिववासः रा. १२ २६ या., गुरुपुष्ययोग च सर्वार्थसिद्धियोगः दि. ९ ८ या. एकोदिष्टं १२ भ. ४५ ०० उ., प्रदोष १३ व्रतं, गं. ११ ३९ या, अग्निवासः, एकोदिष्टं १३ भ. १४ ५६ या., प्रदोष १४ व्रतं, उत्तर यात्रा पूर्वफाल्गुन्यां, सिद्धियोगः रा. ११ २६ या., एकोदिष्टं १४ आश्विनी अमावस्यां, महालय-पार्वणान्तः, एकोदिष्टं ३०, विश्वशान्ति दिवसः, साक्षरता दिवसः, सद्भावना दिवसः, अग्निवासः, शिववासः, रा. १२ २८ या.



मिथिलादेशीय सदाचार पद्धति

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः। एतच्चतुर्विधं

प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्॥

मनुक एहि वचनक अनुसार धर्म अर्थात् कर्तव्य कर्म कें बुझबाक वास्ते वेद, स्मृति = धर्मशास्त्र, सदाचार आ आत्मतुष्टि एहि चारिं साधन कें प्रत्यक्ष साधन कहल गेल छैक। अहू चारू मे सदाचारक स्थान सर्वोपरि मानल गेल छैक, कियैक तऽ वेद, स्मृति आ आत्मतुष्टि मे बहुतो स्थल मे विविधताक स्थिति मे सदाचारक निर्णायक भूमिका होइत अछि। जेना कि श्रीमद्भगवद्गीता मे कहल गेल छैक-यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत् तदेवेतरो जनः। स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥ महाभारत मे कहल गेल अछि-श्रुतिर्विभिन्ना स्मृतयो विभिन्ना नैको मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्। धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो ये गतः स पन्थाः॥ सदाचार ककरा कही? विष्णुपुराणक वचनानुसार- साधवः क्षीणदोषाः स्युः सच्छब्दः साधुवाचकः। तेषामाचरणं यत्स्यात् सदाचारः स उच्यते॥ अर्थ-दोषरहित पुरूष के

खज्जन- दर्शनमन्त्र- नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकाफलप्रद। पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खज्जरीट नमोऽस्तु ते॥ फलम्- तद्दर्शनमाकाशदपूर्व- पश्चिमोत्तर-वायव्यदिक्षु शुभमन्यदिक्ष्व शुभम्। पुनश्च- अब्जेषु गोषु गजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु। भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खज्जरीटः। धर्मशास्त्रम्-आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्पः। पंचमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्पः। अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्पः। दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थः कल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्तव्यमेव। हेमाद्रौः- आषाढ्याः पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे सूर्ये यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे। तस्य संवत्सरं यावत्सन्तुप्ताः पितरो ध्रुवम्। श्राद्धकालः- पूवाहे मातृकं श्राद्धमपराहे तु पैतृकम्। एकोद्दिष्टन्तु मध्याहे प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम्। श्राद्धसमय-कुतुपकाल- द्वौ यामौ घटिकान्यूनौ द्वौ यामौ घटिकाधिकौ। स कालः कुतुपो ज्ञेयः पितृणां दत्तमक्षयम्॥ श्राद्धेनिषिद्धवस्तुनि (मत्स्य-पुराणे)- कूष्माण्डं, महिषीक्षीरं, बिल्वपत्रमगद्वि जाः। श्राद्धकालेसमुत्पन्ने-पितरो यान्त्यनाश्रिताः। श्राद्धेप्रशस्तानि- उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकपटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः। जीमूतवाहनव्रतं- इसे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत्। पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका॥ शालिवाहन राजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः। तस्यां पूज्यः स नारिभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया॥ ग्रहयोगेनवृष्टिविचारः- बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकरशिगाः। निःसंशयः तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा॥ समागमे ज्ञसितयोस्तथा च गुरुशुक्रयोः। तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः॥ यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः। पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही॥



सन् १४३३ साल, शाके-१६४७, सम्वत् २०८२, शुद्ध समयः शरद ऋतु सौम्यगोलः याम्यायनम्-उत्तरे कालः

दिनांकः २२ सितम्बर से ०७ अक्टूबर २०२५ ई०

आश्विन शुक्ल पक्ष

**शारदीय नवरात्रारम्भः कलशस्थापनं**, श्री दुर्गापूजनोत्सवः, गजारूढायां दुर्गया आगमन फलं सुवृष्टिः, दक्षिण यात्रा द्वितीयायां हस्ते, अग्निवासः दि. १०।५४ या., शैलपुत्री देवी दर्शनं, “केश संस्कार द्रव्याणि प्रद्यात्पतिद्दिने” रेमन्त पूजनं, चन्द्रदर्शनं “पट्टडोरं द्वितीयायां केशसंयम् हेतवे” पूर्व दक्षिण यात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिम दक्षिण यात्रा, शिववासः द्वितीयायां ब्रह्मचारिणी देवी दर्शनं “दर्पणं च तृतीयायां सिन्दूरालक्तकं तथा” चन्द्रघण्टा देवी दर्शनं, **दीक्षाग्रहणं**, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. ४।४७ या.

भ. २६।२६ उ. श्रीगणेश ४ व्रतं, “मधुपर्कं चतुर्थ्यातु तिलकं नेत्रमण्डनम्”, त्र्यहो जन्मदिन कृत्यं, मृत्युयोगः, कुष्माण्डादेवी दर्शनं

भ. २।१ या., शिववासः पंचम्यां

उत्तरयात्रा अनुराधायां, शिववासः, अग्निवासः स्कन्दमाता देवी दर्शनं, **हस्ते रविः ४०।५२** स्त्री. पू. सू. सू. योगो चन्द्रनाडीपतिः शनि सुवृष्टिः योगः, पश्चिमोत्तर यात्रा षष्ठम्यां, विश्व पर्यटन दिवसः, “पंचम्याङ्गरागं च शक्त्यालंकरणनि च”

गजपूजनं, **विल्वाभिमंत्रणं**, उत्तर यात्रा ज्येष्ठयां सप्तम्यां ततः पूर्वोत्तर यात्रा, शिववासः षष्ठम्यां, मृत्युयोगः दि. १०।५४ या. कात्यायनी देवी दर्शनं

भ. १६।२० उ. ४७।५७ या., पत्रिकाप्रवेशः, मूले सरस्वती आवाहन, **महारत्रिर्निशापूजा**, भगवती दर्शनं, कालरात्रि देवी दर्शनं, **दीक्षाग्रहणं दि. १२।३५ या.**, मृत्युयोगः दि. १२।३६ या. सर्वार्थसिद्धियोगः ८।४२ उ.

महाष्टमी व्रतं, व्रतांग जागरणं, **दीक्षा ग्रहणं**, पूर्व यात्रा नवमी पूर्वाषाढयोः, शिववासः नवम्यां, अग्निवासः दि. १।५४ या. महागौरी देवी दर्शनं सिद्धियोगः दि. १।५४ या. ततो राजप्रदयोगः

अक्टूबर मासारम्भः **महानवमी व्रतं, हवनादि**, त्रिशूलिनीपूजा, प्रभूततर बलिदानं, दक्षसावर्णिमन्वादिः वृद्धजन् दिवसः, सिद्धिदात्री देवी दर्शनं; शिवदासः नवम्यां, अग्निवासः दि. २।४५ उ.

भ. ५२।१४ उ. अपराजिता पूजा, **विजयदशमी**, देवी विसर्जनं, ज्यन्तीधारणं, नवरात्रपारणं, नीलकंठ दर्शनं, **दीक्षा ग्रहणं**, नरवाहनया **देवी गमन फलं शुभ सौख्यकारक**, दक्षिणं विना यात्रा श्रवणायां, गांधी शास्त्री जयन्ती,❖

भ. २१।५७ या., **पाशांकुशा, ११ व्रतं सर्वेषां**, भदवारम्भः दि. ७।६ उ., पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां, अग्निवासः दि. २।५४ उ., सिद्धियोगः दि. २।५४ या. शिववासः दि. २।५४ उ., **दीक्षाग्रहणं दि. २।५३ उ.**

पद्मनाभ १२, गुडेन पारणं, **प्रदोष १३ व्रतं**, पश्चिमोदितो बुधः २७।३० विश्व पशु कल्याण दिवसः शिववासः, अग्निवासः दि. २।१४ या.

❖**उत्तराषाढे सूतीस्नानं, अग्निवासः दि. ३।६ या., सिद्धियोगः दि. ३।६ या.**

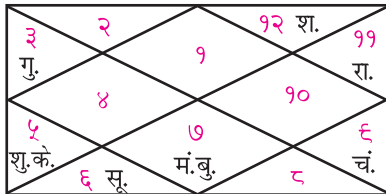
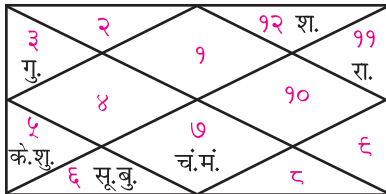
**प्रदोष १४ व्रतं**, कर्क गुरुः ३८।५७, विश्व शिक्षक दिवसः, शिववासः दि. १।६ या. अग्निवासः, सिद्धियोगः दि. १।६ या.

उ. भा. नक्षत्र ५७/२० भ. १३।३४ उ. ४१/१६ या., कोजागरा कौमुदीमहोत्सवः प्रदोषं लक्ष्मी पूजनं, **दीक्षा ग्रहणं**, पश्चिमोत्तर यात्रा, विश्व वन्यप्राणि दिवसः

आश्विनी पूर्णिमा, स्नान दानादिः, आदि कवि महर्षि वाल्मीकि जयन्ती, भदवा समाप्तिः रा. ३।५२ उ. पश्चिम यात्रा, शिववासः, प्रतिपदायां अग्निवासः, मृत्युयोगः दि. ६।४५ उ.

आ. शु. ४ शु. व. ८।४०।८।८  
अयनांशाः २२।५३।४५

आ. शु. ११ शु. व. ८।४०।८।६  
अयनांशाः २२।५३।३४



**दुर्गा-आगमन-** शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे। गुरौशुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्तिता। **फल-** गजे च जलदा देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे। नौकायां सर्वसिद्धिः स्योद्दोलायां मरणं ध्रुवम्। **दुर्गा-गमनफल-**शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा, शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुध यानकारी विकला। बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा, सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा। **अपराजिता पूजन निर्णयः-**आश्विने शुक्लपक्षे तु दशम्यां पूजयेत्ततः। एकादश्यां न कुर्वीत पूजनं चापराजितम्। **अपराजिता धारण मन्त्र-**ॐ जयदे वरदे देवि दशम्यामपराजिते। धारयामि भुजे दक्षे जयलाभाभिवृद्धये॥ **शमी की पूजाकर यात्रा करनी चाहिए। मन्त्र-** शमी शमतये पापं शमी लोहितकण्टका। धारिष्यर्जुनबाणानां रामस्य प्रियदायिनी। करिष्यमाणा या यात्रा यथाकालं सुखं मया। तत्र निर्विघ्नकर्त्री त्वं भव श्रीरामपूजिते॥ **कोजागरा-कौमुदी** निशीथे वरदा लक्ष्मीः को जागर्तीति भाषिणी। तस्मै प्रदास्यामि अक्षैः क्रीडां करोति यः॥

❖ **कलशस्थापन का संकल्पः-** ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भागवतो महापुरुषस्य महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणोऽहि द्वितीयपराधं श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मवर्तेकदेशे पुण्य बिहारप्रदेशे मिथिलाञ्चले ..... अमुक मण्डले ( जिला ) ..... अमुकग्रामे (गाम), स्वगृहे (यदिअपनाघर में हो), अमुक देवालये (यदि मन्दिर में हो) प्रदेशे बौद्धावतारे वर्तमाने पिंगल नामसंवत्सरे, दक्षिणायने, उत्तरगोले, महामाङ्गल्यप्रदे मासानाम् उत्तमे आश्विने मासे, शुक्ल पक्षे, प्रतिपदायां तिथौ, गुरूः वासरान्वितायां, हस्त नक्षत्रे ऐन्द्र योगे, किंगस्तुघ्न करणे, कन्या राशिस्थिते श्रीसूर्ये, कन्या राशिस्थिते श्रीचन्द्रे, यथा-यथा राशिस्थितेषु भौम-बुध-गुरु-शुक्र-शनिषु सत्सु शुभे योगे शुभे करणे एवं गुण-गण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ सकलशास्त्र श्रुतिस्मृति पुराणोक्त फलप्राप्तिकामःअमुकगोत्रोत्पन्नः( **यजमानकगोत्र** ),अमुकशर्मा( **यजमानकनाम** )अहंममात्मनःसपुत्रस्त्री बान्धवस्य श्रीनवदुर्गानुग्रहतो ग्रहकृत-राजकृत-सर्वविधपीडा-निवृत्ति-पूर्वक-नैरुज्यदीर्घायुःपुष्टिः धनधान्यसमृद्धयर्थ श्रीनवदुर्गाप्रसादेन सर्वापन्निवृत्ति सर्वाभीष्ट फलावाप्ति-धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध-पुरुषार्थप्राप्त्यर्थ साङ्गसायुध सवाहनसपरिवार श्रीदुर्गाप्रीतिकामो वार्षिकशरत्कालीन श्रीदुर्गापूजा अङ्गभूतकलशस्थापनम् तथा पूजनं अहं करिष्ये।

**\*यदि सामाजिकसम्मिलितपूजा हो तो - अमुकग्रामवासीनाम ( गामक नाम ) नानानां गोत्राणां सकल जनानामेतत्पूजोपकारकाणामन्यग्रामवासिनां च उपस्थितशरीरविरोधेन श्रीनवदुर्गानुग्रहतो..।**

| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः  | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|--------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | सोम    | ४८।५०          | रा.१।३१        | उ.फ.१४।०२            | दि.११।३६              | शु.३७।४६       | कि.१७।३३         | कन्या        | ५।०५।०६।०२               | ३०।०६    | ५।५६                 | ६।०१                  | ३०         | ६          | २२         |
| २     | मंगल   | ५२।२८          | रा.२।५८        | ह.१८।३२              | दि.१।१४               | ब्र.३७।५३      | बा.२०।३६         | क.रा.१।४२    | ५।०६।०७।४६               | ३०।०३    | ५।५६                 | ६।०१                  | १          | ७          | २३         |
| ३     | बुध    | ५६।५७          | रा.४।४७        | चि.२४।०१             | दि.३।३६               | पें.३८।४१      | तै.२४।४२         | तुला         | ५।०७।०६।३५               | ३०।००    | ६।००                 | ६।००                  | २          | ८          | २४         |
| ४     | गुरु   | ६०।००          | अहोरात्र       | स्वा.३०।११           | सं.६।४                | वै.३६।५४       | व.२६।२६          | तुला         | ५।०८।०५।२१               | २६।५७    | ६।००                 | ६।००                  | ३          | ९          | २५         |
| ४     | शुक्र  | २।०१           | दि.६।४६        | वि.३६।४३             | रा.८।४२               | वि.४१।२६       | वि.२।१           | तु.दि.२।३    | ५।०६।०४।०७               | २६।५४    | ६।०१                 | ५।५६                  | ४          | १०         | २६         |
| ५     | शनि    | ७।१३           | दि.८।५३        | अनु.४३।०८            | रा.११।१७              | प्री.४२।४६     | वा.७।१३          | वृश्चिक      | ५।२०।०३।१०               | २६।५०    | ६।०२                 | ५।५८                  | ५          | ११         | २७         |
| ६     | रवि    | १२।०८          | दि.१०।५४       | ज्ये.४६।०२           | रा.१।४०               | आ.४३।४६        | तै.१२।८          | वृ.रा.१।४०   | ५।११।०२।१३               | २६।४६    | ६।०३                 | ५।५७                  | ६          | १२         | २८         |
| ७     | सोम    | १६।२०          | दि.१२।३६       | मूल.५४।१२            | रा.३।४५               | सौ.४४।१२       | ब.१६।२०          | धनु          | ५।१२।०१।१६               | २६।४२    | ६।०४                 | ५।५६                  | ७          | १३         | २९         |
| ८     | मंगल   | १६।३४          | दि.१।५४        | पू.षा.५८।१२          | रा.५।२१               | शो.४३।४२       | बव.१६।३४         | धनु          | ५।१३।००।१६               | २६।३८    | ६।०४                 | ५।५६                  | ८          | १४         | ३०         |
| ९     | बुध    | २१।४१          | दि.२।४५        | उ.षा.६०।००           | अहोरात्र              | अ.४२।२२        | कौ.२१।४१         | ध.दि.११।३६   | ५।१३।५६।२१               | २६।३४    | ६।०५                 | ५।५५                  | ९          | १५         | १ अक्टू.   |
| १०    | गुरु   | २२।३०          | दि.३।६         | उ.षा.१।०३            | प्रा.६।३१             | सु.३६।५८       | गर.२२।३०         | मकर          | ५।१४।५८।२३               | २६।३०    | ६।०६                 | ५।५४                  | १०         | १६         | २          |
| ११    | शुक्र  | २१।५७          | दि.२।५४        | श्रव.२।३६            | दि.७।६                | धृ.३६।३५       | वि.२१।५७         | म.सं.७।१३    | ५।१५।५७।२५               | २६।२६    | ६।०७                 | ५।५३                  | ११         | १७         | ३          |
| १२    | शनि    | २०।१४          | दि.२।१४        | धनि.२।५६             | दि.७।१८               | शू.३२।११       | बा.२०।१४         | कुंभ         | ५।१६।५६।४३               | २६।२२    | ६।०८                 | ५।५२                  | १२         | १८         | ४          |
| १३    | रवि    | १७।२४          | दि.१।०६        | शत.२।०७              | दि.६।५६               | गं.२६।२६       | तै.१७।२४         | कुं.रा.१२।२६ | ५।१७।५६।०१               | २६।१८    | ६।०८                 | ५।५२                  | १३         | १९         | ५          |
| १४    | सोम    | १३।३४          | दि.११।३५       | पू.भा.०।१७           | प्रा.६।१६             | वृ.२०।५६       | व.१३।३४          | मीन          | ५।१८।५५।१६               | २६।१४    | ६।०९                 | ५।५१                  | १४         | २०         | ६          |
| १५    | मंगल   | ०८।५७          | दि.६।४५        | रेवती.५४।१५          | रा.३।५२               | ध्रु.१४।२२     | बव.८।५७          | मी.रा.३।०५   | ५।१६।५४।३७               | २६।१०    | ६।१०                 | ५।५०                  | १५         | २१         | ७          |

| मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च |                  |                 |                  |                   |                 |                  |          |                 |                 | दैनिकलग्नसारणी चक्रम् |                 |                    |                     |                    |                  |                 |                 |                  |                  |
|----------------------------------------------------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|-----------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| तिथियः<br>दिनानि                                               | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि.      | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
| १. सोम                                                         | ६।५।२०।०४        | ५।१४।३४।३५      | २।२८।१६।१६       | ४।१०।५४।५२        | ११।२।१३।२७      | १०।२५।२६।५२      | ४५।३     | २१।१६           | २२।५८           | २३।५६                 | ३।१६            | ५।४०               | ७।५०                | १०।५               | १२।२४            | १४।४०           | १६।४३           | १८।२३            | १६।५०            |
| २. मंगल                                                        | ६।६।०।१३         | ५।१६।२४।१४      | २।२८।२८।१        | ४।१२।८।०१         | ११।२।८।३७       | १०।२५।२६।४१      | ४५।०१    | २१।१२           | २२।५४           | २३।५५                 | ३।१२            | ५।३६               | ६।४६                | १०।०१              | १२।२०            | १४।३६           | १६।३६           | १८।१६            | १६।४६            |
| ३. बुध                                                         | ६।७।४०।२२        | ५।१८।१३।५२      | २।२८।३६।४३       | ४।१३।२१।६         | ११।२।३।४७       | १०।२५।२३।३०      | ४४।५६    | २१।०८           | २२।५०           | २३।५१                 | ३।८             | ५।३२               | ६।४२                | ६।५७               | १२।१६            | १४।३२           | १६।३५           | १८।१५            | १६।४२            |
| ४. गुरु                                                        | ६।७।२०।३१        | ५।२०।३।३०       | २।२८।४५।२४       | ४।४।३४।१७         | ११।१।५८।५७      | १०।२५।२०।१६      | ४४।५८    | २१।०४           | २२।४६           | २३।४७                 | ३।४             | ५।२८               | ७।३८                | ६।५३               | १२।१२            | १४।२८           | १६।३१           | १८।११            | १६।३८            |
| ४. शुक्र                                                       | ६।०८।००।३६       | ५।२१।५३।०८      | २।२८।५४।०५       | ४।१५।४७।२५        | ११।०१।५३।०७     | १०।२५।१७।०८      | ४४।५७    | २१।००           | २२।४२           | २३।४३                 | ३।००            | ५।२४               | ७।३४                | ६।४६               | १२।८             | १४।२४           | १६।२७           | १८।७             | १६।३४            |
| ५. शनि                                                         | ६।८।४१।०६        | ५।२३।३७।४०      | २।२६।१।४२        | ४।१७।०१।००        | ११।०१।४८।५      | १०।२५।१३।५७      | ४४।५५    | २०।५६           | २२।३८           | २३।३६                 | २।५६            | ५।२०               | ७।३०                | ६।४५               | १२।४             | १४।२०           | १६।२३           | १८।३             | १६।३०            |
| ६. रवि                                                         | ६।६।२१।३३        | ५।२५।२२।१२      | १।२६।६।१८        | ४।१८।१४।३५        | ११।१।४३।३       | १०।२५।१०।४६      | ४४।५३    | २०।५२           | २२।३४           | २३।३५                 | २।५२            | ५।१६               | ७।२६                | ६।४१               | १२।००            | १४।१६           | १६।१६           | १७।५६            | १६।२६            |
| ७. सोम                                                         | ६।१०।०२।००       | ५।२७।०६।४३      | २।२६।१६।५४       | ४।१६।२८।१०        | ११।१।३८।१       | १०।२५।०७।३५      | ४४।५१    | २०।४८           | २२।३०           | २३।३१                 | २।४८            | ५।१२               | ७।२२                | ६।३७               | ११।५६            | १४।१२           | १६।१५           | १७।५५            | १६।२२            |
| ८. मंगल                                                        | ६।१०।४२।२७       | ५।२८।५१।१४      | २।२६।२४।३०       | ४।२०।४१।४५        | ११।१।३२।५६      | १०।२५।०४।२४      | ४४।४६    | २०।४४           | २२।२६           | २३।२७                 | २।४४            | ५।८                | ७।१८                | ६।३३               | ११।५२            | १४।८            | १६।११           | १७।५१            | १६।१८            |
| ९. बुध                                                         | ६।११।२२।५४       | ६।०।३५।४५       | २।२६।३२।०६       | ४।२१।५५।२०        | ११।१।२७।५७      | १०।२५।०१।१३      | ४४।४७    | २०।४०           | २२।२२           | २३।२३                 | २।४०            | ५।४                | ७।१४                | ६।२६               | ११।४८            | १४।४            | १६।७            | १७।४७            | १६।१४            |
| १०. गुरु                                                       | ६।१२।३।२०        | ६।२।२०।१६       | २।२६।३६।४२       | ४।२३।८।५५         | ११।१।२२।५६      | १०।२४।५८।०२      | ४४।४५    | २०।३६           | २२।१८           | २३।२६                 | २।३६            | ५।००               | ७।१०                | ६।२५               | ११।४४            | १४।००           | १६।३            | १७।४३            | १६।१०            |
| ११. शुक्र                                                      | ६।१२।४३।४६       | ६।०४।०४।५७      | २।२६।४७।१८       | ४।२४।२२।३०        | ११।०१।१७।५५     | १०।२४।५४।५१      | ४४।४३    | २०।३२           | २२।१४           | २३।१५                 | २।३२            | ४।५६               | ७।६                 | ६।२१               | ११।४०            | १३।५६           | १५।५६           | १७।३६            | १६।६             |
| १२. शनि                                                        | ६।१३।२४।३८       | ६।५।३३।४६       | ८।२३।५३।४१       | ४।२५।३६।१२        | ११।१।१३।२६      | १०।२४।५१।०       | ४४।४१    | २०।२८           | २२।१०           | २३।११                 | २।२८            | ४।५२               | ७।२                 | ६।१७               | ११।३६            | १३।५२           | १५।५५           | १७।३५            | १६।०२            |
| १३. रवि                                                        | ६।१४।५।३०        | ६।७।२।४५        | ३।०।००।२०        | ४।२६।४६।५         | ११।१।८।५७       | १०।२४।४८।२६      | ४४।३६    | २०।२४           | २२।६०           | २३।७                  | २।२४            | ४।४८               | ६।५८                | ६।१३               | ११।३२            | १३।४८           | १५।५१           | १७।३१            | १८।५८            |
| १४. सोम                                                        | ६।१४।४६।२२       | ६।८।३१।४४       | ३।०।६।५१         | ४।२८।३।३६         | ११।१।४।२८       | १०।२४।४५।१८      | ४४।३७    | २०।२०           | २२।०२           | २३।३                  | २।२०            | ४।४४               | ६।५४                | ६।६                | ११।२८            | १३।४४           | १५।४७           | १७।२७            | १८।५४            |
| १५.मंगल                                                        | ६।१५।२७।१४       | ६।१०।०।४३       | ३।०।१३।२२        | ४।२६।१७।१८        | ११।०।५६।५६      | १०।२४।४२।०७      | ४४।३५    | २०।१६           | २१।५८           | २२।५६                 | २।१६            | ४।४०               | ६।५०                | ६।५                | ११।२४            | १३।४०           | १५।४३           | १७।२३            | १८।५०            |



| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | बुध    | ३।४०           | दि.७।३६        | अ.५०।२४              | रा.२।२१               | व्या.७।११      | कौ.३।४०          | मेष         | ५।२०।५३।५५               | २६।०६    | ६।११                 | ५।४६                  | १६         | २२         | ८          |
| ३     | गुरु   | ५।१।५६         | रा.३।०८        | भ.४६।१७              | रा.१२।४३              | व.५१।५५        | व.२४।५६          | मेष         | ५।२१।५३।१३               | २६।०२    | ६।१२                 | ५।४८                  | १७         | २३         | ९          |
| ४     | शुक्र  | ४५।५३          | रा.१२।३३       | कृ.४२।०३             | रा.११।१               | सि.४४।०१       | बव.१८।५४         | मे.दि.६।१७  | ५।२२।५२।३०               | २८।५८    | ६।१२                 | ५।४८                  | १८         | २४         | १०         |
| ५     | शनि    | ३६।५६          | रा.१०।१३       | रो.३७।५८             | रा.६।२४               | व्य.३६।१६      | कौ.१२।५६         | वृष         | ५।२३।५२।०४               | २८।५४    | ६।१३                 | ५।४७                  | १९         | २५         | ११         |
| ६     | रवि    | ३४।२४          | रा.८।००        | मृ.३४।१४             | रा.७।५६               | व.२८।४६        | गर.७।११          | वृ.दि.८।४०  | ५।२४।५२।३८               | २८।५०    | ६।१४                 | ५।४६                  | २०         | २६         | १२         |
| ७     | सोम    | २६।२०          | सं.५।५६        | आ.३०।५८              | रा.६।३८               | प.२१।४१        | वि.१।५२          | मिथुन       | ५।२५।५१।१२               | २८।४६    | ६।१५                 | ५।४५                  | २१         | २७         | १३         |
| ८     | मंगल   | २५।०२          | दि.४।१७        | पुन.२८।३२            | सं.५।४१               | शि.१५।११       | कौ.२५।२          | मि.दि.११।५५ | ५।२६।५०।४६               | २८।४२    | ६।१६                 | ५।४४                  | २२         | २८         | १४         |
| ९     | बुध    | २१।३६          | दि.२।५४        | पु.२६।५३             | दि.५।१                | सि.६।२२        | गर.२१।३६         | कर्क        | ५।२७।५०।१६               | २८।३८    | ६।१६                 | ५।४४                  | २३         | २९         | १५         |
| १०    | गुरु   | १६।१०          | दि.१।५७        | श्ले.२६।१५           | दि.४।२४               | सा.४।२२        | वि.१६।१०         | क.दि.४।२०   | ५।२८।४६।५२               | २८।३४    | ६।१७                 | ५।४३                  | २४         | ३०         | १६         |
| ११    | शुक्र  | १८।००          | दि.१।३०        | मघा.२६।५२            | दि.५।३                | शु.०।१५        | बा.१८।००         | सिंह        | ५।२९।४६।२५               | २८।३०    | ६।१८                 | ५।४२                  | २५         | ३१         | १७         |
| १२    | शनि    | १८।०२          | दि.१।३२        | पू.फ.२८।४२           | दि.५।४८               | ब्र.५४।५६      | तै.१८।०२         | सिं.रा.१२।७ | ६।०।४६।२५                | २८।२६    | ६।१९                 | ५।४१                  | २६         | १          | १८         |
| १३    | रवि    | १६।२६          | दि.२।६         | उ.फ.३१।४९            | रा.७।४                | ऐं.५३।५४       | व.१६।२६          | कन्या       | ६।०१।४६।०४               | २८।२२    | ६।२०                 | ५।४०                  | २७         | २          | १९         |
| १४    | सोम    | २१।५८          | दि.३।७         | ह.३६।०१              | रा.८।४४               | वै.५३।४०       | श.२१।५८          | कन्या       | ६।०२।४८।५३               | २८।१८    | ६।२०                 | ५।४०                  | २८         | ३          | २०         |
| ३०    | मंगल   | २५।४२          | दि.३।३८        | चि.४१।१६             | रा.१०।२९              | वि.५४।१२       | ना.२५।४२         | क.दि.६।४९   | ६।०३।४८।४२               | २८।१४    | ६।२१                 | ५।३९                  | २९         | ४          | २१         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. बुध           | ६।१६।८।५         | ६।११।२६।४१।     | ३।०।१६।५३        | ५।०।३०।५९         | ११।०।५५।३१      | १०।२४।३८।५६      | ४४।३३    | २०।१२           | २१।५४           | २२।५५            | २।१२            | ४।३६               | ६।४६                | ६।१                | ११।२०            | १३।३६           | १५।३९           | १७।१९            | १८।४६            |
| ३. गुरु          | ६।१६।४८।५६       | ६।१२।५८।३९      | ३।०।२६।२३        | ५।१।४४।४०         | ११।०।५१।३       | १०।२४।३५।४५      | ४४।३१    | २०।९            | २१।५१           | २२।५२            | २।९             | ४।३३               | ४।४३                | ८।५८               | ११।१७            | १३।३३           | १५।३६           | १७।१६            | १८।४३            |
| ४. शुक्र         | ६।१७।२६।४७       | ६।१४।२७।३७      | ३।००।३३।५३       | ५।०२।५८।२१        | ११।००।४६।३५     | १०।२४।३२।४       | ४४।२९    | २०।६            | २१।४८           | २२।४९            | २।६             | ४।३०               | ६।४०                | ८।५५               | ११।१४            | १३।३०           | १५।३३           | १७।१३            | १८।४०            |
| ५. शनि           | ६।१८।११।०८       | ६।१५।५२।५५      | ३।०।३६।१०        | ५।४।१२।२६         | ११।०।४२।२४      | १०।२४।२६।२३      | ४४।२७    | २०।३            | २१।४५           | २२।४६            | २।३             | ४।२७               | ६।३७                | ५।५२               | ११।११            | १३।२७           | १५।३०           | १७।१०            | १८।३७            |
| ६. रवि           | ६।१८।५२।२९       | ६।१७।१८।१२      | ३।०।४४।२७        | ५।५।२६।३१         | ११।०।३८।१४      | १०।२४।२६।१२      | ४४।२५    | २०।००           | २१।४२           | २२।४३            | २।००            | ४।२४               | ६।३४                | ८।४९               | ११।८             | १३।२४           | १५।२७           | १७।७             | १८।३४            |
| ७. सोम           | ६।१९।३३।४९       | ६।१८।४३।२९      | ३।०।४६।४४        | ५।६।४०।३६         | ११।०।३४।१४      | १०।२४।२३।०१      | ४४।२३    | १९।५७           | २१।३९           | २२।४०            | १।५७            | ४।२१               | ६।३१                | ८।४६               | ११।५             | १३।२१           | १५।२४           | १७।४             | १८।३१            |
| ८. मंगल          | ६।२०।१५।०९       | ६।२०।८।४६       | ३।०।५५।०१        | ५।६।५४।४१         | ११।०।२६।५४      | १०।२४।१६।५०      | ४४।२१    | १९।५४           | २१।३६           | २२।३७            | १।५४            | ४।१८               | ६।२८                | ८।४३               | ११।२             | १३।१८           | १५।२१           | १७।१             | १८।२८            |
| ९. बुध           | ६।२०।५६।२९       | ६।२१।३४।३       | ३।१।०।१८         | ५।६।८।४५          | ११।०।२५।४४      | १०।२४।१६।३९      | ४४।१९    | १९।५१           | २१।३३           | २२।३४            | १।५१            | ४।१५               | ६।२५                | ८।४०               | ११।५९            | १३।१५           | १५।१८           | १६।५८            | १८।२५            |
| १०. गुरु         | ६।११।३७।३९       | ६।२२।५१।२०      | ३।१।५।३५         | ५।१०।२२।४९        | ११।०।२१।३४      | १०।२४।१३।२८      | ४४।१७    | १९।४८           | २१।३०           | २२।३१            | १।४८            | ४।१२               | ६।२२                | ८।३७               | ११।५६            | १३।१२           | १५।१५           | १६।५५            | १८।२२            |
| ११. शुक्र        | ६।२२।१६।०९       | ६।२४।२४।३७      | ३।०१।१०।१        | ५।११।३६।५३        | ११।००।१७।२४     | १०।२४।१०।१७      | ४४।१५    | १९।४५           | २१।२७           | २२।२८            | १।४५            | ४।९                | ६।१४                | ८।३४               | ११।५३            | १३।९            | १५।१२           | १६।५२            | १८।१९            |
| १२. शनि          | ६।२३।०।४५        | ६।२५।२६।७       | ३।१।१४।५९        | ५।१२।५१।१२        | ११।०।१३।३३      | १०।२४।७।६        | ४४।१३    | १९।४१           | २१।२३           | २२।२४            | १।४१            | ४।५                | ६।२०                | ८।३०               | १०।४९            | १३।५            | १५।८            | १६।४८            | १८।१५            |
| १३. रवि          | ६।२३।४२।२१       | ६।२६।३३।३७      | ३।१।१६।७         | ५।१४।५।३१         | ११।०।६।४२       | १०।२४।३।५५       | ४४।११    | १९।३७           | २१।१९           | २२।२०            | १।३७            | ४।०१               | ६।१६                | ८।२६               | १०।४५            | १३।१            | १५।४            | १६।४४            | १८।११            |
| १४. सोम          | ६।२४।२३।५७       | ६।३७।३८।६       | ३।१।२३।१५        | ५।१५।१६।५०        | ११।०।५।५१       | १०।२४।०।४४       | ४४।९     | १९।३३           | २१।१५           | २२।१६            | १।३३            | ३।५७               | ६।१२                | ८।२२               | १०।४१            | १२।५८           | १५।४            | १६।४०            | १८।७             |
| १५.मंगल          | ६।२५।५।३३        | ६।२८।४२।३५      | ३।१।२७।२३        | ५।१६।३४।९         | ११।०।२।१        | १०।२३।५७।३३      | ४४।७     | १९।३०           | २१।१२           | २२।१३            | १।३०            | ३।५४               | ६।९                 | ८।१९               | १०।३८            | १२।५५           | १५।५७           | १६।३०            | १८।४             |

कार्तिक कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४७, सम्वत् २०८२, शुद्ध समयः शरद ऋतु सौम्यगोलः ता. १७ तः याम्यायनम्-उत्तरे कालः

दिनांकः ०८ अक्टूबर से २१ अक्टूबर २०२५ ई०

द्वितीया तिथिमानम्-५४।१७, हर्षणयोगः-५२।२९, कार्तिके द्विदलं त्यजेत्, कार्तिक शूरणं भक्षणं निषिद्धम्, उत्तरां विना यात्रा, शिववासः प्रतिपदायां, सिद्धियोगः दि. ६।३९ उ. भ. २४।५६ उ. ५१५६ या., अग्निवासः

दशमहुली चतुर्थी, **श्रीकृष्णपिंगाक्ष ४ व्रतं**, करकचतुर्थी (करवा चौथ), पूर्व दक्षिण यात्रा रोहिण्यां, शिववासः

**चित्रायां रविः १३।१२**, पु. स्त्री. सू. सू. योगो जम्बूक वाहनं वातानाडीशो सूर्यः वायु वृष्टि योगः, पूर्वं विना यात्रा षष्ठ्यां, जयप्रकाश जयन्ती, शिववासः पंचम्यां अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. १०।१३ या., सर्वार्थसिद्धियोगः रा. ६।२४ या.

भ. ३४।२४ उ., अशोक चन्दन षष्टि, अग्निवासः, मृत्युयोगः,

भ. १।५२ या. प्रदोषे कालाष्टमी, द. ति. २६।२० उ., शिववासः अष्टम्यां, मृत्युयोगः सं. ५।५९ या.

**श्रीराधाष्टमी**, द. ति. २५।२ या., बाल दिवसः, विश्व मानक दिवसः, शिववासः अष्टम्यां, सिद्धियोगः दि. ४।१७ या. ततो राजप्रदयोगः

भ. ५०।२३ उ., उत्तराविना यात्रा दशम्यां पुष्ये, विश्व छात्र दिवसः, **दीक्षाग्रहणं दि. २।५४ उ. सं. ५।९ या.**

भ. १६।१० या., गं. १५।९ उ. ३०।२ या, विश्व खाद्य दिवसः, शिववासः दि. १।५७ उ., अग्निवासः, सिद्धियोगः दि. १।३० या. ततः मृत्युयोगः

शुक्लयोगः ५६।५३, **रम्भाएकादशी व्रतं सर्वेषां**, तुले रविः ५६।५२, मु. ३० फलं साम्यं, मासान्तः, शिववासः, सिद्धियोगः दि. १।३० या. ततो मृत्युयोगः

तुलसी दलेन पारणं, **प्रदोष १३ व्रतं**, धान्यविषुद सं. पु. दि. १२ या., धनत्रयोदशी, **धनतेरस, सिमरियाधाम्नि कल्पवासारम्भः** शिववासः दि. १।३२ या.

भ. १६।२६ उ. ५०।४२ या., **प्रदोष १४ व्रतं**, मासादिः, नरक १४, **यमदीपदानं**, सूतीस्नानं, हनुमत्जन्मोत्सवः, हनुमदध्वजदानं अग्निवास, दि. २।६ उ., सिद्धियोगः दि. २।६ या., सर्वार्थसिद्धियोगः रा. ७।४ उ.

**दीपावली**, सुखरात्री, प्रदोषं **लक्ष्मीपूजनं**-उल्काभ्रमणं, **दीक्षाग्रहणं**, अर्द्ध रात्रौ **काली पूजनं**, कालीताराभुवनेश्वरी प्रादुर्भावः, अग्निवासः दि. ३।७ या., शिववासः दि. ३।७ उ., सोमवारी व्रतं

कार्तिकी अमावास्या, पार्वणं, हरिमुख स्मृति दिवसः, अशुभवारान्वितेदर्शे दुर्भिक्षं च प्रजाभयम्, शिववासः दि. ४।३८ या.

का. कृ. ४ शु. व. ८।४४।८।१४  
अयनांशाः २२।५३।४७

३

२

१

१२ श.

११

४

चं

१०

५

गु.

७

६

सू.शु.

मं.बु.

८

९

का. कृ. ११ शु. व. ८।४०।८।२१  
अयनांशाः २२।५३।४८

३

२

१

१२ श.

११

४

चं

१०

५

गु.

७

६

सू.शु.

मं.बु.

८

९

कार्तिकविशेष-

धातृ छाया में ब्राह्मणभोजन फल-

आकाशदीपदानफलम्-

कार्तिके सकलं मासं प्रातःस्नायी जितेन्द्रियः। जपन् हविष्यभुक् शान्तःसर्वपापैः प्रमुच्यते॥

स्नानमन्त्रः-

अमायां लक्ष्मीपूजा-

प्रार्थनाः-

लक्ष्मी-अर्घ्यमंत्र-

नित्यनैमित्तिके कृष्ण कार्तिके पापनाशिने। गृहाणार्घ्यमया दत्तं राधया सहितो हरेः॥

दीपदानमन्त्रः-

उल्काभ्रमणमन्त्रः-

भ्रमण करधि।

मन्त्र-

तखन दक्षिण दिशि आकाश में ऊक देख वैत आगाँ मन्त्र पढ़थि-

दग्धास्ते वान्तु परमाङ्गतिम्॥

विसर्जनक मन्त्र-

कैं फेकि देथि। नीचा केवल फेकल ऊक कैं तीन वेरि नांघि ओहि में सँ अधजरल सनकाठी गोसाओन क लग राखथि ओही सँ सूप वजेवाक व्यवहार अछि।



| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | बुध    | ३०।१८          | सं.६।२६        | स्वा.४७।२०           | रा.१।१८               | प्री.५५।१७     | बव.३०।१८         | तुला        | ६।०४।४८।३१               | २८।१०    | ६।२२                 | ५।३८                  | १          | ५          | २२         |
| २     | गुरु   | ३५।२७          | रा.८।३४        | वि.५३।४८             | रा.३।५४               | आ.५६।४३        | वा.२।५२          | तु.रा.६।१५  | ६।०५।४८।२०               | २८।६     | ६।२३                 | ५।३७                  | २          | ६          | २३         |
| ३     | शुक्र  | ४०।४६          | रा.१०।४२       | अनु.६०।००            | अहोरात्र              | सौ.५८।०६       | तै.८।६           | वृश्चिक     | ६।०६।४८।०६               | २८।०२    | ६।२४                 | ५।३६                  | ३          | ७          | २४         |
| ४     | शनि    | ४५।४४          | रा.१२।४२       | अनु.०।१६             | प्रा.६।३०             | शो.५६।१०       | व.१३।१५          | वृश्चिक     | ६।०७।४८।१३               | २७।५८    | ६।२४                 | ५।३६                  | ४          | ८          | २५         |
| ५     | रवि    | ५०।०३          | रा.२।२६        | ज्ये.६।१६            | दि.८।५७               | अ.५५।४१        | बव.१७।५३         | वृ.दि.८।५७  | ६।०८।४८।१७               | २७।५५    | ६।२५                 | ५।३५                  | ५          | ९          | २६         |
| ६     | सोम    | ५३।२२          | रा.३।४६        | मूल.११।४०            | दि.११।६               | सु.५६।२५       | कौ.२१।४२         | धनु         | ६।०६।४८।२१               | २७।५२    | ६।२६                 | ५।३४                  | ६          | १०         | २७         |
| ७     | मंगल   | ५५।३३          | रा.४।३६        | पू.षा.१५।५६          | दि.१२।४८              | धृ.५८।१६       | गर.२४।२७         | ध.सं.७।८    | ६।१०।४८।२५               | २७।४६    | ६।२६                 | ५।३४                  | ७          | ११         | २८         |
| ८     | बुध    | ५६।२७          | रा.५।०२        | उ.षा.१६।०६           | दि.२।५                | शू.५६।०७       | वि.२६।००         | मकर         | ६।११।४८।२६               | २७।४६    | ६।२७                 | ५।३३                  | ८          | १२         | २९         |
| ९     | गुरु   | ५५।३०          | रा.४।३६        | श्र.२०।५८            | दि.२।५०               | गं.५२।५५       | बा.२५।४८         | म.रा.२।५७   | ६।१२।४८।३३               | २७।४३    | ६।२७                 | ५।३३                  | ९          | १३         | ३०         |
| १०    | शुक्र  | ५४।२२          | रा.४।१३        | धनि.२१।३४            | दि.३।६                | वृ.४८।४५       | तै.२४।५६         | कुम्भ       | ६।१३।४८।३७               | २७।४०    | ६।२८                 | ५।३२                  | १०         | १४         | ३१         |
| ११    | शनि    | ५१।३५          | रा.३।७         | शत.२१।०४             | दि.२।५५               | ध्रु.४३।४४     | व.२२।५८          | कुम्भ       | ६।१४।४८।५६               | २७।३६    | ६।२९                 | ५।३१                  | ११         | १५         | १ न.       |
| १२    | रवि    | ४७।४०          | रा.१।३३        | पू.भा.१६।२४          | दि.२।१५               | व्या.३७।५३     | बव.१६।३७         | कु.दि.११।१८ | ६।१५।४६।१५               | २७।३३    | ६।२९                 | ५।३१                  | १२         | १६         | २          |
| १३    | सोम    | ४३।१४          | रा.११।४८       | उ.भा.१६।५७           | दि.१।१७               | हृ.३१।२३       | कौ.२५।२७         | मीन         | ६।१६।४६।३८               | २७।३०    | ६।३०                 | ५।३०                  | १३         | १७         | ३          |
| १४    | मंगल   | ३८।०३          | रा.६।४४        | रे.१३।४५             | दि.१२।०१              | व.२४।१४        | गर.१०।३८         | मी.दि.१२।०१ | ६।१७।४६।५२               | २७।२७    | ६।३१                 | ५।२९                  | १४         | १८         | ४          |
| १५    | बुध    | ३२।१९          | रा.७।२७        | अ.१०।०२              | दि.१०।३२              | सि.१६।४१       | वि.५।११          | मेष         | ६।१८।५०।१०               | २७।२४    | ६।३१                 | ५।२९                  | १५         | १९         | ५          |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. बुध           | ६।२५।४७।८        | ६२६।४७।४        | ३।१।३१।३         | ५।१७।४८।२८        | १०।२६।५८।१६     | १०।२३।५४।२२      | ४४।५     | १६।२६           | २१।८            | २२।९             | १।२६            | ३।५०               | ६।५                 | ८।१५               | ११।३४            | १२।५१           | १४।५४           | १६।३४            | १८।००            |
| २. गुरु          | ६।२६।२८।४३       | ७।०।५१।३३       | ३।१।३५।३९        | ५।१६।२।४७         | १०।२६।५४।२१     | १०।२३।५१।११      | ४४।३     | १६।२२           | २१।४            | २२।५             | १।२२            | ३।४६               | ६।१                 | ८।११               | ११।३०            | १२।४७           | १४।५०           | १६।३०            | १७।५६            |
| ३. शुक्र         | ६।२७।१०।१८       | ७।०१।५६।०२      | ३।१।३६।४७        | ५।२०।१७।०५        | १०।२६।५०।३१     | १०।२३।४८।००      | ४४।०१    | १६।१८           | २१।०            | २२।१             | १।१८            | ३।४२               | ५।५७                | ८।७                | १०।२६            | १२।४३           | १४।४६           | १६।२६            | १७।५२            |
| ४. शनि           | ६।२७।५२।१८       | ७।२।३०।००       | २।१।४।३३         | ५।२१।३१।४१        | १०।२६।४७।१६     | १०।२३।४४।४९      | ४३।५९    | १६।१४           | २०।५६           | २१।५७            | १।१४            | ३।३६               | ५।५३                | ७।३                | १०।२२            | १२।३९           | १४।४२           | १६।२२            | १७।४८            |
| ५. रवि           | ६।२८।३४।१८       | ७।३।३।५८        | ३।१।४५।१९        | ५।२२।४६।१७        | १०।२६।४४।२      | १०।२३।४१।३८      | ४३।५७    | १६।०            | २०।५२           | २१।५३            | १।१०            | ३।३४               | ५।४९                | ७।५९               | १०।१८            | १२।४५           | १४।३८           | १६।१८            | १७।४४            |
| ६. सोम           | ६।१६।१६।१७       | ६।३।३७।५६       | ३।१।४८।५         | ५।२४।०।५३         | १०।२६।४०।४८     | १०।२३।३८।२७      | ४३।५५    | १६।६            | २०।४८           | २१।४९            | १।६             | २।३०               | ५।४५                | ७।५५               | १०।१४            | १२।४१           | १४।३४           | १६।१४            | १७।४०            |
| ७. मंगल          | १।२६।५८।१६       | ६।४।११।५४       | ३।१।५०।५१        | ५।२५।१५।२६        | १०।२।३७।३४      | १०।२३।३५।१६      | ४३।५३    | १६।२            | २०।४४           | २१।४५            | १।२             | २।२६               | ५।४५                | ७।५१               | १०।१०            | १२।३७           | १४।३०           | १६।१०            | १७।३६            |
| ८. बुध           | ७।०।४०।१५        | ७।४।४५।५२       | ३।१।५३।३७        | ।२६।३०।२५         | १०।२६।३४।२०     | १०।२३।३२।०५      | ४३।५२    | १८।५८           | २०।४०           | २१।४१            | ०।५८            | २।२२               | ५।४१                | ७।४७               | १०।६             | १।३३            | १४।२६           | १६।६             | १७।३२            |
| ९. गुरु          | ७।१।२२।१४        | ७।५।१६।५०       | ३।१।५६।२३        | ५।२७।४४।४१        | १०।२६।३१।६      | १०।२३।२८।५४      | ४३।५१    | १८।५४           | २०।३६           | २१।३७            | ०।५४            | २।१८               | ५।३७                | ७।४३               | १०।२             | १२।२९           | १४।२२           | १६।२             | १७।२८            |
| १०. शुक्र        | ६।०२।०४।१३       | ७।५।५३।४८       | ३।०१।५६।८        | ५।२८।५६।१७        | १०।२६।२७।५२     | १०।२३।२५।४३      | ४३।५०    | १८।५०           | २०।३२           | २१।३३            | ०।५०            | २।१४               | ५।३३                | ७।३९               | ६।५८             | १२।२५           | १४।१८           | १५।५८            | १७।२४            |
| ११. शनि          | ७।२।४६।४०        | ७।५।४३।०३       | ३।२।०।२९         | ६।०।१४।३२         | १०।२६।२५।१६     | १०।२३।२२।३२      | ४३।४८    | १८।४६           | २०।२८           | २१।२९            | ०।४६            | २।१०               | ५।२९                | ७।३५               | ६।५४             | १२।२१           | १४।१४           | १५।५४            | १७।२०            |
| १२. रवि          | ४।३।२६।०६        | ७।५।२२।१८       | ३।२।१।५०         | ६।१।२६।४७         | १०।२६।२५।४०     | १०।२३।१६।२१      | ४३।४६    | १८।४२           | २०।२४           | २१।२५            | ०।४२            | २।६                | ५।२५                | ७।३१               | ६।५०             | १२।१७           | १४।१०           | १५।५०            | १७।१६            |
| १३. सोम          | ७।४।११।३२        | ७।५।२१।३३       | ३।२।३।११         | ६।२।४५।१          | १०।२६।२०।४      | १०।२३।१६।१०      | ४३।४४    | १८।३८           | २०।२०           | २१।२१            | ०।३८            | २।२                | ५।२१                | ७।२७               | ६।४६             | १२।१३           | १४।६            | १५।४६            | १७।१२            |
| १४.मंगल          | ७।४।५३।५८        | ७।५।१०।४८       | ३।२।४।३२         | ६।४।४।१७          | १०।२६।१७।२८     | १०।२३।१२।५९      | ४३।४२    | १८।३४           | २०।१६           | २१।१७            | ०।३४            | १।५८               | ५।१७                | ७।२३               | ६।४२             | १२।९            | १४।२            | १५।४२            | १७।८             |
| १५. बुध          | ७।५।३६।२४        | ७।५।०।३         | ३।२।५।५३         | ६।५।१।३२          | १०।२६।१४।५२     | १०।२३।६।४८       | ४३।४१    | १८।३०           | २०।१२           | २१।१३            | ०।३०            | १।५४               | ५।१३                | ७।१९               | ६।३८             | १२।५            | १३।५८           | १५।३८            | १७।४             |

कार्तिक शुक्ल पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४७, सम्वत् २०८२, शुद्ध समयः शरद ऋतु याम्यगोलायनम् उत्तरे कालः

दिनांकः २२ अक्टूबर से ०५ नवम्बर २०२५ ई०

अग्न्यादि देवोत्थापनं, गोपूजा, गोक्रीडा, अन्नकूटः, गोवर्द्धनपूजा, महाकवि कालिदास जयन्ती, चन्द्रदर्शनं, दक्षिणां विना यात्रा, स्वात्यां शिववासः सं. ६।२९ उ., सिद्धियोगः सं. ६।२९ उ.

भ्रातृद्वितीया, भगिनी गृहभोजनं, **श्री चित्रगुप्त पूजा**, पश्चिमोत्तर यात्रानुराधायां, शिववासः द्वितीयां

कटमहुली ३, प्रतिहार षष्ठी व्रतीनां निरामिष भोजनं, **स्वात्यां रविः ३।२१** सू. सू. स्त्री न. योगः वायुः नाडीशोरवि वायु अल्पवृष्टिः उत्तर यात्रा, सर्वार्थसिद्धियोगः

भ. १३।१५ उ. ४५।४४ या., प्रतिहार षष्ठी व्रतीनां संयमः (नहाय-खाय), श्री गणेश ४ व्रतं, पश्चिमोत्तर यात्रा चतुर्थ्यां, सिद्धियोगः रा. १२।४२ या. ततो मृत्युयोगः

प्रतिहार षष्ठी व्रतीनामेकभुक्तम् (**खरना**), शिववासः अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि. ८।५७ उ., **दीक्षाग्रहणं दि. ८।५७ उ.**, ज्ञानपंचमी

प्रतिहार षष्ठी व्रतं **सायंकालिकार्घ दानं**, उत्तर यात्रा षष्ठम्यां, शिववासः षष्ठम्यां, सिद्धियोगः

भ. ५५।३३ उ., **प्रातः कालिकार्घ दानं**, पारणं च सामापूजारम्भः, जगद्धातृपूजारम्भः, उत्तराषाढे सूतीस्नानं, अग्निवासः

भ. २६।०० या, गोपाष्टमी, पश्चिमास्तः कुजः १७।८, मृत्युयोगः

**अक्षयनवमी** गङ्गास्नान दानादिः, **धात्रीच्छायायां भोजनं**, दीक्षाग्रहणं, रत्नगर्भ कुष्मांडदानं, भदवारम्भः दि. २।५० उ., शिववासः, मृत्युयोगः

श्रीकृष्ण विजयोत्सवः गृहारम्भः, गृहप्रवेशः सरदार बल्लभभाई पटेल जयन्ती, जगद्धात्री विसर्जनं, **दीक्षाग्रहणं**

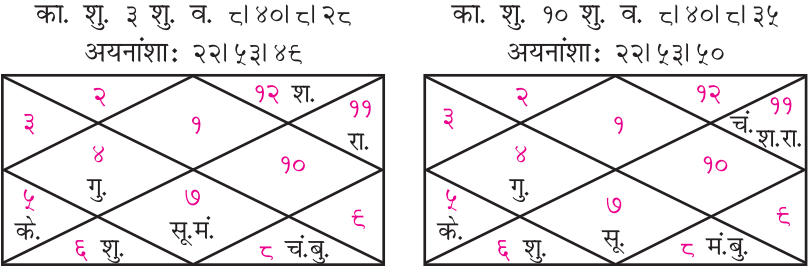
नवम्बर मासारम्भः, भ. २२।५८ उ. ५१।३५ या., **देवोत्थान ११ व्रतं सर्वेषां**, भीष्मपंचकारम्भः, **११ व्रतोद्यापनम्**, गृहारम्भः, गृहप्रवेशः

दामोदर १२, तुलसीदलेन पारणं, **तुलसी विवाहः**, चतुर्मास्य व्रतं समाप्तिः, तामस मन्वादिः, शिवदासः, **दीक्षाग्रहणं**

**प्रदोष १३ व्रतं**, विद्यापति स्मृति दिवसः बाबा साहेब राम परमहंस स्मृति दिवसः, गृहारम्भः गृहप्रवेशः रेवत्यां, पश्चिमोत्तर यात्रा शिववासः त्रयोदश्यां

भ. ३८।३ उ., **प्रदोष १४ व्रतं**, श्री काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दिनं भदवा समाप्तिः दि. १२।०१ उ., पश्चिम यात्रा रेवत्यां ततः उत्तरां विना यात्रा राजप्रद योगः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि. १२।१ उ.

भ. ५।११ या., कार्तिकी पूर्णिमा, सोनपुर मेला, सर्वदेव देव्युत्थापनं, औत्तममन्वादिः, देव दीपावली, गृहारम्भः अश्विन्यां कार्तिकेयावतारः, सामा विसर्जनं, अग्निवासः रा. ७।२७ या.



**सदाचार-** परिस्थिक अनुसार भिन्न- भिन्न स्थानक सदाचारो मे विविधता देखल जाइत आछि। एहेन स्थिति मे कोन जगहक सदाचार केँ प्रमाण मानैत अपनाबी? एहि जिज्ञासाक समाधान मे आचार-मर्मज्ञ आचार्य देवलक कथन छैन्ह जे जाहि देश मे जे व्यवहार परम्परा सँ आबि रहल आछि आ ओ व्यवहार यदि वेद आ स्मृतिक अविरোধी हो तऽ तत्तद् देशवासी केँ ओकरे अनुपालन करक चाही-**यस्मिन् देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः।**

**श्रुतिस्मृत्यविरुद्धश्च तमनुष्ठातुमर्हति॥** (देवल)

सदाचारक प्रसंग मे मनु सेहो लगभग इएह बात कहने छथि- **यस्मिन् देशे य आचारः पारम्पर्यक्रमागतः वर्णानां सान्तरालानां स सदाचार उच्यते॥**

इएह कारण आछि जे वेद, पुराण, धर्मशास्त्र आदि सर्वमान्य ग्रन्थ सभक।

**विविधविषयाः-** कार्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्ति निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत् गाश्च पूजयेत्।

**गोवर्द्धन पूजन मन्त्रः-** गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक।

कृष्णवाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव॥

**भोपूजनमन्त्रः-** लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनुरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु॥

अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्॥

**भ्रातृद्वितीयायां भागेनीपठनीयमन्त्रः-** भ्रातस्तवानुजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभं।

प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः॥

**ज्येष्ठभ्रातरि सति -** भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः॥

**एकादश्यां विष्णूत्थापनमन्त्रः-** ब्रह्मेन्द्ररैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ॥ मेघागता निर्मलपूर्णचन्द्रशारद्यपुष्पाणि मनोहरणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वचा चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम्॥



| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | गुरु   | २६।०४          | दि.५।०५        | भर.५।५६              | दि.८।५३               | व्य.८।५३       | कौ.२६।२४         | मे.दि.२।२८  | ६।१६।५०।१०               | २७।२१    | ६।३१                 | ५।२६                  | १६         | २०         | ६          |
| २     | शुक्र  | २०।२३          | दि.२।४१        | कृ.१।४४              | दि.७।१४               | व.०।५३         | गर.२०।२३         | वृष         | ६।२०।५०।४८               | २७।१८    | ६।३२                 | ५।२८                  | १७         | २१         | ७          |
| ३     | शनि    | १४।३५          | दि.१२।२३       | मृग.५३।४५            | रा.४।०३               | शि.४५।२६       | वि.१४।३५         | वृ.दि.४।४६  | ६।२१।५१।२१               | २७।१४    | ६।३३                 | ५।२७                  | १८         | २२         | ८          |
| ४     | रवि    | ६।०५           | दि.१०।१२       | आद्रा५०।१२           | रा.२।३६               | सि.३८।१२       | बा.६।०५          | मिथुन       | ६।२२।५१।५६               | २७।१०    | ६।३४                 | ५।२६                  | १६         | २३         | ९          |
| ५     | सोम    | ४।०६           | दि.८।१३        | पुन.४७।३६            | रा.१।३६               | सा.३१।२८       | तै.४।०६          | मि.सं.७।५४  | ६।२३।५२।३१               | २७।०६    | ६।३५                 | ५।२५                  | २०         | २४         | १०         |
| ७     | मंगल   | ५६।३४          | रा.५।१३        | पु.४५।४८             | रा.१२।५४              | शुभ.२५।२४      | वि.२८।१४         | कर्क        | ६।२४।५३।०५               | २७।०३    | ६।३५                 | ५।२५                  | २१         | २५         | ११         |
| ८     | बुध    | ५४।१७          | रा.४।१६        | श्ले.४४।५६           | रा.१२।३४              | शु२०।०४        | बा.२५।२५         | क.रा.१२।३४  | ६।२५।५३।३६               | २७।००    | ६।३६                 | ५।२४                  | २२         | २६         | १२         |
| ९     | गुरु   | ५३।१३          | रा.३।५४        | मघा.४५।१३            | रा.१२।४२              | ब्र.२५।३६      | तै.२३।४५         | सिंह        | ६।२६।५४।१३               | २६।२७    | ६।३७                 | ५।२३                  | २३         | २७         | १३         |
| १०    | शुक्र  | ५३।२३          | रा.३।५८        | पू.फ.४६।४३           | रा.१।१८               | ऐं.१२।०६       | व.२३।१८          | सिंह        | ६।२७।५४।४७               | २६।५४    | ६।३७                 | ५।२३                  | २४         | २८         | १४         |
| ११    | शनि    | ५४।५५          | रा.४।३६        | उ.फ.४६।२६            | रा.२।२६               | वै.६।४०        | बव.२४।६          | सिं.दि.७।३६ | ६।२८।५५।२७               | २६।५०    | ६।३८                 | ५।२२                  | २५         | २९         | १५         |
| १२    | रवि    | ५७।३६          | रा.५।४१        | ह.५३।२५              | रा.४।१                | वि.८।१५        | कौ.२६।१५         | कन्या       | ६।२९।५६।०७               | २६।४७    | ६।३९                 | ५।२१                  | २६         | ३०         | १६         |
| १३    | सोम    | ६०।००          | अहोरात्र       | चि.५८।२७             | रा.६।२                | प्री.७।३८      | गर.२६।३६         | क.सं.५।०१   | ७।०।५६।४७                | २६।४४    | ६।३९                 | ५।२१                  | २७         | १          | १७         |
| १३    | मंगल   | १।२६           | प्रा.७।१४      | स्वा.६०।००           | अहोरात्र              | आ.७।५४         | व.१।२६           | तुला        | ७।०१।५७।२६               | २६।४१    | ६।४०                 | ५।२०                  | २८         | २          | १८         |
| १४    | बुध    | ६।०७           | दि.६।७         | स्वा.४।२३            | दि.८।२५               | सौ.८।४६        | श.६।७            | तु.रा.४।२०  | ६।०२।५८।०५               | २६।३८    | ६।४०                 | ५।२०                  | २९         | ३          | १९         |
| ३०    | गुरु   | ११।२०          | दि.११।१३       | वि.१०।४६             | दि.१०।५९              | शो.१०।०६       | ना.११।२०         | वृश्चिक     | ६।०३।५८।४४               | २६।३५    | ६।४१                 | ५।१९                  | ३०         | ४          | २०         |

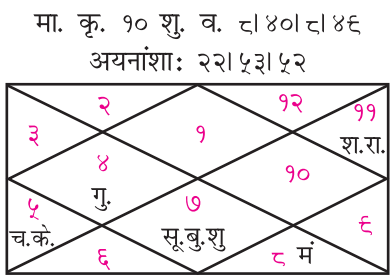
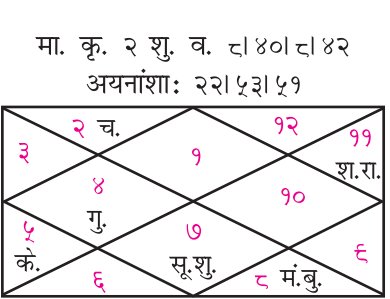
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. गुरु          | ७।६।१८।५०        | ७।४।४६।२८       | ३।२।७।१३         | ६।६।७।१३          | १०।२६।१२।१६     | १०।२३।६।३७       | ४३।४०    | १८।२६           | २०।०६           | २२।५०            | ०।३०            | २।५४               | ५।१३                | ७।१६               | ६।२०             | १२।३२           | १४।४४           | १५।५४            | १७।४४            |
| २. शुक्र         | ७।०७।०१।१६       | ७।०४।३८।३४      | ३।०२।०८।१३       | ३।०२।०८।१३        | १०।२६।०६।४०     | १०।२३।३।२६       | ४३।३६    | १८।२२           | २०।२            | २२।४             | ०।२६            | २।५०               | ५।५                 | ७।१५               | ६।३०             | १२।२            | १४।४            | १५।४४            | १७।११            |
| ३. शनि           | ७।७।४४।१५        | ७।३।५४।४६       | ३।२।८।२०         | ३।२।८।२०          | १०।१६।७।४२      | १०।२३।०।१५       | ४३।३७    | १८।१८           | १६।५८           | २२।०             | ०।२२            | २।४६               | ५।१                 | ७।११               | ६।२६             | ११।५८           | १४।००           | १५।४०            | १७।६             |
| ४. रवि           | ७।८।२७।४         | ७।३।१०।५८       | ३।२।८।१८         | ३।२।८।१८          | १०।२६।५।४४      | १०।२२।७।४        | ४३।३५    | १८।१४           | १६।५४           | २१।५६            | ०।१८            | २।४२               | ४।५७                | ७।७                | ६।२२             | ११।५४           | १३।५६           | १५।३६            | १७।०३            |
| ५. सोम           | ७।६।६।५३         | ७।२।२७।०        | ३।२।८।१६         | ३।२।८।१६          | १०।२६।३।४६      | १०।२२।५३।५३      | ४३।३३    | १८।१०           | १६।५०           | २१।५२            | ०।१४            | २।३८               | ४।५३                | ७।३                | ६।१८             | ११।५०           | १३।५०           | १५।३२            | १६।५९            |
| ७. मंगल          | ७।६।५२।४२        | ७।१।४३।२२       | ३।२।८।१४         | ३।२।८।१४          | १०।१६।१।८       | १०।२२।५०।४२      | ४३।३१    | १८।६            | १६।४६           | २१।४८            | ०।१०            | २।३४               | ४।४६                | ६।५६               | ६।१४             | ११।४६           | १३।४६           | १५।२८            | १६।५५            |
| ८. बुध           | ७।१०।३५।३०       | ७।०।५६।३४       | ३।२।८।१२         | ३।२।८।१२          | १०।२८।५६।५०     | १०।२२।४७।३१      | ४३।२६    | १८।२            | १६।४२           | २१।४४            | ०।६             | २।३०               | ४।४५                | ६।५५               | ६।११             | ११।४३           | १३।४३           | १५।२५            | १६।५२            |
| ९. गुरु          | ७।११।१८।१८       | ७।०।१५।४६       | ३।२।८।१०         | ३।२।८।१०          | १०।२८।५७।५३     | १०।२२।४४।२०      | ४३।२८    | १७।५८           | ११।३८           | २१।४०            | ०।२             | २।२६               | ४।४१                | ६।५१               | ६।८              | ११।४०           | १३।४२           | १५।२२            | १६।४९            |
| १०. शुक्र        | ७।१२।०१।०६       | ६।१६।३१।५८      | ३।०२।८।०८        | ३।०२।८।०८         | १०।२८।५५।५६     | १०।२२।४१।०६      | ४३।२७    | १७।५४           | १६।३४           | २१।३६            | २३।५८           | २।२२               | ४।३६                | ५।४८               | ६।५              | ११।३७           | १३।३६           | १५।१६            | १६।४६            |
| ११. शनि          | ७।१२।४४।१७       | ६।२८।५५।११      | ३।२।६।४३         | ३।२।६।४३          | १०।२८।५५।११     | १०।२२।३७।५८      | ४३।२५    | १७।५२           | १६।३२           | २१।३४            | २३।५६           | २।२०               | ४।३७                | ६।४६               | ६।२              | ११।३४           | १३।३६           | १५।१६            | १६।४३            |
| १२. रवि          | ७।१३।२७।२८       | ६।२८।१८।२४      | ३।२।५।१८         | ३।२।५।१८          | १०।२८।५३।२६     | १०।२२।३४।४७      | ४३।२३    | १७।५०           | १६।३०           | २१।३२            | २३।५४           | २।१८               | ४।३५                | ६।४४               | ६।०              | ११।३१           | १३।३३           | १५।१३            | १६।४०            |
| १३. सोम          | ७।१४।१०।३६       | ६।२७।४१।३७      | ३।२।३।५३         | ३।२।३।५३          | १०।२८।५३।४१     | १०।२२।३७।३६      | ४३।२१    | १७।४९           | १६।३०           | २१।३१            | २३।४८           | २।८                | ४।२२                | ६।३७               | ८।५६             | ११।२७           | १३।२६           | १५।९             | १६।३६            |
| १३.मंगल          | ७।१४।५३।५०       | ६।२७।५०         | ३।२।२।२८         | ३।२।२।२८          | १०।२८।५२।५६     | १०।२२।२८।२५      | ४३।१९    | १७।४५           | १६।२६           | २१।२७            | २३।४४           | २।४                | ४।१८                | ६।३३               | ८।५४             | ११।२३           | २३।२५           | १५।५             | १६।३६            |
| १४. बुध          | ७।१५।३७।१        | ६।२६।२८।४       | ३।२।१।४          | ३।२।१।४           | १०।२८।५२।१२     | १०।२२।२५।१४      | ४३।१८    | १७।४१           | १६।२२           | २१।२३            | २३।४०           | २।००               | ४।१४                | ६।२१               | ८।५०             | ११।१९           | १३।२१           | १५।१             | १६।३२            |
| ३०. गुरु         | ७।१६।२०।११       | ६।२५।४१।१८      | ३।१।५६।४०        | ३।१।५६।४०         | १०।२८।५१।२८     | १०।२२।२२।३       | ४३।१७    | १७।३६           | १६।१८           | २१।१९            | २३।३६           | १।५६               | ४।१०                | ६।२५               | ८।४६             | ११।१५           | १३।१७           | १४।५७            | १६।२८            |

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सन् १४३३ साल, शाके-१९४७, सम्वत् २०८२, शुद्ध समयः शरद ऋतुः ता. १६ तः हेमन्त ऋतुः याम्यगोलः याम्यायनम्, उत्तरे-कालः ता. १६ तः पूर्वे कालः  
दिनांकः ०६ नवम्बर से २० नवम्बर २०२५ ई०

विशाखायां रविः-५३।५६ पश्चिमास्तः बुधः ३२।४७, शिववासः दि. ५।५ या., अग्निवासः सं. ५।५ उ.  
रोहिणी नक्षत्र ५५।५२, परिध योगः ५२।१० गृहारम्भः रोहिण्यां, पूर्व दक्षिण यात्रा तृतीयायां रोहिण्यां, अग्निवासः दि. २।४१ या., मृत्युयोगः दि. २।४१ या.  
श्री गणेश ४ व्रतं, तृतीयायां गृहारम्भः तृतीयायां पूर्वा विना यात्रा भृगशिरसि (३-४) एकोदिष्टं, शिववासः दि. १२।२३ अग्निवासः दि. १२।२३ उ., सिद्धियोगः दि. १२।२३ उ.  
मनसा देवी शयनं रात्रिव्यापिनी, विश्व साक्षरता दिवसः, शिववासः, दीक्षाग्रहणं दि. २।३४ उ.  
षष्ठी तिथि ५५।४८ भ. ५६।५४ उ. वीडु-५ मानसदेवीशयनं, विषहरा पूजनं, दक्षिण पश्चिम यात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तर यात्रा पुनर्वसौ, शिववासः दि. ८।१३ या., सिद्धियोगः दि. ८।१३ उ., दीक्षाग्रहणं दि. ८।१३ या.  
भ. २८।१४ या. दक्षिण यात्रा पुनर्वसौ, वक्रा गुरुः ५३।५३ उत्तरां विना यात्रा पुष्ये  
कालभैरव अष्टमी, कालभैरव व्रतं, महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह जयन्ती, शिववासः रा. ४।१९ या., अग्निवासः, मृत्युयोगः  
पूर्वोत्तर यात्रा दशम्यां, अन्ववष्टका नवमीं, मृत्युयोगः  
भ. २३।१८ उ. ५३।२३ या, बाल दिवसः, वक्रगत्या तुलयां बुधः-५१।५२ अग्निवासः, दीक्षाग्रहणं दि. ४।० या.  
उत्पन्ना ११ व्रतं सर्वेषां, दक्षिणं यात्रा-एकादश्यां हस्ते । शिववासः  
गोमूत्रेणपारणं वृश्चिके रविः-४५।५२ मु. ३० फलं साम्यंमासान्तः द. ति. ५७।३६ या., ५७।३६ या., कार्तिक व्रताकाश दीप दान तुलसी व्रतोद्यापनं शिववासः रा. शेष-५।४१ या., सर्वार्थसिद्धियोगः  
प्रदोष-१३ व्रतं विष्णुपदी सं. पु. दि. १२ मा. पुण्य कालः विश्व छात्र दिवसः अग्निवासः  
प्रदोष-१४ व्रतं मासादिः सूतीस्नानं, अग्निवासः प्रा. ७।१४ या., सिद्धियोगः दि. ७।१४ या., ततो राजप्रदयोगः  
पार्वणं, विश्व नागरिक दिवसः-शिववासः दि. ६।७ उ., अग्निवासः ६।७ उ.  
मार्गी अमावास्या, स्नानदानादिः, अनुराधायां रवि. ६।२२ शुभवासरान्विते देशो सुभिक्षं प्रजासुखं, प्रतिपदि अनुराधायां विवाहः, पश्चिमोत्तर यात्रा शिववासः दि. ११।१३ या., अग्निवासः स्वार्थसिद्धियोगः दि. १०।५६ उ.



विविधः-रविव्रत- आदौ वृश्चिकमेषान्ते रविवारो यदा भवेत्। तदा रविव्रतारम्भविसर्गौ शास्त्रसम्मतौ। शुक्लपक्षे व्रतं कुर्यात् सम्यदेवस्य भास्वतः॥ मार्गशीर्ष काल भौरवाष्टमी- सा च रात्रिव्यापिनी ग्राह्या। मार्गशीर्षसिताष्टम्यां कालभैरवसन्निधौ। उपोष्य जागरणं कुर्वन् सर्व पापैः प्रमुच्यते। इतिकाशी-खण्डाद्रात्रिव्रतत्वावगतेः। ‘रुद्रव्रतेषु सर्वेषु कर्तव्या सम्मुखीतिथिः’। इतिब्रह्मवैवर्तेउच्यते।  
शनिस्तोत्र-पिप्पलाद उवाच- नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाक्षाय ते नमः। नमस्ते बभ्रुरूपाय कृष्णाय च नमोस्तुते॥ नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभो॥ नमस्ते मन्दसंज्ञाय शनैश्चराय नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरुदेवेश दीनस्य प्रणतस्य मे॥  
ब्राह्मणक उत्पत्तिः- सृष्टिक प्रारम्भ मे ब्रह्माक मुखसँ ब्राह्मणक प्रादुर्भाव भेल। ओहि समयक ब्राह्मणक एक रूप छल। तदन्तर देश-भेदसँ दू प्रकारक भेलाह। प्रथम पंच गौड़, द्वितीय पंच द्रविड़। • पंच गौड़मे- सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौर, उत्कुल आ मैथिल, ई लोकनि विन्ध्य पर्वतसँ उत्तर रहैत छलाह एतदर्थ पंच गौड़ कहबैत छथि। द्वितीय पंचमेः- कर्णाट, तेलंग, महाराष्ट्र, द्रविड़, गुर्जर ई लोकनि विन्ध्य पर्वतसँ दक्षिण रहने पंच द्राविड़ कहौलन्हि, ई दसो ब्राह्मण षट् कर्मक उ अधिकारी भेलाह। आओर ८४ चौरासी प्रकारक ब्राह्मण सम्पूर्ण भारत खण्डमें छथि। ओहो लोकनि षट्कर्मक अधिकारी छथि। हिनका लोकनिमे मूल ओ ग्राम नहि छन्हि, केवल गोत्र मात्र छन्हि। ब्रह्माजी सृष्टि करबाक समय पहिने मरीचिकँ उत्पन्न कएलन तदन्तर अत्रि, अंगिरा, पुलस्त, पुलस्त, क्रतु, प्रचेता, बसिष्ठ, भृगु, नारद, क्रमशः दक्षिणनेत्र सँ आत्रि क,



हरिशो व्रतं, रूद्र व्रतं, मुंडनं, चन्द्रशर्नं, विवाह, द्विरागमनं, प्रतिपदा, उत्तरयात्रा, शिववासः दि.-१।२४ उ., अग्निवास दि.-१।२४ या. सर्वार्थसिद्धियोगः दि.-१।३७ या., सिद्धियोगः दि.-१।२४ या. मृत्युयोगः मार्ग शुक्ल द्वितीया शनि योगात्-कष्टकारकः पश्चिमोत्तरयात्रा, ज्येष्ठायां ततः उत्तरयात्रा, अग्निवासः दि.-३।२५ उ., शिववासः दि. ३।२५ या.

भ.-५०।५० उ. **उमामहेश्वर व्रतं**, यशस्पति स्मृति दिवसः षाण्मासिक रविब्रतारंभ, नवान्न पार्वणं, विवाह, मूले तृतीयां, द्विरागमनं, उत्तराषाढ़े गणेश-४ व्रतं, पूर्वोत्तरयात्रा, तृतीयायां, सिद्धियोगः सं.-५।१० या.,★

भ.-२१।२१ या. श्रीगणेश-४ व्रतं, विवाह, उत्तराषाढ़े, द्विरागमनं तृतीयायां, उत्तरयात्रा, पंचमी, पूर्वाषाढ्यां, अग्निवासः, शिववासः सं.-६।३१ उ.

**विवाह पंचमी** श्री सीताराम विवाहोत्सवः सोनी स्मृति दिवसः, सूतीस्नानं, विवाह, शिववासः, मृत्युयोगः रा. ७।२४ उ.

श्री स्कन्द षष्ठीव्रतं भदवारम्भः रा. १०।२५ विवाहः दिवारात्रौ, द्विरागमनं, गृहप्रवेशः, अग्निवासः, शिववासः रा.-७।४७ या.

भ.-३२।१० उ. श्री सूर्य सप्तमी, नवान्न पावर्णं, मुंडनं, विवाहः द्विरागमनं, गृहप्रवेशः, सप्तम्यां, **दीक्षाग्रहणं रा. ७।३६ या.**

हर्षणयोगः ५५।१२ भ.-१।२१ या. द्विरागमनं, उत्तर विना यात्रा, अष्टम्यां, शिववासः सं.-६।५७ उ., अग्निवासः

महानन्दा नवमी, पश्चिम यात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तर यात्रा नवम्यां, शिववासः सं.-५।५१ या., सिद्धियोगः सं. ५।५१ या. ततो मृत्युयोगः

रवियोग, सर्वार्थसिद्धियोगः संं ४।२२ उ. सूतीस्नानं, विवाहः एकादश्यां अग्निवासः दि. ४।२२ या., मृत्युयोगः दि. ४।२२ उ., **दीक्षाग्रहणं**

दिसम्बर मासारम्भः **मोक्षदा-११ व्रतं सर्वेषां** संगीता स्मृति दिवसः, गीता जयनती, मुंडनं, भदवा समाप्तिः रा.-८।२ उ. विवाहः रेवत्यां द्विरागमनं, गृहारम्भ, गृहप्रवेशः एकादश्यां, शिववासः दि.-२।३३ उ. सिद्धियोगः❖

केशव-१२, उमाकान्त स्मृति दिवसः, गोमूत्रेण पारणं **प्रदोष-१३ व्रतं**, उत्तरा विना यात्राशिवन्यां (१२-१३) एकोदिष्टं, शिववासः सिद्धियोगः दि.-१२।२८ उ., अग्निवासः दि. १२।२८ या., सर्वार्थसिद्धियोगः सं.-६।३६ या.

**प्रदोष-१४ व्रतं, ज्येष्ठायां रविः ५५।३५** अग्निवासः १०।१३ उ., शिववासः दि.-१०।१३ या., मृत्युयोगः दि. १०।१३ या.

पूर्णमासानम् ५४।०३ मार्गीपूर्णिमा क्षेत्रस्नानं, हरिहरनाथ पूजनं दर्शनं, **दत्तात्रेयावतारः**, विवाहः द्विरागमनं, गृहारम्भः रोहिण्यां पूर्व यात्रा च नौ सेना दिवसः, मृत्युयोगः दि.-७।५२ या., अग्निवासः प्रा.-७।५२ या.

| मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च |                  |                 |                  |                   |                 |                  | दैनिकलग्नसारणी चक्रम् |                 |                 |                  |                 |                    |                     |                    |                  |                 |                 |                  |                  |  |
|----------------------------------------------------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|-----------------------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|--|
| तिथियः<br>दिनानि                                               | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान              | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |  |
| १. शुक्र                                                       | ७।१७।५७।२६       | ६।२५।१४।३२      | ३।०१।५८।१६       | ६।२५।१३।४३        | १०।२८।५०।४४     | १०।२२।१८।५२      | ४३।१६                 | १७।३३           | १९।१४           | २१।१५            | २३।३२           | १।५२               | ४।०६                | ६।२१               | ८।४२             | ११।११           | १३।१५           | १४।५४            | १६।२४            |  |
| २. शनि                                                         | ७।१७।१६।५०       | ६।२५।६।२७       | ३।१।५५।२५        | ६।२६।२६।७         | १७।२८।५०।३२     | १०।२२।१५।४१      | ४३।१५                 | १७।२९           | १९।१०           | २१।११            | २३।२८           | १।४८               | ४।०२                | ६।१७               | ८।३८             | ११।७            | १३।११           | १४।५०            | १६।२०            |  |
| ३. रवि                                                         | ७।१८।४०।५९       | ६।२५।४।२२       | ३।१।५२।३४        | ६।२७।४४।२१        | १०।२८।५०।२०     | १०।२२।१२।३०      | ४३।१४                 | १७।२५           | १९।६            | २१।७             | २३।२५           | १।४४               | ३।५८                | ६।१३               | ८।३४             | ११।३            | १३।७            | १४।४६            | १६।१६            |  |
| ४. सोम                                                         | ७।१९।१३।४८       | ६।२४।५९।१८      | ३।१।४९।४३        | ६।२८।५१।५४        | १०।२८।५०।८      | १०।२२।९।१९       | ४३।१३                 | १७।२२           | १९।३            | २१।४             | २३।२२           | १।५१               | ३।५५                | ६।१०               | ८।३१             | ११।००           | १३।४            | १४।४३            | १६।१३            |  |
| ५. मंगल                                                        | ७।१९।५७।१७       | ६।२४।५४।१४      | ३।१।४६।५३        | ७।००।१५।१७        | १०।२८।४९।५६     | १०।२२।६।०८       | ४३।१२                 | १७।१८           | १८।५९           | २१।००            | २३।१८           | १।५७               | ३।५१                | ६।६                | ८।२७             | १०।५६           | १३।००           | १४।३९            | १६।९             |  |
| ६. बुध                                                         | ७।२०।४०।४६       | ६।२४।४१।१८      | ३।१।४४।३         | ७।१।३०।४०         | १०।२८।४९।४४     | १०।२२।२।५७       | ४३।११                 | १७।१५           | १८।५६           | २०।५७            | २३।१५           | १।५४               | ३।४८                | ६।३                | ८।२४             | १०।५३           | १२।५७           | १४।३६            | १६।६             |  |
| ७. गुरु                                                        | ७।२१।२४।१४       | ६।२४।४४।६       | ३।१।४१।१३        | ७।२।५६।३          | १०।२८।४९।३२     | १०।२१।५९।४४      | ४३।०९                 | १७।११           | १८।५२           | २०।५३            | २३।११           | १।५०               | ३।४४                | ५।५९               | ८।२०             | १०।४९           | १२।५३           | १४।३२            | १६।२             |  |
| ८. शुक्र                                                       | ७।२२।७।४२        | ६।२४।३६।२       | ३।१।३८।२         | ७।४।१।२६          | १०।२८।४९।२०     | १०।२१।५६।३५      | ४३।०९                 | १७।७            | १८।४८           | २०।४९            | २३।७            | १।४६               | ३।४०                | ५।५५               | ८।१६             | १०।४५           | १२।४९           | १४।२८            | १५।५८            |  |
| ९. शनि                                                         | ७।२२।५१।४०       | ६।२५।१४।३७      | ३।१।३४।७         | ७।५।१७।०९         | १०।२८।५०।००     | १०।२१।५३।२४      | ४३।०८                 | १७।३            | १८।४४           | २०।४५            | २३।३            | १।४२               | ३।३६                | ५।५१               | ८।१२             | १०।४१           | १२।४५           | १४।२४            | १५।५४            |  |
| १०. रवि                                                        | ७।२३।३५।३७       | ६।२५।५०।१२      | ३।१।२९।५१        | ७।६।३।५२          | १०।२८।५०।४०     | १०।२१।५०।१३      | ४३।०७                 | १६।५९           | १८।४०           | २०।४५            | २२।५९           | १।३८               | ३।३२                | ५।४७               | ८।८              | १०।३७           | १२।४१           | १४।२१            | १५।५०            |  |
| ११. सोम                                                        | ७।२४।१९।३४       | ६।२५।२५।४७      | ३।१।२५।३६        | ७।७।४८।३५         | १०।२८।५१।१९     | १०।२१।४७।२       | ४३।०६                 | १६।५६           | १८।३७           | २०।४२            | २२।५६           | १।३५               | ३।२९                | ५।४४               | ८।५              | १०।३४           | १२।३८           | १४।१८            | १५।४७            |  |
| १२.मंगल                                                        | ७।२५।३।३१        | ६।२६।१।२२       | ३।१।२१।२१        | ७।९।४।१८          | १०।२८।५१।५८     | १०।२१।४३।५१      | ४३।०५                 | १६।५२           | १८।३३           | २०।३८            | २२।५२           | १।३१               | ३।२५                | ४।४०               | ८।१              | १०।३०           | १२।३४           | १४।१४            | १५।४३            |  |
| १३. बुध                                                        | ७।२५।४७।२८       | ६।२६।३६।५७      | ३।१।१७।६         | ७।१०।२०।१         | १०।२८।५२।३७     | १०।२१।४०।४०      | ४३।०४                 | १६।४८           | १८।२९           | २०।३४            | २२।४८           | १।२७               | ३।२१                | ४।३६               | ७।५७             | १०।२६           | १२।३०           | १४।१०            | १५।३९            |  |
| १४. गुरु                                                       | ७।२६।३१।२५       | ६।२७।१२।३२      | ३।१।१२।५१        | ७।११।३५।४३        | १०।२८।५३।१६     | १०।२१।३७।२९      | ४३।०४                 | १६।४४           | १८।२५           | २०।३०            | २२।४४           | १।२३               | ३।१७                | ४।३२               | ७।५३             | १०।२२           | १२।२६           | १४।६             | १५।३५            |  |

विविधाविषयाः-**रवौत्यान्धवस्तूनि**- क्षारं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशिभोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्। मार्गादिमासे **रविव्रतभक्ष्याणि**- पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिभक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपलदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथो त्रिःपलाः शक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करा सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण॥ **रात्रौ लग्नज्ञानम्**- ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषांन्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः, दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ नेऋत्यां च मीनराशिर्वर्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदेव लग्नं तदानीमिति। **चन्द्रोदयास्तसाधनम्**- तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। बाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च॥

**वाजसनेयि के भेलाह-** याज्ञवल्क्यक पिता “ब्रह्मरात” महानकुलपति छलाह। ई असंख्य विद्यार्थी लोकनिक भरण-पोषण करैत रहथि। तैँ हिनका “**वाजसानि**” सेहो कहल जाइत रहनि। वाजसानि शब्द अर्थ होइत अछि जकरा दानक अन्नसँ यज्ञ होइक “**वाजसानि यस्य सः**” हुनक पुत्र होएबाक कारण याज्ञवल्क्यकेँ वाजसनेय सेहो कहल जाइत छलन्हि। याज्ञवल्क्यक अर्थ होइत अछि यज्ञक प्रवक्ता। ओ व्यासशिष्य वैशम्पायनसँ यजुर्वेदक अध्ययन कयलन्हि। एक दिन दुनु गुरुशिष्यमे शास्त्रार्थ भऽ गेलन्हि। गुरु रुष्ट भऽ शाप देलथिन्ह जे हमरासँ पढ़ल विद्या लुप्त भऽ जाय। हुनकासँ पढ़ल विद्या वमन कऽ देल। तखन वैशम्पायन यजुर्वेद तैत्तिरीय साखा कहौलक। तदुत्तर महर्षि याज्ञवल्क्य मुखवत् भय गेलाह। तखन सूर्य भगवान् सँ प्रार्थना कैलानि। सूर्य भगवान मध्य दिनमे घोड़ा रूपमे आबि मन्त्र ग्रहण कराओल। ओहि मन्त्रक जप कैलासँ पुनः पूर्णताकँ प्राप्त कैलानि।

**याज्ञवल्क्य उवाच-** कृपां कुरु जगन्मातर्मामेवं हततेजसम्। गुरुशापात् स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुः खितम्॥ ज्ञानं देहि स्मृतिं देहि विद्या शक्तिप्रबोधिनीम्। ग्रन्थकर्तृत्वशक्तिं च सुशिष्यं सुप्रतिष्ठितम्॥ छन्दोगी के भेलाह:- छन्दासि गायन्तीति छन्दोगाः।

**मैथिल ब्राह्मणमे दुई वेद प्रचलित अछि। सामवेद आ यजुर्वेद (छन्दोगिया) शाण्डिल्य मुनि सामवेद पढ़ि ओहि मन्त्र द्वारा देवयज्ञ तथा पितृयज्ञ करैत छलाह तथा हुनक शिष्य प्रशिष्य पृथक अनुसरण कएलनि। सामवेदमे छन्दक गान होइत अछि। एहि हेतु सामवेदी छन्दोगिया कहबैत छथि। कश्यपो वत्सशाण्डिल्यौ कौशिकश्च धनञ्जयः। षडेते सामगा विप्राः शेषाः वाजसनयिनः॥** उपर्युक्त गोत्रवालकेँ सामवेदी होमक चाही किन्तु सामवेद श्याम वर्णक छलाह। यजुर्वेद शुक्ल वर्ण एतदर्थ स्वकीय वर्णक धारण कएलन्हि। **सामः श्यामं यजुः शुक्ल शुक्लवर्णाः द्विजोत्तमाः।** स्ववर्णग्राहकत्वेनाभूवन् वाजसनेयिनः॥ **गोभिल गृह्य सूत्रमे प्रथम शिखा तथा बाम पाद प्रच्छालन विहित अछि।**



| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | शुक्र  | ५१।०४          | रा.३।१२        | रो.१७।०६             | दि.१।३८               | सि.८।४६        | बा.२३।५६         | वृ.रा.१२।५० | ७।१६।१३।१६               | २६।०८    | ६।४६                 | ५।१४                  | १५         | १६         | ५          |
| २     | शनि    | ४५।४१          | रा.१।०३        | मृग.१३।१३            | दि.१२।०४              | सा.१।६         | तै.१८।२२         | मिथुन       | ७।२०।१४।३१               | २६।०६    | ६।४७                 | ५।१३                  | १६         | २०         | ६          |
| ३     | रवि    | ४०।४६          | रा.११।०७       | आर्द्रा६।४१          | दि.१०।३६              | शु.४६।४१       | व.१३।१५          | मि.रा.३।४८  | ७।२१।१५।४३               | २६।०५    | ६।४७                 | ५।१३                  | १७         | २१         | ७          |
| ४     | सोम    | ३६।४४          | रा.६।२६        | पुन.६।४८             | दि.६।३०               | ब्र.४०।२४      | बव.८।४६          | कर्क        | ७।२२।१६।५५               | २६।०४    | ६।४७                 | ५।१३                  | १८         | २२         | ८          |
| ५     | मंगल   | ३३।३२          | रा.८।१२        | पु.४।४७              | दि.८।४२               | ऐ.३४।४६        | कौ.५।८           | कर्क        | ७।२३।१८।०७               | २६।०३    | ६।४७                 | ५।१३                  | १६         | २३         | ९          |
| ६     | बुध    | ३१।२३          | रा.७।२१        | श्लेषा३।३६           | दि.८।१४               | वै.२६।५६       | गर.२।२७          | क.दि.८।१४   | ७।२४।१६।१६               | २६।०२    | ६।४८                 | ५।१२                  | २०         | २४         | १०         |
| ७     | गुरु   | ३०।२६          | रा.७।००        | मघा.३।३७             | दि.८।१५               | वि.२६।०६       | वि.०।५६          | सिंह        | ७।२५।२०।३१               | २६।०१    | ६।४८                 | ५।१२                  | २१         | २५         | ११         |
| ८     | शुक्र  | ३०।४१          | रा.७।०४        | पू.फ.४।४८            | दि.५।३६               | प्री.२३।१६     | बा.०।३५          | सिं.दि.२।५८ | ७।२६।२१।४३               | २६।००    | ६।४८                 | ५।१२                  | २२         | २६         | १२         |
| ९     | शनि    | ३२।३४          | रा.७।५०        | उ.फ.७।१६             | दि.६।४२               | आ.२१।२६        | तै.१।३७          | कन्या       | ७।२७।२३।०२               | २५।५८    | ६।४८                 | ५।१२                  | २३         | २७         | १३         |
| १०    | रवि    | ३५।२४          | रा.८।५६        | हस्त.११।००           | दि.११।१३              | सौ.२०।३३       | व.३।५६           | क.रा.१२।११  | ७।२८।२४।२१               | २५।५६    | ६।४६                 | ५।११                  | २४         | २८         | १४         |
| ११    | सोम    | ३६।२५          | रा.१०।३६       | चि.१५।४७             | दि.१।०८               | शो.२०।३१       | बब.७।२५          | तुला        | ७।२६।२५।४०               | २५।५४    | ६।४६                 | ५।११                  | २५         | २९         | १५         |
| १२    | मंगल   | ४४।१४          | रा.१२।३१       | स्वा.२२।००           | दि.३।३७               | अ.२१।१३        | कौ.११।४६         | तुला        | ८।०।२६।५६                | २५।५३    | ६।४६                 | ५।११                  | २६         | १          | १६         |
| १३    | बुध    | ४६।३४          | रा.२।४०        | वि.२७।५२             | सं.५।५६               | सु.२२।१६       | गर.१६।५४         | तु.दि.११।२४ | ८।०१।२८।१७               | २५।५२    | ६।५०                 | ५।१०                  | २७         | २          | १७         |
| १४    | गुरु   | ५५।००          | रा.४।५०        | अनु.३४।१६            | रा.८।२२               | धृ.२३।४२       | वि.२२।१७         | वृश्चिक     | ८।०२।२६।३५               | २५।५१    | ६।५०                 | ५।१०                  | २८         | ३          | १८         |
| ३०    | शुक्र  | ६०।००          | अहोरात्र       | ज्ये.४०।४६           | रा.११।०८              | शू.२४।५५       | च.२७।३१          | वृ.रा.११।८  | ८।०३।३०।५३               | २५।५०    | ६।५०                 | ५।१०                  | २९         | ४          | १९         |
| ३०    | शनि    | ००।०३          | दि.६।५१        | मूल.४६।३०            | रा.१।२६               | गं.२५।४२       | ना.०।०३          | धनु         | ८।०४।३२।१६               | २५।५०    | ६।५०                 | ५।१०                  | ३०         | ५          | २०         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. शुक्र         | ७।२७।१५।२२       | ६।२८।४६         | ३।१।८।३६         | ६।१२।५१।२५        | १०।२८।५३।५५     | १०।२१।३४।१८      | ४३।०४    | १६।४१           | १८।२२           | २०।२७            | २२।४१           | १।२०               | ३।१४                | ५।२६               | ७।५१             | १०।१६           | १२।२३           | १४।०३            | १५।३२            |
| २. शनि           | ७।२७।५७।७६       | ६।२६।५३।२५      | ३।१।३।१३         | ७।१४।७।१          | १०।२८।५५।२७     | १०।२१।३१।७       | ४३।३     | १६।३६           | १८।१७           | २०।२२            | २२।३६           | १।१५               | ३।६                 | ५।२४               | ७।४५             | १०।१४           | १२।१८           | १३।५८            | १५।२७            |
| ३. रवि           | ७।२८।३८।५०       | ७।०।५८।४४       | ३।०।५७।५०        | ७।१५।२२।३७        | १०।२८।५६।५१     | १०।२१।२७।५६      | ४३।२     | १६।३१           | १८।१२           | २०।१७            | २२।३१           | १।१०               | ३।४                 | ५।१६               | ७।४०             | १०।६            | १२।१३           | १३।५३            | १५।२२            |
| ४. सोम           | ७।२६।२०।३४       | ७।२।४।३         | ३।०।५२।२८        | ७।१६।२८।१३        | १०।२८।५६।३०     | १०।२१।२४।४५      | ४३।१     | १६।२६           | १८।७            | २०।१२            | २२।२६           | १०।५               | ३।५६                | ५।३४               | ७।३६             | १०।४            | १२।८            | १३।४८            | १५।१७            |
| ५. मंगल          | ८।०।२।१८         | ७।३।६।२२        | ३।०।४७।६         | ७।१८।५३।४६        | १०।२६।०।०१      | १०।२१।२१।३४      | ४३।१     | १६।२१           | १८।२            | २०।७             | २२।२१           | १।००               | ३।४५                | ५।२६               | ७।३२             | १०।००           | १२।३            | १३।४३            | १५।१२            |
| ६. बुध           | ८।०।४४।२         | ७।४।१४।४१       | ३।०।४१।४४        | ७।२०।६।२५         | १०।२६।१।३२      | १०।२१।१८।३१      | ४३।००    | १६।१६           | १७।५७           | २०।२             | २२।१६           | २४।५५              | ३।४०                | ५।२४               | ७।२८             | १७।५४           | ११।५८           | १३।३७            | १५।७             |
| ७. गुरु          | ८।१।२५।४६        | ७।५।२०।००       | ३।०।३६।२२        | ७।२१।२५।००        | १०।२६।३।३       | १०।२१।१५।२०      | ४३।००    | १६।११           | १७।५२           | १६।५७            | २२।११           | २४।५०              | ३।३५                | ५।१६               | ७।२३             | १६।४७           | ११।५१           | १३।३१            | १५।००            |
| ८. शुक्र         | ८।०२।०७।३०       | ७।६।२५।१८       | ३।००।३१।००       | ७।२१।४०।३५        | १०।२६।४।४       | १०।२१।१२।०६      | ४३।००    | १६।६            | १७।४७           | १६।५२            | २२।६            | २४।४५              | ३।३०                | ५।१४               | ७।१६             | १७।४०           | ११।४६           | १३।२६            | १४।५५            |
| ९. शनि           | ८।२।५५।२१        | ७।७।४८।५        | ३।०।२४।४४        | ७।२२।५६।२५        | १०।२६।६।५०      | १०।२१।१२।६       | ४२।५६    | १६।१            | १७।४२           | १७।४७            | २२।१            | २४।४०              | ३।२५                | ५।६                | ७।१४             | ६।३२            | ११।४१           | १३।२१            | १४।५०            |
| १०. रवि          | ८।३।४३।१२        | ७।६।१०।५२       | ३।०।१८।२८        | ७।२४।२२।१५        | १०।२६।६।६       | १०।२१।८।५८       | ४२।५८    | १५।५६           | १७।३७           | १६।४२            | २१।५६           | २४।३५              | ३।२०                | ५।४                | ७।१०             | ६।२७            | ११।३६           | १३।१४            | १४।४३            |
| ११. सोम          | ८।४।३१।३         | ७।१०।३३।३६      | ३।०।१२।१२        | ७।२५।२८।५         | १०।२६।११।२२     | १०।२१।५।४७       | ४२।५७    | १५।५१           | १७।३२           | १६।३७            | २१।५१           | २४।३०              | ३।१५                | ४।५६               | ७।५              | ६।२२            | ११।३०           | १३।६             | १४।३८            |
| १२.मंगल          | ८।५।१८।५४        | ७।११।५६।२६      | ३।०।५।५६         | ७।२६।४३।५५        | १०।२६।१३।३८     | १०।२१।२।३६       | ४२।५६    | १५।४६           | १७।२७           | १६।३२            | २१।४६           | २४।२५              | ३।१०                | ४।५४               | ७।००             | ६।१७            | ११।२५           | १३।४             | १४।३३            |
| १३. बुध          | ८।६।६।४५         | ७।१३।१६।१२      | २।२६।५६।४०       | ७।२७।५६।४५        | १०।२६।५५।४      | १०।२०।५६।२५      | ४२।५५    | १५।४३           | १७।२२           | १६।२७            | २१।४१           | २४।२०              | ३।५                 | ४।४६               | ६।५५             | ६।१२            | ११।२०           | १२।५६            | १४।२८            |
| १४. गुरु         | ८।६।५४।३६        | ७।१४।४१।५८      | २।२६।५३।२४       | ७।२६।१५।३५        | १०।२६।१६।१०     | १०।२०।५६।१४      | ४२।५५    | १५।३७           | १७।१८           | १६।२३            | २१।३७           | २४।१६              | ३।१                 | ४।४५               | ६।५१             | ६।८             | ११।१६           | १२।५५            | १४।२४            |
| ३०. शुक्र        | ८।०७।४२।२६       | ७।१६।४।४४       | २।२६।४८।०८       | ७।१६।१५।२४        | १०।२६।२०।२५     | १०।२०।५३।४४      | ४२।५५    | १५।३२           | १७।१३           | १६।१८            | २१।३२           | २४।११              | २।५६                | ४।४०               | ६।४६             | ६।३             | ११।११           | १२।५०            | १४।१६            |
| ३०. शनि          | ८।०८।२६।४८       | ७।१७।३६।५४      | २६।४०।३६         | ८।१।४३।४४         | १०।२६।२३।२६     | १०।२७।४६।५२      | ४२।५५    | १५।२८           | १७।६            | १६।१४            | २१।२८           | २४।७               | २।५२                | ४।३६               | ६।४२             | ८।५६            | ११।७            | १२।४६            | १४।१५            |

पौष कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१६४७, सम्वत् २०८२, शुद्ध समयः ५ ता. तः अशुद्धः हेमन्त ऋतुः याम्यगोलः याम्यायनम्-पूर्वे कालः

दिनांकः ०५ दिसम्बर से २० दिसम्बर २०२५ ई०

पौषे कौशिकी स्नानं महापुण्यप्रदं-विवाहः द्विरागमनं दि. ११।२७ या. क्षीण शुक्रः-११।४३ शिववासः रा. ३।१२ या. सिद्धियोगः, अग्निवासः शुभयोगः ५२।३३ वृश्चिके बुधः ४८।५५ पूर्वाविनायात्रा नागरिक सुरक्षा दिवसः भ. १३।१५ उ. ४०।४६ या. द्विरागमनं प्रथमाद्वीय तृतीयायां पुनर्वसौ झंडा दिवसः अग्निवासः, सिद्धियोगः रा. ११।७ या. लम्बोदर ४ व्रतं श्रीगणेश ४ व्रतं, द्विरागमनम् पंचम्यां, पूर्वास्तः शुक्रः ११।४६, सर्वार्थसिद्धियोगः दि. ६।३० उ. मूले धनुषि कुजः-२३।८ गण्ड-५२।२७ उ. उत्तराविना यात्रा पुष्ये, शिववासः रा. ८।१२ या., अग्निवासः मृत्युयोगः रा. ८।१२ उ. भ. ३१।२३ उ. गण्ड ७।२७ या. अन्तरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवसः भ. ०।५६ या. विश्व बाल कोष दिवसः अग्निवासः अपूपाष्टमी पूर्वोत्तर यात्रा पूर्व फाल्गुन्यां अष्टम्यां, शिववासः रा. ७।४ या. अनवष्टका नवमी द. ति. ३२।३४ उ., अग्निवासः, मृत्युयोगः रा. ७।५० उ. भ. ३।५६ उ. ३५।२४ या. द. ति. २५।२४ या., ऊर्जा संरक्षण दिवसः, अग्निवासः, मृत्युयोगः रात्रि ८।५६ उ. सर्वार्थसिद्धियोगः दि. ११।१३ या. **सफला ११ व्रतं सर्वेषां**, मासान्तः शिववासः, मृत्युयोगः गोमयेन पारणं, सूतीस्नानं, मूले धनुषि रविः-१६।१७ मु. १५ फलं महर्हाः षडशीति सं. पु. दि. १२ उ., अग्निवासः शिववासः रा. १२।३१ या. भ. ४१।३४ उ. **प्रदोष-१३ व्रतं** मासादिः वक्रन्मिथुने गुरूः ३३।२२, मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः सं. ५।५६ उ. भ. २२।१७ या. **प्रदोष-१४ व्रतं**, अग्निवासः, मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः रा. ८।२२ या. पौषी अमावास्या पार्वणं, शुभवारान्विते दशै सुमिक्षं च प्रजासुखं/दशतारकारम्भः, शिववासः स्नानदानादिः गण्ड ३४।४५ उ. ४६।४५ या., शिववासः प्रा. ६।५१ या.

पौ. कृ. १ शु. व. ८।४०।६।१०  
अयनांशाः २२।५३।५५

२ चं.

१२

११

३

४

५

गु.

६

७

८

९

श.रा.

के.

पौ. कृ. ८ शु. व. ८।४०।६।१७  
अयनांशाः २२।५३।५७

२

१२

११

३

४

५

गु.

६

७

८

९

श.रा.

के.च.

पौ. कृ. ३० शु. व. ८।४०।६।२४  
अयनांशाः २२।५३।५६

२

१२

११

३

४

५

गु.

६

७

८

९

श.रा.

के.

फलभाग्भवेत् ॥२॥ ( दक्षस्मृति २।२७ ) जे ब्राह्मण संध्याक ज्ञान नै कयला, जे संध्या नै कयला, जे संध्या उपसना नै कयला ओ ब्राह्मण जीवित रहितो शूद्र कहवैत छथि आ मृत्यु पश्चात् कुत्तादि क योनि प्राप्त करैत छथि ॥१॥ संध्या विहीन ब्राह्मण अपवित्र होइत छथि हुनका कोनो पुण्यकर्म कयलाक फल नहि प्राप्त होइत छैनि। **संध्या-स्तुतिः- विप्रो वृक्षो मूलकान्यत्र संध्या वेदाः शाखा धर्मकर्माणि पत्रम्। तस्मान्मलं यलतो रक्षणीयं छिन्ने मूले नैव वृक्षो न** शाखा ॥ (देवीभा.११।१६।६)।

ब्राह्मणरूपी वृक्षक मूल संध्या अछि, चारो वेद शाखा, धर्म-कर्म पता अछि। तैं मूलक रक्षा यत्नस करवाक चाही। **स्वकाले सेविता संध्या नित्यं कामदुधा भवेत्। अकाले सेविता सा च संध्या वन्ध्या वधूरिव॥ ( मित्रकल्प )** समयपर कयल गेल संध्या इच्छानुसार फल दैत छैथि आ बिना समय कयल गेल संध्या वन्ध्या (वाझ) स्त्रीक समान होइत छथि। **प्रातः संध्यां सनक्षत्रां मध्याह्ने मध्यभास्कराम्। ससूर्या पश्चिमां संध्यां तिस्रः संध्या उपासते॥ ( देवीभा.११।१६।२-३ )।** प्रातःकालमे ताराके रहैत, मध्याह्नमे सूर्य आकाशके मध्यमे जखन रहत, सायंकालमें सूर्यास्तके पहिने ही एहिना तीनो संध्या करवाक चाही। **गृहस्थो ब्रह्मचारी च प्रणवाद्यमिमां जपेत्। अन्ते यः प्रणवं कुर्यान्नासौ सिद्धिवमाप्नुयात्॥** गृहस्थ तथा ब्रह्मचारी गायत्रीकें आदिमें ॐ क उच्चारण कय जप करी आ अन्तमें ॐ क उच्चारण नै करी, किया त अन्त मे उच्चारण सिद्धि नै मिलैत अछि। **गृहेषु तत्समा, संध्या गोष्ठे सतगुणा स्मृता। नद्यां शतगुणा प्रोक्ता** अनन्ता **शिवसंनिधौ॥ ( लघुशतातपस्मृ०११४ )** घरमें संध्या-वन्दन कयलासँ एक, गोस्थानमे सौ, नदी-किनारे लाख आ शिव के समीप कयला सँ अनन्त गुना फल मिलैत अछि।

**शकुनम्**-पौषादितो मासचतुष्टयेषु यस्यांतित्थौ तोयधरो हि दृश्यः। तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिःप्रवाच्या नियमेन विज्ञैः।

**दशतारकविचारः-** पौषेमूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति॥ एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्लपक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वा गर्भं वदेत्फलम्।

**गर्भपुष्टिविचारः-** वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः। तत्र पुष्टेगर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति।

**गोचरशान्यादिविचारः-** द्विजन्मनि पंचम- सप्त- मगाश्चतुराष्टक द्वादशधर्मयुताः। धनधान्यहिरण्य-विनाशकरा रविराहुशनैश्चर भूमिसुताः।

**कौशिकिस्नानमन्त्रः-** गाधिराजसुते देवि विश्वामित्र मुने श्वसः। ऋचिकभार्ये सत्यायै पापं मे हर कौशिकि।

पादशेषं पीतशेषं संध्याशेषं तथैव च। शुनो म



|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|----------------------------------------------------------------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|-----------------------------------------------------------------------------------------------|--|----|
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            | सन् १४३३ साल, शाके-१९४७, सम्वत् २०८२, अशुद्ध समयः हेमन्त ऋतु याम्यगोलः याम्यायनम्-पूर्वे कालः |  | ३१ |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            | दिनांकः २१ दिसम्बर २०२५ से ०३ जनवरी २०२६ ई०                                                   |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
| तिथयः                                                          | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |                                                                                               |  |    |
| १                                                              | रवि    | ४।२४           | दि.८।३६        | पू.षा.५१।२३          | रा.३।२३               | वृ.२५।५६       | बव.४।२४          | धनु         | ८।०५।३३।३९               | २५।५०    | ६।५०                 | ५।१०                  | १          | ६          | २१         |                                                                                               |  |    |
| २                                                              | सोम    | ७।४०           | दि.९।५४        | उ.षा.५५।१०           | रा.४।५४               | ध्रु.२५।१४     | कौ.७।४०          | घ.दि.९।४६   | ८।०६।३५।०२               | २५।५०    | ६।५०                 | ५।१०                  | २          | ७          | २२         |                                                                                               |  |    |
| ३                                                              | मंगल   | ९।५२           | दि.१०।४७       | श्र.५७।४१            | रा.शे.५।५४            | व्या.२३।४३     | गर.९।५२          | मकर         | ८।०७।३६।२५               | २५।५०    | ६।५०                 | ५।१०                  | ३          | ८          | २३         |                                                                                               |  |    |
| ४                                                              | बुध    | १०।४०          | दि.११।०६       | धनि.५८।५४            | रा.शे.६।२४            | ह.२१।०७        | वि.१०।४०         | म.सं.६।०९   | ८।०८।३७।४८               | २५।५०    | ६।५०                 | ५।१०                  | ४          | ९          | २४         |                                                                                               |  |    |
| ५                                                              | गुरु   | १०।१०          | दि.१०।५४       | शत.५८।५७             | रा.शे.६।२५            | व.१७।३४        | बा.१०।१०         | कुम्भ       | ८।०९।३९।११               | २५।५०    | ६।५०                 | ५।१०                  | ५          | १०         | २५         |                                                                                               |  |    |
| ६                                                              | शुक्र  | ८।२७           | दि.१०।१३       | पू.भा.५७।४८          | रा.शे.५।५७            | सि.१३।०१       | तै.८।२७          | कु.रा.१२।०४ | ८।१०।४०।३४               | २५।५०    | ६।५०                 | ५।१०                  | ६          | ११         | २६         |                                                                                               |  |    |
| ७                                                              | शनि    | ५।३९           | दि.९।०६        | उ.भा.५५।५०           | रा.शे.५।१०            | व्य.७।३९       | व.५।३९           | मीन         | ८।११।४२।००               | २५।५१    | ६।५०                 | ५।१०                  | ७          | १२         | २७         |                                                                                               |  |    |
| ८                                                              | रवि    | १।५४           | प्रा.७।३६      | रे.५३।०१             | रा.४।०२               | व.१।३०         | बव.१।५४          | मी.रा.४।०२  | ८।१२।४३।२६               | २५।५२    | ६।५०                 | ५।१०                  | ८          | १३         | २८         |                                                                                               |  |    |
| १०                                                             | सोम    | ५२।०४          | रा.३।३९        | अ.४९।३२              | रा.२।३८               | शि.४७।२४       | तै.२४।४१         | मेष         | ८।१३।४४।५१               | २५।५३    | ६।४९                 | ५।११                  | ९          | १४         | २९         |                                                                                               |  |    |
| ११                                                             | मंगल   | ४६।२६          | रा.१।२३        | भ.४५।३७              | रा.१।०४               | सि.३९।४४       | व.१९।१५          | मे.रा.६।३९  | ८।१४।४६।१६               | २५।५४    | ६।४९                 | ५।११                  | १०         | १५         | ३०         |                                                                                               |  |    |
| १२                                                             | बुध    | ४०।३५          | रा.११।०३       | कृ.४१।२७             | रा.११।२४              | सा.३१।५३       | बव.१३।३०         | वृष         | ८।१५।४७।४१               | २५।५६    | ६।४९                 | ५।११                  | ११         | १६         | ३१         |                                                                                               |  |    |
| १३                                                             | गुरु   | ३४।४१          | रा.८।४०        | रो.३७।१७             | रा.९।४३               | शुभ.२३।५७      | कौ.७।३८          | वृष         | ८।१६।४९।०६               | २५।५८    | ६।४९                 | ५।१२                  | १२         | १७         | १ ज.       |                                                                                               |  |    |
| १४                                                             | शुक्र  | २८।५९          | सं.६।२४        | मृ.३३।१८             | रा.८।०७               | शु.१६।०८       | गर.१।५०          | वृ.दि.८।५५  | ८।१७।५०।३१               | २६।००    | ६।४८                 | ५।१२                  | १३         | १८         | २          |                                                                                               |  |    |
| १५                                                             | शनि    | २३।३९          | दि.४।०४        | आ.२९।४३              | रा.६।४१               | ब्र.८।३५       | बव.२३।३९         | मिथुन       | ८।१८।५१।४७               | २६।०१    | ६।४८                 | ५।१२                  | १४         | १९         | ३          |                                                                                               |  |    |
| मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |
|                                                                |        |                |                |                      |                       |                |                  |             |                          |          |                      |                       |            |            |            |                                                                                               |  |    |



| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः  | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|--------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | रवि    | १८।५०          | दि.२।२०        | पुन.२६।४१            | सं.५।२८               | ऐं.१।२७        | कौ.१८।५०         | मि.दि.११।४६  | ८।१६।५३।२३               | २६।०२    | ६।४८                 | ५।१२                  | १५         | २०         | ४          |
| २     | सोम    | १५।०४          | दि.१२।४६       | पु.२४।३०             | दि.४।३५               | वि.४६।००       | गर.१५।०४         | कर्क         | ८।२०।५४।४८               | २६।०३    | ६।४७                 | ५।१३                  | १६         | २१         | ५          |
| ३     | मंगल   | ११।४६          | दि.११।२६       | श्ले.२३।०८           | दि.४।०२               | प्री.४३।५६     | वि.११।४६         | क.सं.४।०२    | ५।२१।५६।१३               | २६।०४    | ६।४७                 | ५।१३                  | १७         | २२         | ६          |
| ४     | बुध    | ६।४५           | दि.१०।४१       | मघा.२२।५३            | दि.३।५६               | आ.३६।४५        | बा.६।४५          | सिंह         | ८।२२।५७।३८               | २६।०५    | ६।४७                 | ५।१३                  | १८         | २३         | ७          |
| ५     | गुरु   | ८।५७           | दि.१०।२२       | पू.फ.२३।५०           | दि.४।१६               | सौ.३६।३४       | तै.८।५७          | सिं.रा.१०।३२ | ८।२३।५६।०३               | २६।०६    | ६।४७                 | ५।१३                  | १९         | २४         | ८          |
| ६     | शुक्र  | ६।२६           | दि.१०।३२       | उ.फ.२६।०१            | सं.५।१०               | शो.३४।२०       | व.६।२६           | कन्या        | ८।२५।००।२८               | २६।०८    | ६।४६                 | ५।१४                  | २०         | २५         | ९          |
| ७     | शनि    | ११।१८          | दि.११।१७       | ह.२६।३१              | सं.६।३४               | अ.३३।११        | बव.११।१८         | कन्या        | ८।२६।०१।५१               | २६।१०    | ६।४६                 | ५।१४                  | २१         | २६         | १०         |
| ८     | रवि    | १४।१४          | दि.१२।२८       | चि.३४।०४             | रा.८।२४               | सु.३२।५२       | कौ.१४।१४         | क.दि.७।२६    | ८।२७।०३।१४               | २६।१२    | ६।४६                 | ५।१४                  | २२         | २७         | ११         |
| ९     | सोम    | १८।२२          | दि.२।०६        | स्वा.३६।३६           | रा.१०।३७              | धृ.३३।३२       | गर.१८।२२         | तुला         | ८।२८।०४।३७               | २६।१४    | ६।४५                 | ५।१४                  | २३         | २८         | १२         |
| १०    | मंगल   | २३।१५          | दि.४।०३        | वि.४५।५३             | रा.१।०६               | शू.३४।२६       | वि.२३।१५         | तु.सं.६।२६   | ८।२६।०५।५१               | २६।१५    | ६।४५                 | ५।१४                  | २४         | २९         | १३         |
| ११    | बुध    | २६।३८          | स.५।२४         | अनु.५२।२६            | रा.३।४५               | गं.३५।४२       | बा.२८।३८         | वृश्चिक      | ६।००।०७।२१               | २६।१६    | ६।४५                 | ५।१४                  | २५         | १          | १४         |
| १२    | गुरु   | ३४।०४          | रा.८।२३        | ज्ये.५८।५५           | रा.६।१६               | वृ.३७।०२       | कौ.१।२१          | वृ.रा.६।१६   | ६।०१।०८।४३               | २६।१७    | ६।४५                 | ५।१४                  | २६         | २          | १५         |
| १३    | शुक्र  | ३६।०६          | रा.१०।२२       | मूल.६०।००            | अहोरात्र              | धृ.३८।००       | गर.६।३५          | धनु          | ६।०२।१०।०५               | २६।१८    | ६।४४                 | ५।१६                  | २७         | ३          | १६         |
| १४    | शनि    | ४३।२४          | रा.१२।०६       | मूल.४।५०             | दि.८।४०               | व्या.३८।२८     | वि.११।१५         | धनु          | ६।०३।११।२३               | २६।२०    | ६।४४                 | ५।१६                  | २८         | ४          | १७         |
| ३०    | रवि    | ४६।३५          | रा.१।२२        | पू.षा.६।५७           | दि.१०।४३              | ह.३८।०८        | च.१५।१०          | ध.दि.५।०७    | १।०४।१२।४१               | २६।२२    | ६।४४                 | ५।१६                  | २९         | ५          | १८         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. रवि           | ८।१६।४१।२७       | ८।१२।२८।१       | २।२७।४५।१७       | ८।२०।४५।२६        | ११।०।१७।५६      | १०।२०।०२।१७      | ४३।००    | १४।१०           | १६।१            | १८।१५            | २०।२०           | २२।५१              | १।४४                | ३।२७               | ५।३३             | ७।४६            | ६।५७            | ११।३७            | १३।०६            |
| २. सोम           | ८।२०।२७।५        | ८।१४।१३।१६      | २।२७।३७।२१       | ८।२२।०।३१         | ११।०।२२।१८      | १०।१६।५८।५६      | ४३।००    | १४।४            | १५।५५           | १७।५६            | २०।१४           | २२।५३              | १।३८                | ३।२१               | ५।२७             | ७।४३            | ६।५१            | ११।३१            | १३।००            |
| ३. मंगल          | ८।२१।१२।४३       | ८।१५।५८।२६      | २।२७।१६।२५       | ८।२३।१५।३३        | ११।०।२६।३७      | १०।१६।५५।४५      | ४३।०१    | १३।५८           | १५।४६           | १७।५३            | २०।८            | २३।४७              | १।३२                | ३।१५               | ५।२१             | ७।३७            | ६।४६            | ११।२५            | १२।५४            |
| ४. बुध           | ८।२१।८।२१        | ८।१७।४३।३६      | २।२७।२१।२६       | ८।२४।३०।३५        | ११।०।३०।५६      | १०।१६।५२।३४      | ४३।०२    | १३।५२           | १५।४३           | १७।४७            | २०।२            | २३।४१              | १।२६                | ३।६                | ५।१५             | ७।३१            | ६।४०            | ११।२१            | १२।४८            |
| ५. गुरु          | ८।२२।४३।५६       | ८।१६।२८।४६      | २।२७।१३।३३       | ८।२५।४५।३७        | ११।०।३५।१४      | १०।१६।४६।२३      | ४३।०३    | १३।४६           | १५।३७           | १७।४१            | १६।५६           | २३।३५              | १।२०                | ३।३                | ५।६              | ७।२५            | ६।३४            | ११।१५            | १२।४२            |
| ६. शुक्र         | ८।२३।२६।३६       | ८।२२।१४।५८      | २।२७।५।३७        | ८।२७।००।३६        | ११।०।३६।३२      | १०।१६।४६।२३      | ४३।०४    | १३।४०           | १५।३१           | १७।३५            | १६।५०           | २३।२६              | १।१४                | २।५७               | ५।३              | ७।१६            | ६।२८            | ११।०६            | १२।३६            |
| ७. शनि           | ८।२४।१५।३७       | ८।२३।००।५३      | २।२६।५७।१४       | ८।२८।१७।३०        | ११।०।४४।२२      | १०।१६।४३।०१      | ४३।०४    | १३।३४           | १५।२५           | १७।२६            | १६।४४           | २३।२३              | १।०८                | २।५१               | ४।५७             | ७।१३            | ६।२२            | ११।०३            | १२।३०            |
| ८. रवि           | ८।२५।१।३८        | ८।२४।४६।४८      | २।२६।४८।५१       | ८।२६।३४।२१        | ११।०।४६।११      | १०।१६।३६।५०      | ४३।०४    | १३।२८           | १५।१६           | १७।२३            | १६।३८           | २३।१७              | १।०२                | २।४५               | ४।५१             | ७।०७            | ६।१६            | १०।५७            | १२।२४            |
| ९. सोम           | ८।२५।६६।३६       | ८।२६।३२।४२      | २।२६।४०।२८       | ६।००।५१।१२        | ११।०।५४।००      | १०।१६।३६।३६      | ४३।०५    | १३।२२           | १५।१३           | १७।१७            | १६।३२           | २३।११              | ०।५६                | २।३६               | ४।४५             | ७।०१            | ६।१०            | १०।५१            | १२।१८            |
| १०.मंगल          | ८।२६।३५।३६       | ८।२८।१८।३६      | २।२६।३२।५        | ६।०२।८।०३         | ११।०।५८।४६      | १०।१६।३३।२८      | ४३।०६    | १३।१६           | १५।७            | १७।११            | १६।२६           | २३।५               | ०।५०                | २।३३               | ४।३६             | ६।५५            | ६।०४            | १०।४५            | १२।१२            |
| ११. बुध          | ८।२७।१५।३६       | ६।००।४।३०       | २।२६।२३।४२       | ६।०३।२४।५४        | ११।०१।३।३८      | १०।१६।३०।१७      | ४३।०७    | १३।१०           | १५।१            | १७।५६            | १६।२०           | २२।५६              | ०।६६                | २।२७               | ४।३३             | ६।४६            | ८।५८            | १०।३६            | १२।६             |
| १२. गुरु         | ८।२८।५।३६        | ६।०१।५०।२४      | २।२६।१५।२०       | ६।०४।४१।४५        | ११।०१।८।२७      | १०।१६।२७।०६      | ४३।०८    | १३।४            | १४।५५           | १६।५६            | १६।१४           | २२।५३              | ०।३८                | २।२१               | ४।२७             | ६।४३            | ८।५२            | १०।३३            | १२।००            |
| १३. शुक्र        | ८।२६।५१।३६       | ६।०३।३६।१८      | २।२६।०४।१६       | ६।०५।५८।३६        | ११।०१।१३।१६     | १०।१६।२३।५६      | ४३।०९    | १२।५८           | १४।४६           | १६।५३            | १६।०८           | २२।४७              | ०।३२                | २।१५               | ४।२१             | ६।३७            | ८।४६            | १०।२७            | ११।५४            |
| १५. शनि          | ८।२६।३७।५४       | ६।०५।२०।६       | २।२५।५७।३        | ६।०७।१४।२६        | ११।०१।१८।३८     | १०।१६।२०।४४      | ४३।१०    | १२।५२           | १४।४३           | १६।४७            | १६।२            | २२।४१              | ०।२६                | २।०६               | ४।१५             | ६।३१            | ८।४०            | १०।२१            | ११।४८            |
| ३०. रवि          | ६।०।२४।०६        | ६।०७।४।००       | २।२५।४६।५०       | ६।०८।३०।१६        | ११।०१।२४।००     | १०।१६।१७।३३      | ४३।११    | १२।४६           | १४।३७           | १६।४१            | १८।५६           | २२।३५              | ०।२०                | २।०३               | ४।६              | ६।२५            | ८।३६            | १०।१५            | ११।४२            |

माघ कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४७, सम्वत् २०८२, अशुद्ध समयः, हेमन्तर्तुः १४ ता. ततो शिशिरर्तुः याम्यगोलः, याम्यायनम् ता. १४ तः-सौम्यायनम् पूर्वोत्तरः

दिनांकः ३ जनवरी से १८ जनवरी २०२६ ई०

वैधृति योगः ५३।२६ माघेकमलास्नानं पुण्यप्रदं-माघे मूलकं त्यजेत्, द०ति० १८।५० उ०, शिववासः दि. २।२० या०, अग्निवास दि. २।२० उ०, मृत्युयोगः दि. २।२० या. रविपुष्ययोग च सर्वार्थसिद्धियोगः सं. ५।२८ उ०। द०ति० १५।०४ यावत्, पूर्वा विना यात्रा तृतीयायां पुष्ये, अग्निवासः दि. १२।४६ या०, मृत्युयोगः दि. १२।४६ या०, सर्वार्थसिद्धियोग दि. ४।३५ या०। श्री गणेश-४ व्रतं गंड-१२।६ उ०, गंड-२६।६ या. (३-४) एकोदिष्टं, शिववासः दि. ११।२६ उ० अग्निवासः दि. ११।२६ उ०, सिद्धयोगः दि. ११।२६ या०, ततो राजप्रदयोगः। पूर्वोत्तरयात्रा पूर्व फाल्गुण्यां, शिववासः, अग्निवासः दि. १०।४१ या०। पूर्वोत्तरयात्रा पूर्व फाल्गुण्यां, शिववासः, दि. १०।२२ या० अग्निवासः दि. १०।२२ उ०, सिद्धियोगः दि. १०।२२ या०। भ. ६।२७ उ० ४०।२३ या० प्रवासी भारतीय दिवसः अग्निवासः दि. १०।३२ या०, सिद्धियोगः दि. १०।३२ या०, ततो मृत्युयोगः। रामानन्दाचार्य जयन्ती, अस्टकाष्टमी दक्षिणयात्रा (८) एकोदिष्टं, विश्व हिन्दी दिवसः, विश्व हास्य दिवसः, शिववासः दि. ११।२७ उ० अग्निवास दि. ११।१७ उ०।

**उत्तराषाढे रविः - २०।३७** मकरे शुक्रः - ५६।५४ अन्वष्टका श्राद्धम्, पूर्व दक्षिण यात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्राष्टम्यां पश्चिम दक्षिण यात्रा-दशम्यां स्वाव्यां भ. ५०।४८ उ०, सिद्धियोगः❖ राष्ट्रीय युवा दिवसः, स्वामी विवेकानन्द जयन्ती, मीने शनिः ४३।४२, अग्निवासः मासान्तः लोहरी-पंजाब, भ० २३।१५ या० शिववासः दि. ४।३ उ०, मृत्युयोगः दि. ४।३ उ०।

**षटतिला ११ व्रतं सर्वेषां**-मकरे रविः-३६।१४ मु. ३० फलसाम्यं सोम्यायन पु. कालः दि.घं. १२ उ० **प्रयागे कल्पवासारम्भ्यः** (१४-१-०२६-१३-२-०२६) सिद्धियोगः सं. ५।२४ उ०, सर्वार्थ सिद्धियोगः, शिववासः, अग्निवास। गोदुग्धेनपाराणं, मासादिः, पोंगल, द.ति. ३४।४ या० गं० ५२।५४ उ०, थलसेना दिवसः, शिववासः रा. ८।२३ या०। भ० ३६।६ उ० **प्रदोष-१३ व्रतं** गंड-७।५४ या०, भ० ३६।६ उ० पूर्वोत्तर यात्रा अग्निवास। भ० ११।१५ या० **प्रदोष-१४ व्रतं, नरकनिवारण-१४ व्रतं** प्रदोषे शिवार्चनं पूर्वोत्तर यात्रा चतुर्दश्यां, सिद्धियोगः रा. १२।६ या०। माघी अमावस्या स्नान दानादिः पार्वणं **मौनी-३०** अशुभ वारान्विते दर्शदुर्भिक्षं च प्रजाभयम् मकरे कुजः ११।५८ अग्निवास, शिववासः रा० १।२२ या०

मा. कृ. ६ शु. व. ८।४०।६।४५  
अयनांशाः २२।५४।०

३ गु.  
५ के.

२  
४  
७  
६ चं.

१२ श.  
१० रा.  
६ सू.मं.  
८ बु.शु.

मा. कृ. १३ शु. व. ८।४०।६।५२  
अयनांशाः २२।५४।१

३ गु.  
५ के.

२  
४  
७  
६

१२ श.  
१० रा.  
६ सू.बु.  
८ चं.मं.

**विविधविषयाः माघे प्रातः स्नानफलं**-यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताश्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् सवर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ॥

मकरार्के **प्रातःस्नानमन्त्रः-** मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दच्युत माधव। प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव॥ दुःखदारिद्रनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्य माद्ये पापविनाशनम्॥

**मघो कुत्रापि स्नानफलम्-** स्वर्गलोके चिरं वासो मनसि वर्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे॥

**चतुर्थ्या गणेशोत्पत्तिः-** सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमंगलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः॥ तत्र गणेशं यथोपचारैः संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्।

**चतुर्दश्यां नरकनिवारण चतुर्दशीव्रतं-** चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः॥ अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा॥







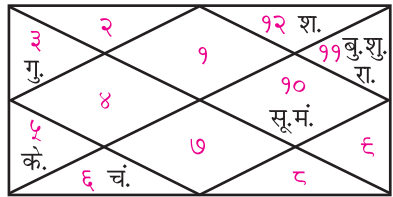
| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | सोम    | ५०।२३          | रा.२।४४        | श्ले.४३।०५           | रा.११।४९              | आ.४।०१         | बा.२१।५३         | क.रा.११।४९  | ६।११।३०।३३               | २७।०६    | ६।३५                 | ५।२५                  | १४         | २०         | २          |
| २     | मंगल   | ४८।२६          | रा.१।५६        | मघा.४२।३४            | रा.११।३६              | शो.५४।१५       | तै.१२।२४         | सिंह        | ६।२०।३१।३६               | २७।१०    | ६।३४                 | ५।२६                  | १५         | २१         | ३          |
| ३     | बुध    | ४७।४३          | रा.१।३५        | पू.फ.४३।१५           | रा.११।५१              | अ.५०।४८        | व.१८।४           | सिं.रा.६।०३ | ६।२१।३२।३९               | २७।१४    | ६।३३                 | ५।२७                  | १६         | २२         | ४          |
| ४     | गुरु   | ४८।१९          | रा.१।५३        | उ.फ.४५।१२            | रा.१२।३८              | सु.४८।१९       | बव.१८।०१         | कन्या       | ६।२२।३३।४२               | २७।१७    | ६।३३                 | ५।२७                  | १७         | २३         | ५          |
| ५     | शुक्र  | ५०।१५          | रा.२।३८        | हस्त.४८।२४           | रा.१।५४               | धृ.४६।५४       | कौ.१९।१७         | कन्या       | ६।२३।३४।४५               | २७।२०    | ६।३२                 | ५।२८                  | १८         | २४         | ६          |
| ६     | शनि    | ५३।१६          | रा.३।५०        | चित्रा.५२।४२         | रा.३।३७               | शू.४६।१७       | गर.२१।४६         | क.दि.२।४५   | ६।२४।३५।३९               | २७।१२    | ६।३२                 | ५।२९                  | १९         | २५         | ७          |
| ७     | रवि    | ५७।२७          | रा.५।३०        | स्वा.५८।०७           | रा.५।४६               | गं.४६।३४       | वि.२५।२१         | तुला        | ६।२५।३६।३३               | २७।२६    | ६।३१                 | ५।२९                  | २०         | २६         | ८          |
| ८     | सोम    | ६०।००          | अहोरात्र       | वि.६०।००             | अहोरात्र              | वृ.४७।२९       | बा.२९।५४         | तु.रा.१।३६  | ६।२६।३७।२७               | २७।२९    | ६।३०                 | ५।३०                  | २१         | २७         | ९          |
| ८     | मंगल   | २।२२           | दि.७।२७        | वि.४।१६              | दि.८।१२               | ध्रु.४८।४८     | कौ.२।२२          | वृश्चिक     | ६।२७।३८।२०               | २७।३२    | ६।३०                 | ५।३०                  | २२         | २८         | १०         |
| ९     | बुध    | ७।४४           | दि.६।३५        | अनु.१०।४९            | दि.१०।४९              | व्या.५०।०९     | गर.७।४४          | वृश्चिक     | ६।२८।३९।१३               | २७।३५    | ६।२९                 | ५।३१                  | २३         | २९         | ११         |
| १०    | गुरु   | १३।०८          | दि.११।४३       | ज्ये.१७।२०           | दि.१।२४               | ह.५१।२०        | वि.१३।०८         | वृ.दि.१।२४  | ६।२९।४०।०६               | २७।३८    | ६।२८                 | ५।३२                  | २४         | ३०         | १२         |
| ११    | शुक्र  | १८।०६          | दि.१।४२        | मूल.२३।२४            | दि.३।५०               | व.५२।०४        | बा.१८।०६         | धनु         | १०।००।४०।५९              | २७।४०    | ६।२८                 | ५।३२                  | २५         | १          | १३         |
| १२    | शनि    | २२।१५          | दि.३।२१        | पूषा.२८।४८           | दि.५।५८               | सि.५२।०७       | तै.२२।१५         | ध.रा.१२।२४  | १०।०१।४२।२२              | २७।४४    | ६।२७                 | ५।३३                  | २६         | २          | १४         |
| १३    | रवि    | २५।२०          | दि.४।३४        | उ.षा.३३।०२           | रा.७।३९               | व्य.५१।१४      | व.२५।२०          | मकर         | १०।०२।४२।२२              | २७।४८    | ६।२६                 | ५।३४                  | २७         | ३          | १५         |
| १४    | सोम    | २७।१९          | दि.५।२२        | श्रव.३६।११           | रा.८।५४               | व.४९।२६        | श.२७।१९          | मकर         | १०।०३।४३।०३              | २७।५२    | ६।२६                 | ५।३४                  | २८         | ४          | १६         |
| ३०    | मंगल   | २७।५६          | दि.५।३५        | धनि.३८।०३            | रा.९।३८               | प.४६।३६        | ना.२७।५६         | म.दि.६।१६   | १०।०४।४३।४४              | २७।५५    | ६।२५                 | ५।३५                  | २९         | ५          | १७         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

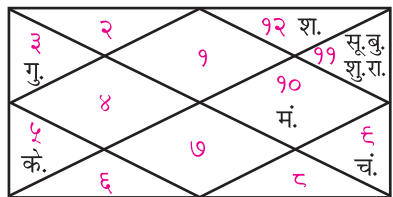
| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. सोम           | ६।१२।०३।५४       | १०।१।४१।३७      | २।२३।५६।५१       | ६।२७।२६।१०        | ११।३।०।१५       | १०।१८।२९।४८      | ४३।३३    | ११।१८           | १३।११           | १५।१३            | १७।२८           | २०।००              | २२।४२               | ००।३५              | २।४१             | ४।५७            | ७।९             | ८।४८             | १०।१४            |
| २. मंगल          | ६।१२।४६।४३       | १०।३।१०।५५      | २।२३।५२।५७       | ६।२८।४१।५०        | ११।३।६।३        | १०।१८।२६।३७      | ४३।३५    | ११।१५           | १३।८            | १५।१०            | १७।२५           | २०।५७              | २२।३९               | ००।३२              | २।३८             | ४।५४            | ७।६             | ८।४५             | १०।११            |
| ३. बुध           | ६।१३।३५।३२       | १०।४।४०।१३      | २।२३।४६।३        | ६।२९।५७।२९        | ११।३।११।५१      | १०।१८।२३।२६      | ४३।३७    | ११।१२           | १३।५            | १५।७             | १७।२२           | २०।५४              | २२।३६               | ००।२९              | २।३५             | ४।५१            | ७।३             | ८।४२             | १०।८             |
| ४. गुरु          | ६।१४।२१।२१       | १०।६।६।३१       | २।२३।३९।९        | १०।१।१।३८         | १७।३।१७।३८      | १०।१८।२०।१५      | ४३।३९    | ११।९            | १३।२            | १५।४             | १७।१९           | २०।५१              | २२।३३               | ००।२६              | २।३२             | ४।४८            | ७।००            | ८।३९             | १०।५             |
| ५. शुक्र         | ६।५।०७।१०        | १०।७।३८।४९      | २।२३।३२।२५       | १०।२।२६।४७        | ११।३।२३।२५      | १०।१८।१७।४५      | ४३।४०    | ११।६            | १२।५९           | १५।१             | १७।१६           | २०।४८              | २२।३०               | ००।२३              | २।२९             | ४।४५            | ६।५७            | ८।३६             | १०।२             |
| ६. शनि           | ६।१५।५१।१७       | १०।८।५२।३८      | २।२३।२६।११       | १०।३।४४।१२        | ११।३।३०।५२      | १०।१८।१३।५३      | ४३।४२    | ११।३            | १२।५६           | १४।५८            | १७।१३           | २०।४५              | २२।२७               | ००।२०              | २।२६             | ४।४२            | ६।५४            | ८।३३             | ६।५९             |
| ७. रवि           | ६।१६।३५।२४       | १०।१०।६।२७      | २।२३।२०।७        | १०।४।५६।३७        | ११।३।३८।१८      | १०।१८।१०।४८      | ४३।४४    | ११।००           | १२।५३           | १४।५५            | १७।१०           | २०।४२              | २२।२४               | ००।१७              | २।२३             | ४।३९            | ६।५१            | ८।३०             | ६।५६             |
| ८. सोम           | ६।१७।१९।३१       | १०।११।२०।१६     | २।२३।१४।४        | १०।६।१५।२         | ११।३।४५।४४      | १०।१८।७।३१       | ४३।४६    | १०।५७           | १२।५०           | १४।५२            | १७।७            | २०।३९              | २२।२१               | ००।१४              | २।२०             | ४।३६            | ६।४८            | ८।२७             | ६।५३             |
| ८. मंगल          | ६।१८।३।३८        | १०।१२।२४।५      | २।२३।८।१         | १०।७।३०।२७        | ११।३।५३।१०      | १०।१८।४।०        | ४३।४७    | १०।४            | १२।४७           | १४।४९            | १७।४            | २०।३६              | २२।१८               | ००।११              | २।१७             | ४।३३            | ६।४५            | ८।२४             | ६।५०             |
| ९. बुध           | ६।१८।४७।४५       | १०।१३।४७।५४     | २।२३।१।५८        | १०।८।४५।५२        | ११।४।००।३६      | १०।१८।१।९        | ४३।४८    | १०।५१           | १२।४४           | १४।४६            | १७।०१           | २०।३३              | २२।१५               | ००।८               | २।१४             | ४।३०            | ६।४२            | ८।२१             | ६।४७             |
| १०. गुरु         | ६।१९।३१।५२       | १०।१५।०१।४३     | २।२३।५५।५५       | १०।१०।१।१७        | ११।४।८।२        | १०।१७।५०।५८      | ४३।४९    | १०।४८           | १२।४१           | १४।४३            | १६।५८           | २०।३०              | २२।१२               | ००।५               | २।११             | ४।४७            | ६।४०            | ८।१८             | ६।४४             |
| ११. शुक्र        | ६।२०।१५।५९       | १०।१६।१५।३५     | २।२३।४६।५२       | १०।११।१६।४१       | ११।४।१५।२८      | १०।१७।५४।५८      | ४३।५०    | १०।४४           | १२।३७           | १४।३९            | १६।५४           | २०।२६              | २२।८                | ००।१               | २।७              | ४।२३            | ६।३६            | ८।१४             | ६।४०             |
| १२. शनि          | ६।२१।५।४१        | १०।१७।३।३३      | २।२३।४५।००       | १०।१२।३१।५२       | ११।४।२३।११      | १०।१७।५१।३६      | ४३।५२    | १०।४०           | १२।३३           | १४।३५            | १६।५०           | २०।२२              | २२।४                | २३।५७              | २।३              | ४।१९            | ६।३२            | ८।१०             | ६।३६             |
| १३. रवि          | ६।२१।५५।२३       | १०।१७।५१।३९     | २।२३।४०।८        | १०।१३।४७।३        | ११।४।३०।५३      | १०।१७।४८।२५      | ४३।५४    | १०।३६           | १२।२९           | १४।३१            | १६।४६           | २०।१८              | २२।०                | २३।५३              | १।५९             | ४।१५            | ६।२८            | ८।६              | ६।३१             |
| १४. सोम          | ६।२२।४५।५        | १०।१८।३९।२९     | २।२३।३५।१६       | १०।१५।२।१४        | ११।४।३८।३५      | १०।१७।४५।१४      | ४३।५६    | १०।३२           | १२।२५           | १४।२७            | १६।४२           | २०।१४              | २१।५६               | २३।४९              | १।५५             | ४।११            | ६।२४            | ८।२              | ६।३०             |
| ३०.मंगल          | ६।२३।२४।२९       | १०।१९।२७।२७     | २।२३।३०।२४       | १०।१६।१७।२५       | ११।४।४६।१७      | १०।१७।४२।३       | ४३।५८    | १०।२८           | १२।२१           | १४।२३            | १६।३८           | २०।१०              | २१।५२               | २३।४५              | १।५१             | ४।७             | ६।२०            | ७।५८             | ६।२५             |

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

फा. कृ. ५ शु. व. ८।४०।१०।१३  
अयनांशाः २२।५४।४



फा. कृ. ११ शु. व. ८।४०।१०।२०  
अयनांशाः २२।५४।५



### फाल्गुन कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४७, सम्वत् २०८२, शुद्धसमयः, शिशिरर्तुः याम्यगोलः, सौम्यायनम् पूर्वकालः ता. १३ तः दक्षिणे कालः

दिनांकः २ फरवरी से १७ फरवरी २०२६ ई०

सौ. योगः ५४।४२, फाल्गुने वाङ्मती स्नानं पुष्यप्रदं, गं० ३२।७ उ० ४७।७, सूर्यवेधात् मघायां विवाहो नैवं, विश्व आर्द्र भूमि दिवसः अग्निवासः, शिववासः रा० २।४४ या०।

सर्वार्थ सिद्धियोगः, पूर्वयात्रा पूर्वफाल्गुन्यां।

भ० १८।४ उ० ४७।४३ या०, कुम्भे शुक्रः- ४५।२५, विश्व कैसर दिवसः, अग्निवासः, मृत्युयोगः, दीक्षाग्रहणं दिं. १।४६ उ. - रा. १।३५ या.

श्री गणेश ४ व्रतं, पंचम्यां विवाहः पूर्वयात्रा पंचम्यां, शिववासः, मृत्युयोगः

धनिष्ठ्यायां रविः-३१।३३, मुण्डनं, विवाहः हस्ते, शनिवेधात् चित्रायां विवाहे नैवं, पूर्व-दक्षिणं यात्रा, शिववासः रा० २।३८ या०।

भ० ५३।१६ उ०, दक्षिणयात्रा, कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिम-दक्षिण यात्रा।

भ० २५।२१ या०, श्री भानु सप्तमी, सूतीस्नानं, विवाहः, राहुवेधात् विवाहो मध्यमः स्वात्यां, दक्षिण यात्रा च. अग्निवासः, दीक्षाग्रहणं दि. ४।३९ उ.

शाकाराष्टकाष्टमी, श्री जानकी जयन्ती, शिववासः।

अन्ववस्टका श्राद्धम्, त्रयो जन्म दिन कृत्यं, पश्चिम यात्रा अनुराधायां, अग्निवासः, सिद्धियोगः दि. ७।२७ या० ततो राजप्रदयोगः।

अन्ववस्टका नवमी, पश्चिम यात्रा दशम्यां, (११) एकोदिष्टं, सर्वार्थ सिद्धियोगः दि. १०।४९ या०, दीक्षाग्रहणं दि. ६।३५ उ.

मासान्तः, दयानन्द सरस्वती जयन्ती, गं० ११।१७ उ० २६।१९ या०, (११) एकोदिष्टं, गुलाब दिवसः, सिद्धियोगः दि. ११।४३ या० अग्निवासः, शिववासः ११।४३ उ०।

विजया ११ व्रतं सर्वेषां, कुम्भे रविः-३।५८, मु. ३० फलं साम्यं विष्णुपदी सं० पुण्य काल दि. १२ या०, सिद्धियोगः दि. १।४२ या०, दीक्षाग्रहणं

गो-दधि पारणं, प्रदोष-१३ व्रतं, मासादिः, (१२) एकोदिष्टं, अग्निवासः, शिववासः दि. ३।२१ या०।

प्रदोष-१४ व्रतं, महाशिवरात्रि व्रतं, चतुर्दशलङ्ग पूजा, बैद्यनाथ जयन्ती, सूतीस्नानं, विवाहः-सिद्धियोगः दि. ४।३४ या० अग्निवासः, दि. ४।३४ उ०, त्रयोदश्यां

शिवरात्रि व्रत पारणं भदवारम्भः रा० ८।५४ उ०, सोमवती अमावस्या दिनान्ते ५।२२ उपरि, ५।३३ या०, अग्निवासः सं० ५।२२ या०, शिववासः सं० ५।२२ उ०, सर्वार्थ सिद्धियोगः रा० ५।५४ या०।

फाल्गुनी अमावस्या, स्नानदानादिः, पार्वणं, अमायां च यदा वारोम वेद् भूमि सुतस्य वै। गङ्गायां यदिलभ्यते कोटि सूर्य ग्रहैः समा।। गो सहष्मिका, मृत्युयोगः सं० ५।३५ उ०, शिववास सं० ५।३५ या०।

विविधविषयाः-माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां- शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च ब्रह्माद्रिखण्डे- माघफाल्गुनयोर्मध्ये

कृष्णा या च चतुर्दशी। दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता।।

तथा च- उपवांस करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम्। यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः।। वर्षे वर्षे महादेवि

नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत्। अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि।। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम्।

गंगासागरसंगमस्नानमन्त्रः- त्वं देव सरितां नाथ त्वं देवि सरितां वरे। उभयोः संगमे स्नात्वा मुञ्चामि दुरितानि वै।।

समुद्रस्नानमन्त्रः- त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन। प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः।। अमृतस्यारणिस्त्वं

हि देवयोनिरपांपते। वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते।।

गंगास्नानमन्त्रः- ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे स्नानमाचर्यते मथा। त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भवा।।

गंगामाहात्म्यं विष्णुपुराणे- गंगा गंगेति यन्नास योजनानां शतैरपि। स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम्।।

पुनश्च- इदं हि गाङ्गं त्यजतामिहाङ्ग पुनर्न चाङ्ग यदि वापि चाङ्गम्। याने विहङ्ग। शयने भुजङ्ग करे रथाङ्ग

चरणेऽपि गाङ्गम्।।







| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः  | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|--------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | बुध    | २५।३७          | दि.४।२६        | पू.फ.३।०७            | दि.७।२६               | धृ.६।४०        | कौ.२५।३७         | सि.दि.१।३६   | १०।१६।५०।३२              | २८।५२    | ६।१४                 | ५।४६                  | १५         | २०         | ४          |
| २     | गुरु   | २६।११          | दि.४।४०        | उ.फ.४।४६             | दि.८।०८               | शू.३।५६        | गर.२६।११         | कन्या        | १०।२०।५०।४८              | २८।५६    | ६।१२                 | ५।४८                  | १६         | २१         | ५          |
| ३     | शुक्र  | २८।११          | दि.५।२८        | ह.७।४४               | दि.९।१८               | गं.२।१४        | वि.२८।११         | क.रा.१०।०६   | १०।२१।५१।०४              | २९।००    | ६।१२                 | ५।४८                  | १७         | २२         | ६          |
| ४     | शनि    | ३१।१२          | सं.६।४०        | चि.११।४८             | दि.१०।५४              | वृ.१।२५        | बा.३१।१२         | तुला         | १०।२२।५१।०६              | २९।०४    | ६।११                 | ५।४९                  | १८         | २३         | ७          |
| ५     | रवि    | ३५।२३          | रा.८।१६        | स्वा.१७।०१           | दि.१२।५८              | ध्रु.१।३०      | कौ.३।१७          | तुला         | १०।२२।५१।०८              | २९।०८    | ६।१०                 | ५।५०                  | १९         | २४         | ८          |
| ६     | सोम    | ४०।१७          | रा.१०।१७       | वि.२३।०२             | दि.३।२३               | व्या.१।३०      | गर.७।५०          | तु.दि.८।४७   | १०।२४।५२।२०              | २९।१२    | ६।१०                 | ५।५०                  | २०         | २५         | ९          |
| ७     | मंगल   | ४५।३६          | रा.१२।२३       | अनु.२९।३१            | दि.५।५७               | ह.३।३४         | वि.१२।५६         | वृश्चिक      | १०।२५।५१।१२              | २९।१६    | ६।०९                 | ५।५१                  | २१         | २६         | १०         |
| ८     | बुध    | ५०।५१          | रा.२।२८        | ज्ये.३५।५५           | रा.८।३०               | व.५।०४         | बा.१८।१३         | वृ.रा.८।३०   | १०।२६।५१।१४              | २९।२०    | ६।०८                 | ५।५२                  | २२         | २७         | ११         |
| ९     | गुरु   | ५५।४०          | रा.४।२३        | मूल.४२।२०            | रा.११।०३              | सि.७।२८        | तै.२३।१५         | धनु          | १०।२७।५१।१६              | २९।२४    | ६।०७                 | ५।५३                  | २३         | २८         | १२         |
| १०    | शुक्र  | ५९।४४          | रा.६।००        | पू.षा.४७।५१          | रा.१।१४               | व्य.७।२४       | व.२७।४२          | धनु          | १०।२८।५१।१८              | २९।२८    | ६।०६                 | ५।५४                  | २४         | २९         | १३         |
| ११    | शनि    | ६०।००          | अहोरात्र       | उ.षा.५२।२३           | रा.३।०३               | व.७।४५         | बव.३१।११         | ध.दि.७।४२    | १०।२९।५१।०५              | २९।३२    | ६।०६                 | ५।५४                  | २५         | ३०         | १४         |
| ११    | रवि    | २।३८           | दि.७।०८        | श्र.५५।४८            | रा.४।२४               | प.७।११         | बा.२।३८          | मकर          | ११।००।५०।५२              | २९।३६    | ६।०५                 | ५।५५                  | २६         | १          | १५         |
| १२    | सोम    | ४।२७           | दि.७।५१        | धनि५७।५७             | रा.५।१५               | शि.५।४७        | तै४।२७           | म.दि.४।४९    | ११।०१।५०।३९              | २९।४०    | ६।०४                 | ५।५६                  | २७         | २          | १६         |
| १३    | मंगल   | ४।५४           | दि.८।४१        | शत५८।४७              | रा.५।३४               | सि.३।२०        | व.४।५४           | कुंभ         | ११।०२।५०।२६              | २९।४४    | ६।०३                 | ५।५७                  | २८         | ३          | १७         |
| १४    | बुध    | ४।०४           | दि.७।४१        | पू.भा.५८।२९          | रा.५।२७               | शुभ५५।३५       | श.४।०४           | कुं.रा.११।२८ | ११।०३।५०।२३              | २९।४८    | ६।०३                 | ५।५७                  | २९         | ४          | १८         |
| ३०    | गुरु   | २।०२           | प्रा.६।५१      | उ.भा.५७।०२           | रा.४।५१               | शु.५०।०९       | ना.२।०२          | मीन          | ११।०८।४९।५९              | २९।५२    | ६।०२                 | ५।५८                  | ३०         | ५          | १९         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. बुध           | १०।५।३०।५३       | १०।२०।५७।८      | २।२१।३७।५२       | ११।५।०२।४०        | ११।६।२९।४८      | १०।१६।५६।१८      | ४४।२६    | ९।५६            | ११।३०           | १३।३२            | १५।४९           | १८।८               | २०।३३               | २२।४८              | १।७              | ३।२४            | ५।२६            | ७।६              | ८।३३             |
| २. गुरु          | १०।६।१८।१०       | १०।२०।३२।५७     | २।२१।३५।३०       | ११।६।१७।२६        | ११।६।३६।२५      | १०।१६।५३।७       | ४४।२८    | ९।४५            | ११।२५           | १३।२७            | १५।४४           | १८।३               | २०।२८               | २२।४३              | १।२              | ३।१९            | ५।२१            | ७।१              | ८।२७             |
| ३. शुक्र         | १०।०७।०५।२७      | १०।१९।०८।४६     | २।२१।३३।०८       | ११।०७।३२।१२       | ११।०६।४३।८      | १०।१६।४९।५७      | ४४।३०    | ९।४०            | ११।१०           | १३।२२            | १५।३९           | १७।५८              | २०।२३               | २२।३८              | ००।४७            | ३।१४            | ५।१६            | ६।५६             | ८।२२             |
| ४. शनि           | १०।७।५२।४०       | १०।१८।२३।११     | २।२१।३२।०७       | ११।८।४६।२         | ११।६।५१।९       | १०।१६।४६।४५      | ४४।३२    | ९।३५            | ११।१५           | १३।१७            | १५।३५           | १७।५३              | २०।१८               | २२।३३              | ००।४२            | ३।९             | ५।११            | ६।५१             | ८।१७             |
| ५. रवि           | १०।८।३९।५३       | १०।१७।३७।३६     | २।२१।३१।६        | ११।१०।०१।३२       | ११।६।५९।१०      | १०।१६।४३।३४      | ४४।३४    | ९।३०            | ११।२०           | १३।१२            | १५।३०           | १७।४८              | २०।१३               | २२।२८              | ००।३७            | ३।४             | ५।६             | ६।४६             | ८।१२             |
| ६. सोम           | १०।९।२७।०६       | १०।१६।५२।०९     | २।२१।३०।५        | ११।११।१६।१२       | ११।७।७।१०       | १०।१६।४०।२३      | ४४।३६    | ९।२५            | ११।५            | १३।७             | १५।२५           | १७।४३              | २०।८                | २२।२३              | ००।३२            | ३।००            | ५।१             | ६।४१             | ८।७              |
| ७. मंगल          | १०।१०।१४।१८      | १०।१६।६।२६      | २।२१।२९।४        | ११।१२।३०।५२       | ११।७।१५।१०      | १०।१६।३७।१२      | ४४।३८    | ९।२०            | ११।००           | १३।२             | १५।२०           | १७।३८              | २०।३                | २२।१८              | ००।२७            | २।५९            | ४।५६            | ६।३६             | ८।२              |
| ८. बुध           | १०।११।०१।३०      | १०।१५।२०।५२     | २।२१।२८।३        | ११।१३।४५।३२       | ११।७।२३।१०      | १०।१६।३४।१       | ४४।४०    | ९।१५            | १०।५५           | १२।५७            | १५।१५           | १७।३३              | १९।५८               | २२।१३              | ००।२२            | ५।५५            | ४।५१            | ६।३१             | ७।५७             |
| ९. गुरु          | १०।११।४८।४२      | १०।१४।३५।१८     | २।२१।२७।३        | ११।१५।००।११       | १।७।२१।१०       | १०।१६।३०।५०      | ४४।४२    | ९।१०            | १०।५०           | १२।५२            | १५।१०           | १७।२८              | १९।५३               | २२।८               | ००।१७            | २।४५            | ४।४६            | ६।२५             | ७।५२             |
| १०. शुक्र        | १०।१२।१२।४४      | १०।१३।५२।४४     | २।२१।२७।०३       | ११।१६।१४।५०       | ११।७।३९।१०      | १०।१६।२७।४०      | ४४।४४    | ९।५             | १०।४५           | १२।४७            | १५।५            | १७।२३              | १९।४८               | २२।३               | ००।१२            | २।४०            | ४।४१            | २६।२०            | ७।४७             |
| ११. शनि          | १०।१२।२४।२४      | १०।१३।३३।१५     | २।२१।२८।८        | ११।१७।२९।१२       | ११।७।४७।१३      | १०।१६।२४।२८      | ४४।४६    | ९।२             | १०।४०           | १२।४२            | १५।२            | १७।२०              | १९।४३               | २१।५७              | ००।९             | २।३५            | ४।३५            | ६।१५             | ७।४०             |
| ११. रवि          | १०।१४।१२।५४      | १०।१३।१६।४६     | २।२१।२९।१३       | ११।१८।४३।३४       | ११।७।५५।१६      | १०।१६।२१।१७      | ४४।४८    | ८।५९            | १०।३९           | १२।४१            | १४।५८           | १७।१७              | १९।३२               | २१।४७              | ००।६             | २।२३            | ४।२५            | ६।५              | ७।३२             |
| १२. सोम          | १०।१५।०१।२४      | १०।१३।००।१७     | २।२१।३०।१८       | ११।१९।५७।५६       | ११।८।३।१८       | १०।१६।१८।०६      | ४४।५०    | ८।५७            | १०।३७           | १२।३९            | १४।६            | १७।१६              | १९।३०               | २१।४५              | ००।४             | २।२१            | ४।२४            | ६।४              | ७।३०             |
| १३.मंगल          | १०।१५।४९।५३      | १०।२२।४३।४८     | २।२१।३०।२२       | ११।२१।१२।१८       | ११।८।११।२०      | १०।१६।२४।२५      | ४४।५२    | ८।५५            | १०।३५           | १२।३७            | १४।४            | १७।१५              | १९।२८               | २१।४३              | ००।२             | २।१९            | ४।२३            | ६।३              | ७।२८             |
| १४. बुध          | १०।१६।३८।२२      | १०।१२।२७।२०     | २।२१।३०।२६       | ११।२२।२६।४०       | ११।८।१९।२२      | १०।१६।११।४४      | ४४।५४    | ८।५३            | १०।३३           | १२।३५            | १४।५२           | १७।१४              | १९।२६               | २१।४१              | ००।००            | २।१७            | ४।२२            | ६।२              | ७।२६             |
| ३०. गुरु         | १०।१७।२६।५१      | १०।१२।१०।५२     | २।२१।३०।३०       | ११।२३।४१।०२       | ११।८।२७।२४      | १०।१६।८।३३       | ४४।५६    | ८।५२            | १०।३२           | १२।३४            | १४।५१           | १७।२२              | १९।२५               | २१।४०              | २३।५९            | २।१६            | ४।२०            | ६।००             | ७।२५             |

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

चैत्र कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४७, सम्वत् २०८२, शुद्धसमयः, शिशिरर्तुः ता. १४ वसन्त ऋतुः याम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः

दिनांकः ४ मार्च से १९ मार्च २०२६ ई०

**होलिकोत्सवः, होली** सचैलस्नानं, सप्ताडोरक बन्धनं, विवाहः, द्विरागमनं, गृहारम्भः, सिद्धियोगः दि० ४।२९९ उ० शिववासः दि० ४।२९ या०

**संत तुकाराम जयन्ती**, सूतीस्नानं, मुण्डनं, द्विरागमनं, गृहारम्भः, पूर्वयात्रा हस्ते, अग्निवासः

श्री गणेश४व्रतं, मुण्डनं, द्विरागमनं, शिववासः, सं०५।२२ उ०

सवार्थ सिद्धि योगः दि० १०।५४ उ०, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः सं० ६।४० या० ततो मृत्युयोगः, सर्वार्थ सिद्धियोगः दि० १०।५४ उ०

रंग पञ्चमी, द्विरागमनं स्वात्थ्यायां, अंतरराष्ट्रीय महिला दिवसः, शिववासः रा० २।२८ या०, मृत्युयोगः रा० ८।१९ उ०, **दीक्षाग्रहणं दि. १२।५८ या.**

भ० ४०।१७ उ०, चन्द्र कलास्मृति दिवसः, स्कन्ध षष्ठी, सूतीस्नानं, विवाहः, अनुराधायां, अग्निवास, सिद्धियोगः रा० १०।१७ या० ततो मृ०यो०, सर्वार्थ सिद्धियोगः दि० ३।२३ उ०

भ० १२।५६ या०

श्री शीतला अष्टमी व्रतं पूजनं च, विवाहः अष्टम्यां मूले, शिववासः रा० २।२८ या०, अग्निवासः, मृत्युयोगः

श्री ऋषभनाथ जी जनन्ती, मृत्युयोगः

भ० २७।४२ उ० ५९।४४ या०, उत्तराषाढे विवाहः, मार्गीगुरुः ४८।००, पूर्वाषाढे पूर्वोत्तरयात्रा, अग्निवासः, **दीक्षाग्रहणं सं. ५।१० या.**

**मीने रविः-५३।४४**, मु० ३० फलं साम्यं, मासान्तः, त्र्यहो जन्म दिन कृत्ये, शिववासः

**पापमोचनी ११ व्रतं सर्वेषां**, षडशीति सं० पुण्यकालः, दि० १२ या०, भदवारम्भः रा० ४।२४ उ०, मृत्युयोगः, दि० ७।८ या० शिववासः, अग्निवासः, दि० ७।८ या०, **दीक्षाग्रहणं**

गोधूतेन पारणं, **प्रदोष-१३ व्रतं**, मासादिः, पूर्वादितो बुधः-४७।१२, शिववासः दि० ५१ या), अग्निवासः ७।५० उ० मृत्युयोगः ७।५० या०

साध्य योगः-५६।३१, **प्रदोष-१४ व्रतं**, वारूणी योगः, दि० ८।१ या०, गंगा स्नानं शत सूर्यग्रहणं समफलं, अग्निवासः दि० ८।४१ या०, सिद्धियोगः दि० ८।४१ या०, ततो राजप्रदयोगः

**उत्तरभाद्रपदे रविः-१५।२२**, पार्वणं, शिववासः दि० ७।४० उ०, अग्निवासः ७।४० उ०

१ तिथि-५६।५०, चैत्री अमावस्या, स्नान दानादिः, नववर्ष विक्रम सम्वत्-२०८३ प्रारंभः द०ति० ५८।५२ उ०, **वासन्तीय नवरात्र आरम्भः, कलश स्थापनं, श्री दुर्गा पूजनोत्सवारम्भः**, अमान्तात्,❖

चै. कृ. ३ शु. व. ८।४०।१०।४१  
अयनांशाः २२।५४।८

३ गु.

५ के.

२

४

१

७

१२

६

१०

८

शु.श.

सू.मं.

बु.रा.

चै. कृ. १० शु. व. ८।४०।१०।४८  
अयनांशाः २२।५४।९

३ गु.

५ के.

२

४

१

७

१२

६

१०

८

शु.श.

सू.मं.

बु.रा.

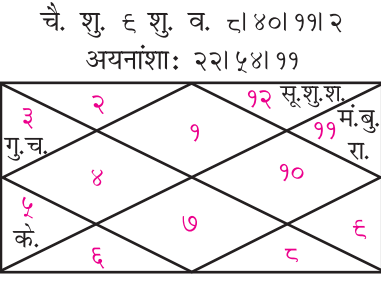
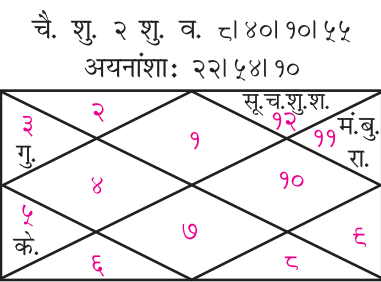
**विविधः-प्रयागे केशवपनफलम्:-** किं गयापिंडदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरूक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानांजाह्वीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च गोक्षुतस्य दोषाधिक्यमुक्तं नारदेन-सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्धपीनसकेतवः। केतवः कपटः, पिनसो, मुहुर्नासाश्रावी।

**रत्नावलीरत्नकलापयोः-** प्रागन्यपुंसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतः केऽपि वदन्त्यसत्यम्। यात्रायां क्षुतम् अवश्यमेव वर्जनीयम्।

**रत्न कलापे-** अग्रे क्षुतं चेत् शकुनैः किमन्यैः पश्चात् क्षुतं चेत् शकुनैः किमन्यैः। जातानजातञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः। शुभक्षूतम् प्रजापत्यक फल प्राप्त होइत अछि। तेल लगाक आ देह मल-मलक नदी में नहायब मना अछि। अतः नदी सँ बाहर तटपर देह हाथ मलिक नहा लेथि, तखन नदीमें गोता लगावि **मलं प्रक्षालयेत्तीरे ततः स्नानं समाचरेत्।** शास्त्र में एही प्रकारक स्नान क **मलापकर्षण** स्नान कहल गेल अछि। ई स्नान अमन्त्रक होइत अछि। स्नान सँ स्वास्थ्य आ शुद्धता दुनु के लेल उत्तम मानल गेल अछि। ई स्नान अमन्त्रक होइत अछि। स्नान सँ स्वास्थ्य आ शुद्धता दुनु के लेल उत्तल मानल गेल अछि। प्रथम जलक बाहर ठाढ़ भऽ संकल्प करथि। तन्त्रसँ मृत्तिका लगाय अन्यान्य तीर्थक आवाहन नाभि पर्वन्त जलमे करथि। जलक ऊपर इन्द्रराजकश्राप देल ब्रह्महत्या रहैत छथि। एहि हेतु दुनू हाथे जल हिलाकऽ स्नान करी। किन्तु भागीरथी गंगामे अन्य तीर्थक आवाहन नहि करी केवल गंगाजीक प्रार्थना करी। यदि घरमे स्नान करी त पात्रमे जल लऽ पूर्वाभिमुख भऽ जलक प्रार्थना कऽ अन्य तीर्थक आवाहन कऽ संकल्प



</



**विविधविषयाः-** चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमीं यावत् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्, सप्तशतीपाठदिकं च कुर्यात्।

**चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोककलिकापानमन्त्रः-** त्वामशोककराभीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिवामि शोकसन्तप्तो मामशोकं सदा कुरु। एतत्पानफलं **लिंगपुराणे-** अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिबन्ति पुनर्वसौ। चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः॥

**ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रः** ब्रह्मपुत्रमहाभाग शन्तनोः कुलसम्भवः। अमोघगर्भसम्भूत पापं लौहित्य मे हर॥

**चैत्रशुक्लनवम्यां** रामनवमीव्रतन्तत्रांगदेवतापूजनपूर्वक **श्रीरामं** संपूज्यार्घ्य

**दद्यात्तन्मन्त्रः-** दशाननवधारथाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च॥

**चक्षुरक्षार्थं पठनीयमन्त्रः-** शर्यातिञ्च सुकन्यां शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्न हीयते।

**होलिकादाहविशेषः-** तत्राग्नौ विधिवद्धुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत्। धृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दै- र्मनोरमैः। तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जलपन्ति स्वेच्छया लोके होलिकाख्यातामागतः। अस्यां काष्ठदिकमेकत्रीकृत्य होलिकां दाहयेत्।

**ध्यानमंत्र-** असूमयावसन्तप्तेः कृत्वा त्वं होलि वालिश। अतस्त्वां पूजशिष्यामि भूतेभूतिप्रदा भव। ततो होलिकायै नमः इति मन्त्रेण यथोपचारैः संपूज्य प्रदीपयेत्।



| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | शुक्र  | ४।००           | दि.७।२६        | चित्रा.३१।०७         | सं.६।१७               | व्या.१७।३६     | कौ.४।००          | तुला        | ११।१६।४१।१२              | ३०।५०    | ५।५०                 | ६।१०                  | १५         | २०         | ३          |
| २     | शनि    | ६।५८           | दि.८।३६        | स्वा.३६।०८           | रा.८।१६               | ह.१८।३५        | गर.६।५८          | तुला        | ११।२०।४०।१२              | ३०।५४    | ५।४६                 | ६।११                  | १६         | २१         | ४          |
| ३     | रवि    | ११।०५          | दि.१०।१४       | वि.४१।५६             | रा.१०।३६              | व.१६।२१        | वि.११।०५         | तु.दि.४।००  | ११।२१।३६।१२              | ३०।५८    | ५।४८                 | ६।१२                  | १७         | २२         | ५          |
| ४     | सोम    | १३।१०          | दि.११।०४       | अनु.४८।२३            | रा.१।०६               | सि.२०।३६       | बा.१३।१०         | वृश्चिक     | ११।२२।३८।१२              | ३१।०२    | ५।४८                 | ६।१२                  | १८         | २३         | ६          |
| ५     | मंगल   | २१।०७          | दि.२।१४        | ज्ये.५५।०२           | रा.३।४८               | व्य.२२।१०      | तै.२१।०७         | वृ.रा.३।४८  | ११।२३।३७।१३              | ३१।०६    | ५।४७                 | ६।१३                  | १९         | २४         | ७          |
| ६     | बुध    | २६।२०          | दि.४।१७        | मूल.६०।००            | अहोरात्र              | व.३।३८         | व.२६।२०          | धनु         | ११।२४।३६।१२              | ३१।१०    | ५।४६                 | ६।१४                  | २०         | २५         | ८          |
| ७     | गुरु   | ३१।००          | सं.६।०६        | मूल.१।२१             | दि.६।१७               | प.२४।४६        | बव.३१।००         | धनु         | ११।२५।३५।१२              | ३१।१३    | ५।४५                 | ६।१५                  | २१         | २६         | ९          |
| ८     | शुक्र  | ३४।५७          | रा.७।४४        | पू.षा.७।०२           | दि.८।३४               | शि.२४।२१       | व्या.२।५८        | ध.दि.३।०३   | ११।२६।३४।११              | ३२।१६    | ५।४५                 | ६।१५                  | २२         | २७         | १०         |
| ९     | शनि    | ३७।२४          | रा.८।४२        | उ.षा.११।४८           | दि.१०।२७              | सि.२४।०६       | तै.६।१०          | मकर         | ११।२७।३२।५५              | ३१।२०    | ५।४४                 | ६।१६                  | २३         | २८         | ११         |
| १०    | रवि    | ३६।२६          | रा.९।२९        | श्रव.१५।२९           | दि.११।५५              | सा.२३।५९       | व.८।२५           | म.रा.१२।२४  | ११।२८।३१।३९              | ३१।२४    | ५।४३                 | ६।१७                  | २४         | २९         | १२         |
| ११    | सोम    | ३६।५३          | रा.९।३९        | धनि१७।५६             | दि.१२।५२              | शुभ२१।५२       | बव.९।३९          | कुम्भ       | ११।२९।३०।२३              | ३१।२६    | ५।४२                 | ६।१८                  | २५         | ३०         | १३         |
| १२    | मंगल   | ३८।५३          | रा.९।१५        | शत.१९।००             | दि.१।१८               | शु.१८।२३       | कौ.९।२३          | कुम्भ       | ०।०।२९।०७                | ३१।३२    | ५।४२                 | ६।१८                  | २६         | १          | १४         |
| १३    | बुध    | ३६।४०          | रा.८।२१        | पू.भा.१८।५५          | दि.१।१५               | ब्र.१४।३६      | गर.७।४६          | कु.दि.७।१५  | ०।०१।२७।५१               | ३१।३६    | ५।४९                 | ६।१९                  | २७         | २          | १५         |
| १४    | गुरु   | ३३।२५          | सं.६।४१        | उ.भा.१७।४४           | दि.१२।२६              | ऐ.९।३७         | वि.५।०२          | मीन         | ०।०२।२६।३५               | ३१।४०    | ५।२०                 | ६।२०                  | २८         | ३          | १६         |
| ३०    | शुक्र  | ३०।५०          | रा.५।५९        | रेवती.१५।४३          | दि.११।५६              | वै.३।५०        | च.२।०७           | मी.दि.११।५६ | ०।०३।२५।१९               | ३१।४४    | ५।३९                 | ६।२१                  | २९         | ४          | १७         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. शुक्र         | १०।१९।८।४६       | १०।२२।२२।५६     | २।२२।७।३८        | ०।१२।९।४६         | ११।१०।२६।३२     | १०।१५।२५।४९      | ४५।२५    | ८।७             | ९।४८            | ११।४९            | १४।६            | १६।३७              | १८।४०               | २०।५५              | २३।१४            | १।३१            | ३।३४            | ५।१३             | ६।४२             |
| २. शनि           | १०।२९।५५।५१      | १०।२३।४६।४६     | २।२२।१२।२१       | ०।१३।२३।१६        | ११।१०।३४।५      | १०।१५।१७।३७      | ४५।२७    | ८।२             | ९।४३            | ११।४४            | १४।१            | १६।३२              | १८।३५               | २०।५०              | २३।०९            | १।२७            | ३।३०            | ५।९              | ६।३७             |
| ३. रवि           | ११।०।४२।४६       | १०।२५।१०।३६     | २।२२।१७।४        | ०।१४।३६।४६        | ११।१०।४१।३८     | १०।१५।१४।२६      | ४५।२९    | ७।५७            | ९।३८            | ११।३९            | १३।५६           | १६।२७              | १८।३०               | २०।४३              | २३।०४            | १।२४            | ३।२६            | ५।५              | ६।३२             |
| ४. सोम           | ११।१।३०।१        | १०।२६।३४।२६     | २।२२।२१।४७       | ०।१५।५०।१६        | ११।१०।४९।११     | १०।१५।११।१५      | ४५।३१    | ७।५२            | ९।३३            | ११।३४            | १३।५१           | १६।२२              | १८।२६               | २०।४०              | २३।००            | १।२०            | ३।२२            | ५।१              | ६।२७             |
| ५. मंगल          | ११।२।१७।५        | १०।२७।५८।१६     | २।२२।२६।२९       | ०।१७।३।४६         | ११।१०।५६।४४     | १०।१५।८।४        | ४५।३३    | ७।४७            | ९।२८            | ११।२९            | १३।४६           | १६।१७              | १८।२२               | २०।३५              | २२।५६            | १।१६            | ३।१८            | ४।४७             | ६।२२             |
| ६. बुध           | ११।३।४।९         | १०।२९।२२।६      | २।२२।३१।११       | ०।१८।१७।१०        | ११।११।४।१७      | १०।१५।४।५३       | ४५।३५    | ७।४२            | ९।२३            | ११।२५            | १३।४१           | १६।१२              | १८।१८               | २०।३०              | २२।५२            | १।१२            | ३।१४            | ४।४३             | ६।१७             |
| ७. गुरु          | ११।३।५१।१३       | ११।००।४५।५६     | २।२२।३५।५३       | ०।१९।३०।३९        | ११।११।११।५०     | १०।१५।१।४२       | ४५।३७    | ७।३७            | ९।१८            | ११।२१            | १३।३६           | १६।७               | १८।१४               | २०।२७              | २२।४७            | १।८             | ३।१०            | ४।३९             | ६।२२             |
| ८. शुक्र         | ११।४।३८।१७       | ११।२१।९।४५      | २।२२।४०।३५       | ०।२०।४४।१८        | ११।११।१९।२२     | १०।१४।५३।३२      | ४५।३८    | ७।३२            | ९।१३            | ११।२७            | १३।३२           | १६।२               | १८।१०               | २०।२४              | २२।४४            | १।४             | ३।६             | ४।३६             | ६।७              |
| ९. शनि           | ११।५।२५।६        | ११।३।१७।४७      | २।२२।४६।०४       | ०।२१।५७।२२        | ११।११।२७।५९     | १०।१४।५५।२०      | ४५।४०    | ७।२७            | ९।८             | ११।१४            | १३।२८           | १५।५७              | १८।६                | २०।२१              | २२।४०            | १।०             | ३।१             | ४।३४             | ६।२              |
| १०. रवि          | ११।६।११।५५       | ११।४।२५।४९      | २।२२।५१।३३       | ०।२३।१०।२६        | ११।११।३६।३६     | १०।१४।५२।०९      | ४५।४२    | ७।२२            | ९।३             | ११।१०            | १३।२५           | १५।५२              | १८।२                | २०।१८              | २२।३७            | ००।५५           | २।५७            | ४।३२             | ५।५७             |
| ११. सोम          | ११।६।५८।४३       | ११।५।३३।५१      | २।२२।५७।०२       | ०।२४।२३।३०        | ११।११।४५।१३     | १०।१४।४८।५८      | ४५।४४    | ७।१७            | ९।२             | ११।६             | १३।२३           | १५।४६              | १७।५८               | २०।१४              | २२।३३            | ००।५०           | २।५२            | ४।३०             | ५।५२             |
| १२. मंगल         | ११।७।४५।३१       | ११।६।४१।५२      | २।२३।०२।३१       | ०।२५।३६।३४        | ११।११।५३।५०     | १०।१४।४५।४७      | ४५।४६    | ७।२२            | ९।१             | ११।४             | १३।२१           | १५।४०              | १७।५५               | २०।१०              | २२।३०            | ००।४६           | २।४८            | ४।२८             | ५।५५             |
| १३. बुध          | ११।८।३२।१९       | ११।७।४९।५३      | २।२३।८।००        | ०।२६।४९।३८        | ११।१२।२।२७      | १०।१४।४२।३६      | ४५।४८    | ७।१९            | ८।५९            | ११।१             | १३।१८           | १५।३७              | १७।५२               | २०।०७              | २२।२७            | ००।४३           | २।४५            | ४।२५             | ५।५२             |
| १४. गुरु         | ११।९।१९।०६       | ११।८।४७।५४      | २।२३।१३।२९       | ०।२८।२।४१         | ११।१२।११।४      | १०।१४।३९।२५      | ४५।५०    | ७।१६            | ८।५६            | १०।५८            | १३।१५           | १५।३४              | १७।४९               | २०।०४              | २२।२४            | ००।४०           | २।४२            | ४।२२             | ५।४९             |
| ३०. शुक्र        | ११।१०।५।५५       | ११।१३।३५।३६     | २।२३।१८।५७       | ०।२९।१५।४४        | ११।१२।१९।४०     | १०।१४।३६।५५      | ४५।५२    | ७।१३            | ८।५३            | १०।५५            | १३।१२           | १५।३१              | १७।४६               | २०।०१              | २२।२१            | ००।३७           | २।३९            | ४।१९             | ५।४६             |

वैशाख कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४८, सम्बत् २०८३, शुद्धसमयः, वसन्त ऋतुः याम्यगोलः ता. १४ सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः

दिनांकः ०३ अप्रैल से १७ अप्रैल २०२६ ई०

वैशाखे तैलं त्यजेत्, दक्षिणयात्रा प्रतिपदा, शिववासः दि० ७।२६ या०, अग्निवसः, सिद्धियोगः दि० ७।२६ या० ततो मृत्युयोगः  
मीने भौमः ४८।४५, भ० ३६।२ उ०, पश्चिमदक्षिणयाा तृतीयायां, सर्वार्थसिद्धियोग रा० ८।१६ या०  
**वक्रतुंड-४व्रतं**, राष्ट्रीय समुद्री दिवसः, शिववासः दि० १०।१४ उ०, अग्निवासः दि० १०।१४ या०, सिद्धियोगः दि० १०।१४ या०  
पश्चिमोत्तरयात्रा पंचम्यां, (५) एकोदिष्टं, शिववासः, अग्निवासः, दि० ११।४ उ०, सर्वार्थसिद्धियोग, **दीक्षाग्रहणं दि. ११।४ उ.**  
गंड-४६।२ उ०, भ० २६।२० उ०५८।३६ या०, पश्चिमयात्रा पंचम्यां, शिववासः दि० २।१४ या०, विश्व स्वास्थ्य दिवसः, मृत्युयोगः दि० २।१४ उ० अग्निवासः दि० २।१४ या०  
**कोकिला-६**, गंड ४।२ यावत्, पूर्वयात्रा, अग्निवासः दि० ४।१७ उ०, सिद्धियोगः दि० ४।१७ उ०  
सर्करासप्तमी, मीने बुधः १२।५०, पूर्वोत्तर यात्रा, शिववासः सं० ६।९ उ०, अग्निवासः दि० ६।९ या०  
पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, विश्व होम्योपैथी दिवसः, शिववासः रा० ७।४४ या०  
पूर्वाविना यात्रा नवमी श्रवणयोः, राष्ट्रीय सुरक्षित मातृत्व दिवसः, अग्निवासः, सिद्धियोगः रा० ८।४२ या० ततो मृत्युयोगः  
भ० ८।२५ उ० ३६।२६ या०, भदवारम्भः दि० ११।५५ उ०, अग्निवासः, **दीक्षाग्रहणं दि. ९।५ या.**  
**वरूथिनी ११ व्रतं सर्वेषां**, मासान्त, शिववासः, सिद्धियोगः रा० ८।३९ या० ततो मृत्युयोगः  
कुशोदकेन पारणं, **हरिद्वार कल्पवासारम्भः** (१४।४।२०२६-१५।५।२०२६), **अश्विन्यां मेषे रविः-१५।५८**, मु० १५ फलंसमहर्षऽशीति सक्रांति पु०दि०घं १२ उ०, सतुआइन, सोपकरणवारिपूर्णघटदानं, शिववासः रा० ९।१५ या०, अग्निवासः  
भ० ३६।४१ उ०, **प्रदोष-१३ व्रतं**, मासादिः, **जुडिशीतल**, तुलसी-आम्नादिवृक्ष सेचनं, पूर्वोदितो शनि २१।११, मृत्युयोगः रा० ८।२१ या०  
भ० ५।२ या०, **प्रदोष-१४ व्रतं**, अग्निवासः, मृत्युयोगः सं० ६।४१ या०  
वैशाखी अमावस्या पार्वणं, विष्कुम्भ योगः ५३।३४, भदवा समाप्तिः दि० ११।५ उ०, प्रतिपदि विवाहः केतु वेधात् विवाहो मध्यमः, गं-३।४३ उ० १८।४३ या०, सिद्धियोगः सं० ५।५९ उ०, सर्वार्थसिद्धियोगः, शिववासः सं० ५।५९ या०

वै. कृ. १ शु. व. ८।४०।११।९  
अयनांशाः २२।५४।१२

२  
३ गु.

४  
५ के.

१  
शु.

७  
चं.

९  
१२ सू.श.

१०  
११ मं.बु.रा.

६  
८

वै. कृ. ८ शु. व. ८।४०।११।१६  
अयनांशाः २२।५४।१३

२  
३ गु.

४  
५ के.

१  
शु.

७  
७

९  
१२ सू.मं.श.

१०  
११ बु.रा.

६  
८

वै. कृ. ३० शु. व. ८।४०।११।२३  
अयनांशाः २२।५४।१४

२  
३ गु.

४  
५ के.

१  
सू.शु.

७  
७

९  
१२ मं.बु.च.श.

१०  
११ रा.

६  
८

**-वैशाखे प्रातःस्नानमन्त्रः-**वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन॥ मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात् निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्॥ माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्॥

**विविधविषयाः प्रातःस्नानसमयः-** उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम्। सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्॥

**वैशाखे त्याज्यवस्तूनि-** कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुनम्॥

**वैशाखे दानवस्तूनि-** प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्ध्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्॥ जलपात्राणि देयानि तथापूपगृहाणि च॥

**तिथितत्त्वे-** ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्ये॥

**मासविशेषे स्नानम्-** कौशिकी माधवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्ववतीं मार्गे कार्तिके यामुनीं तथा॥ भूयसी गैरिका चैवमाश्विने फलदा मता। भाद्रे जलाधिका पुण्या ज्येष्ठे व्याघ्रवती तथा॥ विरजा श्रावणे पुण्या मण्डना फाल्गुन मता। इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभ॥ वाङ्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी॥ चन्द्रसूर्योपरागेषु सर्वा नद्यः शुभावहाः॥ गंगा तु सर्वदेति।







| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | शनि    | ४४।१४          | रा.११।११       | विशा.६०।००           | अहोरात्र              | व्य.३८।२८      | बा.१२।१४         | तु.रा.११।२१ | ०।१७।५६।२४               | ३२।३४    | ५।२६                 | ६।३१                  | १५         | १६         | २          |
| २     | रवि    | ४६।०१          | रा.१।०५        | विशा.१।०७            | प्रा.५।५६             | व३६।३६         | तै.१६।३७         | वृश्चिक     | ०।१८।५७।३१               | ३२।३७    | ५।२६                 | ६।३१                  | १६         | २०         | ३          |
| ३     | सोम    | ४५।११          | रा.३।०८        | अनु.७।२५             | दि.८।२६               | परि.४१।१२      | व.२१।३६          | वृश्चिक     | ०।१६।५५।३८               | ३२।४०    | ५।२८                 | ६।३२                  | १७         | २१         | ४          |
| ४     | मंगल   | ५६।१७          | रा.शौ.५।१०     | ज्ये.१४।०१           | दि.११।०३              | शि.४२।५०       | वा.२६।४४         | वृ.दि.११।०३ | ०।२०५३।४५                | ३२।४३    | ५।२७                 | ६।३३                  | १८         | २२         | ५          |
| ५     | बुध    | ६०।००          | अहोरात्र       | मूल.२०।२८            | दि.१।३८               | सि.४४।०७       | कौ.३१।३५         | धनु         | ०।२१।५१।५२               | ३२।४६    | ५।२७                 | ६।३३                  | १६         | २३         | ६          |
| ५     | गुरु   | ३।५४           | दि.७।००        | पू.षा.२६।१७          | दि.३।३७               | सा.४४।५४       | तै.३।५४          | घ.रा.१०।२७  | ०।२२।४६।५६               | ३२।४६    | ५।२६                 | ६।३४                  | २०         | २४         | ७          |
| ६     | शुक्र  | ७।४७           | दि.८।३३        | उ.षा.३१।१७           | सं.५।५७               | शुभ४४।५५       | व.७।४७           | मकर         | ०।२३।४८।०६               | ३२।५२    | ५।२६                 | ६।३४                  | २१         | २५         | ८          |
| ७     | शनि    | १०।३१          | दि.६।३७        | श्र.३५।०८            | रा.७।२८               | शु.४४।०३       | बव.१०।३१         | मकर         | ०।२४।४५।५१               | ३२।५६    | ५।३५                 | ६।३५                  | २२         | २६         | ९          |
| ८     | रवि    | १२।०८          | दि.१०।१५       | धनि.३७।५०            | रा.८।३२               | ब्र.४२।१३      | कौ.१२।०८         | म.दि.८।१०   | ०।२५।४३।३६               | ३२।५६    | ५।३४                 | ६।३६                  | २३         | २७         | १०         |
| ९     | सोम    | १२।२५          | दि.१०।२२       | शत.३६।१३             | रा.९।०५               | ऐं.३६।२२       | गर.१२।०८         | कुम्भ       | ०।२६।४१।२०               | ३२।०२    | ५।३४                 | ६।३६                  | २४         | २८         | ११         |
| १०    | मंगल   | ११।२३          | दि.९।५६        | पू.भा.३६।२४          | रा.९।०६               | वै.३५।५१       | वि.११।२३         | कु.दि.३।१७  | ०।२७।३६।०४               | ३३।०५    | ५।३३                 | ६।३७                  | २५         | २९         | १२         |
| ११    | बुध    | ०६।१०          | दि.९।०३        | उ.भा.३८।०६           | रा.८।३७               | वि.३०।४५       | बा.६।१०          | मीन         | ०।२८।३६।४८               | ३३।०८    | ५।३३                 | ६।३७                  | २६         | ३०         | १३         |
| १२    | गुरु   | ५।५०           | दि.७।४२        | रेवती.३६।३४          | रा.८।००               | प्री.२५।१२     | तै.५।५०          | मी.रा.८।००  | ०।२९।३४।३२               | ३३।११    | ५।२२                 | ६।३८                  | २७         | ३१         | १४         |
| १३    | शुक्र  | १।३८           | प्रा.६।००      | अ.३३।५०              | सं.६।५३               | आ.१८।५८        | व.१।३८           | मेष         | १।००।३२।१६               | ३३।१४    | ५।२१                 | ६।३९                  | २८         | १          | १५         |
| ३०    | शनि    | ५१।००          | रा.१।४४        | भर.३०।२६             | सं.५।३०               | सौ.१२।०७       | च.२७।१०          | मे.रा.११।०७ | १।०१।२६।५४               | ३३।१८    | ५।२०                 | ६।४०                  | २९         | २          | १६         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

| तिथयः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|-----------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. शनि          | ११।२६।४१।३६      | ०।१०।५४।६       | २।२५।१४।२६       | १।८।४७।२६         | १०।२२।४४।१८     | १०।१३।४८।२६      | ४६।१७    | ६।२८            | ८।८             | १०।१०            | १२।२७           | १४।४६              | १७।१                | १६।१६              | २१।३६            | २३।५२           | १।५४            | ३।३४             | ५।१              |
| २. रवि          | ११।२२।२७।३६      | १।१२।४८         | २।२५।२३।१७       | १।११।३२।४         | १०।३१।२५।४६     | १०।१३।४५।१८      | ४६।१९    | ६।२३            | ८।३             | १०।५             | १२।२२           | १४।४१              | १६।५६               | १६।११              | २१।३१            | २३।४७           | १।४६            | ३।२६             | ४।५६             |
| ३. सोम          | ११।२३।१३।३६      | ०।१४।४१।५८      | २।२५।३२।०८       | १।१४।१६।३६        | १०।४०।७।१३      | १०।१३।४२।७       | ४६।२१    | ६।१८            | ७।५८            | १०।००            | १२।१७           | १४।३६              | १६।५१               | १६।६               | २१।२६            | २३।४२           | १।४४            | ३।२४             | ४।५१             |
| ४. मंगल         | ११।२३।५५।३६      | ०।१६।३५।५४      | २।२५।४०।५६       | १।१७।१।१४         | १०।४८।४८।४०     | १०।१३।३८।५६      | ४६।२३    | ६।१३            | ७।५३            | ९।५५             | १२।१२           | १४।३१              | १६।४६               | १६।१               | २१।२१            | २३।३७           | १।३६            | ३।१६             | ४।४६             |
| ५. बुध          | ११।२४।४५।३६      | ०।१८।२६।५३      | २।२५।४६।५०       | १।१६।४५।४८        | १०।५७।३०।७      | १०।१३।३५।४५      | ४६।२४    | ६।८             | ७।४८            | ९।५०             | १२।७            | १४।२६              | १६।४१               | १८।५६              | २१।१६            | २३।३२           | १।३४            | ३।१४             | ४।४१             |
| ५. गुरु         | ११।२५।३१।३६      | ०।२०।२३।४६      | २।२५।५८।४०       | १।२१।३०।२२        | ११।६।११।३४      | १०।१३।३२।३४      | ४६।२५    | ६।३             | ७।४३            | ९।४५             | १२।२            | १४।२१              | १६।३६               | १८।५१              | २१।११            | २३।२७           | १।२६            | ३।९              | ४।३६             |
| ६. शुक्र        | ११।२६।२७।३६      | ०।२२।१७।४२      | २।२६।७।३०        | १।२५।१४।५६        | ११।१४।५३।१      | १०।१४।२१।२३      | ४६।२६    | ५।५८            | ७।३८            | ९।४०             | ११।५७           | १४।१६              | १६।३१               | १८।४६              | २१।०६            | २३।२२           | १।२४            | ३।४              | ४।३१             |
| ७. शनि          | ११।२७।४।३२       | ०।२४।११।०४      | २।२६।१७।२४       | १।२६।२१।१७        | ११।१४।५१।१२     | १०।१३।२६।१२      | ४६।२८    | ५।५५            | ७।३३            | ९।३५             | ११।५२           | १४।११              | १६।२६               | १८।४१              | २१।०१            | २३।१७           | १।१६            | २।५६             | ४।२६             |
| ८. रवि          | ११।२७।४१।२५      | ०।२६।०४।२६      | २।२६।२७।२०       | १।२७।२७।३८        | ११।१४।५६।२२     | १०।१३।२३।१       | ४६।३०    | ५।४८            | ७।२८            | ९।३०             | ११।४७           | १४।६               | १६।२१               | १८।३६              | २०।५६            | २३।१२           | १।१४            | २।५४             | ४।२१             |
| ९. सोम          | ११।२८।३८।१८      | ०।२७।५७।४८      | २।२६।३६।१५       | १।२८।३३।५६        | ११।१५।७।३२      | १०।१३।१६।५०      | ४६।३२    | ५।४३            | ७।२३            | ९।२५             | ११।४२           | १४।१               | १६।१६               | १८।३१              | २०।५१            | २३।७            | १।९             | २।४६             | ४।१६             |
| १०. मंगल        | ११।२९।२५।११      | ०।२९।५१।०६      | २।२६।४६।१०       | १।२९।४०।२०        | ११।१५।१५।४२     | १०।१३।१६।३६      | ४६।३४    | ५।३८            | ७।१८            | ९।२०             | ११।३७           | १३।५६              | १६।११               | १८।२६              | २०।४६            | २३।२            | १।४             | २।४४             | ४।११             |
| ११. बुध         | ०।०।१२।०४        | ०।१।४४।३०       | २।२६।५६।५        | २।००।४६।४०        | ११।१५।२३।५२     | १०।१३।१३।२८      | ४६।३५    | ५।३३            | ७।१३            | ९।१५             | ११।३२           | १३।५१              | १६।६                | १८।२१              | २०।४१            | २२।५७           | १४।५६           | २।३६             | ४।६              |
| १२. गुरु        | ०।०।५८।५७        | ०।३।३७।५१       | २।२७।६।५६        | २।१।५२।००         | ११।१५।३२।२      | १०।१३।१०।१७      | ४६।३६    | ५।२६            | ७।८             | ९।१०             | ११।२७           | १३।४६              | १६।१                | १८।१६              | २०।३६            | २२।५२           | २४।५४           | २।३४             | ४।१              |
| १३. शुक्र       | ०।१।४५।४६        | १।५।३१।१२       | २।२७।१५।५३       | २।२।५६।२०         | ११।१५।४०।२२     | १०।१३।६।७        | ४६।३७    | ५।२३            | ७।३             | ९।५              | ११।२२           | १३।४१              | १५।५६               | १८।११              | २०।३१            | २२।४७           | २४।४६           | २।२६             | ३।५६             |
| ३०. शनि         | ०।२।३०।०२        | १।७।१३।०७       | २।२७।२६।३०       | २।४।१०।३२         | ११।१५।४७।५      | १०।१३।३।५५       | ४६।३९    | ५।२०            | ७।००            | ९।२              | ११।१६           | १३।३६              | १५।५१               | १८।८               | २०।२८            | २२।४४           | २४।४६           | २।२६             | ३।५३             |

प्र. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४८, सम्वत् २०८३, शुद्धसमयः अमान्तादशुद्धः वसन्त ऋतुः ता. १५ तः ग्रीष्म ऋतुः सौम्यगोलः सौम्यायनम्, दक्षिणे कालः ता. १५ तः पश्चिमे कालः दिनांकः ०२ मई से १६ मई २०२६ ई०

ज्येष्ठे वृत्तान्तंक त्यजेतः, मातृ दिवसः, शिववासः रा० ११।११, अग्निवासः द्विरागमनं अनुराधायां, उत्तरायात्रापुराधायां, विश्व ऊर्जा दिवसः, अग्निवासः भ०-११।३६ उ० ५४।११ या०, मुंडनं, द्विरागमनं, गृहारम्भश्चअनुराधायां, पश्चिमोत्तरयात्रा तृतीयायां, सर्वार्थसिद्धियागः दि० ८।२६ या० गं० ८।०१ उ० २३।१ या०, पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां तत पूर्वयात्रा, शिववासः, अग्निवासः विवाहः मूल द्विरागमनं, गृहाराम्भश्च मूले, पूर्वयात्रा शिववासः द०ति० ३।५४ उ०, गुरुगोविंद सिंह जयन्ती, पूर्वोत्तर यात्रा पंचम्यां, शिववासः, दि० ७।०० या०, अग्निवासः दि० ७।०० उ०, सिद्धियोगः दि० ७।०० या० विवाहः सप्तम्यां, द०ति० ७।४७ या० भ० ७।४७ उ०, विश्व रेड क्रॉड दिवसः, अग्निवासः दि० ८।३३ या०, सि०यो०दि० ८।३३ या० ततो मृत्युयोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः सं० ५।५७ उ० विश्वनाथ स्मृति दिवसः, भदवारम्भः रा० ७।२८ उ०, भ० ३६।६ या०, पूर्वा विना यात्रा श्रवणायां, शिववासः दि० ९।३७ उ०, अग्निवासः दि० ९।३७ उ० सर्वार्थसिद्धियोगः रा० ७।२८ या० विवाहः अष्टम्यां, पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे, शिववासः दि० १०।१५ या०, सिद्धियोगः दि० १०।१५ या० कृत्तिकायां रविः-४४।४६, भ० ४१।५३ उ०, पश्चिम यात्रा पूर्वभाद्रपदे, अग्निवासः भ० ११।२३ या०, वृषे बुधः-५१।२७, पश्चिमयात्रा दराम्यां, शिववासः दि० ९।५६ उ० अपरा-११ व्रतं सर्वेषां, विवाहः दिवारात्रौ पश्चिमयात्रा रा० ८।३७ उ०, शिववासः, अग्निवासः, सिद्धियोगः दि० ९।३ उ० तिलेन पारणं, प्रदोष-१३ व्रतं, मासान्तः, भदवा समाप्तिः रा० ८।०० उ०, सुतीस्नानं, गं०-२४।३४ उ०, शिववासः दि० ७।४२ या०, सर्वार्थसिद्धियोगः १४ तिथि-५४।५६, प्रदोष-१४ व्रतं, वृषे रविः-१२।३३, मु० फलं साम्यं विष्णुपदीसंक्राति पु०कालः दि०घ० १२ उ०, अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवसः, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः सं० ६।५३ या० ज्येष्ठी अमावस्यां पार्वणं, वटसावित्रीव्रतं अमान्तात् मलमासारम्भः, मासादिः, राजगीर मेलारम्भः, शिववासः रा० १।४४ या०

विविधः वटसावित्री व्रतम्:- अमावास्याञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपोजयेत्। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात् सौवर्णीं वापी मृण्मयीम्॥ सप्तधानेन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभां। सार्द्धं सत्यवता साध्वीं फल नैवेद्यदीपकैः। सावित्रयाख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोतमैरिती विधिपूर्वकं सुपूज्य ब्रह्मणाय दद्यात्।

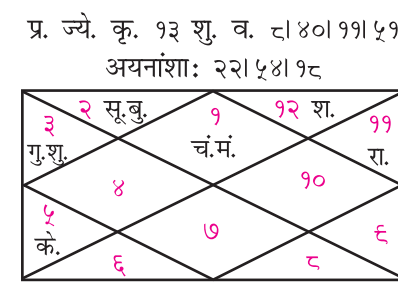
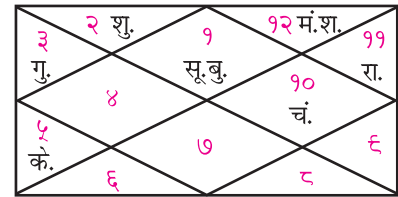
मन्त्रः- सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्य महासती। बाह्मणः प्रीरणार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यतां।

मूलवासः- स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाधे भूमौ नभः कार्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधस्तातु तपस्यमार्ग वैशाखशुक्रेष्णशुभं च तत्र।

अभूक्तमूलविचारः- अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकीः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरूद्ररसाः क्रमात्। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषेण, यतो हि-मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजम्। मातरञ्च तृतीयेऽर्थ शुभदस्तु तुरीयजः। सा शान्तिः जन्मानन्तरमग्रिममूलादिनक्षत्रेषु कार्या।

मूलवृक्षविचारः- मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रूद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः। मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्क्लेशः शाखावां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपूला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्।

त्रीतरशान्तिरपि विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः।





सन् १४३३ साल, शाके-१६४८, सम्वत् २०८३, अशुद्धसमयः, ग्रीष्म ऋतुः सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, पश्चिमे कालः

४१

प्र. ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

दिनांक: १७ मई से ३१ मई २०२६ ई०

अतिगंडयोगः ५२।१८, पूर्वदक्षिण यात्रा द्वितीयायां, विश्व दूर संचार दिवसः अग्निवासः, मृत्युयोगः

चन्द्रदर्शनं, पूर्वाविना यात्रा तृतीयायां, शिववासः रा० ८।५२ या०, मृत्युयोगः रा० ८।५२ या०, सर्वार्थसिद्धियोगः

भ० ४६।४१ उ०, सूतीस्नानं, श्री गणेश ४ व्रतं, उत्तराविना यात्रा मृगशिरसि, द०ति० ३२।४७ उ०, अग्निवासः, सि०यो० सं०-६।२७ या०

द०ति० २६।५५ या०, भ० ५६।४४ या०, पश्चिम दक्षिण यात्रा, मिथुनस्थे चन्द्रे पंचम्यां ततो पश्चिमयात्रा, शिववासः दि० ४।४ उ०

पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ ततो दक्षिणाविना यात्रा, आतंकवाद विरोधी दिवस, अग्निवासः, शिववासः, सि०यो० दि०-१।५१ या०, सर्वार्थसिद्धियोगः, गुरुपुष्ययोग दि० ६।३४ उ०

गं०-५६।२८ उ०, पश्चिमविनायात्रा पुष्ये, (६-७) एकोदिष्टं, शिववासः दि० ११।५३ या०, सि०यो० दि० ११।५३ या० ततो मृत्युयोगः सर्वार्थसिद्धियोगः दि० ८।२१ या०

भ० १२।२३ उ० ४०।५१ या०, गं० १४।२८ या०, पश्चिमोदितो बुधः १७।२६, अग्निवासः

पूर्वोत्तरयात्रा अष्टमी, पूर्वफाल्गुन्यां, राष्ट्रमंडल दिवसः, शिववासः, दि० ८।५६ उ०, अग्निवास दि० ८।५६ उ०, सि०यो०दि० ८।५६ या०

रोहिण्यां रविः-४१।२६, शिववासः दि० ८।६ या० अग्निवासः दि० ८।६ या०

सूतीस्नानं, गंगादशहरा, पृथिव्यां गंगावतरणं, भ०-५६।२३ उ०, अग्निवासः दि० ७।४८ उ०, मृत्युयोगः दि० ७।४८ उ०

व्यतीपातयोगः ५८।५०, कमला एकादशी व्रतं सर्वेषां, भ० ६।४५ या०, पूर्वदक्षियात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणाविनायात्रा, अग्निवास दि० ७।५८ या० शिववासः दि० ७।५८ उ०, सि०यो० दि० ७।५८ उ०, सर्वार्थसिद्धियोग दि० ७।५६ या०

तिलेन पारणं, प्रदोष-१३ व्रतं, पश्चिम यात्रा, शिववासः, अग्निवासः दि० ८।४० उ०

प्रदोष-१४ व्रतं, मिथुनेबुधः-२८।३३, दक्षिणयात्रा स्वात्यां, शिववासः दि० ६।४७ या०, अग्निवासः दि० ६।४७ या०

कर्के गुरुः १४।१०, भ० १५।१३ उ० ४७।३२ या०, पूर्णिमा व्रतं, (१५) एकोदिष्टं, अग्निवासः दि० ११।२१ उ०, सि०यो० दि०-११।२१ या०

ज्येष्ठी-१५, स्नानदानादिः, सुतीस्नानं, उत्तरयात्रा पूर्णिमायां, शिववासः दि० १।१० उ०

प्र. ज्ये. शु. ७ शु. व. ८।४०।११।५८  
अयनांशाः २२।५४।२०

|        |   |        |    |     |    |    |
|--------|---|--------|----|-----|----|----|
| ३      | २ | सू.बु. | १  | १२  | श. | ११ |
| गु.शु. | ४ | मं.    | १० | रा. |    |    |
| ५      | ६ | चं.    | ७  | ८   |    |    |
| कै.    |   |        |    |     |    |    |

प्र. ज्ये. शु. १३ शु. व. ८।४०।१२।५  
अयनांशाः २२।५४।२१

|        |   |     |    |     |    |    |
|--------|---|-----|----|-----|----|----|
| ३      | २ | सू. | १  | १२  | श. | ११ |
| गु.शु. | ४ | मं. | १० | रा. |    |    |
| ५      | ६ | चं. | ७  | ८   |    |    |
| कै.    |   |     |    |     |    |    |

दशपापानि- पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वतः। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्। अदत्तानामुपादानं

हिंसा चैवाविधानतः परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविध तथा। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्ट चिन्तनम्।

वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्। एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि। दशपापहरा यस्मात् तस्मात्

दशहरा स्मृता।

विविधःज्येष्ठमासे दानवस्तुनि- वामनपुराणे- उदक्कुम्भं जलं धेनुस्तालवृत्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थ

प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च।

गंगादशहरा वाराहपुराणे- दशमीशुक्लपक्षेतु ज्येष्ठेमासे कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यतः स्वर्गाद्धिस्तर्क्षे च सरिद्वारा

हरते दशपापानि तस्मात् दशहरा स्मृता।

दशहरायां दशयोगाः, स्कन्दे- ज्येष्ठे मासे सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतिपाते गानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे

रवौ। दशयोगे नरःस्नात्वा सर्व पापैः प्रमुच्यते। कुजबुधयोरत्र कल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाधिक्ये फलाधि

क्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या।

| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराश्यः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|--------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | रवि    | ४५।०३          | रा.११।२०       | कृ.२६।३३             | दि.३।५६               | शो.४।५३        | कि.१८।०१         | वृष          | १।०२।२७।३१               | ३३।२३    | ५।१६                 | ६।४१                  | ३०         | २          | १७         |
| २     | सोम    | ३८।५३          | रा.८।५२        | रो.२२।३०             | दि.२।१६               | सु.४६।४२       | बा.११।५८         | वृ.रा.१।२६   | १।०३।२५।०८               | ३३।२६    | ५।१६                 | ६।४१                  | १          | ३          | १८         |
| ३     | मंगल   | ३२।४७          | सं.६।२७        | मृग.१८।१६            | दि.१२।३८              | धृ.४२।०७       | तै.५।५०          | मिथुन        | १।०४।२२।४५               | ३३।२६    | ५।१८                 | ६।४२                  | २          | ४          | १९         |
| ४     | बुध    | २६।५५          | दि.४।०४        | आ.१४।२१              | दि.११।०२              | शू.३४।४४       | वि.२६।५५         | मि.रा.३।५७   | १।०५।२०।२२               | ३३।३२    | ५।१८                 | ६।४२                  | ३          | ५          | २०         |
| ५     | गुरु   | २१।२५          | दि.१।५१        | पुन.१०।४३            | दि.६।३४               | गं.२७।४१       | बा.२१।२५         | कर्क         | १।०६।१७।५६               | ३३।३४    | ५।१७                 | ६।४३                  | ४          | ६          | २१         |
| ६     | शुक्र  | १६।३०          | दि.११।५३       | पु.७।३६              | दि.८।२१               | वृ.२१।१२       | तै.१६।३०         | कर्क         | १।०७।१५।३६               | ३३।३६    | ५।१७                 | ६।४३                  | ५          | ७          | २२         |
| ७     | शनि    | १२।२५          | दि.१०।१४       | श्ले.५।२७            | दि.७।२७               | ध्रु.१५।२०     | व.१२।२५          | क.दि.७।२७    | १।०८।१२।५६               | ३३।३८    | ५।१६                 | ६।४४                  | ६          | ८          | २३         |
| ८     | रवि    | ६।१७           | दि.८।५६        | मघा.४।००             | दि.६।५२               | व्या.१०।१५     | बव.६।१०          | सिंह         | १।०९।१०।२२               | ३३।३९    | ५।१६                 | ६।४४                  | ७          | ९          | २४         |
| ९     | सोम    | ७।१२           | दि.८।०६        | पू.फ.३।४०            | दि.६।४४               | ह.६।००         | कौ.७।१२          | सिं.दि.१२।५० | ०।१०।०७।५८               | ३३।४०    | ५।१६                 | ६।४४                  | ८          | १०         | २५         |
| १०    | मंगल   | ६।२१           | दि.७।४८        | उ.फ.४।३४             | दि.७।०६               | व.२।४७         | गर.६।२१          | कन्या        | १।११।०५।०६               | ३३।४१    | ५।१६                 | ६।४४                  | ९          | ११         | २६         |
| ११    | बुध    | ६।४५           | दि.७।५८        | हस्त.६।४०            | दि.७।५६               | सि.०।३१        | वि.६।४५          | क.रा.८।३७    | १।१२।०२।२८               | ३३।४२    | ५।१६                 | ६।४४                  | १०         | १२         | २७         |
| १२    | गुरु   | ८।३२           | दि.८।४०        | चि.१०।०६             | दि.६।१७               | व.५८।५६        | वा.८।३२          | तुला         | १।१२।५६।५०               | ३३।४३    | ५।१५                 | ६।४५                  | ११         | १३         | २८         |
| १३    | शुक्र  | ११।१६          | दि.६।४७        | स्वा.१४।३६           | दि.११।०५              | परि.५६।३१      | तै.२१।१६         | तुला         | १।१३।५७।१२               | ३३।४४    | ५।१५                 | ६।४५                  | १२         | १४         | २९         |
| १४    | शनि    | १५।१४          | दि.११।२१       | वि.२०।०८             | दि.१।२८               | शि.६०।००       | व.१५।१४          | तु.दि.६।४५   | १।१४।५४।२५               | ३३।४६    | ५।१५                 | ६।४५                  | १३         | १५         | ३०         |
| १५    | रवि    | १६।५१          | दि.१।१०        | अनु.२६।२०            | दि.३।४६               | शि.०।४३        | बव.१६।५१         | वृश्चिक      | १।१५।५१।३८               | ३३।४८    | ५।१४                 | ६।४५                  | १४         | १६         | ३१         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

| तिथयः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क. अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|-----------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. रवि          | ०।३।१४।१५        | १।८।५५।१३       | २।२७।३७।०७       | ३।५।२१।४४         | ११।१५।५३।५८     | १०।२३।०४।४       | ४६।४१    | ५।१६            | ६।५६            | ८।५८             | ११।१५            | १३।३४              | १५।४७               | १८।४               | २०।२४            | २२।४०           | २४।४२           | २।२२             | ३।४६             |
| २. सोम          | ०।३।५८।२८        | १।१०।३७।०६      | २।२७।४७।४४       | ३।६।३२।५६         | ११।१६।०।५१      | १०।१२।५७।३३      | ४६।४३    | ५।१२            | ६।५२            | ८।५४             | ११।११            | १३।३०              | १५।४३               | १८।०               | २०।२०            | २२।३६           | २४।३८           | २।१८             | ३।४५             |
| ३. मंगल         | ०।४।४२।४१        | १।१२।१६।०२      | २।२७।५८।२१       | ३।७।४४।८          | ११।१६।७।४४      | १०।१२।५४।२२      | ४६।४५    | ५।८             | ६।४८            | ८।५०             | ११।७             | १३।२६              | १५।३६               | १७।५६              | २०।१६            | २२।३२           | २४।३४           | २।१४             | ३।४१             |
| ४. बुध          | ०।५।२६।५४        | १।१४।००।५७      | २।२८।८।५७        | ३।८।५५            | ११।१६।१४।३७     | १०।१२।५१।११      | ४६।४६    | ५।४             | ६।४४            | ८।४६             | ११।३             | १३।२२              | १५।३५               | १७।५२              | २०।१२            | २२।२८           | २४।३०           | २।१०             | ३।३७             |
| ५. गुरु         | ०।६।११।०७        | १।१५।४२।५२      | २।२८।१६।३३       | ३।१०।६।३०         | ११।१६।२१।२६     | १०।१२।४८।००      | ४६।४७    | ५।०             | ६।४०            | ८।४२             | १०।५६            | १३।१८              | १५।३१               | १७।४८              | २०।८             | २२।२४           | २४।२६           | २।६              | ३।३३             |
| ६. शुक्र        | ०।६।५५।२०        | १।१७।२४।३७      | २।२६।३०।६        | ३।११।१७।४१        | ११।१६।२०।२१     | १०।१३।४४।४८      | ४६।४८    | ४।५६            | ६।३६            | ८।३८             | १०।५५            | १३।१४              | १५।२७               | १७।४४              | २०।४             | २२।२०           | २४।२२           | २।२              | ३।२६             |
| ७. शनि          | ०।७।४०।२४        | १।१६।१७।०४      | २।२८।४१।२३       | ३।१२।२८।२७        | ११।१६।३४।१४     | १०।१२।४१।३८      | ४६।४९    | ४।५२            | ६।३२।           |                  |                  |                    |                     |                    |                  |                 |                 |                  |                  |



| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | सोम    | २४।५३          | दि.३।११        | ज्ये.३२।५५           | सं.६।२४               | सि.२।१७        | कौ.२४।५३         | वृ.सं.६।२४  | १।१६।४८५१                | ३३।५०    | ५।१४                 | ६।४६                  | १५         | १७         | १ जून      |
| २     | मंगल   | २६।५७          | सं.६।१३        | मूल.३६।२३            | रा.८।५६               | सा.३।५६        | गर.२६।५७         | धनु         | १।१७।४३।०४               | ३३।५१    | ५।१४                 | ६।४६                  | १६         | १८         | २          |
| ३     | बुध    | ३४।३०          | रा.७।०२        | पू.षा.४५।२१          | रा.११।२२              | शुभ५।२१        | व.२।१३           | धनु         | १।१८।४३।१७               | ३३।५२    | ५।१४                 | ६।४६                  | १७         | १९         | ३          |
| ४     | गुरु   | ३७।०९          | रा.८।०५        | उ.षा.५०।३४           | रा.१।२७               | शु.६।२०        | बव.५।४९          | ध.दि.५।५२   | ४।१६।४०।२९               | ३३।५३    | ५।१३                 | ६।४७                  | १८         | २०         | ४          |
| ५     | शुक्र  | ४१।०१          | रा.९।३७        | श्र.५४।३९            | रा.३।०५               | ब्र.६।३४       | कौ.९।०५          | मकर         | १।२०।३७।४१               | ३३।५४    | ५।१३                 | ६।४७                  | १९         | २१         | ५          |
| ६     | शनि    | ४२।४६          | रा.१०।१९       | धनि.५७।३८            | रा.४।१६               | ऐं.५।५६        | गर.११।५३         | म.दि.३।४०   | १।२१।३४।४६               | ३३।५६    | ५।१३                 | ६।४७                  | २०         | २२         | ६          |
| ७     | रवि    | ४२।५२          | रा.१०।२२       | शत.५९।१८             | रा.४।५६               | वै.४।४८        | वि.१२।४९         | कुंभ        | १।२२।३१।५१               | ३३।५७    | ५।१३                 | ६।४७                  | २१         | २३         | ७          |
| ८     | सोम    | ४१।४९          | रा.९।५६        | पू.भा.५९।४५          | रा.शे.५।०६            | वि.१।४३        | बा.१२।२०         | कु.रा.११।०३ | १।२३।२८।५६               | ३३।५८    | ५।१२                 | ६।४८                  | २२         | २४         | ८          |
| ९     | मंगल   | ३९।३४          | रा.९।०२        | उ.भा.५९।०१           | रा.४।४८               | आ.५३।३०        | तै.१०।४१         | मीन         | १।२४।२६।०१               | ३३।५९    | ५।१२                 | ६।४८                  | २३         | २५         | ९          |
| १०    | बुध    | ३६।१६          | रा.७।४२        | रेवती.५७।१६          | रा.४।०६               | सौ.४८।०७       | व.७।३५           | मी.रा.४।०६  | १।२५।२३।०६               | ३४।००    | ५।१२                 | ६।४८                  | २४         | २६         | १०         |
| ११    | गुरु   | ३२।०६          | सं.६।०२        | अ.५४।४२              | रा.३।०५               | शो.४२।०१       | बब.४।११          | मेष         | १।२६।२०।११               | ३४।०१    | ५।१२                 | ६।४८                  | २५         | २७         | ११         |
| १२    | शुक्र  | २७।०२          | दि.३।५३        | भर.५१।२७             | रा.१।४७               | अ.३५।२१        | तै.२७।०२         | मेष         | १।२७।१७।१६               | ३४।०२    | ५।१२                 | ६।४८                  | २६         | २८         | १२         |
| १३    | शनि    | २१।२७          | दि.१।४६        | कृ४७।३८              | रा.१२।१४              | सु.२८।१९       | व.२१।२७          | मे.दि.७।२३  | १।२८।१४।१८               | ३४।०४    | ५।११                 | ६।४९                  | २७         | २९         | १३         |
| १४    | रवि    | १५।२९          | दि.११।२३       | रो.४३।३४             | रा.१०।३७              | धृ.२०।४२       | श.१५।२९          | वृष         | १।२९।११।२०               | ३४।०५    | ५।११                 | ६।४९                  | २८         | ३०         | १४         |
| ३०    | सोम    | ९।१७           | दि.८।५४        | मृ.३९।२३             | रा.८।५६               | शू.२३।०३       | ना.८।५४          | वृ.दि.९।४६  | २।००।०८।२२               | ३४।०६    | ५।११                 | ६।४९                  | २९         | १          | १५         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

दैनिकलग्नसारणी चक्रम्

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क. अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. सोम           | ०।१४।२४।३९       | २।५।९।५४        | ३।०।२४।११        | २।२३।२।२६         | ११।१७।२५।४७     | १०।१२।१२।५५      | ४६।५५    | ४।१७            | ५।५७            | ७।५९             | १०।१६            | १२।३५              | १४।५०               | १७।५               | १९।२५            | २१।४१           | २३।४३           | १।२३             | २।५०             |
| २. मंगल          | ०।१५।०९।१६       | २।६।४२।३७       | ३।०।३५।५९        | २।२४।१२।१७        | ११।१७।३१।१३     | १०।१२।९।४८       | ४६।५६    | ४।१३            | ५।५४            | ७।५६             | १०।१३            | १२।३२              | १४।४७               | १७।२               | १९।२२            | २१।३८           | २३।४०           | १।२०             | २।४७             |
| ३. बुध           | ०।१५।०५।५३       | २।८।१५।२०       | ३।०।४७।४७        | २।२५।१२।१८        | ११।१७।३६।३९     | १०।१२।६।३७       | ४६।५७    | ४।९             | ५।५०            | ७।५२             | १०।९             | १२।२८              | १४।४३               | १६।५८              | १९।१८            | २१।३४           | २३।३६           | १।१६             | २।४३             |
| ४. गुरु          | ०।१६।३८।३०       | २।९।४८।०३       | ३।०।५९।३५        | २।२६।३२।०९        | ११।१७।४२।०५     | १०।१२।३।२६       | ४६।५७    | ४।५             | ५।४६            | ७।४८             | १०।५             | १२।२४              | १४।३९               | १६।५४              | १९।१४            | २१।३०           | २३।३२           | १।१२             | २।३९             |
| ५. शुक्र         | ०।१७।२३।६        | २।११।२०।४६      | ३।१।११।२३        | २।२७।४२।००        | ११।१७।४७।३१     | १०।१२।४४।५६      | ४६।५७    | ४।२             | ५।४३            | ७।५४             | १०।२             | १२।२०              | १४।३५               | १६।५०              | १९।१०            | २१।२७           | २३।२९           | १।९              | २।३६             |
| ६. शनि           | ०।१८।७।२३        | २।१२।३६।३२      | ३।१।२३।३८        | २।२८।५१।५२        | ११।१७।५२।२६     | १०।११।५७।४       | ४६।५८    | ३।५९            | ५।४०            | ७।४२             | ९।५९             | १२।१७              | १४।३१               | १६।४६              | १९।६             | २१।२४           | २३।२६           | १।६              | २।३३             |
| ७. रवि           | ०।१८।५१।४०       | २।१३।५२।१८      | ३।१।३५।५३        | ३।०।०१।४४         | ११।१७।५७।२१     | १०।११।५३।५३      | ४६।५९    | ३।५६            | ५।३७            | ७।३९             | ९।५६             | १२।१४              | १४।२७               | १६।४३              | १९।३             | २१।२१           | २३।२३           | १।३              | २।३०             |
| ८. सोम           | ०।१९।३५।५७       | २।१५।८।४        | ३।१।४८।८         | ३।१।११।३६         | ११।१८।०२।१६     | १०।११।५०।४२      | ४७।००    | ३।५३            | ५।३४            | ।३६              | ९।५३             | १२।११              | १४।२५               | १६।४०              | १९।०             | २१।१८           | २३।२०           | १।००             | २।२७             |
| ९. मंगल          | ०।२०।१९।१४       | २।१६।२३।५०      | ३।२।००।२३        | ३।२।२१।२७         | ११।१८।०७।११     | १०।११।४७।३१      | ४७।०१    | ३।५०            | ५।३१            | ७।३३             | ९।५०             | १२।८               | १४।२२               | १६।३७              | १८।५७            | २१।१५           | २३।१७           | २४।५७            | २।२४             |
| १०. बुध          | ०।२१।३।३१        | २।१७।३९।३६      | ३।२।१२।३८        | ३।३।३१।१८         | ११।१८।१२।६      | १०।११।४४।२०      | ४७।०१    | ३।४७            | ५।२८            | ७।३०             | ९।४७             | १२।५               | १४।१९               | १६।३४              | १८।५४            | २१।१२           | २३।१४           | २४।५४            | २।२१             |
| ११. गुरु         | ०।२१।४८।४८       | २।१८।५५।२२      | ३।२।२४।५२        | २।४।४१।०९         | ११।१८।१७।१      | १०।११।४१।०९      | ४७।०१    | ३।४४            | ५।२५            | ७।२७             | ९।४४             | १२।२               | १४।१६               | १६।३१              | १८।५१            | २१।९            | २३।११           | २४।५१            | २।१८             |
| १२. शुक्र        | ०।२२।३३।४        | २।२०।११।०७      | ३।२।३७।६         | ३।५।५१।००         | ११।१८।२१।५६     | १०।११।३१।५९      | ४७।०१    | ३।४१            | ५।२२            | ७।२४             | ९।४१             | ११।५९              | १४।१३               | १६।२८              | १८।४८            | २१।६            | २३।८            | २४।४८            | २।१५             |
| १३. शनि          | ०।२३।१६।५०       | २।२०।५८।७       | ३।२।४९।४१        | ३।६।५९।४४         | ११।१८।२६।१८     | १०।११।३४।४७      | ४७।०२    | ३।३८            | ५।१९            | ७।२१             | ९।३८             | ११।५६              | १४।१०               | १६।२५              | १८।४५            | २१।३            | २३।५            | २४।४५            | २।१२             |
| १४. रवि          | ०।२४।०।३६        | २।२१।४५।७       | ३।३।०२।१६        | ३।८।०८।२८         | ११।१८।३०।४०     | १०।११।३१।३६      | ४७।०३    | ३।३५            | ५।१६            | ७।१८             | ९।३५             | ११।५३              | १४।७                | १६।२२              | १८।४२            | २१।००           | २३।२            | २४।४२            | २।९              |
| ३०. सोम          | ०।२४।४४।२२       | २।२२।३२।०७      | ३।३।१४।५१        | ३।९।१६।१२         | ११।१८।३५।०२     | १०।११।२८।२५      | ४७।०४    | ३।३१            | ५।१२            | ७।१४             | ९।३१             | ११।४९              | १४।३                | १६।१८              | १८।३८            | २०।५६           | २२।५८           | २४।३८            | २।५              |

द्वि. ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४८, सम्वत् २०८३, अशुद्ध अमान्तात् शुद्धसमयः ग्रीष्मऋतु, सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, पश्चिमे कालः

दिनांकः ०१ जून से १५ जून २०२६ ई०

जून मासारम्भः, गं-२६।५५ उ० ४१।५५ या०, पश्चिमोत्तर यात्रा प्रतिपदा, शिववासः दि० ३।११ या०, अग्निवासः सिद्धियोगः दि० ३।११ या० ततो मृत्युयोगः

पूर्वयात्रा, सिद्धियोगः सं० ५।१३ उ०

भ० २।१३ उ० ३४।३० या०, द०ति०-३४।३० उ०, गणेश४व्रतं, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा० ७।२ या०

द०ति०-३७।०९ या०, दक्षिणाविना यात्रा श्रवणयां, मृत्युयोगः रा० ८।५ या० ततो सिद्धियोगः

भदवारम्भः रा० ३।५ उ०, पर्यावरण दिवसः, पश्चिमाविना यात्रा, शिववासः रा० ९।३७ या०, अग्निवासः, सर्वार्थ सिद्धियोगः

भ०-४२।४६ उ०, पश्चिमयात्रा कुंभस्थेचन्द्रे

भ०-१२।४९ या०, कर्कशुक्रः-४५।२९, विश्व खाद्य सुरक्षा दिवसः, अग्निवासः

प्रीतियोगः-५६।२२, मृगशिरायां रविः-३७।३७, पश्चिमयात्रा अष्टम्यां, शिववासः रा० ९।५६ या०

पश्चिम यात्रा रेवत्यां, अग्निवासः

भ०-७।३५ उ० ३७।१६ या०, भदवासमाप्तिः रा० ४।६ उ०, गं० ४५।१६ उ०, पश्चिमयात्रा रेवत्यां ततः उत्तराविनायात्रा

पद्मा एकादशी व्रतं सर्वेषां, सूतीस्नानं, गं०-०।१६ या०, दक्षिणाविना यात्राशिवन्यां, शिववासः, अग्निवासः सं०-६।२ या०, सर्वार्थसिद्धियोगः

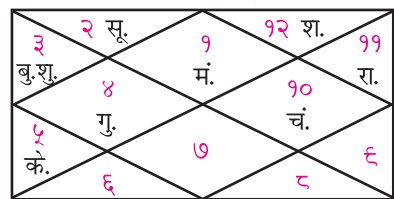
तिलेन पारणं, प्रदोष-१३ व्रतं, शिववासः दि० ३।५३ या०, अग्निवासः दि० ३।५३ उ०, मृत्युयोगः दि० ३।५३ या०

प्रदोष-१४ व्रतं, भ० २१।२७ उ० ४८।२८ या०, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, अग्निवासः दि० १।४६ या०, सि०यो० दि० १।४६ उ०

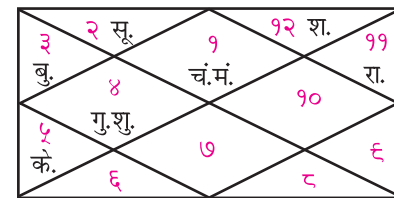
मासान्तः, (१४-३०) एकोदिष्टं, विश्व रक्तदान दिवसः, शिववासः दि०-११।२३ उ०

ज्येष्ठी-३०, स्नानदानादिः, मलमासान्तः, मिथुनेरविः-३७।५३, मु० ३० फलं साम्यंऽरीति संक्रान्ति पु०कालः दि०षं० १२ उ०, सोमवारी व्रतं तत पूजनं च, राजगीर मेला समाप्तिः, शुद्धारम्भः ९।१७ उ०,❖

द्वि. ज्ये. कृ. ५ शु. व. ८।४०।१२।१२  
अयनांशाः २२।५४।२१



द्वि. ज्ये. कृ. १२ शु. वं. ८।४०।१२।१९  
अयनांशाः २२।५४।२२



**विविध विषयाः-** प्रतिमासं सौर चान्द्रमासयोरन्तरं किञ्चिदधिक ५४ दण्डात्मकं भवति। तेनाधिशेषरूपमन्तरमिदं वर्धितं सत् सार्द्धवर्षद्वयासन्ने माससमं भवति। तेन मध्यमानेन् तदानीम्, स्पष्टमानेन् तु सप्तविंशतिमासादारभ्य षट्त्रिंशन्मासभ्यन्तरे मलमासे जायते। अतः कालाधिक्ये सत्यसङ्क्रान्तत्वं मलमासत्वमिति युक्तियुक्तम्।

**मलमासे कर्तव्याकर्तव्यविचारः-** नित्यनैमित्तिकं कुर्यात्प्रयतः सन् मलिम्लुचे। तीर्थस्नानं गजच्छायां प्रेतस्नानं तथैव च॥ गर्भेवाद्बुधकृत्ये च मृतानां पिण्डकर्मसु। सपिण्डीरणे चैव नाधिमासं विदुर्बुधाः॥ तत्र नित्यं सन्ध्यावन्दनादि, नैमित्तिकं ग्रहशान्त्यादिनिमित्तकस्नानादि, तीर्थस्नानं द्वितीयाद्यावृत्ति (अतएव मलिम्लुचे त्वनावृत्तं तीर्थस्नानमपि त्यजेदिति बृहस्पतिर्वचनं सङ्गच्छते), गजच्छायेति ग्रहण-निमित्तकश्राद्धम्, प्रेतस्नानं मरणनिमित्तक स्नानम्, गर्भाधान- जातकर्मणप्रयोगमृतनरपिण्डकर्मसपिण्डी करणानि च मलमोसऽपि कर्तव्यानि। एवञ्च मरणदिनमारभ्य द्वादशमासस्य मलमासत्वे प्रथम-वार्षिकं मलमास एवं। पुनश्च मरणमासस्य मलमासत्वे तत्र मृतानां वार्षिकं मलमास एव भवति। एतदतिरिक्तान्याग्न्याधान्यज्ञ-चूडाकरणोपनयनवेदारम्भ-समावर्तनमहादानवापी-कूपतडागदेवालायम्भ- प्रतिष्ठादिकर्माणि त्याज्यानि।

**मलमासे दानादि-** विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं हरिं कृष्णमधोक्षजम्। केशवं माधवं राममच्युतं पुरुषोत्तमम्॥ गोविन्दं वामनं श्रीशं श्रीकान्तं विश्वसाक्षिणम्। नारायणं मधुरिपुमनिरूढं त्रिविक्रमम्॥ वासुदेवं जगद्योनिमनन्तं शेषशायिनम्। सङ्कर्षणं च प्रद्युम्नं दैत्यारिं विश्वतोमुखम्॥ जनार्दनं धरावासं दामोदर मघार्दनम्। श्रीपतिञ्च यस्त्रिंशद्दुद्दिश्य प्रतिनामभिः त्रयस्त्रिंशदपूपानि कांस्यपात्रे निधाय च। सघृतं सहिरण्यं ब्राह्मणाय निवेदयेत्॥ पाण्डुरात्तेन लक्ष्मी पुत्रपौत्रादिसम्पदः॥ **मलमासे** राजिगिरौ वासः **गौरकानद्यां** (नेपालदेशे) स्नानं च महापुण्यप्रदमिति॥



| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | मंगल   | ३।०५           | प्रा.६।२५      | आर्द्रा.३५।२१        | सं.७।०७               | गं.५।२६        | बब.३।०५          | मिथुन       | २।०१।०५।२४               | ३४।०७    | ५।११                 | ६।४६                  | १          | २          | १६         |
| ३     | बुध    | ५।१३२          | रा.१।४७        | पुन.३१।३७            | सं.५।४६               | ध्रु.५।५५      | तै.४।१६          | मि.दि.१२।११ | २।०२।०२।२५               | ३४।०८    | ५।१०                 | ६।५०                  | २          | ३          | १७         |
| ४     | गुरु   | ४६।३२          | रा.११।४७       | पु.२८।२३             | दि.४।३१               | व्या.४४।१६     | व.१६।१२          | कर्क        | २।०२।५६।२६               | ३४।०६    | ५।१०                 | ६।५०                  | ३          | ४          | १८         |
| ५     | शुक्र  | ४२।२०          | रा.१०।०६       | श्ले.२५।५५           | दि.३।३२               | ह.३८।२२        | बब.१४।२६         | क.दि.३।३२   | २।०३।५६।२७               | ३४।१०    | ५।१०                 | ६।५०                  | ४          | ५          | १९         |
| ६     | शनि    | ३६।०३          | रा.८।४७        | मघा.२४।१६            | दि.२।५२               | व.३३।०८        | तै.१०।४१         | सिंह        | २।०४।५३।१८               | ३४।१०    | ५।१०                 | ६।५०                  | ५          | ६          | २०         |
| ७     | रवि    | ३६।५१          | रा.७।५४        | पू.फ.२३।३८           | दि.२।३७               | सि.२८।४५       | गर.७।५७          | सिं.रा.८।४१ | २।०५।५०।०६               | ३४।१०    | ५।१०                 | ६।५०                  | ६          | ७          | २१         |
| ८     | सोम    | ३५।५१          | रा.७।३०        | उ.फ.२४।१४            | दि.२।५२               | व्य.२५।२०      | वि.६।२१          | कन्या       | २।०६।४७।००               | ३४।१०    | ५।१०                 | ६।५०                  | ७          | ८          | २२         |
| ९     | मंगल   | ३६।०८          | रा.७।३७        | हस्त.२६।४३           | दि.३।५१               | व.२२।५५        | बा.६।००          | क.रा.४।२०   | २।०७।४३।५१               | ३४।१०    | ५।१०                 | ६।५०                  | ८          | ९          | २३         |
| १०    | बुध    | ३७।४६          | रा.८।१६        | चित्रा.२६।०६         | दि.४।५०               | प.२१।३५        | तै.६।५७          | तुला        | २।०८।४०।४१               | ३४।१०    | ५।१०                 | ६।५०                  | ९          | १०         | २४         |
| ११    | गुरु   | ४०।२८          | रा.९।२१        | स्वा.३३।२१           | सं.६।३०               | शि.२१।०३       | व.९।०७           | तुला        | २।०९।३७।३१               | ३४।१०    | ५।१०                 | ६।५०                  | १०         | ११         | २५         |
| १२    | शुक्र  | ४४।१६          | रा.१०।५२       | विशा.३८।४०           | रा.८।३८               | सि.२१।२८       | बव.१२।२२         | तु.दि.२।०६  | २।१०।३४।२१               | ३४।१०    | ५।१०                 | ६।५०                  | ११         | १२         | २६         |
| १३    | शनि    | ४८।५०          | रा.१२।४२       | अनु.४४।४२            | रा.११।०३              | सा.२२।३६       | कौ.१६।३३         | वृश्चिक     | २।११।३१।१२               | ३४।०८    | ५।१०                 | ६।५०                  | १२         | १३         | २७         |
| १४    | रवि    | ५१।५३          | रा.१।५६        | ज्ये.५१।१२           | रा.१।४०               | शुभ२४।०६       | गर.२०।२१         | वृ.रा.१।४०  | २।१२।२८।०३               | ३४।०७    | ५।११                 | ६।४६                  | १३         | १४         | २८         |
| १५    | सोम    | ५८।५८          | रा.४।४६        | मूल.५७।४२            | रा.४।१६               | शु.२५।४७       | वि.२५।२५         | धनु         | २।१३।३४।५४               | ३४।०६    | ५।११                 | ६।४६                  | १४         | १५         | २९         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क.अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|-----------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. मंगल          | ०।२५।२८।८        | २।२३।१६।७       | ३।३।२७।२५        | ३।१०।२५।५६        | ११।१८।३१।२४     | १०।११।२५।१४      | ४७।०५    | ३।२६            | ५।०६            | ७।११             | ६।२८            | ११।४६              | १४।०                | १६।१५              | १८।३५            | २०।५३           | २२।५५           | २४।३५            | २।२              |
| ३. बुध           | ०।२६।११।५४       | २।२४।६।७        | ३।३।३६।५६        | ३।११।३४।३६        | ११।१८।४३।४६     | १०।११।२२।०३      | ४७।०५    | ३।२६            | ५।६             | ७।८              | ६।२५            | ११।४३              | १३।५७               | १६।१२              | १८।३२            | २०।५०           | २२।५२           | २४।३२            | १।५६             |
| ४. गुरु          | ०।२६।५५।४०       | २।२४।५३।७       | ३।३।५२।३३        | ३।१२।४३।२२        | ११।१८।४८।०८     | १०।११।१८।५२      | ४७।०५    | ३।२२            | ५।२             | ७।४              | ६।२१            | ११।४०              | १३।५३               | १६।८               | १८।२८            | २०।४६           | २२।४८           | २४।२८            | १।५५             |
| ५. शुक्र         | ०।२७।३६।२५       | २।२५।४०।६       | ३।४।५।७          | ३।१३।५२।५         | ११।१८।५२।३०     | १०।११।१४।४२      | ४७।५     | ३।१८            | ४।५८            | ७।०              | ६।१७            | ११।३६              | १३।४६               | १६।४               | १।२४             | २०।४२           | २२।४४           | २४।२४            | १।५१             |
| ६. शनि           | ०।२८।२२।३७       | २।२५।५६।४१      | ३।४।१८।०५        | ३।१५।००।१७        | ११।१८।५६।०५     | १०।११।१२।३०      | ४७।५     | ३।१४            | ४।५४            | ६।५६             | ६।१३            | ११।३२              | १३।४५               | १६।०               | १८।२०            | २०।३८           | २२।४०           | २४।२०            | १।४७             |
| ७. रवि           | ०।२९।५।४६        | २।२५।५३।१६      | ३।४।३१।०३        | ३।१६।८।२७         | ११।१८।५९।४०     | १०।११।६।१६       | ४७।२     | ३।१०            | ४।५०            | ६।५२             | ६।९             | ११।२८              | १३।४१               | १५।५६              | १८।१६            | २०।३४           | २२।३६           | २४।१६            | १।४३             |
| ८. सोम           | ०।२९।४९।०१       | २।२५।५१।५१      | ३।४।४७।०१        | ३।१७।१६।३८        | ११।१९।०३।१५     | १०।११।६।८        | ४७।५     | ३।६             | ४।४६            | ६।४८             | ६।५             | ११।२४              | १३।३७               | १५।५२              | १८।१२            | २०।३०           | २२।३२           | २४।१२            | १।४०             |
| ९. मंगल          | १।०।३२।१३        | २।२६।६।२५       | ३।४।५६।५८        | ३।१८।२४।४६        | ११।१९।०६।५०     | १०।११।२।५७       | ४७।५     | ३।२             | ४।४२            | ६।४४             | ६।१             | ११।२०              | १३।३३               | १५।४८              | १८।८             | २०।२६           | २२।२८           | २४।८             | १।३६             |
| १०. बुध          | १।१।१५।२५        | २।२६।१२।५६      | ३।५।६।५५         | ३।१९।३२।५६        | ११।१९।१०।२५     | १०।१०।५९।४६      | ४७।५     | २।५८            | ४।३८            | ६।४०             | ८।५७            | ११।१६              | १३।२६               | १५।४४              | १८।४             | २०।२२           | २२।२४           | २४।४             | १।३२             |
| ११. गुरु         | १।१।५८।३६        | २।२६।१९।३३      | ३।५।२२।५३        | ३।२०।४१।०६        | ११।१९।१३।५६     | १०।१०।५६।३५      | ४७।५     | २।५४            | ४।३४            | ६।३६             | ८।५३            | ११।१२              | १३।२५               | १५।४०              | १८।०             | २०।१८           | २२।२०           | २४।०             | १।२८             |
| १२. शुक्र        | १।२।४।१।४७       | २।२६।२६।७       | ३।५।३५।४६        | ३।२१।४९।१६        | ११।१९।१७।३३     | १०।११।४३।५४      | ४७।५     | २।५०            | ४।३०            | ६।३२             | ८।४६            | ११।८               | १३।२२               | १५।३६              | १७।५६            | २०।१४           | २२।१६           | २३।५६            | १।२४             |
| १३. शनि          | १।३।२४।५६        | २।२५।५०।१६      | ३।५।१९।१७        | ३।२२।५६।४३        | ११।१९।२०।२०     | १०।१०।५०।१३      | ४७।४     | २।४७            | ४।२७            | ६।२६             | ८।४६            | ११।५               | १३।१६               | १५।३३              | १७।५३            | २०।११           | २२।१३           | २३।५३            | १।२१             |
| १४. रवि          | १।४।८।०५         | २।२५।१४।३१      | ३।६।०२।४५        | ३।२४।४।७          | ११।१९।२३।२७     | १०।१०।४७।२       | ४७।३     | २।४४            | ४।२४            | ६।२६             | ८।४३            | ११।२               | १३।१६               | १५।३०              | १७।५०            | २०।८            | २२।१०           | २३।५०            | १।१८             |
| १५. सोम          | १।४।५१।१४        | २।२४।३८।४३      | ३।६।१६।१२        | ३।२५।११।३१        | ११।१९।२३        | १०।१०।४३।२१      | ४७।२     | २।४०            | ४।२०            | ६।२२             | ८।३६            | १०।५८              | १३।१२               | १५।२६              | १७।४६            | २०।४            | २२।६            | २३।४६            | १।१४             |

द्वि. ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

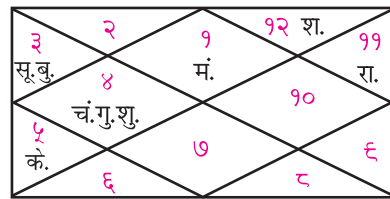
सन् १४३३ साल, शाकै-१६४८, सम्वत् २०८३, शुद्ध समयः ग्रीष्म ऋतुः, सौम्यगोलः, सोम्यायनम्, पश्चिमे कालः

दिनांकः १६ जून से २६ जून २०२६ ई०

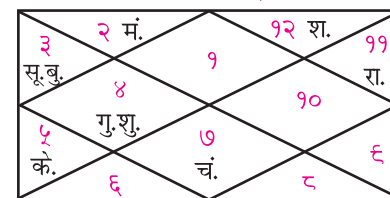
२ तिथि-५४।०२, वृद्धियोगः-५२।३३, मासादिः, चन्द्रदर्शनं, शिववासः प्रा० ६।२५ उ०, मृत्युयोगः प्रा० ६।२५ या० ततो अमृतयोगः  
रम्भातृतीया, पंचाग्नि व्रतं, मुंडनं, क्षत्रियवैश्योरूपनयनं, **देवादिप्रतिष्ठा**, अग्निवासः, मृत्युयोगः, महाराणाप्रताप जयंती  
भ०-१६।१२ उ० ४६।३२ या०, सरस्वती स्मृति दिवसः, श्री गणेश४व्रतं, मृत्युयोगः रा० ११।४७ या० ततो सिद्धियोगः, सर्वार्थसिद्धियोगः च गुरुपुष्ययोग दि० ४।३१ या०  
उपनयनं, विवाहः मघायां, गं०-१६।५५ उ० ३४।५५ या०, विन्ध्यवासिनी पूजनं, शिववासः, अग्निवासः  
उत्तरयात्रा पूर्व फाल्गुन्यां, विश्व शरणार्थी दिवसः, शिववासः रा० ८।४७ या०  
भद्रा०-३६।५१ उ०, पूर्वफाल्गुन्यां पूर्वदक्षिणयात्रा, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवसः  
भ०-६।२१ या०, **अर्द्रायां रविः-१३६।५८**, स्त्री योगः खण्ड वृष्टि वायु योगः, आर्द्रायाः प्रथमेपादेक्षीरम् स्नाति यो नरः। अपिशेषयुतस्तस्य तक्षकः  
वृषे भौमः २।४६, वक्रीबुधः ४१।४४, पूर्वदक्षिणयात्रा, शिववासः रा० ७।३७ या०  
गंगास्नानदानादिः, श्री रामेश्वर प्रतिष्ठा दिनं, मुंडनं, उपनयनं, विवाहः, गृहप्रवेश, अग्निवासः  
भ०-६।७ उ० ४०।२८ या०, **निर्जला-११ व्रतं सर्वेषां**, सूतीस्नानं, मुंडनं, उपनयनं, विवाहः, गृहारम्भः, गृहप्रवेशः, स्वात्यां  
**त्रिविक्रम्-१२ व्रतं**, तिलेन पारणं, विवाहः अनुराधायां, गृहप्रवेशः, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः रा० १०।५२ या०  
**प्रदोष-१३ व्रतं**, गृहप्रवेशः, पश्चिमोत्तर यात्रा, शिववासः रा० १२।४२ या०  
**प्रदोष-१४ व्रतं**, विवाहः पूर्णिमायां, भ० ५३।४८ उ०, गं०-४०।१२ उ० ५५।१२ या०, अग्निवासः  
ज्येष्ठी पूर्णिमां, स्नानदानादि, तिलदानं, साम्प्रतिकवैवस्वतमन्वादिः, श्री कवीर जयंती, विवाहो मूले, उत्तरयात्रा, गृहारम्भः, भ०-२६।१८ या०, उत्तरयात्रा

शारदाभुजङ्गप्रयाताष्टकम्

द्वि. ज्ये. शु. ५ शु. व. ८।४०।१२।२६  
अयनांशाः २२।५४।२३



द्वि. ज्ये. शु. १२ शु. व. ८।४०।१२।३३  
अयनांशाः २२।५४।२४



सुवक्षोजकुम्भां सुधापूर्णकुंभां प्रसादावलम्बां प्रपुण्यावलम्बाम्।  
सदास्येन्दुबिम्बां सदानोष्ठबिम्बां भजे शारदाम्बामजखं मदम्बाम्॥१॥

कटाक्षे दयादौ करे ज्ञानमुद्रां कलाभिर्विनिद्रां कलापैः सुभद्राम्।  
पुरस्त्रीं विनिद्रां पुरस्तुङ्गभद्रां भजे शारदाम्बामजखं मदम्बाम्॥२॥

ललामाङ्ङ्कफालां लसद्गानलोलां स्वभक्तैकपालां यशः श्रीकपोलाम्।  
करे त्वक्षमालां कनत्प्रत्नलोलां भजे शारदाम्बामजखं मदम्बाम्॥३॥

सुसीमन्तवेणीं दृशा निर्जितैणीं रमत्कीरवाणीं नमद्वज्रपाणीम्।  
सुधामन्थरास्यां मुदा चिन्त्यवेणीं भजे शारदाम्बामजखं मदम्बाम्॥४॥

सुशान्तां सुदेहां दृगन्ते कचान्तां लसत्सल्लताङ्गीमनन्तामचिन्त्याम्।  
स्मरेत्तापसैः सङ्गपूर्वस्थितां तां भजे शारदाम्बामजखं मदम्बाम्॥५॥

कुरङ्गे तुरङ्गे मृगेन्द्रे खगेन्द्रे मराले मदेभे महोक्षेऽधिरूढाम्।  
महत्या नवम्यां सदा सामरूपां भजे शारदाम्बामजखं मदम्बाम्॥६॥

ज्वलत्कान्तिवह्निं जगन्मोहनाङ्गीं भजे मानसाम्भोजसुभ्रान्तभृङ्गीम्।  
निजस्तोत्रसङ्गीतनृत्यप्रभाङ्गीम् भजे शारदाम्बामजखं मदम्बाम्॥७॥

भवाम्भोजनेत्राजसम्पूज्यमानां लसन्मन्दहासप्रभावक्वचिह्नाम्।  
चलच्चञ्चलाचारूताटङ्ङ्ककर्णो भजे शारदाम्बामजखं मदम्बाम्॥८॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य  
श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ शारदाभुजङ्गप्रयाताष्टक सम्पूर्णम्

| तिथयः | दिनानि | तिथि<br>दं. प. | तिथि<br>घ. मि. | नक्षत्राणि<br>दं. प. | नक्षत्राणि<br>घं. मि. | योगः<br>दं. प. | करणानि<br>दं. प. | चन्द्रराशयः | स्पष्टसूर्यः<br>राश्यादि | दिनमानम् | सूर्योदयः<br>घं. मि. | सूर्यास्तः<br>घं. मि. | रा०<br>ता० | ने०<br>ता० | अं०<br>ता० |
|-------|--------|----------------|----------------|----------------------|-----------------------|----------------|------------------|-------------|--------------------------|----------|----------------------|-----------------------|------------|------------|------------|
| १     | मंगल   | ६।००           | अहोरात्र       | पू.षा.६।००           | अहोरात्र              | ब्र.२७।१८      | बा.३१।०६         | धनु         | २।१४।२१।४५               | ३४।०५    | ५।११                 | ६।४६                  | १५         | १६         | ३०         |
| १     | बुध    | ३।२१           | प्रा.६।३१      | पू.षा.३।४८           | दि.६।४२               | ऐं.२८।२१       | कौ.३।२१          | ध.दि.१।१५   | २।१५।१८।३६               | ३४।०४    | ५।११                 | ६।४६                  | १६         | १७         | १ जुलाई    |
| २     | गुरु   | ७।१३           | दि.८।०४        | उ.षा.६।१३            | दि.८।५२               | वै.२८।४४       | गर.७।१३          | मकर         | २।१६।१५।२७               | ३४।०३    | ५।११                 | ६।४६                  | १७         | १८         | २          |
| ३     | शुक्र  | ६।५७           | दि.६।११        | श्र.१३।३३            | दि.१०।३७              | वि.२८।१४       | वि.६।५७          | म.रा.११।१६  | २।१७।१२।१८               | ३४।०२    | ५।१२                 | ६।४८                  | १८         | १९         | ३          |
| ४     | शनि    | ११।३६          | दि.६।५०        | धनि.१६।४७            | दि.११।५५              | प्री.२६।५०     | बा.११।३६         | कुंभ        | २।१८।०६।१५               | ३४।००    | ५।१२                 | ६।४८                  | १९         | २०         | ४          |
| ५     | रवि    | ११।५३          | दि.६।५७        | शत.१८।४४             | दि.१२।४२              | आ.२४।२४        | तै.११।५३         | कुंभ        | २।१९।०६।१२               | ३३।५९    | ५।१२                 | ६।४८                  | २०         | २१         | ५          |
| ६     | सोम    | १०।५३          | दि.६।३३        | पू.भा.१६।१४          | दि.१।५४               | सौ.२०।५५       | व.१०।५३          | कु.दि.६।५०  | २।२०।०३।०६               | ३३।५८    | ५।१२                 | ६।४८                  | २१         | २२         | ६          |
| ७     | मंगल   | ८।४०           | दि.८।४१        | उ.भा.१८।५४           | दि.१२।४७              | शो.१५।४३       | बव.८।४०          | मीन         | २।२१।००।०६               | ३३।५७    | ५।१३                 | ६।४७                  | २२         | २३         | ७          |
| ८     | बुध    | ५।२८           | दि.७।२४        | रेव.१७।२०            | दि.१२।०६              | अ.११।१६        | कौ.५।२८          | मी.दि.१२।०६ | २।२१।५६।०३               | ३३।५६    | ५।१३                 | ६।४७                  | २३         | २४         | ८          |
| ९     | गुरु   | १।१६           | प्रा.५।४३      | अ.१४।५९              | दि.११।१३              | सु.५।१८        | गर.१।१६          | मेष         | २।२२।५३।५९               | ३३।५४    | ५।१३                 | ६।४७                  | २४         | २५         | ९          |
| ११    | शुक्र  | ५०।४२          | रा.१।३१        | भरणी.११।५०           | दि.६।५८               | शू.५।१३३       | बव.२२।४०         | मे.दि.३।३६  | २।२३।५०।५५               | ३३।५२    | ५।१४                 | ६।४६                  | २५         | २६         | १०         |
| १२    | शनि    | ४४।४०          | रा.११।०६       | कृ.८।०७              | दि.८।२९               | गं.४४।०६       | कौ.१७।४१         | वृष         | २।२४।४७।५२               | ३३।५०    | ५।१४                 | ६।४६                  | २६         | २७         | ११         |
| १३    | रवि    | ३८।२९          | रा.८।३८        | रौ.४।०३              | दि.६।५१               | वृ.३६।२९       | गर.११।३४         | वृ.सं.५।१३  | २।२५।४४।४९               | ३३।४९    | ५।१४                 | ६।४६                  | २७         | २८         | १२         |
| १४    | सोम    | ३२।१६          | रा.६।०६        | आ.५५।४७              | रा.३।३३               | ध्रु.२८।५२     | वि.५।२२          | मिथुन       | २।२६।४१।४६               | ३३।४८    | ५।१४                 | ६।४६                  | २८         | २९         | १३         |
| ३०    | मंगल   | २६।१५          | दि.३।४५        | पुन.५१।५८            | रा.१।३८               | व्या.२१।२२     | ना.२६।१५         | मि.रा.८।२५  | २।२७।३८।४३               | ३३।४९    | ५।१५                 | ६।४५                  | २९         | ३०         | १४         |

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहाः दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च

| तिथियः<br>दिनानि | मंगल<br>राश्यादि | बुध<br>राश्यादि | गुरु<br>राश्यादि | शुक्र<br>राश्यादि | शनि<br>राश्यादि | राहु<br>राश्यादि | मिश्रमान | मे.अ.<br>घ. मि. | वृ.अ.<br>घ. मि. | मि.अं.<br>घ. मि. | क. अं.<br>घ. मि. | सिंह.अं.<br>घ. मि. | कन्या.अं.<br>घ. मि. | तुला.अं.<br>घ. मि. | वृ.अं.<br>घ. मि. | ध.अं.<br>घ. मि. | म.अं.<br>घ. मि. | कु.अं.<br>घ. मि. | मी.अं.<br>घ. मि. |
|------------------|------------------|-----------------|------------------|-------------------|-----------------|------------------|----------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|--------------------|---------------------|--------------------|------------------|-----------------|-----------------|------------------|------------------|
| १. मंगल          | १।५।३४।२३        | २।२४।०२।५५      | ३।६।२६।३९        | ३।२६।१८।५५        | ११।१६।२६।१९     | १०।१०।४०।४०      | ४७।०१    | २।३६            | ४।१६            | ६।१८             | ८।३५             | १०।५४              | १३।८                | १५।२२              | १७।४२            | २०।००           | २२।२            | २३।४२            | १।१०             |
| १. बुध           | १।६।१७।३२        | २।२३।२७।०७      | ३।६।४३।०६        | ३।२७।२६।१८        | ११।१६।३२।५      | १०।१०।३७।२८      | ४७।०१    | २।३२            | ४।१२            | ६।१४             | ८।३१             | १०।५०              | १३।४                | १५।१८              | १७।३८            | १९।५६           | २१।५८           | २३।३८            | १।६              |
| २. गुरु          | १।७।०।४०         | २।२२।५१।१०      | ३।६।५६।३३        | ३।२८।३३।४१        | ११।१६।३५।११     | १०।१०।३४।१८      | ४७।०१    | २।२८            | ४।८             | ६।१०             | ८।२७             | १०।४६              | १३।००               | १५।१४              | १७।३४            | १९।५२           | २१।५४           | २३।३४            | १।२              |
| ३. शुक्र         | १।७।४३।४८        | २।२२।१५।३३      | ३।७।१०।००        | ३।२६।४१।४         | ११।१६।३८।७      | १०।१०।३५।८       | ४७।१     | २।२५            | ४।५             | ६।७              | ८।२४             | १०।४२              | १२।५६               | १५।१०              | १७।३०            | १९।४८           | २१।५०           | २३।३०            | ००।५८            |
| ४. शनि           | १।८।२६।१         | २।२१।३१।२८      | ३।७।२३।२१        | ४।००।४७।२५        | ११।१६।३६।१३     | १०।१०।२७।५६      | ४७।०     | २।२१            | ४।१             | ६।३              | ८।२०             | १०।३८              | १२।५२               | १५।६               | १७।२६            | १९।४४           | २१।४६           | २३।२६            | ००।५४            |
| ५. रवि           | १।९।८।१७         | २।२०।४७।२३      | ३।७।३६।४२        | ४।१।५३।४६         | ११।१६।४०।१९     | १०।१०।२४।४५      | ४६।५९    | २।१७            | ३।५७            | ५।५९             | ८।१६             | १०।३४              | १२।४८               | १५।२               | १७।२२            | १९।४०           | २१।४२           | २३।२२            | ००।५०            |
| ६. सोम           | १।९।५०।३३        | २।२०।०३।१८      | ३।७।५०।०३        | ४।३।०।०७          | ११।१६।४१।२५     | १०।१०।२१।३४      | ४६।५८    | २।१४            | ३।५३            | ५।५५             | ८।१२             | १०।३०              | १२।४४               | १४।५८              | १७।१८            | १९।३६           | २१।३८           | २३।१८            | ००।४६            |
| ७. मंगल          | १।१०।३२।४८       | २।१६।१६।१३      | ३।८।२।२४         | ४।४।६।२७          | ११।१६।४२।३१     | १०।१०।१८।२३      | ४६।५७    | २।१०            | ३।४९            | ५।५१             | ८।८              | १०।२६              | १२।४०               | १४।५४              | १७।१४            | १९।३२           | २१।३४           | २३।१४            | ००।४२            |
| ८. बुध           | १।११।१५।०३       | २।१८।३५।८       | ३।८।१५।४४        | ४।५।१२।४७         | ११।१६।४३।३६     | १०।१०।१५।१२      | ४६।५६    | २।६             | ३।४५            | ५।७              | ८।४              | १०।२२              | १२।३६               | १४।५०              | १७।१०            | १९।२८           | २१।३०           | २३।१०            | ००।३८            |
| ९. गुरु          | १।११।५७।१८       | २।१७।५१।४       | ३।८।२६।०४        | ४।६।१६।०७         | ११।१६।४४।४१     | १०।१०।१२।०१      | ४६।५६    | २।३             | ३।४२            | ५।४४             | ८।१              | १०।१९              | १२।३३               | १४।४६              | १७।६             | १९।२४           | २१।२६           | २३।६             | ००।३४            |
| ११. शुक्र        | १।१२।३६।३६       | २।१७।७।००       | ३।८।४३।२४        | ४।७।२५।२७         | ११।१६।४५।४६     | १०।१०।८।५१       | ४६।५६    | २।००            | ३।३८            | ५।४०             | ७।५७             | १०।१५              | १२।२९               | १४।४२              | १७।२             | १९।२०           | २१।२२           | २३।२             | ००।३०            |
| १२. शनि          | १।१३।२१।३५       | २।१७।१४।२८      | ३।८।५७।१०        | ४।८।३०।२६         | ११।१६।४८।१४     | १०।१०।५।३६       | ४६।५५    | १।५६            | ३।३४            | ५।३६             | ७।५३             | १०।११              | १२।२५               | १४।३८              | १७।५८            | १९।१६           | २१।१८           | २२।५८            | ००।२६            |
| १३. रवि          | १।१४।३।३४        | २।१७।२१।६       | ३।९।१०।५५        | ४।९।३५।२५         | ११।१६।५०।४१     | १०।१०।२।२८       | ४६।५४    | १।५२            | ३।३०            | ५।३२             | ७।४९             | १०।७               | १२।२१               | १४।३४              | १६।५४            | १९।१२           | २१।१४           | २२।५५            | ००।२३            |
| १४. सोम          | १।१४।४५।३३       | २।१७।२६।२४      | ३।९।२४।४०        | ४।१०।४०।२४        | ११।१६।५३।८      | १०।९।५६।१७       | ४६।५३    | १।४९            | ३।२७            | ५।२९             | ७।४६             | १०।४               | १२।१८               | १४।३१              | १६।५१            | १९।९            | २१।११           | २२।५२            | ००।२०            |
| ३०.मंगल          | १।१५।२७।३२       | २।१७।३६।५२      | ३।९।३८।२५        | ४।११।४५।२३        | ११।१६।५५।३५     | १०।९।५६।६        | ४६।५२    | १।४६            | ३।२४            | ५।२६             | ७।४३             | १०।१               | १२।१५               | १४।२८              | १६।४८            | १९।६            | २१।८            | २२।४९            | ००।१७            |

**नैवेद्यक सम्बन्धः-** **गीता**२, अध्याय१२, श्लोक १३।। श्रीकृष्ण भगवान् कहै छथि, जो व्यक्ति हमर देल वस्तु हमरा अर्पण नहि कय स्वतः स्वयं भक्षण करैत छथि से चोर थिकाह। **ईष्टान्भोगान्** हि वो देवा दास्यन्ते यज्ञभाविताः। तैर्दानान्प्रदायैभ्यो जो भुंक्ते स्तेन एव सः।। यज्ञशिष्टाशिनः सन्तो मुच्यन्ते सर्वकिल्बिषैः। भुञ्जते ते त्वघं पापा ये पचन्त्यात्मकराणात्॥

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१९४८, सम्बत् २०८३, शुद्ध समयः सौम्यायानं, पश्चिमेकालः तां १२ अशुद्धः, ग्रीष्मर्तुः सौम्यगोलः सौम्यायनम्, पश्चिमे कालः

दिनांकः ३० जून से १४ जुलाई २०२६ ई०

विल्वमाषाढेत्यजेत्, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः  
जुलाई मासारम्भः, गृहारम्भः, विवाहः उत्तराषाढे, मुंडनं, कर्णवेध, पूर्वयात्रा प्रतिपदा, विश्व जनसंख्या दिवसः, शिववासः प्रा० ६।३१ या० सिद्ध यो० प्रा०-६।३१ उ०  
सुतीस्नानं, गृहारंभ, सौराठ ससौलयोः वैवाहिकसभारम्भः, विवाहः उत्तराषाढे केतूवेधात् मध्यमः, श्रवणायां, मुंडनं, कर्णवेध, दक्षिणांविनायात्रां अग्निवासः  
अंगार-४, भदवारम्भः दि० १०।३७ उ०, केतुवेधात् विवाहो मध्यमः श्रवणायां तृतीयायां, गृहारम्भः, मुंडनं, पश्चिमांविनायात्रा, शिववासः दि० ९६।११ उ०  
**मघायां सिंहं च शुक्रः ४।९**, गृहारम्भः पंचम्यां, पश्चिम यात्रा, मुंडनं, शिववासः, अग्निववासः, सि०यो० दि० ६।५० या० ततो मृत्युयोगः सर्वार्थसिद्धियोगः दि० ६।५० या०  
कर्मूले पुलिक मूल बन्धनं, शिववासः दि० ६।५७ उ०, मृ०यो० दि० ६।५७ उ०  
**पुनर्वसौ रविः-४।५८**, पातताप वृष्टियोगः, दक्षिणयात्रा कुंभस्थेचन्द्रेततः पश्चिमोत्तर यात्रा, विवाहः, उत्तरभाद्रे, अग्निवासः दि० ६।३३ या० मृत्युयोगः दि० ६।३३ उ०  
सूतीस्नानं, महेन्द्रसिंह धोनी जन्म दिवसः, शिववासः दि० ८।४१ उ०, अग्निवासः दि० ८।४१ उ०, सिद्धियोगः दि० ८।४१ उ०  
भदवा समाप्तिः १२।१ उ०, गं.-५।२० उ० २०।२१ या०, शिववासः दि० ७।२४ या०, अग्निवासः दि० ७।२४ या०, मृत्युयोगः दि० ७।२४ या०  
१० तिथि ५५।००, धृतियोगः-५३।२२, विवाहः अश्विन्यां, दक्षिणांविना यात्रा, अग्निवासः दि० ५।४३ उ०, सर्वार्थसिद्धियोगः दि० ११।१३ या० मृ०यो० प्रा०-५।४३ या० ततो सिद्धियोगः  
**योगिनी-११ व्रतं** स्मार्तानां, शिववासः, सिद्धियोगः  
**वैष्णवानामेकादशी व्रतं**, यवचूर्णेन पारणं, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, विश्व जनसंख्या दिवसः, शिववासः रा० ११।६ या०, अग्निवासः, सर्वार्थसिद्धियोगः दि०-८।२४ उ०  
भ०-३८।२९ उ०, **प्रदोष-१३ व्रतं**, कर्मपुलिक मूल बन्धनं, सूतीस्थानं, मृ०न० ५५।५०, क्षीणोगुरुः २३।५० उ० अशुद्धारम्भश्च विवाहो श० ८।३८ या०, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमांविनायात्रायाम् त्रयोदश्याम्❖  
भ०-५।२२ या०, सोमवारी व्रतं दि० ६।६ उ० ६।४६ यावत्, अग्निवासः  
आषाढी अमावस्यां, स्नानदानादि, त्र्यहो जन्मदिन कृत्यं, भोमवत्यमा, स्नान दानादि, कोटि सूर्य ग्रहण सम फलं, शिववासः दि० ३।४५ या०

आ. कृ. ८ शु. व. ८।४०।१२।४०  
अयनांशाः २२।५४।२५

३  
सू.बु.

२ मं.

१  
गु.शु.

५  
के.

२ मं.

१  
चं.

७

१२ श.

१०  
चं.

८

११  
रा.

६

आ. कृ. ११ शु. व. ८।४०।१२।४७  
अयनांशाः २२।५४।२६

३  
सू.बु.

२ मं.

१  
गु.

५  
शु.के.

२ मं.

१  
चं.

७

१२ श.

१०  
चं.

८

११  
रा.

६

अर्थात् यज्ञसँ शेष बाँचल अन्न खायबाला श्रेष्ठ पुरुष सब पापसँ मुक्त भऽ जाइत छथि। जे पापी अपन शरीर पोषणक हेतु पकबै छथि से पापकँ भक्षण छथि।

विधिविधः-ग्रहस्थितिवशने वृष्टिविचारः- बुधः शुक्र समीपस्थः करोत्येकार्णवा महीं। तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत्। पुरतः पृष्ठतो भानुःशुभा यदि समीपगाः। तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति न चेते प्रतिलोमगा। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने। संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते। उदयास्तगतः शुक्रः बुधश्च वृष्टिकारकः। चलत्यंगारके वृष्टिः ध्रुवावृष्टिश्शनैश्चरे। वारिपूर्णा महींकृत्वा पश्चात्संचरतेगुरुः । शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते।

सूर्यनक्षत्राणि- रोहिणी-मृगशिरा पूर्वोत्तरफल्गुनी-हस्त-चित्रा-स्वाती-विशाखा-अनुराधा-ज्येष्ठा-मूल-शतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत्। तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते। नक्षत्राणां

पुरुशादिसंज्ञा- मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आद्रार्दिदश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादि त्रीणि नपुंसकानि। तत्र पुंस्त्रीयोगे सृवृष्टिः, स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभावः।

भोजन विधिः- हस्त-पाद प्रक्षालन कय दुई बेरि आचमन कय भोजनक स्थानमे आसनपर बैसि जल लय चतुष्कोन मण्डल करी, तकर मध्यमे परसल अन्न हर्षपूर्वक देखि- **ॐ तेजोसि शुक्रमस्यमृतमसि धावनामासि प्रियन्देवानामन धृष्टन्देवयजमसि।** ई मन्त्र पढ़ि प्रणाम कय दहिना भागमे जाहि रूपँ कुलाचार हो तदनुसार नैवेद्य राखि उत्सर्ग करी, बहुत व्यक्ति ६ ठाम नैवेद्य राशि- **ॐ विष्णवे नमः, ॐ दुर्गादेव्यै नमः, ॐ गण्णतये नमः। ॐ इन्द्राय नमः, ॐ चन्द्राय नमः, ॐ अर्काय नमः, ॐ अग्नये नमः, ॐ ब्रह्माणे नमः, ॐ वसुभ्यो नमः।**

दहि मन्त्रें उत्सर्ग करैत छथि। **ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।** एहि मन्त्रें जलप्राशन कय-**ॐ प्रणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा।** एहि मन्त्रें पंचग्रास कय यथारुचि भोजन कय-**ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।** एहि मन्त्रें पुनः जलप्रशान करी। अतः पर उठि विशेष रूपें हस्त ओ मुखक प्रक्षालन कय दुई बेरि आचमन कए दहिना पैरक अंगुठाक मूल पर- **ॐ अंगुष्ठमात्रः पुरुषो अंगुष्ठं च समाश्रितः। ईशः सर्वस्य जगतः प्रभुः प्रीणातु विश्वभुक्।** एहि मन्त्रें जलप्रक्षेप कए- **ॐ विष्णुः समस्तेन्द्रियदेहिदेहे प्रधानभूतो भगवान्यथैकः। सत्येन तनन्मशेषमेतदारोग्यदं मे परिणाममेतु॥ ॐ विष्णुरातो यथैवात्रं परिणामञ्च वै यथा। सत्येन तेन मद्भुक्तं जीरूर्यत्वन्नमिदं तथौ।** एहि दुई मन्त्रें उदर स्पर्श कए मुखशुद्धि ताम्बूल



तिथयः

दिनानि

तिथि दं. प.

तिथि घ. मि.

नक्षत्राणि दं. प.

नक्षत्राणि घं. मि.

योगः दं. प.

करणानि दं. प.

चन्द्रराश्यः

स्पष्टसूर्यः राश्यादि

दिनमानम्

सूर्योदयः घं. मि.

सूर्यास्तः घं. मि.

रा० ता०

ने० ता०

अं० ता०

१

बुध

२०।३६

दि.१।३१

पुष्य.४८।३४

रा.१२।४१

ह.१४।१०

बव.२०।३६

कर्क

२।२८।३५।३६

३३।४६

५।१५

६।४५

१

३१

१५

२

गुरु

१५।३१

दि.११।२७

श्ले.४५।५३

रा.११।३६

व.७।२७

कौ.१५।३१

क.रा.११।३६

२।२६।३२।३५

३३।४५

५।१५

६।४५

२

३२

१६

३

शुक्र

११।१६

दि.६।४५

मघा.४४।०४

रा.१०।५३

सि.१।२२

गर.११।१६

सिंह

३।००।२६।३१

३३।४४

५।१५

६।४५

३

१

१७

४

शनि

७।५४

दि.८।२६

पू.फ.४३।११

रा.१०।३२

वृ.५१।२३

वि.७।५४

सिं.रा.४।३३

३।०१।२६।२१

३३।४२

५।१६

६।४४

४

२

१८

५

रवि

५।३४

दि.७।३०

उ.फ.४३।२६

रा.१०।४०

प.४७।३५

बा.५।३४

कन्या

३।०२।२३।११

३३।४०

५।१६

६।४४

५

३

१९

६

सोम

४।२८

दि.७।०४

हस्त४५।०३

रा.११।१८

शि.४५।१०

तै.४।२८

कन्या

३।०३।२०।०१

३३।३८

५।१७

६।४३

६

४

२०

७

मंगल

४।३७

दि.७।०८

चित्रा.४७।५०

रा.१२।२५

सि.४३।३३

व.४।३७

क.दि.११।५१

३।०४।१६।५१

३३।३७

५।१७

६।४३

७

५

२१

८

बुध

६।१०

दि.७।४५

स्वा.५१।४७

रा.२।००

सा.४२।५५

बव.६।१०

तुला

३।०५।१३।४०

३३।३६

५।१७

६।४३

८

६

२२

९

गुरु

८।४३

दि.८।४६

वि.५६।५०

रा.४।०१

शुभ४३।११

कौ.८।४३

तु.रा.६।२५

३।०६।१०।२६

३३।३५

५।१७

६।४३

९

७

२३

१०

शुक्र

१२।२८

दि.१०।१६

अनु.६०।००

अहोरात्र

शु.४४।१०

गर.१२।०८

वृश्चिक

३।०७।०७।१८

३३।३४

५।१७

६।४३

१०

८

२४

११

शनि

१७।००

दि.१२।०६

अनु.२।४३

प्रा.६।२७

ब्र.४५।३२

वि.१७।००

वृश्चिक

३।०८।०४।२३

३३।३१

५।१८

६।४२

११

९

२५

१२

रवि

२२।००

दि.२।०६

ज्ये.६।०६

दि.८।५८

ऐं.४७।१३

बा.२२।००

वृ.दि.८।५८

३।०६।०१।२८

३३।२८

५।१८

६।४२

१२

१०

२६

१३

सोम

२७।०१

दि.४।०७

मूल.१५।४१

दि.११।३५

वै.४८।४१

तै.२७।०६

धनु

३।०६।५८।३३

३३।२५

५।१८

६।४१

१३

११

२७

१४

मंगल

३१।३६

सं.६।००

पू.षा.२१।५३

दि.२।०५

वि.४६।४७

व.३१।३६

ध.रा.८।३६

३।१०।५५।३८

३३।२२

५।२०

६।४०

१४

१२

२८

१५

बुध

३५।३२

रा.७।३३

उ.षा.२७।२६

दि.४।१८

प्री.५०।१७

वि.३।३५

मकर

३।११।५२।४३

३३।१९

५।२०

६।४०

२५

१३

२९

तिथयः

दिनानि

तिथि दं. प.

तिथि घ. मि.

नक्षत्राणि दं. प.

नक्षत्राणि घं. मि.

योगः दं. प.

करणानि दं. प.

चन्द्रराश्यः

स्पष्टसूर्यः राश्यादि

दिनमानम्

सूर्योदयः घं. मि.

सूर्यास्तः घं. मि.

रा० ता०

ने० ता०

अं० ता०

१. बुध

१।१६।६।३१

१।१७।४४।२०

३।६।५२।१०

४।१२।५०।२२

११।१६।५८।२

१०।६।५५।५५

४६।४२

१।४३

३।२१

५।२३

७।४०

६।५८

१२।१२

१४।२५

१६।४५

१६।३

२१।५

२२।४६

००।१४

२. गुरु

१।१६।५१।३०

१।१७।५१।४८

३।१०।।५५

४।१३।५५।२०

११।२०।०।२६

१०।६।४६।४४

४६।५२

१।४०

३।१८

५।२०

७।३७

६।५५

१२।६

१४।२२

१६।४२

१६।००

२१।२

२२।४३

००।११

३. शुक्र

१।१७।३३।२६

१।१७।५६।१६

३।१०।१६।४०

४।१५।०।१८

११।२०।२।५६

१०।०६।४४।३४

४६।५२

१।३६

३।१४

५।१६

७।३४

६।५१

१२।५

१४।१८

१६।३८

१८।५६

२०।५८

२२।४०

००।८

४. शनि

१।१८।१४।५४

२।१८।१६।१६

३।१०।३३।०६

४।१६।४।१५

११।२०।३३।१६

१०।६।४३।२५

४६।५१

१।३२

३।१०

५।१२

७।३०

६।४७

१२।१

१४।१४

१६।३४

१८।५२

२०।५४

२२।३६

२४।४

५. रवि

१।१८।५६।१६

१।१८।३३।१६

३।१०।४६।३८

४।१७।८।१२

११।२०।३।४२

१०।६।४०।११

४६।५०

१।२८

३।६

५।८

७।२६

६।४३

११।५७

१४।१०

१६।३०

१८।४८

२०।५०

२२।३२

२४।००

६. सोम

१।१६।३७।४४

२।१८।५०।१६

३।११।०।०७

४।१८।१२।०

११।२०।४।५

१०।६।३७।०

४६।४६

१।२४

३।२

५।४

७।२२

६।३६

११।५३

१४।६

१६।२६

१८।४४

२०।४६

२२।२८

२३।५६

७. मंगल

१।२०।१६।०६

१।१६।०७।१६

३।११।१३।३६

४।१६।१६।६

११।२०।४।२८

१०।६।३३।४६

४६।४८

१।२०

२।५८

५।००

७।१८

६।३५

११।४६

१४।२

१६।२२

१८।४०

२०।४२

२२।२४

२३।५२

८. बुध

१।२१।०।३४

२।१६।२४।१६

३।११।२७।०५

४।२०।२०।३

११।२०।४।५१

१०।६।३०।३८

४६।४७

१।१६

२।५४

४।५६

७।१४

६।३१

११।४५

१३।५८

१६।१८

१८।३६

२०।३८

२२।२०

२३।४८

९. गुरु

१।२१।४१।५६

१।१६।४१।१६

३।११।४०।३४

४।२१।२४।००

११।२०।४।५१

१०।६।२७।२७

४६।४७

१।१२

२।५०

४।५२

७।१०

६।२७

११।४१

१३।५४

१६।१४

१८।३२

२०।३४

२२।१६

२३।४४

१०. शुक्र

१।२२।२३।२३

२।१६।५८।१५

३।११।५४।३

४।२२।२७।५७

११।२०।५।३६

१०।६।२४।२७

४६।४७

१।८

२।४६

४।४८

७।६

६।२३

११।३७

१३।५०

१६।१०

१८।२८

२०।३०

२२।१२

२३।४०

११. शनि

१।२३।४।२१

२।२१।४।४५

३।१२।७।२०

४।२३।२६।५३

११।२०।४।३५

१०।६।२१।५

४६।४५

१।४

२।४२

४।४४

७।२

६।१६

११।३३

१३।४६

१६।६

१८।२४

२०।२६

२२।८

२३।३६

१२. रवि

१।२३।४५।१६

२।२२।१०।१५

३।१२।२०।३६

४।२।३१।४६

११।२०।३।३४

१०।६।१७।५४

४६।४४

१।००

२।४८

४।४०

६।५८

६।१५

११।२६

१३।४२

१६।२

१८।२०

२०।२३

२२।४

२३।३२

१३. सोम

१।२४।२६।१७

२।२३।१५।४५

३।१२।३३।५२

४।२५।३३।४४

११।२०।३।३३

१०।६।१४।४३

४६।४२

००।५६

२।३४

४।३६

६।५४

६।१२

११।२५

१३।३८

१५।५८

१८।१६

२०।२०

२२।१

२३।२६

१४.मंगल

१।२५।७।१४

२।२४।२१।१४

३।१२।४७।८

४।२६।३५।३६

११।२०।२।३२

१०।६।११।३२

४६।४१

००।५२

२।३१

४।३३

६।५१

६।६

११।२२

१३।३५

१५।५५

१८।१३

२०।१७

२१।५८

२३।२६

१५. बुध

१।२५।४८।११

२।२५।२६।४३

३।१३।००।२४

४।२७।३७।३४

११।२०।२।३१

१०।६।८।२१

४६।३६

००।४८

२।२६

४।३०

६।४८

६।६

११।२६

१३।३६

१५।५५

१८।११

२०।१४

२१।५४

२३।२२

आषाढ शुक्ल पक्ष

सन् १४३३ साल, शाके-१६४८, सम्वत् २०८३, अशुद्धसमयः, ग्रीष्म ऋतुः ता १७ तः वर्षा ऋतुः सौम्यगोलः, सौम्यायनम्, ता. १७ तः याम्यायनम् पश्चिमे कालः

दिनांकः १५ जुलाई से २६ जुलाई २०२६ ई०

ग्रीष्म नवरात्रारम्भः, कलशस्थापनं, श्री दुर्गा पूजनोत्सवः, चन्द्रदर्शनं, पश्चिमास्त गुरुः २३।५०, शिववासः दि०-१।३१ उ०, अग्निवासः दि० १।१ उ० सिद्धियोगः दि० १।३१ उ०

श्री जगन्नाथ रथ यात्रोत्सवारम्भः, मासान्तः, रेमन्त पूजा, गं०-३६।५३ उ० ५३ या०, शिववासः दि०-११।२७ या०, अग्निवासः दि० ११।२७ या०

व्यतीपात योगः ५४।३४, कर्करविः १४।५०, मु० फलं याम्यायनसंक्रान्ति पुंदि० घं०-१२ उ०, द्वारकायां कुंभ योगः (१७-७-२०२६/१७-८-२०२६) अग्निवासः दि० ६।४५ उ०

सूतीस्नानं, दंति०-५।३४ उ०, शिववासः, अग्निवासः, मृत्युयोगः दि० ७।३० उ०

सूतीस्नानं, करमूले पुलिक मूल बंधनं, दंति०-५।३४



प्रथम लग्नसारणी  
इष्टार्काशयंतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतव्य  
यद्वाशिभागास्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात्

| अंश    | ०  | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|--------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| मेष    | २  | २  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ३  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  |
| ३      | ४७ | ५४ | ०१ | ०८ | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४६ | ५४ | ०३ | ११ | १९ | २८ | ३६ | ४४ | ५३ | ०१ | १० | १८ | २६ | ३५ | ४३ | ५१ | ०० | ०८ | १६ | २५ | ३३ | ४२ |
| ३८     | ०८ | २४ | ३६ | ४६ | ५२ | २८ | ४४ | ०० | २२ | ४४ | ०६ | २८ | ५० | १२ | ३४ | ५६ | १८ | ४० | ०२ | २४ | ४६ | ०८ | ३० | ५२ | १४ | ३६ | ५८ | २० | ४२ | ०४ |
| वृष    | ६  | ६  | ७  | ७  | ७  | ७  | ७  | ७  | ७  | ८  | ८  | ८  | ८  | ८  | ८  | ९  | ९  | ९  | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ |
| ४      | ५० | ५८ | ०७ | १५ | २३ | ३२ | ४० | ४९ | ५९ | ६८ | ०९ | १८ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ०९ | १८ | २० | ४० | ५० | ०० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ०० | ११ | २१ |
| ११     | २६ | ४८ | १० | ३२ | ५४ | १६ | ३८ | ०० | ०६ | १२ | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५८ | ०० | ०६ | १२ | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | ०६ | १२ |
| मिथुन  | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ |
| ५      | ४१ | ५१ | ०१ | ११ | २१ | ३१ | ४१ | ५२ | ०३ | १४ | २६ | ३७ | ४८ | ०० | १२ | २३ | ३४ | ४६ | ५७ | ०९ | २० | ३३ | ४३ | ५४ | ०६ | १७ | २९ | ४० | ५२ | ०३ |
| ३      | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | २६ | ५२ | १८ | ४४ | १० | ३६ | ०२ | २८ | ५४ | २० | ४६ | १२ | ३८ | ०४ | ३० | ५६ | २२ | ४८ | १४ | ४० | ०६ | ३२ |
| कर्क   | १७ | १७ | १७ | १७ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १९ | १९ | १९ | १९ | १९ | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २० | २१ | २१ | २१ | २१ | २२ | २२ | २२ | २२ | २२ |
| ५      | १४ | २५ | ३७ | ४९ | ०० | १२ | २३ | ३५ | ४६ | ५८ | ०९ | २१ | ३२ | ४४ | ५५ | ०७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ०५ | १६ | २८ | ४० | ५१ | ०३ | १४ | २६ | ३७ | ४१ |
| ४३     | ५८ | २४ | ५० | १८ | ४२ | ०८ | ३४ | ०० | २४ | ५० | ०६ | ३२ | ५८ | १४ | ४० | १६ | ४२ | ०८ | ३४ | ६० | १६ | ४२ | ०४ | ३० | ५६ | २२ | ४८ | १४ | ४० | ०६ |
| सिंह   | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २३ | २४ | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २७ | २८ | २८ |
| ५      | १  | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४४ | ५५ | ०७ | १८ | २९ | ४० | ५२ | ०३ | १४ | २५ | ३७ | ४७ | ५१ |    |    |    |    |    |    |    |    |
| ४७     | २  | ३६ | १० | ४४ | १८ | ५२ | २६ | ०० | १६ | ३२ | ४५ | ०४ | २० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |
| कन्या  | २८ | २८ | २९ | २९ | २९ | २९ | २९ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ |
| ५      | ४१ | ५२ | ०३ | १४ | २६ | ३७ | ४८ | ०० | ११ | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०७ | १८ | ३० | ४१ | ५२ | ०३ | १५ | २६ | ३७ | ५९ | ०० | ११ | २२ | ३४ | ४५ | ५६ | ०७ |
| ३८     | ८  | २४ | २० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ४२ | ०४ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |
| तुला   | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३७ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३९ |
| ५      | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ०४ | १५ | २६ | ३८ | ४९ | ०१ | १२ | २४ | ३५ | ४७ | ५८ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०८ | १९ | ३१ | ४३ | ५४ | ०६ | १७ | २९ | ४० | ५२ |
| ३८     | ८  | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | ३४ | ०८ | ४२ | १६ | ५० | २४ | ४८ | ३२ | ०६ | ४० | १४ | ४७ | २२ | ५६ | ३० | ०४ | ३८ | १२ | ४६ | २० | ५४ | २८ |
| वृश्चि | ४० | ४० | ४० | ४० | ४० | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४१ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४२ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ |
| ५      | ०४ | १५ | २७ | ३८ | ५० | ०१ | १३ | २५ | ३६ | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०७ | १९ | ३० | ४२ | ५३ | ०५ | १६ | २७ | ३९ | ५० | ०२ | १३ | २५ | ३६ |
| ४७     | ०२ | ३६ | १० | ४४ | १८ | ५२ | २६ | ०० | २६ | ५२ | १८ | २४ | १० | ३६ | ०२ | २८ | ५४ | २० | ४६ | १२ | ३८ | ०४ | ३० | ५६ | २२ | ४८ | १४ | ४० | ०६ | ३२ |
| धनु    | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४८ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० |
| ५      | ४७ | ५९ | १० | २२ | ३३ | ४५ | ५६ | ०८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५८ | ०८ | १८ | २८ | ३८ | ४८ | ५८ | ०९ | १९ | २९ | ३९ | ४९ | ५९ | ०९ | १९ | २९ | ४० | ५० |
| ४३     | ५८ | २४ | ५० | १६ | ४२ | ०८ | ३४ | ०० | ०६ | १२ | १८ | १४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | ०६ | १२ | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | ०६ | १२ |
| मकर    | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५३ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ |
| ५      | ०० | १० | २० | ३० | ४० | ५० | ०० | ११ | १९ | २७ | ३६ | ४४ | ५२ | ०१ | ०९ | १७ | २६ | ३४ | ४३ | ५१ | ५९ | ०८ | १६ | २४ | ३३ | ४९ | ४१ | ४८ | ०६ | १५ |
| ३      | १८ | २४ | ३० | ३६ | ४२ | ४८ | ५४ | ०० | २२ | ४४ | ०६ | २८ | ५० | १२ | ३४ | ५६ | १८ | ४० | ०२ | २४ | ४६ | ०८ | ३० | ५२ | १४ | ३६ | ५८ | २० | ४२ | ०४ |
| कुम्भ  | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५९ |
| ४      | २३ | ३१ | ४० | ४८ | ५६ | ०५ | १३ | २२ | २९ | ३६ | ४३ | ५१ | ५८ | ०५ | १२ | २० | २७ | ३४ | ४१ | ४९ | ५६ | ०३ | ११ | १८ | २५ | ३३ | ४० | ४७ | ५४ | ०१ |
| ११     | २६ | ४८ | १० | ३२ | ५४ | १६ | ३८ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | ४० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |
| मीन    | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ५९ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ |
| ३      | ०९ | १६ | २३ | ३० | ३८ | ४५ | ५२ | ०० | ०७ | १४ | २१ | २९ | ३६ | ४३ | ५० | ५८ | ०५ | १२ | १९ | २७ | ३४ | ४१ | ४९ | ५६ | ०३ | १० | १८ | २५ | ३२ | ३९ |
| ३८     | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ | ०८ | २४ | ४० | ५६ | १२ | २८ | ४४ | ०० | १६ | ३२ | ४८ | ०४ | २० | ३६ | ५२ |

लग्नसारणीदेखने की रीति- जिस समय लग्न सारणी से लग्न देखने की आवश्यकता हो तो उस समय का इष्ट काल बना स्पष्ट लिखा होता है। सूर्य स्पष्ट जितने राशि पर जितने अंश पर हो उसको लग्न सारणी में देखे कि उस राशि के सामने और मिलेगे। वही लग्न राशि अंशादि होगे। यथा- इष्टकाल १४।२३ और स्पष्टसूर्य उस दिन ६।२६।२०।५४ है। लग्न सारणी में ६ राशि नीचे ३६।०६ है। अब ३१।०६ को इष्टकाल के १४।२३ में जोड़ दिया तो ४३।२९ घट्यादि हुए इनको लग्न सारणी में देखा तो ९ रा लिखा हुआ है अर्थात् १।२८।४३।३४ लग्न स्पष्ट हुआ।

| अंश    | ०  | १  | २  | ३  | ४  | ५  | ६  | ७  | ८  | ९  | १० | ११ | १२ | १३ | १४ | १५ | १६ | १७ | १८ | १९ | २० | २१ | २२ | २३ | २४ | २५ | २६ | २७ | २८ | २९ |
|--------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| मेष    | ३  | ३  | ३  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ४  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ५  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ६  | ७  | ७  | ७  | ७  | ७  | ७  | ८  | ८  |
| २७८    | ३३ | ३४ | ३५ | ०० | १० | १९ | २८ | ३८ | ४७ | ५७ | ७  | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७  | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७  | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ७  | १७ |
| ०८     | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| वृष    | ८  | ८  | ८  | ८  | ९  | ९  | ९  | ९  | ९  | ९  | १० | १० | १० | १० | १० | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | ११ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ | १२ |
| २६६    | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५८ | ०६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ०३ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ०७ | १७ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ०७ | १७ |
| १४     | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ |
| मिथुन  | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १५ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ | १७ |
| ३२३    | ४४ | ५५ | ०६ | १६ | २७ | ३८ | ४९ | ०० | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५३ | ०४ | १५ | २६ | ३६ | ४७ | ५८ | ०९ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ०३ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ |
| ३८     | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| कर्क   | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ | १६ |
| ३२३    | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ | १८ |
| ३८     | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| सिंह   | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ | २४ |
| २६६    | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३१ | ४० | ४९ | ५९ | ०८ | १७ | २६ | ३६ | ४५ | ५४ | ०३ | १३ | २२ | ३१ | ४१ | ५० | ५९ | ०८ | १८ | २८ | ३६ | ४५ |
| १४     | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ |
| कन्या  | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | २८ | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३० | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३१ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ | ३२ |
| २७८    | ५५ | ०४ | १३ | २२ | ३२ | ४१ | ५० | ०० | ०९ | १८ | २७ | ३७ | ४६ | ५५ | ०४ | १४ | २३ | ३२ | ४१ | ५१ | ०० | ०९ | १८ | २८ | ३७ | ४६ | ५५ | ०५ | १४ |    |
| ०८     | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| तुला   | ३३ | ३३ | ३३ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३४ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३५ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ | ३६ |
| २७८    | ३३ | ३४ | ३५ | ०० | १० | १९ | २८ | ३८ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ |
| ०८     | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| वृश्चि | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ | ३८ |
| २६६    | २७ | ३७ | ४७ | ५७ | ०७ | १७ | २७ | ३७ | ४७ | ५८ | ०६ | १६ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ०३ | १३ | २३ | ३३ | ४३ | ५३ | ०७ | १७ | २६ | ३६ | ४६ | ५६ | ०७ | १७ |
| १४     | १२ | १२ | १२ | १३ | १३ | १३ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ |
| धनु    | ४३ | ४३ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४४ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४५ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४६ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ | ४७ |
| ३२३    | ४४ | ५५ | ०६ | १६ | २७ | ३८ | ४९ | ०० | १० | २१ | ३२ | ४३ | ५३ | ०४ | १५ | २६ | ३६ | ४७ | ५८ | ०९ | १९ | ३० | ४१ | ५२ | ०३ | १३ | २४ | ३५ | ४६ | ५७ |
| ३८     | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| मकर    | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ४९ | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५० | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५१ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ | ५२ |
| ३२३    | ०७ | १८ | २९ | ३९ | ५० | ०१ | १२ | २३ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ |
| ३८     | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |
| कुम्भ  | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५४ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५५ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५६ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ | ५७ |
| २६६    | १२ | २२ | ३२ | ४२ | ५२ | ०२ | १२ | २२ | ३१ | ४० | ४९ | ५९ | ०८ | १७ | २६ | ३६ | ४५ | ५४ | ०४ | १३ | २२ | ३१ | ४१ | ५० | ५९ | ०८ | १८ | २७ | ३६ | ४५ |
| १४     | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ | १४ |
| मीन    | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ५८ | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०० | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०१ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ | ०२ |
| २७८    | ५५ | ०४ | १३ | २२ | ३२ | ४१ | ५० | ०० | ०९ | १८ | २७ | ३७ | ४६ | ५५ | ०४ | १४ | २३ | ३२ | ४१ | ५१ | ०० | ०९ | १८ | २८ | ३७ | ४६ | ५५ | ०५ | १४ |    |
| ०८     | २४ | २४ | २४ | २५ | २५ | २५ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ | २६ |

कर उसमें उस दिन का सूर्य

उतने अंशो कोष्टक के नीचे

के सामने और २६ अंश के

राशि १८ अंश के नीचे ४३।३४

दशम लग्न बनाने की रीति-

जिस समय दशम

सारणी से दशम स्पष्ट लग्न करना हो तो सबसे प्रथम

लग्न स्पष्ट के राशि अंश से घटी पलों में से घटी फल

पल जितने हो दशम सारणी से उस कोष्टक में देखें

कि घटी पल कहां पर है वही दशम लग्न स्पष्ट होगा।

यथा-प्रथम लग्न स्पष्ट ४।२६।२७।४०

स्पष्ट के घड़ी पल २७।४० को दशम लग्न

देखें तो पता चला कि २७।४० २ राशि

आया तो यह दशम स्पष्ट हुआ इसमें ६

से चतुर्थ लग्न होगा। चतुर्थ लग्न में प्रथम

| मास<br>दिनांक | जन.<br>मि. | फर<br>मि. | मार्च<br>मि. | अप्रै<br>मि. | मई<br>मि. | जून<br>मि. | जुला<br>मि. | अग<br>मि. | सित<br>मि. | अक्टू<br>मि. | नव<br>मि. | दिस.<br>मि. |
|---------------|------------|-----------|--------------|--------------|-----------|------------|-------------|-----------|------------|--------------|-----------|-------------|
| १             | -३         | -१४       | -१२          | -४           | +३        | +२         | -३          | -६        | +०         | +१०          | +१६       | +११         |
| २             | -४         | -१४       | -१२          | -४           | +३        | +२         | -४          | -६        | +०         | +१०          | +१६       | +११         |
| ३             | -४         | -१४       | -१२          | -४           | +३        | +२         | -४          | -६        | +०         | +११          | +१६       | +११         |
| ४             | -५         | -१४       | -१२          | -३           | +३        | +२         | -४          | -६        | +१         | +११          | +१६       | +१०         |
| ५             | -५         | -१४       | -१२          | -३           | +३        | +२         | -४          | -६        | +१         | +११          | +१६       | +१०         |
| ६             | -५         | -१४       | -१२          | -३           | +३        | +२         | -४          | -६        | +१         | +१२          | +१६       | +९          |
| ७             | -६         | -१४       | -११          | -२           | +३        | +२         | -५          | -६        | +२         | +१२          | +१६       | +९          |
| ८             | -६         | -१४       | -११          | -२           | +४        | +१         | -५          | -६        | +२         | +१२          | +१६       | +९          |
| ९             | -७         | -१४       | -११          | -२           | +४        | +१         | -५          | -६        | +२         | +१२          | +१६       | +८          |
| १०            | -७         | -१४       | -११          | -२           | +४        | +१         | -५          | -५        | +३         | +१३          | +१६       | +८          |
| ११            | -८         | -१४       | -१०          | -१           | +४        | +१         | -५          | -५        | +३         | +१३          | +१६       | +७          |
| १२            | -८         | -१४       | -१०          | -१           | +४        | +१         | -५          | -५        | +३         | +१३          | +१६       | +७          |
| १३            | -८         | -१४       | -१०          | -१           | +४        | +०         | -६          | -५        | +४         | +१३          | +१६       | +६          |
| १४            | -९         | -१४       | -१०          | -१           | +४        | +०         | -६          | -५        | +४         | +१४          | +१६       | +६          |
| १५            | -९         | -१४       | -०९          | +०           | +४        | -०         | -६          | -५        | +४         | +१४          | +१६       | +५          |
| १६            | -१०        | -१४       | -९           | +०           | +४        | -०         | -६          | -४        | +५         | +१४          | +१६       | +५          |
| १७            | -१०        | -१४       | -९           | +०           | +४        | -०         | -६          | -४        | +५         | +१४          | +१५       | +४          |
| १८            | -१०        | -१४       | -९           | +०           | +४        | -१         | -६          | -४        | +५         | +१५          | +१५       | +४          |
| १९            | -११        | -१४       | -८           | +१           | +४        | -१         | -६          | -४        | +६         | +१५          | +१५       | +३          |
| २०            | -११        | -१४       | -८           | +१           | +४        | -१         | -६          | -४        | +६         | +१५          | +१५       | +३          |
| २१            | -११        | -१४       | -८           | +१           | +४        | -१         | -६          | -३        | +७         | +१५          | +१४       | +२          |
| २२            | -११        | -१४       | -७           | +१           | +४        | -१         | -६          | -३        | +७         | +१५          | +१४       | +२          |
| २३            | -१२        | -१४       | -७           | +१           | +३        | -२         | -६          | -३        | +७         | +१५          | +१४       | +१          |
| २४            | -१२        | -१३       | -७           | +२           | +३        | -२         | -६          | -३        | +८         | +१६          | +१४       | +१          |
| २५            | -१२        | -१३       | -६           | +२           | +३        | -२         | -६          | -२        | +७         | +१६          | +१३       | +०          |
| २६            | -१२        | -१३       | -६           | +२           | +३        | -२         | -६          | -२        | +८         | +१६          | +१३       | -०          |
| २७            | -१२        | -१३       | -६           | +२           | +३        | -२         | -६          | -२        | +९         | +१६          | +१३       | -१          |
| २८            | -१३        | -१३       | -५           | +२           | +३        | -३         | -६          | -२        | +९         | +१६          | +१२       | -१          |
| २९            | -१३        | -१२       | -५           | +३           | +३        | -३         | -६          | -१        | +९         | +१६          | +१२       | -२          |
| ३०            | -१३        | ०         | -५           | +३           | +३        | -३         | -६          | -१        | +१०        | +१६          | +१२       | -२          |
| ३१            | -१३        | ०         | -५           | ०            | +३        | ०          | -६          | -१        | ०          | +१६          | ०         | -३          |

४६

**देशान्तर एवं वेलान्तर संस्कार प्रकारः**

सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड समय समान ही हैं। इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह ५ या ७ बजते हैं परन्तु स्थानीय समय प्रत्येक जगह के भिन्न-भिन्न होते हैं। अतः स्थानीय समय बनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार (जोड़ना या घटाना) करना चाहिए। जैसे १ मार्च को कटिहार के इष्टकाल में १२ मिनट वेलान्तर ऋण एवं २० मिनट ४० सेकेण्ड देशान्तर धन कर देंगे तो देवघर का स्थानीय समय हो जायेगा।

**देशान्तर साधन-** १. (८२।३०-इष्टस्थान का रेखांश)४ = षट्स्थानिक मिनटात्मक रेखांश ऋण। यथा-दिल्ली-रेखांश ७७।१८। (८२।३०-७७।१८ = ५।१२)४ = २०।४८ दिल्ली का रेखांश ऋण।

२. (इष्टस्थान का रेखांश- ८२।३०)४ = इष्टस्थानिक मिनटात्मक रेखांश धन। यथा-पटना-रेखांश ८५।१३। (८५।१३-८२।३० = २।४३)४ = १०।५२ पटना का रेखांश धन।

---

**डॉ. बाबूलाल मिश्रः द्वाराप्राप्त-श्लोकाः**

सन्ध्या दानं जपश्चैव देवतानां च पूजनम्।  
वैश्वदेवं तथातिथ्यं षट्कर्माणि दिने दिने॥

\* \* \* \* \*

दैवाधीनं जगत् सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः।  
ते मन्त्राः ब्राह्मणाधीनाः तस्माद् ब्राह्मणदेवताः॥

\* \* \* \* \*

शान्ताः सन्तः सुशीलाश्च सर्वभूतहिते रताः।  
क्रोधं कर्तुं न जानन्ति एतद्ब्राह्मणलक्षणम्॥

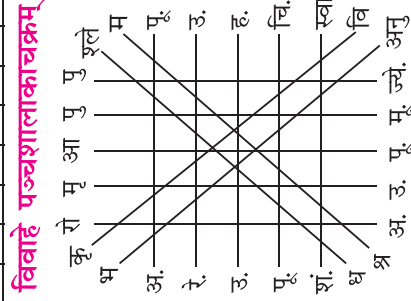
\* \* \* \* \*

पाठकाः पाठकाश्चैव ये चान्ये शास्त्रचिन्तकाः।  
सर्वे व्यसनिनो मूर्खाः यः क्रियावान् स पण्डितः॥



| नक्षत्राणि | अश्व<br>वनी | भर  | कृति<br>१. | कृति<br>३. | रो. | मृग<br>२. | मृग<br>२. | आ<br>र्द्रा | पुन<br>३. | पुन<br>१. | पूष्य | श्ले<br>षा | मघा | पू.<br>फा. | उ.<br>फा१. | उ.<br>फ३. | हस्त | चित्रा<br>२. | चित्रा<br>२. | स्वा<br>ति | विशा<br>३. | विशा<br>१. | अनु<br>धा | ज्ये<br>१. | मूल | पू.<br>षा॥ | पू.<br>षा३. | उ.<br>षा१. | उ.<br>षा३. | श्रव.<br>१॥ | श्रव<br>२. | धनि<br>२. | धनि<br>२. | शत  | पू.<br>भा३. | पू.<br>भा१. | उ.<br>भा. | रेव |
|------------|-------------|-----|------------|------------|-----|-----------|-----------|-------------|-----------|-----------|-------|------------|-----|------------|------------|-----------|------|--------------|--------------|------------|------------|------------|-----------|------------|-----|------------|-------------|------------|------------|-------------|------------|-----------|-----------|-----|-------------|-------------|-----------|-----|
| अश्वि.     | २८          | ३३  | २८॥        | १८॥        | २१॥ | २२॥       | २६        | १७          | १८        | २२॥       | ३१॥   | २७         | २०॥ | २६         | १७॥        | ११        | ०६   | १३           | २२॥          | २६॥        | २२॥        | १६॥        | २६॥       | १५         | १६  | २७         | २४॥         | २६         | २६         | २४          | २१         | २१        | १५        | १६  | १४॥         | २४॥         | २४॥       | २६  |
| भरणी       | ३४          | २८  | २६         | १६         | २२॥ | १४॥       | १७        | २६          | २६        | ३०॥       | २३॥   | २४॥        | २१  | १६         | २८         | २१॥       | १६   | ०६           | १४॥          | २६॥        | २२॥        | १६॥        | १७॥       | १६॥        | २०  | १६         | २०          | २७         | २८॥        | २८          | २६         | १०        | १०        | २०  | २४          | २२॥         | १६॥       | २८  |
| कृति.१     | २७॥         | २७॥ | २८         | १६॥        | ०६  | १५॥       | १६        | २०          | २१        | २५॥       | २६॥   | २३॥        | १७॥ | २१         | २२         | १५॥       | १५॥  | १८॥          | २७॥          | १५॥        | १६॥        | १६॥        | २०॥       | २६॥        | २४॥ | १८         | १६          | १४         | १५॥        | ११॥         | १०॥        | २५        | २५        | २७  | १६॥         | १७॥         | १६॥       | ११॥ |
| कृति.३     | १८॥         | १८॥ | १६         | २८         | १६  | २५॥       | १६॥       | १७॥         | १८॥       | २२        | २३    | २०         | १६॥ | २३         | २४         | २१        | २१   | २३॥          | २२॥          | १०॥        | १४॥        | २१॥        | २५॥       | ३१॥        | २०  | १२॥        | १३॥         | ०६॥        | १४         | ११          | १०         | २२॥       | २६॥       | ३१  | २३॥         | २०          | २२        | १४  |
| रोहिणी     | २३॥         | २३॥ | १०         | १६         | २८  | ३६        | २७        | २३॥         | २३॥       | २७        | २८    | १३         | १२॥ | २६॥        | २८         | २५        | २६   | २०           | १६           | १५॥        | ०६॥        | १६॥        | ३०॥       | २४॥        | १४  | १६         | २०          | १२॥        | १७         | १६          | १८         | २०        | २६        | २४॥ | ३०॥         | २७          | २६        | १६  |
| मृग.२      | २३॥         | १३॥ | १८॥        | २८॥        | ३४  | २८        | २०        | २५          | २३॥       | २६        | २०    | २२         | २१॥ | १७॥        | २५॥        | २३॥       | २७   | १३           | १२           | २५         | १७॥        | २३॥        | २२॥       | २५॥        | १५  | १२         | ११          | १८         | २१॥        | २४॥         | २४॥        | १३        | १६        | २७  | २६॥         | १७          | २७        | २७  |
| मृग.२      | २७          | १८  | २१         | १८॥        | २४॥ | २०        | २८        | ३३          | ३१॥       | १६॥       | १३    | १५॥        | २४  | २०॥        | २८॥        | ३०॥       | ३४   | २१           | १४           | २७         | १६॥        | १४         | ११        | १३         | २३  | १६         | १८          | २४         | २०॥        | २५          | २५         | १२        | १३        | २१  | २३॥         | २७॥         | १७        | २७  |
| आर्द्रा    | १६          | २७  | २१         | १८॥        | २४॥ | २६        | ३४        | २८          | २५        | १३        | २०॥   | १३॥        | २३॥ | २६॥        | २२॥        | २४॥       | २४॥  | २७           | २०           | २७         | २०         | १३॥        | १७        | ०४         | १६  | २८         | २७          | २७         | २२॥        | २२॥         | २२॥        | १७        | १८        | ११  | १६          | १६          | २७        | २७  |
| पुन.३      | १६          | २६  | २२         | १६॥        | २३॥ | २४॥       | ३२॥       | २४          | २८        | १६        | २३    | १६॥        | २२॥ | २७॥        | २१॥        | २३॥       | २४॥  | २५॥          | १८॥          | २७         | २१         | १३॥        | २०॥       | ०५         | १३  | २७         | २६          | २७         | २२॥        | २२॥         | २३॥        | १७॥       | १८॥       | ११  | १७          | १६॥         | २७॥       | २८  |
| पुन.१      | २१॥         | २८॥ | २५॥        | २०         | २४  | २५        | १६        | १०॥         | १४॥       | २८        | ३५    | २८॥        | १५॥ | २०         | १४॥        | १७        | १८   | २०॥          | २०           | २७         | २०         | १६         | २६        | १०॥        | ०८  | २१         | २१॥         | २१॥        | २६॥        | २५          | २७         | २१        | १२॥       | ०७॥ | ११          | १७          | २५        | २५॥ |
| पूष्य.     | ३०॥         | २१॥ | २६॥        | २३         | २४  | १७        | १०        | १८          | २१॥       | ३५        | २८    | ३०         | १८॥ | १४॥        | २३॥        | २६        | २७   | १२           | ११॥          | २६         | २१         | २०         | १६        | २२         | १७  | ११         | ११॥         | २२॥        | २६         | २४          | २५         | १३        | ०४॥       | १४॥ | १८          | २४          | १८        | २७  |
| श्लेषा     | २५          | २३॥ | २२॥        | १६         | १२  | २१        | १३        | १२          | १५        | २८॥       | ८     | २८         | १५  | १५॥        | १७॥        | २०॥       | २०   | २६           | २५॥          | ११॥        | १६॥        | १५॥        | २०        | २६         | २२॥ | १६         | १६॥         | ०८॥        | १२         | १३          | १३         | २७        | १८॥       | १२॥ | १८॥         | २०          | १२        |     |
| मघ         | २१          | २१  | १७॥        | २८॥        | ११॥ | १६॥       | २२॥       | २२॥         | २१॥       | १६॥       | १८॥   | १६         | २८  | ३०         | २६॥        | १६॥       | १६॥  | २२॥          | २५॥          | ११॥        | १७॥        | २४॥        | २६॥       | ३४         | २४  | २०         | २१          | ११॥        | ०५॥        | ०५॥         | ०४॥        | १८॥       | २४॥       | २५॥ | १८॥         | १८॥         | १८॥       | १२  |
| पू.फा.     | २७          | १६  | २१         | २२         | २५॥ | १७॥       | २०॥       | २८॥         | २७॥       | २२॥       | १६॥   | १६॥        | ३०  | २८         | ३४         | २४        | २२॥  | ०८॥          | ११॥          | २५॥        | १६॥        | २६॥        | २४॥       | १६         | १६  | १६         | २७          | २१         | १६॥        | १८॥         | ०४॥        | ११॥       | १६॥       | २४॥ | २३॥         | १६॥         | २४॥       |     |
| उ.फा.१     | १८॥         | २७  | २२         | २३         | २७  | २५॥       | २८॥       | २१॥         | २१॥       | १६॥       | २५॥   | १८॥        | २६॥ | ३४         | २८         | १८        | १६॥  | १४॥          | १७॥          | २६॥        | १७॥        | २४॥        | ३०॥       | १६॥        | १०॥ | २६         | २७          | २८         | २२         | २१          | २०         | ११॥       | १८॥       | १२॥ | १६॥         | १५॥         | २६॥       | २४॥ |
| उ.फा.३     | १३          | २१॥ | १६॥        | २१         | २५  | २३॥       | ३०॥       | २३॥         | २३॥       | १६॥       | २८॥   | २१॥        | १७॥ | २५         | १६         | २८        | २५॥  | २४॥          | १६॥          | २५॥        | १६॥        | १८         | २७        | १३         | १५॥ | २६॥        | २८॥         | २६॥        | २५         | २५          | १६॥        | १६॥       | १०॥       | १४॥ | १८          | २६॥         | २७        |     |
| हस्त       | १०          | २०  | १६॥        | २१         | २६  | २६        | ३३        | २३॥         | २३॥       | १६॥       | २८॥   | २१॥        | १७॥ | २२॥        | १७         | २६        | २८   | २७           | १६           | २६॥        | १७॥        | १६॥        | २६        | १२         | १४  | २७         | २६          | २७॥        | २३         | २४          | २४         | १६        | १६        | ०८॥ | १४॥         | १६          | २७॥       | २७  |
| चित्रा२    | १३          | ०६  | १६         | २५॥        | २०  | १२        | १६        | २६          | २४॥       | २०॥       | १२॥   | २६॥        | २३॥ | ०६॥        | १५॥        | २४॥       | २७   | २८           | २०           | १६         | २६॥        | २८         | ११        | २५         | २८  | १४         | १३          | २१         | १७॥        | १६          | १६         | १८        | १८        | २४  | १८॥         | २२१         | ११        | २१  |
| चित्रा२    | २२॥         | १५॥ | २८॥        | २३॥        | २०  | १२        | १३        | २०          | १८॥       | २०        | १२    | २६         | २५॥ | १०॥        | १७॥        | १७॥       | २०   | २१           | २८           | २७         | ३४॥        | २४॥        | ०७॥       | २१॥        | २८  | १४         | १३          | २१         | २५॥        | २७          | २७         | २६        | २०        | २६  | २०॥         | १५          | ०४        | १३  |
| स्वाती     | २७॥         | २६॥ | १७॥        | १२॥        | १६॥ | २७        | २७        | २६          | २६॥       | २८        | २८    | १५॥        | १३॥ | २५॥        | २५॥        | २५॥       | २७॥  | २१           | २८           | २८         | २०         | १०         | २३॥       | १८॥        | २३  | २७         | २६          | १८         | २२॥        | २३॥         | २७         | २१        | २०        | २५  | १६॥         | २०          | १३        |     |
| विशा३      | २२॥         | २२॥ | २०॥        | १५॥        | १०॥ | १८॥       | १६॥       | २१          | २१        | २२॥       | २१॥   | १६॥        | १७॥ | १६॥        | १८॥        | १७॥       | १८॥  | २७॥          | ३४॥          | १८         | २८         | १८         | १७        | २०॥        | २८  | २२         | २१          | १३         | १७॥        | १७॥         | १७॥        | ३२॥       | २६        | २६  | २२          | १६॥         | १३॥       | ०५  |
| विशा१      | १६॥         | १६॥ | १४॥        | १६॥        | १४॥ | २२॥       | १३        | १४॥         | १४॥       | ६         | १८    | १५॥        | २१॥ | २३॥        | २१॥        | १८        | १६   | २८           | २३॥          | ०८         | १७         | २८         | २७        | ३१॥        | २३॥ | १६॥        | १८          | १२         | १२         | १२          | २७         | २७        | २६॥       | २२॥ | २१          | १८          | ०६॥       |     |
| अनुधा      | २४॥         | १४॥ | १६॥        | २४॥        | २७॥ | २०॥       | ११        | १६          | २१॥       | २६॥       | १८    | २१         | २४॥ | २०॥        | २६॥        | २६        | २७   | १२           | ०७॥          | २२॥        | १७         | २८         | २८        | ३१         | १६॥ | १४॥        | २२          | २५         | २६         | २६          | १२         | १२        | २२        | २४॥ | २४          | २८          | १८        | २७  |
| ज्येष्ठा   | १२          | १८॥ | २४॥        | २६॥        | २२॥ | २२॥       | १३        | ०३          | ०६        | १०॥       | २०    | २६         | ३१॥ | २३॥        | १६॥        | १३        | १२   | २५           | २०॥          | २६॥        | २०॥        | ३१॥        | ३०        | २८         | १५  | १७॥        | १७॥         | १७॥        | २०         | २०          | २०         | २६        | २५        | १८  | ११          | ०६          | २१        | २१  |
| मूल        | १२          | २०  | २४॥        | १६         | १३  | १४        | २१        | १६          | १२        | ०८॥       | १७॥   | २४         | २५  | १६         | ०६॥        | १३        | १३   | २७           | २७           | २१         | २७         | २४॥        | १६॥       | १६         | २८  | १७         | २७          | २५॥        | १५॥        | १५॥         | १५॥        | २१॥       | २८॥       | २१॥ | १६॥         | १६॥         | २५॥       | २७॥ |
| पू.षा.१    | २६          | १८  | १८         | १२॥        | १६  | ११        | १६        | २७          | २७        | २३॥       | १३॥   | १७॥        | २१  | १६         | २५         | २८॥       | २७   | १२           | १२           | २७         | २०         | १६॥        | १८॥       | १७॥        | २८  | १७         | २७          | ३३         | २३         | २३॥         | २३॥        | ०८॥       | १६॥       | २३॥ | ३१॥         | ३२॥         | ३२॥       | ३२॥ |
| पू.षा.३    | २७          | २०  | १६         | १३॥        | २०  | १२        | १८        | २६          | २६        | २३॥       | १३॥   | १७॥        | २१  | १६         | २७         | २७        | २६   | ११           | ११           | २६         | १६         | १८॥        | १८॥       | १६॥        | २७  | १८         | २८          | ३४         | २४         | २४॥         | २३॥        | ०८॥       | १५॥       | २२॥ | २६॥         | ३२॥         | ३२॥       | ३२॥ |
| उ.षा.१     | २५॥         | २७  | १४         | ०८॥        | ११॥ | १८        | २४        | २६          | २६        | २३॥       | २४॥   | ०६॥        | ११॥ | २७         | २८         | २८॥       | २७॥  | २०           | २०           | १६         | १२         | ११॥        | २५॥       | १६॥        | २५॥ | ३३         | ३४          | २८         | १८         | १६          | १५         | १५॥       | २२॥       | २२॥ | २८॥         | ३१॥         | ३२॥       | २३॥ |
| उ.षा.३     | २८          | २६॥ | १६॥        | १४         | १७  | २२॥       | २०॥       | २२॥         | २२॥       | २७        | २८॥   | १३         | ०६॥ | २२         | २३         | २६        | २५   | १७॥          | २४॥          | २३॥        | १६॥        | १४         | २८        | २२         | १६॥ | २६         | २५          | १६         | २८         | २६          | २५         | १६        | २८        | २६  | २५          | ३०॥         | ३२॥       | २३॥ |
| श्रवण१     | २८          | २७  | १४॥        | १२         | १८  | २७        | २४        | २१॥         | २१॥       | २७        | २५    | १५         | ०५॥ | १६॥        | २०         | २४        | २५   | १६           | २६           | २३॥        | १६॥        | १४         | २८        | २३         | १७॥ | २३॥        | २४॥         | १७         | २५         | २८          | २७         | ३०        | २२        | १८॥ | २३॥         | ३०॥         | २२॥       |     |
| श्रवण२     | २७          | २६  | १३॥        | १०         | १७  | २६        | २३॥       | २१          | २३॥       | २८        | २६    | १५         | ०६॥ | १८॥        | २०॥        | २३॥       |      |              |              |            |            |            |           |            |     |            |             |            |            |             |            |           |           |     |             |             |           |     |

| शतपद्चक्रम्                  |                        |          |                                 |         |                       |           |                    |         |                                   |          |          |                          |        |                    |        |                     |         |          |          |                |
|------------------------------|------------------------|----------|---------------------------------|---------|-----------------------|-----------|--------------------|---------|-----------------------------------|----------|----------|--------------------------|--------|--------------------|--------|---------------------|---------|----------|----------|----------------|
| नक्षत्र<br>वर्णाः            | चु.चे.                 | ली.लू.   | अ.ई.                            | ओ.वा.   | वे.वो.                | कू.घ      | के.को.             | हू.हे.  | डी.डू.                            | मा.मी.   | मो.टा.   | टे.टो.                   | पू.ष.  | पे.पो.             | रु.रे. | ती.तू.              | न.नी.   | नो.या.   | ये.यो.   | भू.धा.         |
| नक्षत्रम्                    | अश्विनी                | भरणी     | कृतिका                          | रोहिणी  | मृगशिरा               | आर्द्रा   | पुनर्वसु           | पुष्य   | आश्लेष                            | मघा      | पूर्.फा. | उ.फा.                    | हस्त   | चित्रा             | स्वाती | विशाखा              | अनुराधा | ज्येष्ठा | मूल      | पूर्.षा.       |
| राशिः                        | मेष                    | मेष      | मेष-१<br>वृष-३                  | वृष     | वृष-२<br>मिथुन-२      | मिथुन     | मिथुन-३<br>कर्क-१  | कर्क    | कर्क                              | सिंह     | सिंह     | सिंह-१<br>कन्या-३        | कन्या  | कन्या-२<br>तुला-२  | तुला   | तुला-३<br>वृश्चिक-१ | वृश्चिक | वृश्चिक  | धनु      | धनु            |
| वर्णः                        | क्षत्रिय               | क्षत्रिय | क्षत्रिय-१<br>वैश्य-३           | वैश्य   | वैश्य-२<br>शुद्र-२    | शुद्र     | शुद्र-३<br>विप्र-१ | विप्र   | विप्र                             | क्षत्रिय | क्षत्रिय | क्षत्रिय-१<br>वैश्य-३    | वैश्य  | वैश्य-२<br>शूद्र-२ | शूद्र  | शूद्र-३<br>विप्र-१  | विप्र   | विप्र    | क्षत्रिय | क्षत्रिय       |
| वश्यः                        | चतुष्पद                | चतुष्पद  | चतुष्पद                         | चतुष्पद | चतुष्पद-२<br>मानव-२   | मानव      | मानव-३<br>जल-१     | जलचर    | जलचर                              | वनचर     | वनचर     | वनचर-१<br>मानव-३         | मानव   | मानव               | मानव   | मानव-३<br>कीट-१     | कीट     | कीट      | मानव     | मानव॥<br>चतु३॥ |
| युंजा                        | पूर्व                  | पूर्व    | पूर्व                           | पूर्व   | पूर्व                 | मध्य      | मध्य               | मध्य    | मध्य                              | मध्य     | मध्य     | मध्य                     | मध्य   | मध्य               | मध्य   | मध्य                | मध्य    | मध्य     | मध्य     | मध्य           |
| हंसक<br>( तत्त्व )           | अग्नि                  | अग्नि    | अ१.<br>भू३                      | भूमि    | भूमि२<br>वायु२        | वायु      | वायु३<br>जल१       | जल      | जल                                | अग्नि    | अग्नि    | अग्नि१<br>भूमि३          | भूमि   | भूमि२<br>वायु२     | वायु   | वायु३<br>जल१        | जल      | जल       | अग्नि    | अग्नि          |
| योनिः                        | अश्व                   | गज       | मेष                             | सर्प    | सर्प                  | श्वान     | मार्जार            | मेष     | मार्जार                           | मूषक     | मूषक     | गो                       | महिष   | व्याघ्र            | महिष   | व्याघ्र             | मृग     | मृग      | श्वान    | वानर           |
| धोनिवैरः                     | महिष                   | सिंह     | वानर                            | नकुल    | नकुल                  | मृग       | मूषक               | वानर    | मूषक                              | मार्जार  | मार्जार  | व्याघ्र                  | अश्व   | गो                 | अश्व   | गो                  | श्वान   | श्वान    | मृग      | मेष            |
| राशीशः                       | भौमः                   | भौमः     | भौमः-१<br>शुक्रः-३              | शुक्र   | शुक्रः-२<br>बुधः-२    | बुधः      | बुधः-३<br>चन्द्र-१ | चन्द्रः | चन्द्रः                           | सूर्यः   | सूर्यः   | सूर्यः-१<br>बुधः-३       | बुधः   | बुधः-२<br>शुक्रः-२ | शुक्रः | शुक्रः-३<br>भौमः-१  | भौमः    | भौमः     | गुरुः    | गुरुः          |
| गणः                          | देव                    | मनुष्य   | राक्षस                          | मनुष्य  | देव                   | मनुष्यः   | देव                | देव     | राक्षस                            | राक्षस   | मनुष्य   | मनुष्य                   | देव    | राक्षस             | देव    | राक्षस              | देव     | राक्षस   | राक्षस   | मनुष्य         |
| नाडी                         | आदि                    | मध्य     | अन्त्य                          | अन्त्य  | मध्य                  | आदि       | आदि                | मध्य    | अन्त्य                            | अन्त्य   | मध्य     | आदि                      | आदि    | मध्य               | अन्त्य | अन्त्य              | मध्य    | आदि      | आदि      | मध्य           |
| जन्म राशेः सायुररिष्टदवर्षणि |                        |          | जन्म लग्नात् सायुररिष्टदवर्षाणि |         |                       | ६ गणगुणाः |                    |         | ८ नाडीगुणाः अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च |          |          | नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम् |        |                    |        |                     |         |          |          |                |
| राशि                         | अरिष्टदवर्षाणि         |          | आयुः                            | राशिः   | अरिष्टदवर्षाणि        |           | आयुः               | गण      | दे.                               | मा       | रा.      | ना                       | आ.     | म.                 | अ.     | अवर्ग               | कवर्ग   | चवर्ग    | टवर्ग    | सूर्यः         |
| मेषः                         | १ १३ ५० ६२             |          | ७५                              | मेषः    | ४ ११ १६ ४४ ५८         |           | १००                | दे.     | ६                                 | ५        | ०        | आ.                       | ०      | ८                  | ०      | गरुड                | मार्जार | सिंह     | श्वान    | सूर्यः         |
| वृषः                         | ३ ६ ८ ३३ ४६ ५२ ६३      |          | ७५                              | वृषः    | १ २ ८ ३३ ४४           |           | ६०                 | मा.     | ५                                 | ६        | ०        | म.                       | ८      | ०                  | ८      | तवर्ग               | पवर्ग   | यवर्ग    | शवर्ग    | चन्द्रः        |
| मिथुनम्                      | ६ १० ११ १८ २४ ५३ ६३    |          | ७५                              | मिथुनम् | १ १० १४ ३८ ५८         |           | ६४                 | रा.     | ०                                 | ०        | ६        | अ.                       | ८      | ८                  | ०      | सर्प                | मूषक    | मृग      | मेष      | मंगलः          |
| कर्कः                        | १ १६ २२ २७ ३५ ४५ ५५ ६० |          | ७०                              | कर्कः   | ५ २५ ४० ४८ ६२         |           | १००                | सूर्यः  | चन्द्रः                           | मंगलः    | बुधः     | वृहः                     | शुक्रः | शनिः               | ग्रहाः |                     |         |          |          |                |
| सिंह                         | १ १० १५ २५ ४५ ५१ ६१    |          | ६५                              | सिंहः   | ५ १३ २८ ३६ ४८         |           | ६३                 | सूर्यः  | चन्द्रः                           | मंगलः    | बुधः     | वृहः                     | शुक्रः | शनिः               | ग्रहाः |                     |         |          |          |                |
| कन्या                        | १ ३ १३ २६ ३३ ४३        |          | ६८                              | कन्या   | ४ १६ २३ ३६ ४५         |           | १००                | सूर्यः  | चन्द्रः                           | मंगलः    | बुधः     | वृहः                     | शुक्रः | शनिः               | ग्रहाः |                     |         |          |          |                |
| तुला                         | २ ४ १६ २१ ३३ ४१ ५१ ६१  |          | ६५                              | तुला    | १५ ३१ ३५ ५४ ६२        |           | ७५                 | सूर्यः  | चन्द्रः                           | मंगलः    | बुधः     | वृहः                     | शुक्रः | शनिः               | ग्रहाः |                     |         |          |          |                |
| वृश्चिक                      | ३ ७ ८ १३ ३२ ३५ ४५ ६३   |          | ७५                              | वृश्चिक | १ १ २ ३ ५ २ ६ २       |           | १००                | सूर्यः  | चन्द्रः                           | मंगलः    | बुधः     | वृहः                     | शुक्रः | शनिः               | ग्रहाः |                     |         |          |          |                |
| धनुः                         | ३ १० १२ १६ २३ ३६ ४७ ६७ |          | ६५                              | धनुः    | २ ८ १० १८ ३१ ३८ ४२ ६७ |           | ८१                 | सूर्यः  | चन्द्रः                           | मंगलः    | बुधः     | वृहः                     | शुक्रः | शनिः               | ग्रहाः |                     |         |          |          |                |
| मकरः                         | ३ १० ३२ ३३ ४२ ५१ ५६ ६१ |          | १००                             | मकरः    | ५ १३ २७ ३६ ५७ ६२      |           | ८५                 | सूर्यः  | चन्द्रः                           | मंगलः    | बुधः     | वृहः                     | शुक्रः | शनिः               | ग्रहाः |                     |         |          |          |                |
| कुम्भः                       | १ ८ ३२                 |          | ६१                              | कुम्भः  | २ २ ३ ४ ८ ६ ४         |           | ६०                 | सूर्यः  | चन्द्रः                           | मंगलः    | बुधः     | वृहः                     | शुक्रः | शनिः               | ग्रहाः |                     |         |          |          |                |
| मीनः                         | १ ८ ३३                 |          | ६१                              | मीनः    | १ ८ १३ ३६ ४८          |           | ८३                 | सूर्यः  | चन्द्रः                           | मंगलः    | बुधः     | वृहः                     | शुक्रः | शनिः               | ग्रहाः |                     |         |          |          |                |



**राहुकेवोः शनिवत्।** सू. श. रा. के. ३ ६ ८ ११ चं. २ ३ ११ मं. ३ ६ ११ बु. वृ. १ २ ३ ४ ५ ६ १ १० ११ शु. १ २ ४ ५ ६ १ १० ११

**उक्तस्थानस्थग्रहाकान्** संयोज्य विवाहलग्ने ग्रहवलविशवा बोध्याः। लग्नेशनवमांशौ १ ४ ७ १० ११ स्थौ सर्वदोषनाशकौ भवतः।

| गो. सा.       | से. सौ.            | दु. थ.         | दे. दो.       |
|---------------|--------------------|----------------|---------------|
| सी. सू.       | द. दी.             | झ. ज.          | चा. ची.       |
| शतभिषा        | पू. भा.            | उ. भा.         | रेवती         |
| कुम्भ         | कुम्भ-३<br>मीन-१   | मीन            | मीन           |
| शूद्र         | शूद्र-३<br>विप्र-१ | विप्र          | विप्र         |
| मानव          | मानव-३<br>जलचर-१   | जलचर           | जलचर          |
| अन्त्य        | अन्त्य             | अन्त्य         | पूर्व         |
| वायु          | वायु३<br>जल१       | जल             | जल            |
| अश्व          | सिंह               | गो             | गज            |
| महिष          | गज                 | व्याघ्र        | सिंह          |
| शनिः          | शनिः-३             | गुरुः          | गुरुः         |
| राक्षस<br>आदि | मनुष्य<br>आदि      | मनुष्य<br>मध्य | देव<br>अन्त्य |

### गुरुडादिवर्गवशेन

### शुभाशुभज्ञान प्रकारः

नाम-ग्राम-दिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य-

चन्द्र-मंगल-बुध-शनि-वृहस्पति-राहु- शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाण ाञ्च हानिकरा भवन्ति। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्माद्विर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तिदिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्ग- मित्रवर्गादिगृहवासः शुभः, समवर्गादिगृहवासो मध्यमः, शत्रुदिगृहवासश्च हानिकर इति।

| १ वर्णस्य गुणाः॥ वरस्य  |       |           |       |       |     | ॥ कन्यायाः॥ |    |    |    |
|-------------------------|-------|-----------|-------|-------|-----|-------------|----|----|----|
| वर्णाः                  | विप्र | क्षात्रिय | वैश्य | शूद्र |     |             |    |    |    |
| विप्र                   | १     | ०         | ०     | ०     |     |             |    |    |    |
| क्षत्रिय                | १     | १         | ०     | ०     |     |             |    |    |    |
| वैश्य                   | १     | १         | १     | ०     |     |             |    |    |    |
| शूद्र                   | १     | १         | १     | १     |     |             |    |    |    |
| २ वश्यगुणाः वरस्य       |       |           |       |       |     |             |    |    |    |
| वश्य                    | चतु.  | मा.       | जल    | वन    | कीट |             |    |    |    |
| चतु                     | २     | १         | १     | ०     | १   |             |    |    |    |
| मानव                    | १     | २         | ११    | ०     | १   |             |    |    |    |
| जलचर                    | १     | ११        | २     | १     | १   |             |    |    |    |
| वनचर                    | ०     | ०         | १     | २     | ०   |             |    |    |    |
| कीट                     | १     | १         | १     | ०     | २   |             |    |    |    |
| ३ तारागुणाः वरस्य       |       |           |       |       |     |             |    |    |    |
| ता                      | १     | २         | ३     | ४     | ५   | ६           | ७  | ८  | ९  |
| १                       | ३     | ३         | ११    | ३     | ११  | ३           | ११ | ३  | ३  |
| २                       | ३     | ३         | ११    | ३     | ११  | ३           | ११ | ३  | ३  |
| ३                       | ११    | ११        | ०     | ११    | ०   | ११          | ०  | ११ | ११ |
| ४                       | ३     | ३         | ११    | ३     | ११  | ३           | ११ | ३  | ३  |
| ५                       | ११    | ११        | ०     | ११    | ०   | ११          | ०  | ११ | ११ |
| ६                       | ३     | ३         | ११    | ३     | ११  | ३           | ११ | ३  | ३  |
| ७                       | ११    | ११        | ०     | ११    | ०   | ११          | ०  | ११ | ११ |
| ८                       | ३     | ३         | ११    | ३     | ११  | ३           | ११ | ३  | ३  |
| ९                       | ३     | ३         | ११    | ३     | ११  | ३           | ११ | ३  | ३  |
| ५ ग्रहमैत्रीगुणाः वरस्य |       |           |       |       |     |             |    |    |    |
| ग्रहा                   | सू.   | च.        | म.    | बु.   | वृ. | शु.         | श. |    |    |
| सू.                     | ५     | ५         | ५     | ४     | ५   | ०           | ०  |    |    |
| च.                      | ५     | ५         | ४     | १     | ४   | ११          | ११ |    |    |
| म.                      | ५     | ४         | ५     | ११    | ५   | ३           | ११ |    |    |
| बु.                     | ४     | १         | ११    | ५     | ११  | ५           | ४  |    |    |
| पृ.                     | ५     | ४         | ५     | ११    | ५   | ११          | ३  |    |    |
| शु.                     | ०     | ११        | ३     | ५     | ११  | ५           | ५  |    |    |
| श.                      | ०     | ११        | ११    | ४     | ३   | ५           | ५  |    |    |

| ७ राशिकूटगुणाः वरस्य |      |    |     |      |       |         |      |     |      |         |      |
|----------------------|------|----|-----|------|-------|---------|------|-----|------|---------|------|
| राशयः                | १    | २  | ३   | ४    | ५     | ६       | ७    | ८   | ९    | १०      | ११   |
| मे                   | वृ   | मि | क   | सि   | कं    | तु      | वृ   | ध   | म    | कुं     | मी   |
| मेष                  | ७    | ०  | ७   | ७    | ०     | ७       | ०    | ०   | ७    | ७       | ०    |
| वृष                  | ०    | ७  | ०   | ७    | ७     | ०       | ७    | ०   | ७    | ०       | ७    |
| मिथुन                | ७    | ०  | ७   | ०    | ७     | ७       | ०    | ७   | ०    | ७       | ०    |
| कर्क                 | ७    | ७  | ०   | ७    | ०     | ७       | ७    | ०   | ७    | ०       | ०    |
| सिंह                 | ०    | ७  | ७   | ०    | ७     | ०       | ७    | ७   | ०    | ७       | ०    |
| कन्या                | ०    | ०  | ७   | ७    | ०     | ७       | ०    | ७   | ०    | ०       | ०    |
| तुला                 | ७    | ०  | ७   | ७    | ०     | ७       | ०    | ७   | ७    | ०       | ०    |
| वृश्चि               | ०    | ७  | ०   | ७    | ७     | ०       | ७    | ०   | ७    | ७       | ०    |
| धनु                  | ०    | ०  | ७   | ०    | ०     | ७       | ७    | ०   | ७    | ०       | ७    |
| मकर                  | ७    | ०  | ७   | ०    | ०     | ७       | ७    | ०   | ७    | ०       | ७    |
| कुम्भ                | ७    | ७  | ०   | ७    | ०     | ७       | ७    | ०   | ७    | ०       | ७    |
| मीन                  | ०    | ७  | ७   | ०    | ०     | ७       | ०    | ७   | ७    | ०       | ७    |
| ४ योनिकूटगुणाः वरस्य |      |    |     |      |       |         |      |     |      |         |      |
|                      | अश्व | गज | मेष | सर्प | श्वान | मार्जार | मूषक | मृग | महिष | व्याघ्र | सिंह |
| अश्व                 | ४    | २  | ३   | २    | २     | ३       | ३    | १   | १    | ३       | २    |
| गज                   | २    | ४  | ३   | २    | २     | ३       | ३    | ३   | २    | २       | २    |
| मेष                  | ३    | ३  | ४   | ३    | २     | ३       | ३    | ३   | १    | ३       | ०    |
| सर्प                 | २    | २  | ३   | ४    | २     | २       | १    | १   | २    | २       | २    |
| श्वान                | २    | २  | २   | २    | ४     | १       | १    | २   | २    | १       | २    |
| मार्जार              | २    | २  | ३   | २    | १     | ४       | ०    | २   | २    | १       | २    |
| मूषक                 | २    | २  | २   | १    | १     | ०       | ४    | २   | २    | २       | १    |
| गौ                   | ३    | २  | ३   | २    | २     | २       | ४    | ३   | १    | २       | ३    |
| महिष                 | १    | ३  | ३   | २    | २     | २       | ३    | ४   | १    | २       | ३    |
| व्याघ्र              | १    | २  | १   | २    | १     | १       | ०    | १   | ४    | २       | २    |
| मृग                  | ३    | २  | ३   | २    | ०     | २       | ३    | २   | १    | ४       | २    |
| वानर                 | २    | ३  | ०   | २    | २     | २       | २    | २   | १    | ४       | २    |
| नकुल                 | २    | २  | ३   | ०    | २     | २       | ३    | २   | २    | २       | ४    |
| सिंह                 | १    | ०  | १   | २    | १     | २       | २    | ३   | १    | २       | ४    |

### आयुःस्थानमारकादिस्थानञ्च-

अष्टमञ्च





| गोचरफल-बोधचक्र |             |             |         |         |          |            |             |             |         |
|----------------|-------------|-------------|---------|---------|----------|------------|-------------|-------------|---------|
| भाव            | सूर्य       | चन्द्र      | मंगल    | बुध     | गुरु     | शुक्र      | शनि         | राहु        | केतु    |
| तनु            | स्थानहानि   | सौख्य       | बन्धन   | भय      | अभय      | शत्रुनाश   | नाश         | कष्ट        | रोग     |
| धन             | भय          | धन          | धननाश   | धनाप्ति | धनाप्ति  | धनागम      | हानि        | धन          | धननाश   |
| सहज            | धन          | लाभ         | धनाप्ति | भीति    | लाभ      | शोक        | लाभ         | नैरुज्य     | सुख     |
| सुहृद्         | मानहानि     | रोग         | भय      | धन      | धनहानि   | लाभ        | शत्रुवृद्धि | शत्रुवृद्धि | भीति    |
| सुत            | दैन्य       | कार्यसिद्धि | धनक्षय  | रोग     | पुत्रसुख | पुत्राप्ति | धनपुत्रनाश  | शोक         | शोक     |
| रिपु           | विजय        | शत्रुभय     | विजय    | अलाभ    | शोक      | शत्रुभय    | द्रव्यलाभ   | धन          | धनाप्ति |
| जया            | भ्रमण       | लाभ         | व्यय    | विग्रह  | मान      | अशोक       | स्त्रीकष्ट  | हानि        | दुर्गति |
| मृत्यु         | पीड़ा       | कष्ट        | कष्ट    | लाभ     | क्लेश    | विपत्ति    | शत्रुभय     | रोग         | राजभय   |
| धर्म           | धर्महानि    | मान         | पीड़ा   | रोग     | धर्मरति  | लाभ        | धर्महानि    | पापरति      | बन्धन   |
| कर्म           | कार्यसिद्धि | सुख         | शोक     | सुख     | उन्नति   | दैन्य      | दौर्मनस्य   | वैर         | शोक     |
| आय             | धन          | लाभ         | धनाप्ति | सौख्य   | लाभ      | धनाप्ति    | आयुर्वृद्धि | सौख्य       | सुयश    |
| वय             | कष्ट        | व्यय        | हानि    | नाश     | चिन्ता   | हानि       | हानि        | शोक         | धनक्षय  |

| जन्म कालिक ग्रहों का भावफल ( स्त्रियों के लिये ) |            |             |            |               |            |            |             |             |         |
|--------------------------------------------------|------------|-------------|------------|---------------|------------|------------|-------------|-------------|---------|
| भाव                                              | सूर्य      | चन्द्र      | मंगल       | बुध           | गुरू       | शुक्र      | शनि         | राहु        | केतु    |
| तनु                                              | विधवा      | अल्पायु     | विधवा      | पतिव्रता      | पतिव्रता   | शत्रुनाश   | नाश         | कष्ट        | रोग     |
| धन                                               | दुःख       | पुत्रवती    | दुःखिता    | सौभाग्यवती    | सौभाग्यवती | धनागम      | हानि        | धन          | धननाश   |
| सहज                                              | पुत्रवती   | धनाढ्या     | पुत्रिणी   | धनवती         | पुत्रवती   | शोक        | लाभ         | नैरुज्य     | सुख     |
| सुहृद्                                           | दरिद्रा    | दुर्भंगा    | अल्पसन्तति | सुखी          | सुखी       | लाभ        | शत्रुवृद्धि | शत्रुवृद्धि | भीति    |
| सुत                                              | सन्ताननाश  | कन्याधिक    | पुत्रमरण   | उत्तमसुख      | उत्तमसुखी  | पुत्राप्ति | धनपुत्रनाश  | शोक         | शोक     |
| रिपु                                             | धनवती      | विधवा       | धनयुक्त    | क्लेशप्राप्ति | धनवती      | शत्रुभय    | द्रव्यलाभ   | धन          | धनाप्ति |
| जया                                              | रोगीणी     | प्रवासिनी   | स्वामीनाश  | क्षय          | भयबन्धन    | अशोक       | स्त्रीकष्ट  | हानि        | दुर्गति |
| मृत्यु                                           | विधवा      | अतिकष्ट     | धनवती      | स्वजनवियोग    | स्वजनवियोग | विपत्ति    | शत्रुभय     | रोग         | राजभय   |
| धर्म                                             | धर्मनिष्ठा | पुत्रवती    | कर्मकारिणी | उत्तमभोग      | धर्मवृद्धि | लाभ        | धर्महानि    | पापरति      | बन्धन   |
| कर्म                                             | परिश्रमी   | व्यभिचारिणी | मृत्यु     | धनवती         | पतिधनी     | दैन्य      | दौर्मनस्य   | वैर         | शोक     |
| आय                                               | पुत्रवती   | लक्ष्मीवती  | पुत्रवती   | सुखी          | आयुष्मती   | धनाप्ति    | आयुर्वृद्धि | सौख्य       | सुयश    |
| वय                                               | अतिव्ययी   | दिनान्धा    | वन्ध्या    | सुपुत्रवती    | सुशीला     | हानि       | हानि        | शोक         | धनक्षय  |

| राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाघातादिचक्रम् |        |        |       |       |       |        |        |       |      |        |      |        |
|---------------------------------------|--------|--------|-------|-------|-------|--------|--------|-------|------|--------|------|--------|
| राशि                                  | मे     | वृ     | मि    | क     | सिं   | क      | तु     | वृ    | ध    | म      | कु   | मी     |
| पति                                   | म      | शु     | बु    | च     | सू    | बु     | शु     | मं.   | वृ   | श      | श    | वृ     |
| संज्ञा                                | चर     | स्थि   | द्वि  | चर    | स्थि  | द्वि   | चर     | स्थि  | द्वि | चर     | स्थि | द्वि   |
| प्रकृ                                 | पित्त  | वात    | सम    | कफ    | पित्त | वा     | स      | क     | पि   | वा     | सम   | क      |
| आकृ                                   | ह्रस्व | ह्र    | सम    | सम    | दीर्घ | दी     | दी     | दी    | स    | स      | ह्र  | स      |
| जाति                                  | क्ष    | वै     | शू    | वि    | क्ष   | वै     | शू     | वि    | क्ष  | वै     | शू   | वि     |
| घामा                                  | का     | मार्ग  | आषा   | पौ    | ज्ये  | भा.    | मा     | आ     | श्रा | वै     | चै.  | फा     |
| घाति                                  | नन्दा  | पूर्णा | भद्रा | भद्रा | जया   | पूर्णा | रिक्ता | नन्दा | जया  | रिक्ता | जया  | पूर्णा |
| दिन                                   | र.     | श.     | चं.   | बु.   | श     | श      | बृ.    | शु.   | शु.  | मं     | वृ   | शु     |
| नक्षत्र                               | म.     | ह.     | स्वा. | अनु   | मू.   | श्र    | श      | रे.   | म.   | रो.    | आ    | श्ले   |
| योग                                   | वि.    | सु.    | प.    | व्या  | धृ    | शु.    | शुक्ल  | व्य   | वज्र | वै     | गं   | वज्र   |
| करण                                   | बव     | श.     | च     | ना    | बव    | कौ     | तै     | ग     | तै   | श.     | वणि  | वि     |
| प्रहर                                 | १      | ४      | ३     | १     | १     | १      | ४      | १     | १    | ४      | ३    | ४      |
| पु.चं.                                | १      | ५      | ६     | २     | ६     | १०     | ३      | ७     | ४    | ८      | ११   | १२     |
| स्त्रीचं.                             | १      | ८      | ७     | ६     | ४     | ३      | ६      | २     | १०   | ११     | ५    | १२     |

**ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम्**

| ग्रह     | सू.    | चं.     | मं.   | बु.  | बृ.   | बृ.    | शु.  | रा   | के  |
|----------|--------|---------|-------|------|-------|--------|------|------|-----|
| उच्च     | मे १०  | वृ ३    | म२८   | कं१५ | क५    | मी२७   | तु२० | मि   | ध   |
| नीच      | तु १०  | वृश्चि३ | क२८   | मी१५ | म५    | कं२७   | मे२० | ध    | मि  |
| मूत्रि   | सि     | वृष     | मे    | कं   | ध     | तु.    | कु   | कु   | सि  |
| जातिः    | क्ष    | वै      | क्ष   | शू   | ब्रा  | ब्रा   | चा   | चा   | चा  |
| दिक्     | पू     | वा      | द     | उ    | ई     | अ      | प    | नै   | नै  |
| भाग्य    | २२वर्ष | २४व     | २८व   | २२व  | १६व   | २५व    | ३६व  | ४२व  | ४८व |
| प्रकृतिः | पित्त  | कफ      | पित्त | सम   | सम    | वात    | वात  | वात  | वात |
| पुसंज्ञा | पु     | स्त्री  | पु    | नपुं | पु    | स्त्री | नपुं | नपुं | पु  |
| आकृति    | ह      | ह       | ह     | ह    | दीर्घ | ह      | दी   | दी   | दी  |

**कारकग्रहाः-** ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तनयूनांशक्रमेणामात्य-भ्रातृमातृपितृ-पुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः। अंशसाप्त्ये कलाधिक्यं, कलादिसाप्त्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्।

**स्थिरकारकाः-** तन्वादिभावनां क्रमेण सूर्य-गुरु-कुज-चन्द्रबुध-गुरु-भौम-शुक्र-शनि-सूर्यगुरु-रविबुधगुरुशनि-गुरु-शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति।

**स्वर्णादिचरणकचन्मज्ञानम्-** जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।।६ स्थिते रजतपादे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपाद, ४।८।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम्। **आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु**-रजतपादे, ज्येष्ठोदिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादित्रिषु लौहपादे जन्म भवति।

**तेषां फलम्**-स्वर्णपादेत्युत्कृष्टं, रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं, लौहपादे च हीनफलमिति।

### हस्तरेखा-( हथेली में ग्रह पर्वत (Mounts) व उनका फल )

हथेली में ग्रहों के पर्वतों का भी विशेष महत्त्व रहता है। अगर जन्म कुण्डली में कोई ग्रह बलवान होता है तो उस जातक की हथेली में भी उस ग्रह का पर्वत उभरा और स्पष्ट होता है। जिस व्यक्ति को अपनी जन्म-तिथि अथवा जन्म समय का ज्ञान नहीं होता, उस व्यक्ति की हथेली पर पर्वतों के आधार पर सही जन्म-कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। अंगूठे से जन्म लग्न मालूम किया जाता है। प्रथम अंगुली (तर्जनी) से बृहस्पति की स्थिति, मध्यमा से शनि, व अनामिका से सूर्य की स्थिति मालूम कर कुण्डली का निर्माण किया जा सकता है। तर्जनी के नीचे के स्थान को बृहस्पति का पर्वत कहते हैं। मध्यमा अंगुली के नीचे के स्थान को शनि का पर्वत कहते हैं। अनामिका अंगुली के नीचे के भाग को सूर्य पर्वत कहते हैं और कनिष्ठिका अंगुली के नीचे के स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। अंगूठे के नीचे हथेली पर जो जीवन रेखा से घिरा हो उसे शुक्र पर्वत कहते हैं। उसी के बाँयी ओर हथेली में ऊँचे उठे पर्वत को चन्द्र पर्वत कहते हैं। हृदय रेखा के नीचे और मस्तिष्क रेखा के ऊपर ऊँचे उठे भाग को मंगल का प्रथम क्षेत्रा कहते हैं। शुक्र पर्वत के ऊपर और बृहस्पति, को मंगल का द्वितीय क्षेत्र कहते हैं। इस प्रकार सूर्य, चन्द्र, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि के एक-एक ग्रह पर्वत तथा मंगल के दो ग्रह पर्वत हथेली में होते हैं। हथेली का मध्य भाग की अपेक्षा ग्रह पर्वत ऊँचे उठे होते हैं। अंग्रेजी में इन पर्वतों को डवनदजे कहते हैं।

**सूर्यपर्वत (Sun Mount)** यह पर्वत अनामिका अंगुली के नीचे होता है। सूर्य पर्वत उन्नत होने पर जातक उत्साही, कला प्रेमी, शिल्पविद्या में निपुण, भावुक, धनवान्, उदार होता है। अगर सूर्य का पर्व धंसा हुआ हो तो उस जातक में उत्साह की कमी होती है और उसकी बुद्धि भी तेज नहीं होती । उसे सामाजिक कार्यों में प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं होतीं यदि क्रास का चिह्न हो तो अनावश्यक बदनामी प्राप्त होती है। यदि सूर्य पर्वत हथेली में साधरण रूप से उच्च हो तो काव्य-कला सौन्दर्य इत्यादि में अभिरूचि होती है। जिस व्यक्ति के हाथ में सूर्य का पर्वत उच्च हो उसे यश व प्रतिष्ठा प्राप्त होती है और वह धनवान होता है। सूर्य का पर्वत उठा हुआ हो तो व्यक्ति लेखक, यशस्वी, सुखी एवं बुद्धिमान होता है। सूर्य के पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तो जातक उच्च राज्यधिकारी, सरकारी क्षेत्रों में लाभान्वित, उच्च पदाधिकारी या लेखक अथवा कलाकार होता है। सूर्य-पर्वत पर बिन्दु या वृत्त का चिह्न शुभ नहीं माना जाता। जिस व्यक्ति के हाथ में यह पर्वत हो ही न उसका जीवन साधरण सा होता है। इस पर्वत से प्रतिभा, यश, सम्मान, सुख व सफलता की जानकारी प्राप्त होती है। अगर सूर्य-पर्वत बुध पर्वत के साथ मिला हो तो ऐसे जातक नम्र स्वभाव वाले, वाहनादि सुखों से युक्त, ईमानदार, व्यवहार दक्ष होते हैं। यदि स्त्री के हाथों में यह लक्षण हों तो रूपवती, पति से प्रीति रखने वाली, हंसमुख व सुशीला होती है। सूर्य पर्वत पर अगर दो खड़ी रेखाएँ हो तो वह महाधनी होता है। अगर सूर्य का पर्वत शनि की ओर झुक जाए तो व्यक्ति एकान्तप्रिय व उदासीन होता है कभी-कभी निराशावादी बन जाता है।



**चन्द्र पर्वत (Moon Mount)** दाहिने हाथ में आयु रेखा से बाँयी ओर भाग्य रेखा के पास और।

मणिबंध रेखा से ऊपर चन्द्र पर्वत होता है। चन्द्र क्षेत्र सौन्दर्य-प्रियता, कल्पना काव्य, कला, संगीत, कल्पना, गायन आदि के कारण सपफल होता है धन, स्त्री, माता व विदेश यात्रा का सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्र क्षेत्र, साधारण हो तो पाचन शक्ति कमजोर होती है। चन्द्र-क्षेत्र का संपूर्ण भाग अत्यधिक उच्च हो और स्वास्थ्य के अन्य लक्षण हथेली में शुभ न हों तो सिर दर्द, पागलपन आदि के रोग होते हैं। चन्द्र-पर्वत अच्छा और उठाव हो तो मनुष्य सुखी, कला प्रेमी और शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है, अधिक उठा हुआ हो तो व्यक्ति में उतावलापन अधिक होता है और उसे क्रोध भी जल्दी आता है। चन्द्र पर्वत गहरा हो तो व्यक्ति चिन्ता-ग्रस्त होता है। चन्द्र-क्षेत्र पर त्रिकोण का चिह्न हो तो व्यक्ति गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। इस पर्वत पर वर्तुल या कोई दाग का चिह्न हो तो मानसिक रोग एवं जलभय होता है। यदि इस पर ऊर्ध्व रेखाएँ हों, तो विदेश-यात्रा के अवसर मिलते हैं। इस पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ विदेश में विघ्न व परेशानियाँ पैदा करती है। चन्द्र-क्षेत्र मणिबन्ध की ओर झुका हुआ हो व्यक्ति कल्पना लोक में विचरण करता है। चन्द्र-पर्वत से यदि कोई रेखा शुक्र पर्वत की ओर जावे तो वह व्यक्ति जलयात्रा करता है। चन्द्र प्रधान व्यक्ति कलाकार होते हैं। तथा कोमलता और भावुकता इनके स्वाभाविक गुण होते हैं। चन्द्र पर्वत उन्नत हो तो जातक में कल्पना, भावुकता, सौन्दर्य प्रियता तथा प्रेम विशेष रूप से होता है। ऐसे व्यक्ति अच्छे कलाकार, संगीतकार, साहित्यकार और कवि होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्र-क्षेत्र अनुपस्थित होता है, वह कठोर हृदय का होता है।

**मंगल पर्वत (Mars Mount)** मंगल के दो क्षो होते हैं। पहला हथेली में बुध पर्वत एवं हृदय रेखा के नीचे एवं चंद्र पर्वत के ऊपर मंगल का स्थान है। दूसरा मंगल पर्वत बृहस्पति पर्वत के नीचे होता है जहाँ से जीवन-रेखा प्रारम्भ होती हे। यह जीवन रेखा के अन्दर और शुक्र पर्वत की समाप्ति पर होता है। मंगल प्रधान व्यक्ति साहसी निडर, तथा शक्तिशाली होते हैं। जिनके हाथों में मंगल पर्वत बलवान होता है वे प्रभुत्वाकांक्षी, परिश्रम के कामों में दक्ष, लड़ाई-झगड़े में उत्साही होते हैं। धीरजता तथा साहस इनका प्रधान गुण होता है। नैतिक बलशाली, चंचल प्रकृति के सैनिक होते हैं। यदि मंगल पर्वत बहुत अधिक ऊँचा हो तो वह व्यक्ति दुराचारी, अकारण क्रोध करने वाला समाज-विरोधी, निर्दयी होता है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव से लड़ाकू तथा अपनी बात को जबरदस्ती मनवाने के आदी होते हैं। यदि मंगल का पर्वत नीचा हो तो व्यक्ति में सहन-शक्ति की कमी होती है, नास्तिक, डरपोक तथा शान्त विचार का होता है। यदि मंगल पर्वत का झुकाव शुक्र क्षेत्र की ओर होता है तो यह निश्चित समझना चाहिए कि उस व्यक्ति में सदगुणों की अपेक्षा दुर्गुण विशेष होंगे। ऐसे व्यक्ति झूठी शान-शौकत, व्यर्थ का आडम्बर तथा प्रदर्शन प्रिय होते हैं। यदि मंगल पर्वत या राहु के पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति (कुशल, दृढ़-निश्चयी, उत्तम सेनापति अर्थात् प्रबन्धन क्षमता से युक्त होता है। मंगल पर्वत यदि बुध की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छी राय देने वाला, सलाहकार होता है। यदि मंगल पर्वत पर आड़ी-तिरछी रेखाएँ हों और उनसे जाल -सा बन गया हो तो निश्चय ही उसकी मृत्यु दुर्घटना के फलस्वरूप होती है। मंगल का पर्वत यदि अशुभ, निर्बल हो तो ऐसे व्यक्ति को तीव्र ज्वर, पित्त विकार, शस्त्र, शत्रु, चोर व राजा से भय प्राप्त होता है। रक्त-विकार से पीड़ा होती है। यदि मंगल पर्वत भली प्रकार से विकसित हो तथा साथ ही हथेली का रंग भी लालिमा लिए हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही ऊँचा पद प्राप्त करता है। संघर्षों एवं बाधाओं के बावजूद् वह अपने लक्ष्य तक पहुँच जाने में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है।

**वस्तुतः** मंगल पर्वत से ही व्यक्ति साहसी, निर्भीक और स्पष्टवक्ता बनता है।



- (८) यदि किसी विवाह-रेखा स्पष्ट तथा सुन्दर हो, साथ ही चन्द्र क्षेत्र से आई हुई कोई प्रभाव रेखा भाग्य रेखा में आकर मिल जाये तो ऐसी स्त्री का विवाह किसी धनी कुल में होता है। उसे अपन ेसम्बन्धियों के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति के सहयोग से भाग्योदय होता है।
- (९) यदि विवाह-रेखा में से पतली-पतली शाखायें निकलकर हृदय रेखा की ओर गई हो तो ऐसी स्त्री के पति का स्वास्थ्य खराब रहने के कारण दाम्पत्य सुख में बाधा होती है।

## कालसर्प योग-चामत्कारिक शुभ फल भी देता है

कालसर्प योग जन्म कुण्डली में उस स्थिति में बनता है, जब कुण्डली में समस्त ग्रह राहु-केतु के एक ओर स्थित होते हैं। ज्योतिष जगत में ‘कालसर्प योग’ के विषय में बड़ी चर्चाएँ हैं। प्राचीन विचारधारा के ज्योतिविदों का कहना है कि प्राचीन ग्रन्थों में कालसर्प योग का कहीं उल्लेख नहीं है। आधुनिक ज्योतिर्विद जातक के जन्माङ्ग में कालसर्प योग की जो स्थिति बनाते हैं, वह स्थिति पहले भी होती थी, जिसे राहु की दशा कहा जाता था। अति प्राचीन ज्योतिर्विदों ने ‘**कालसर्प योग**’ शब्द का प्रयोग नहीं किया। परन्तु महर्षि पराशर एवं वराह मिहिर ने अपने ग्रन्थों में ‘**सर्प योग**’ की चर्चा की है। बृहत्जातक तथा वृहत् पराशर होराशास्त्र में- योग: प्रोक्तकाल सर्पश्च .....॥ एवं ‘राहुकेतुमध्ये ग्रहा सर्वे विघ्नदा काल सर्प संज्ञक: तथा काल सर्पयोगस्य विषविषात् जीवने भयावह पुन: पुनरपि शोकं च। मानसागरी के अध्याय ४ में स्पष्ट उल्लेख है कि “**‘लग्नाच्च सप्तमे स्थाने शनि राहु संयुतौ। सर्पेण बाधा तस्योक्ता शय्यायां स्वपतोऽपिच।।४१०॥’**” यदि सप्तम भाव में शनि राहु के साथ हो तो उस जातक की मृत्यु ‘सर्पदश’ से होती है। इसी सर्प योग को हम ‘**कालसर्प योग**’ भी कहते हैं।

**( राहु वायुकारक, छाया व अशुभ ग्रह होते हुए भी प्राणी को दु:खों की अग्नि में तपाकर उसे कुन्दन की भान्ति निखारने एवं परिष्कृत करने का कार्य करता है। दु:खों से व्याकुल होकर ही मनुष्य की शक्तियों का स्मरण करता है।)**

कुछ विद्वान लोग यह प्रश्न करते हैं कि ‘**कालसर्प योग**’ अस्तित्व में कैसे आया? तो यह प्रश्न अनुचित नहीं है क्योंकि अधिकांश ग्रन्थों में ‘**सर्प योग**’ की तो चर्चा है किन्तु ‘**कालसर्प योग**’ की नहीं। ‘काल’ शब्द जोड़ दिया जाए, तो साधारण प्राणी के मस्तिष्क में उसका प्रथम अर्थ ‘मृत्यु’ ही आएगा और जब ‘काल’ शब्द के साथ ‘सर्प’ जुड़ा हो, तब तो प्रथम दृष्ट्या जातक भयभीत हो जायेगा। समाज में सामान्य रूप से ‘**काल**’ और ‘**सर्प**’ दोनों प्रथमत: भयावह ही हैं। यह तो उसे धैर्य बँधाने और समझाने पर ही समझ में आयेगा कि ‘काल’ का अर्थ है समय और ‘सर्प’ हमारे पूज्य देवता हैं, नाग की पूजा और शिव भक्ति मे हमें ऊर्जा प्राप्त होकर मन को शान्ति मिलती है। राहु-केतु की महादशा एवं कालसर्प/पितृदोष से पीड़ित जातकों की ऊर्जा शक्ति क्षीण हो जाती है। इसलिए नाग पूजा एवं शिवभक्ति का विधान हमारे शास्त्रों ने सुझाया है। इससे जातक को आने वाले कष्टों से राहत होंगे।

राहु-केतु छाया ग्रह हैं। जैसे प्राचीन चरक संहिता में कैंसर एवं एड्स जैसे रोगों का उल्लेख नहीं है।, परन्तु ये रोग नहीं है, ऐसा नहीं माना जा सकता। इसी प्रकार कालसर्प योग जब सभी सात ग्रह राहु और केतु या केतु या राहु के मध्य आ जाते हैं, तो राहु के प्रभाव से अन्य ग्रह निष्प्रभावी हो जाते हैं और राहु का अधिक प्रभाव आता है, जन्मकुण्डली में कालसर्प योग का निर्णय करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। राहु या केतु के साथ अन्य ग्रहों का साहचर्य की स्थिति में भाव-स्पष्ट कर लिए जाएँ तो इस योग में और भी अधिक स्पष्टता आ जाएगी। जैसे-लग्न भाव से निर्मित कालसर्प योग में यदि राहु के साथ मंगल या कोई भी ग्रह है तथा उसके भोगांश राहु से अधिक हैं तो कालसर्प योग दोषपूर्ण नहीं होगा, बल्कि योगकारक बनता है। कुछ विद्वान तो इसे भंग कालसर्प दोष की कुण्डली मानते हैं।

वैदिक रूप से राहु का अधिदेवता काल, प्रति अधिदेवता सर्प है, जबकि केतु का अधिदेवता चित्रगुप्त एवं प्रतिअधिदेवता ब्रह्माजी हैं। कालसर्प योग से संबंधित जन्मकुण्डलियों के अध्ययन करने पर यह दिखाई पड़ता है कि कुछ कालसर्प योग से युक्त जातक असहनीय कष्ट झेल रहे हैं और कुछ उत्तरोत्तर समृद्धि, वैभव प्राप्त कर रहे हैं। व्यक्ति जब पद, प्रतिष्ठा, धन, परिवार आदि के मद में चूर हो जाता है, तब वह अपने सम्माननीय माता-पिता, पितर तथा आश्रित अन्य लोगों को सम्मान न देकर उनसे सम्मान कराने की इच्छायें रखता है और उन्हें मानसिक रूप से प्रताड़ित करता है, उसी का प्रभाव अगले जन्म में कालसर्प योग के रूप में आता है। इसके विपरीत अपने माता-पिता आदि की यथाशक्ति सेवा करते हैं, उन्हें कालसर्प योग अनुकूल हो सुखी बनाता है।

**सामान्यत: कालसर्प योग का प्रभाव जीवनपर्यन्त रहता है, परन्तु राहु अथवा केतु की दशाऽन्तर्दशा में इसके प्रभाव, फलों का प्रादुर्भाव होते देखा जा सकता है। एक अन्य मान्यतानुसार कालसर्प योग यदि किसी**

आवश्यकता से अधिक उठा हुआ हो तो वह एकान्त-प्रिय और वैराग्य की भावना रखने वाला होता है। शनि का पर्वत गहरा होने पर मनुष्य का जीवन दु:खी होता है और वह कष्टपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। जिस व्यक्ति के शनि पर्वत पर त्रिकोण का चिह्न हो, वह यौगिक क्रियाओं और गुप्त विद्याओं को जानने वाला होता है। शनि पर्वत पर वृत् या बिन्दु के चिन्ह दु:ख व दरिद्रता के चिह्न होते हैं। शनि पर्वत प्रधान व्यक्ति एकान्त-प्रिय होने के कारण भीड़ से बचना चाहते हैं। शनि क्षेत्र प्रधान व्यक्ति प्राय: इंजीनियर, जादूगर, साहित्यकार व वैज्ञानिक होते हैं। नृत्य, गान, संगीत इत्यादि में इनकी रुचि नहीं होती है। ये संदेहशील प्रकृति के व्यक्ति होते है। शनि क्षेत्र अत्यधिक विकसित होने पर जातक आत्महत्या तक कर लेता है। वे स्वभाव से उदासीन व चिड़चिड़े होते हैं। जिस व्यक्ति के हाथ में शनि पर्वत वृहस्पति की ओर झुका हुआ हो तो श्रेष्ठ होता है। उस व्यक्ति में वृहस्पति के गुणों का समावेश हो जाता है। वह व्यक्ति उन्नतशील बन जाता है। सूर्य की ओर झुका हुआ होने पर व्यक्ति निष्क्रिय व उदासीन हो जाता है। शनि क्षेत्र पर रेखाएं शुभ होती है परन्तु चिह्न जैसे वृत् आदि अशुभ माने गए है।

ऊपर संक्षेप में भिन्न ग्रह क्षेत्रों के लक्षण और फल बताये गये हैं। किसी हाथ में एक, किसी में दो, किसी में तीन ग्रह क्षेत्र उच्च रहते हैं। इसलि अलग-अलग फलों का मिलान पर, परिणाम में जो फल आवे, वह कहना चाहिए।

### विवाह सम्बन्धी योग-

- (१) यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो और वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है।
- (२) यदि स्त्री के दाएँ हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायक प्राप्त होती है।
- (३) यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उदित होकर गुरु-पर्वत पर गई हो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है। उसे सुख, यश एवं विदेश-गमन आदि के लाभ प्राप्त होते है।
- (४) यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय-रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है।
- (५) यदि हृदय रेखा गुरु क्षेत्र से उदय हो तथा चन्द्र से निकलती हुई भाग्य रेखा आकर हृदय-रेखा में विलीन हो गई तो ऐसी स्त्री को अत्यधिक प्रेम करने वाला पति प्राप्त होता है।
- (६) यदि हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।
- (७) यदि भाग्य-रेखा, चन्द्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर सुन्दर गहरे रूप में बृहस्पति के क्षेत्र तक चली जाये तो उस स्त्री का अपने पति अथवा किसी अन्य पुरुष की सहायता से भाग्योदय होता है।

है। यदि गुरु, शुक्र का पर्वत एक समान ऊँचा हो तो ऐसा व्यक्ति असत्य वक्ता, शत्रु-युक्त, अविचारी, झगड़ालू तथा स्त्रियों के साथ रहकर भी उनसे कम प्रीति वाला होता है। यदि गुरु पर्वत निम्न तथा शनि पर्वत ही अधिक उठा हो तो वह समाज व घर वालों से घृणा करता है। तथा इन दोनों के एक समान ऊँचे होने पर धैर्यवान्, भाग्यवान और अदृष्टवादी होता है।

अगर बृहस्पति-क्षेत्र पर क्रास का चिह्न हो तो जातक धार्मिक क्षेत्र में बहुत ऊँचा उठ जाता है। उसका वैवाहिक जीवन सानन्द रहता है। यदि गुरु पर्वत पर सीधी रेखा हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी होता है परन्तु बहुत सी रेखाएं होने पर अपयश प्राप्त होता है। गुरु पर्वत पर त्रिकोण चिह्न हो तो व्यक्ति सात्विक विचार, चतुर व कुशल होता है। यदि त्रिकोण के साथ सूर्य रेखा भी हो तो ऐसा व्यक्ति संस्था का मंत्री होता है। गुरु के पर्वत पर तारा का चिह्न हो तो अच्छा फल देता है किन्तु परिवार की ओर से परेशानी कारक होता है। यदि गुरु के पर्वत पर गुणा (क्रास) का चिह्न हो तथा तर्जनी के मूल में स्पष्ट हो तो उस व्यक्ति का विवाह सम्पन्न एवं कुलीन घराने में होता है। ऐसे व्यक्ति ससुराल पक्ष से सहयोग प्राप्त कर अच्छी उन्नति प्राप्त कर लेते हैं। गुणा का चिह्न या अत्यन्त सूक्ष्म होने पर उसके मस्तक पर चोट आदि से कोई घाव अवश्य हो जाता है।

यदि व्यक्ति की उँगलियाँ नुकीली हों तथा गुरु पर्वत विकसित हो तो वह व्यक्ति अंधविश्वासी होता है। वर्गाकार उँगलियां के साथ विकसित गुरु पर्वत हो तो वह जीवन में निरंकुश तथा अत्याचारी बन जाता है। यदि उँगलियाँ लम्बी हो तो वह व्यक्ति अपव्ययी तथा भोगी होता है। यदि गुरु पर्वत अशुभ हो तो उसे कुष्ठ, चर्म, क्षय-रोग, गठिया, पीलिया तथा फेफड़े सम्बन्धी रोग रहता है।

**वस्तुत:** गुरु पर्वत जीवन में अत्यधिक सहायक तथा उन्नति की ओर अग्रसर करने वाला पर्वत कहा गया है।

**शुक्र पर्वत (Venus Mount)**-अंगूठे के नीचे और जीवन रेखा के भीतर का भाग शुक्र क्षेत्र कहलाता है। शुक्र पर्वत से सौन्दर्य प्रियता, काम वासना, संगीत प्रियता, स्वास्थ्य, संतान उत्पन्न करने की शक्ति का विचार किया जाता है। अगर किसी व्यक्ति के हाथ में शुक्र का पर्वत उठा हुआ न हो तो उस व्यक्ति में उपर्युक्त गुण न्यून मात्रा में होता है। शुक्र क्षेत्र का साधारण उच्च होना अच्छा है। साधारण उच्च होने पर जातक में उपर्युक्त सभी गुण पाये जाते हैं।

शुक्र का अति उच्च होना अशुभ होता है। अति उच्च होने पर मनुष्य अत्यधिक विलासी, व्यभिचारी व कामुक होता है। शुक्र पर्वत उठावदार व शुभ होने पर व्यक्ति निरोगी होता है, और वह सुख-शान्तिपूर्वक जीवन व्यतीत करता है। उसकी ललित कला में अधिक रूचि होती है। यदि शुक्र पर्वत पर व्रत या बिन्दु के चिह्न अशुभ होते हैं। शुक्र क्षेत्र से कोई रेखा वृहस्पति की ओर जावे तो उस व्यक्ति को यश, प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यदि कोई रेखा शुक्र से निकल कर भाग्य रेखा को काटे तो धन हानि होती है। शुक्र पर्वत हथेली में अनुपस्थित होने पर व्यक्ति निर्माँही हो जाता है। वह उदासीन व सन्यासी बन जाता है। हाथ में शुक्र पर्वत अच्छा होने पर चेहरा लावण्यमय व प्रभावशाली होता है।

**शनि पर्वत (Saturn Mount)**-यह मध्यमा अंगुली के नीचे होता है। एकान्त-प्रियता, परिश्रम-शीलता व किसी वस्तु का गंभीरता पूर्वक अध्ययन इसके स्वाभाविक गुण है। यदि शनि पर्वत अत्यधिक उन्नत हो तो उस जातक पर शनि का प्रभाव अधिक रहता है। अत: वह मनुष्य चिन्तायुक्त व दु:खी रहता है तथा अविश्वासी होता है। अगर शनि का क्षेत्र साधारण उन्नत हो तो वह जातक विचारशील होता है। अगर शनि का पर्वत बिगड़ा हुआ हो तो उस मनुष्य का स्वास्थ्य खराब रहता है व विशेष रूप से वह पित-वात रोग का रोगी होता है। शनि का पर्वत उठावदार व शुभ हो तो उस व्यक्ति का जीवन सुखी होता है।

**बुध पर्वत (Mercury Mount)**- कनिष्ठिका ऊँगली के नीचे (मूल में) हृदय रेखा या मंगल पर्वत के ऊपर जो स्थान है उस स्थान को बुध पर्वत कहते हैं। यह पर्वत भौतिक सम्पदा एवं भौतिक समृद्धि का सूचक है। बुध का क्षेत्र अच्छा हो तो व्यक्ति को व्यापारिक एवं वैज्ञानिक कार्यों में सफलता मिलती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान, ज्योतिषी, धनी एवं कवि होता है। कानून का ज्ञाता, लेखक एवं हंसमुख प्रकृति का भी होता है। यदि बुध पर्वत अत्यन्त ऊँचा हो तो वह ठग, चालाक, धूर्त, विश्वासघाती और लफंगा भी होता है। ऐसे व्यक्ति धन की पीछे पागल रहते हैं। यदि बुध पर्वत नीचा हो तो अप्रसन्न, आलसी, धनहीन एवं मन्दबुद्धि होते हैं।

यदि बुध पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में आसानी से सफलता प्राप्त कर सकती है। ऐसे व्यक्ति व्यापार कुशल, प्रतापी चिकित्सक, वकील, ज्योतिषी आदि होता है। ऐसे व्यक्ति विद्या-व्यसनी होते हैं। यदि बुध पर्वत मंगल पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त हंसमुख विद्या-व्यसनी होते हैं। यदि बुध पर्वत मंगल पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त हंसमुख प्रकृति का होता है। यही फल मंगल, बुध दोनों के उच्च होने का भी समझना चाहिए। जिन व्यक्तियों के बुध व गुरु के पर्वत समान रूप से ऊँचे उठे हों, वे विद्याभ्यासी, संगीत प्रिय, सफल साहित्यकार, पत्रकार, लेखक होते हैं। श्रमवान और उद्यमी होते हैं। मान-सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं। बुध व शुक्र का पर्वत समान रूप से ऊँचे हो तो वह विलक्षण ज्ञान वाला, श्रृंगार प्रिय और संतति सुख से पूर्ण होता है।

जिनके हाथों में बुध पर्वत सही रूप से विकसित होता है, वे मनोविज्ञान के क्षेत्र में माहिर होते हैं। ऐसे व्यक्ति अवसरवादी एवं भौतिकवादी कहे जाते हैं। धन-संचय करने में ये उचित-अनुचित आदि का कोई ख्याल नहीं रखते। यदि बुध पर्वत पर कोई तिरछी रेखा आई हो तो उसे गुप्त परेशानी होती है। यदि इस पर त्रिकोण △ का चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति यशस्वी, मान प्रतिष्ठा वाला या व्यापारी होकर प्रचुर धन पैदा करता है। यदि बुध पर्वत पर दो चार खड़ी रेखाएँ हों तो वह डॉक्टर या औषधि संग्रहकर्ता होता है। यदि बुध का पर्वत ऊँचा उठा हुआ कुछ चौरस दिखे तो वह ज्योतिषी होता है। यदि हथेली पर बुध पर्वत का अभाव हो तो उसका जीवन दरिद्रता में ही व्यतीत होता है। लम्बी उंगलियों के साथ विकसित बुध पर्वत हो तो वह व्यक्ति स्त्रियों के प्रति विशेष आसक्ति रखने वाला होता है।

यदि बुध पर्वत अपने आप में पूर्णत: श्रेष्ठ एवं विकसित हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

**बृहस्पति क्षेत्र (Jupiter Mount)**-तर्जनी अँगुली के मूल भाग में राहु पर्वत के ऊपर शनि पर्वत के पास जो स्थान है उसे गुरु का क्षेत्र या गुरु पर्वत कहते हैं। हथेली में गुरु का पर्वत उच्च हो तो उस व्यक्ति में देव-तुल्य सभी गुण पाए जाते हैं। ऐसा व्यक्ति तेजवान, ओजस्वी, दर्शनीय विद्वान्, उदार, ज्योतिषी, अध्यापक होता है। वह धनधान्य युक्त, सदाचारी, सत्यवक्ता होने के साथ-साथ जहाँ स्वयं की उन्नति करता है, वहाँ दूसरों को उन्नति देने में सहायक रहता है। यदि गुरु का पर्वत अत्यन्त उच्च हो तो व्यक्ति आडम्बर वाला, मिथ्याभिमानी, स्वार्थी, धोखा देने में चतुर तथा स्वेच्छाचारी होता है।

यदि गुरु पर्वत अल्पविकसित या अविकसित होता है तो उन व्यक्तियों में उपर्युक्त गुणों की न्यूनता समझनी चाहिए। विपरीत योनि के प्रति इनके मन में कोमल भावनाएँ होती हैं। यदि गुरु पर्वत का झुकाव शनि की ओर हो तो ऐसा व्यक्ति चिन्तनशील तथा अपने ही कार्यों में लगा रहने वाला परन्तु जीवन में सफलता न मिल पाने के कारण धीरे-धीरे उसमें निराशा की भावना आने लगती है। यदि गुरु पर्वत राहु पर्वत की ओर झुका हो तो ऐसा व्यक्ति धूर्त तथा रोगी होता







### सिमरियाधाम में महाकुम्भयोग

ताटङ्कमण्डलविभूषितगण्डभागां चूडामणिप्रभृतिमण्डनमञ्जिताङ्गीम्।

कौशेयवस्त्रमणि-मौक्तिकहारयुक्तां ध्यायेद्विदेहतनयां शशिंगौरवर्णाम्॥

ध्यायेत् कल्पतरोरधःप्रवितते सौवर्णचिन्तामणौ नानारत्नविराजितेऽत्र भवने सद्व्रत्तसिंहासने।

दूर्वानूतनपत्रसुन्दरतनुं चापं सबाणं महद्विभ्राणं मुकुटादि-भूषणयुतं पीताम्बर राघवम्॥

( यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल ५, श्लो. ७१-८० )

लक्ष्मीः कौस्तुभ-पारिजातक-सुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमाः धेनुः कामदुधा सुरेश्वरगजो रम्भादि-देवाङ्गनाः।

अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शङ्खोऽमृतं चाम्बुधेः रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्॥

( मधुस्राविणीमीमांसा. पृ. ११ )

जिस धराधाम के गर्भ से अवतार लेकर महालक्ष्मी-जगज्जननी-जानकी ने ‘‘माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः’’ के अनुसार माता की तरह पृथ्वी संरक्षण-आदर-सम्मान का सन्देश सम्पूर्ण विश्व को दिया है, जहाँ से गौतम-याज्ञवल्क्य-मण्डन-वाचस्पति-कुमारिल आदि राजर्षि-महर्षि-ब्रह्मर्षियों ने प्रवृत्तिमूलक ( कर्मप्रधान ) वेदान्त, त्यागपूर्वक सांसारिक जीवन-यापन, योग के साथ भोग का समन्वय, यज्ञ-दान-तप-विद्याध्ययन की महत्ता एवम् आत्मतत्त्व पर प्रकाश डालते हुए, शुक्ल्यजुर्वेद-शतपथब्राह्मण-बृहदारण्यकोपनिषद्-छान्दोग्योपनिषद्-ईशावास्योपनिषद्-रामायण-श्रीमद्देवीभागवत-ब्रह्मसिद्धि-भामती-तन्त्रवार्तिक आदि ग्रन्थरत्नों के माध्यम से लोककल्याणार्थ ज्ञानराशि प्रसारित किया है, जहाँ से कात्यायनी-मैत्रेयी-गार्गी-भारती एवं विद्योत्तमा सदृशी महिला विदूषियों की विद्वत्ता का प्रकाश सर्वत्र फैल रहा है ऐसे सर्वत्र विख्यात परम पुण्यप्रद तीरभुक्ति ( तिरहुत ) क्षेत्र में ही देहमन्थन एवं शास्त्रमन्थन की भाँति क्षीरसागर का मन्थन कर देवताओं ने अमृत कुम्भ ( अमृतकलश-अमृतघट ) प्राप्त कर यहीं सिमरियाधाम में उत्तरवाहिनी गंगातट पर बैठकर अमृत पान किया था।

ऋग्वेद, शतपथब्राह्मण आदि प्राचीन ग्रन्थों के अनुसार यह भूभाग जलमयप्रदेश ( आर्द्रभूमि ) के रूप में था। राजा विदेघ ( विदेह ), माथव ( माधव ) तथा उनके पुरोहित रहूगण गौतम ने वैश्वानर की उपासना के माध्यम से यज्ञ के द्वारा इस भूभाग को उर्वराशक्ति सम्पन्न तथा वासयोग्य बनाया। आधुनिक भूगर्भवैज्ञानिक, इतिहासकार एवं भूगोलशास्त्र के विशेषज्ञ भी इस विषय को स्वीकार करते हैं। श्रीमद्देवीभागवत में भी इस क्षेत्र की अवस्थिति, हिमालय के पार्श्व ( बगल ) तथा सागर के अतिसन्निकट में कही गई है। यथा-

राजाऽपि विमनां भूत्वा गौतवं प्रत्यपूजयत्। इयाज हिमवत्पाश्वरे सागरस्य विशेषतः॥ ( स्क.६, अ.१४, श्लो.३५ )

कुम्भपर्व मुख्यतया श्रीरसागरमन्थनपूर्वक अमृतप्राप्ति कथा से सम्बद्ध है। क्षीरसागरमन्थन की कथा स्कन्दपुराण ( १।६-१२ ), विष्णुपुराण ( १।६ ), मत्स्यपुराण ( अ.२४६-२५१ ) तथा पद्मपुराण ( १।४ ) आदि ग्रन्थों में उपलब्ध होती है। स्कन्दपुराण के माहेश्वरखण्ड में प्राप्त कथानुसार-देवगुरु बृहस्पति के अपमान तथा एक अन्य कथा के अनुसार शिव प्रदत्त पारिजातपुष्पमाल्य को दुर्वासा द्वारा उपहारस्वरूप देने के पश्चात् देवराज इन्द्र ने स्वयं धारण नहीं करके हाथी को पहना दिया तथा हाथी द्वारा उस माला को अपने शृण्ड से उतारकर पाँव से कुचल दिये जाने के फलस्वरूप दुर्वासा द्वारा दिये गये शाप के कारण देवराज इन्द्र त्रैलोक्य राजलक्ष्मीविहीन हो गये। इसी मध्य असुरों ने उक्त वृत्तान्त सुनकर स्वर्ग पर चढ़ाई कर दी तथा स्वर्ग की सारी सम्पत्ति लूट ली किन्तु अभिशप्तत्वात् बलि आदि असुरों के हाथ से वह सारी सम्पत्ति क्षीरसागर ( क्षीरोदकी सागर सङ्गम ) में गिर पड़ी। इस तरह देवता एवं दैत्य-दोनों श्रीविहीन हो जाने के कारण दुःखी रहने लगे।

दुःखनिवृत्ति के लिये उपायान्तर नहीं देखते हुए देवता एवम् असुरगण अपने-अपने गुरु बृहस्पति एवं शुक्रचार्य से परामर्श कर देवाधिदेव महादेव के नेतृत्व में नष्ट राजलक्ष्मी की पुनः प्राप्ति के लिए क्षीरसागरमन्थन का निश्चय किया।

उक्त कथा अधिकांश ग्रन्थों में मिलती है किन्तु क्षीरसागरमन्थन स्थान के विषय में ये सभी ग्रन्थ मौन हैं। स्थान का निरूपण आदिकाव्य-वाल्मीकि एवं रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग ( आगम ) ग्रन्थों में मिलता है। यथा वाल्मीकिरामायण में-

अथ रामो महाप्राज्ञो विश्वामित्रं महामुनिम्। प्रपच्छ प्राञ्जलिर्भूत्वा विशालामुत्तमां पुरीम्॥

श्रूयतां राम शक्रस्य कथां कथयतः श्रुताम्। अस्मिन् देशे हि यद्वृत्तं श्रृणु तत्त्वेन राघव॥

पूर्वं कृतयुगे राम दितेः पुत्रा महाबलाः। अदितेश्च महाभागा वीर्यवन्तः सुधार्मिकाः॥

ततस्तेषां नरव्याघ्र! बुद्धिरासीन् महात्मनाम्। अमरा विजराश्चैव कथं स्यामो निरामयाः॥

ततो निश्चित्य मथनं योवत्रं कृत्वा तु वासुकिम्। मन्थानं मन्दरं कृत्वा ममन्थुरमितौजसः॥

उत्पपाताग्निमसङ्काशं हालाहलमहाविषम्। तेन दग्धं जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम्॥

हालाहलं विषं घोरं सञ्जग्राहामृतोपमम्। देवान् विसृज्य देवेशो जगाम भगवान् हरः॥

उच्चैः श्रव्य हयश्रेष्ठो मणिरत्नं च कौस्तुभम्। उदतिष्ठन् नरश्रेष्ठ! तथैवामृतमुत्तमम्॥

( बा०का०, सर्ग ४५, श्लो. ११, १४-१६, १८, २०, २६, ३६ )

अर्थात्, देवराज इन्द्र द्वारा सुनी हुई कथा को, धनुर्यज्ञावसर पर जनकपुर जाते हुए, गंगा पार करने के पश्चात् महामुनि विश्वामित्र भगवान श्रीराम को सुनाते हुए कहते हैं कि प्राचीनकाल में कृतयुग में इस तीरभुक्ति क्षेत्र में हिमालय पर्यन्त समुद्र का विस्तार था। उसी के उत्तर तट पर कैलाश से थोड़ी दूर पर गंगा-सागर का संगम तथा वहीं दक्षिण तट पर मन्दार पर्वत भी थी। इसी स्थान पर अजरत्व-अमरत्व एवम् आरोग्य लाभ के लिए देवता एवं राक्षसों ने मिलकर वासुकी को डोरी, कच्छप के पीठ पर स्थिर कर मन्दार पर्वत को मथनी बनाकर समुद्र मन्थन कर अमृत प्राप्त किया। यह स्थान सम्प्रति बिहार प्रान्त के बेगूसराय जिला मुख्यालय से नैऋत्यकोण में अवस्थित शाल्मलीवन ( सिमरियाधाम ) सिद्ध होता है।

इसी तरह रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग ग्रन्थ में भी कहा गया है-

आर्यावर्तस्य पूर्वस्यां समुद्रोऽस्ति सनातनः। हिमवद्वनपर्यन्तं विस्तारोऽभूत् कृते युगे॥

तस्योत्तरस्मिन् पुलिने गङ्गासागरसङ्गमः। ततोऽध्यनतिदूरे वै मम स्थानं सनातनम्॥

जाहव्या दक्षिणे भागे मन्दारकुसुमैर्युतः। यत्र वृक्षकृतच्छाये साक्षान्नारायणः स्वयम्॥

मन्दारस्य गिरेः पार्श्वे पुरा सिन्धुर्बभूव ह। जाह्वी चापि तत्रैव सङ्गता सागरं प्रति॥

मुरारिचरणान्जाता गच्छन्ती चोत्तरां दिशम्। जाह्वी सा महापुण्या विशिष्टा शाल्मलीवने॥

तत्रैव कमठपृष्ठे दण्डं संस्थाप्य पर्वतम्। मन्दारं शेषनागञ्च रज्जुं कृत्वा सुरासुराः॥

ममन्थुः सागरं सर्वे विष्णुं कृत्वा तु सन्निधौ। अमृतैकान्तचित्तस्तु ममन्थुः सागरं शुभे॥

ततोऽमृतघटं धृत्वा भासयन् तेजसा भुवम् आविर्बभूव सहसा देवि! धन्वन्तरिः पुमान्॥

त्रयोदश्यां कृष्णपक्षे तुलाकौ च शुभे दिने। कार्तिके मासि सूर्यश्च तुलारुढो यदा भवेत्॥

चन्द्रोऽपि देवकार्यार्थमसिते मम वासरे। गुरावपि तुलारुढे पिबन्त्यमृतमक्षयम्॥

( श्लो.१४, १५, २०, २६, ४३, २७, २८ पूर्वाब्द्धः, ३६, ४०, ८८ उत्तराब्द्धः, ८६ )

पूर्वापर सन्दर्भवशात् हरिहरक्षेत्र ( गंगा-गंडकी संगमक्षेत्र ) के समीप क्षीरसागर की अवस्थिति सिद्ध होती है। ( द्रष्टव्य-श्रीमद्भगवत, ८।२-६ ) उक्त प्रमाणों के आधार पर कार्तिककृष्ण त्रयोदशी-चतुर्दशी को तुलागत सूर्य-चन्द्र-गुरुयोग पर्यन्त पूर्वोक्तस्थान सिमरियाधाम ( शाल्मलीवन ) में क्षीरसागरमन्थन, अमृतप्राप्ति तथा देवताओं द्वारा अमृतपान सिद्ध होता है।

वर्त्तमान समय में उक्त सिमरियाधाम के दक्षिण भूभाग के बौंसी क्षेत्र में अवस्थित मन्दार पर्वत, सन्थाल-परगना के दारुकवन में वासुकिनाग द्वारा स्थापित वासुकिनाथ महादेव, जनकपुर से ५० मील उत्तर ठोसे मेगजेन नामक स्थान पर ‘‘जूटा पोखरि’’ नाम से प्रसिद्ध पुष्करिणी के मध्य भाग में विषपानोत्तर नीलकण्ठ महादेव का विश्रामस्थल, अहिल्यास्थान से पश्चिम ब्रह्मपुर में गौतम कुण्ड तक प्रवाहित क्षीरोदकी ( क्षिरोई ) नदी, नेपाल का सागरमाथा जिला एवं दरभंगा से ईशान कोण में अवस्थित बलिराजगढ-उक्त



|                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                    |                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                                       |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>विषय में प्रमाणस्वरूप अद्यपि विद्यमान हैं। एतदर्थं मधुस्राविणीमीमांसा ( डा. रामकिशोर झा विभाकर ), द्वादश कुंभस्थल ( श्रीधनाकर ठाकुर ), रुद्रयामलोक्तामृतीकरण प्रयोग ( अनुवादक डॉ० विद्येश्वर झा एवं डॉ० श्रवण कुमार चौधरी ) सिमरिया कुंभदर्पण ( डॉ. विजय कुमार, प्रो. अवधेश कुमार झा एवं प्रो. विजय कुमार झा ) एवं वाराहपुराणाङ्क कल्याण ( गीताप्रेस ) भी देखा जा सकता है।</p> <p>अमृत प्राप्ति के बाद अमृतपान के लिए देवताओं एवं दानवों में भयङ्क युद्ध छिड़ गया। इस क्रम में सूर्य, चन्द्र एवं बृहस्पति ने “अमृत घट” की रक्षा करते हुए ११ वर्षों तक ११ स्थानों-कामाख्या, पुरी आदि में विश्राम क्रम में संरक्षित किया। अन्त में १२ वें वर्ष में उसी सिमरियाधाम में भगवान विष्णु के मोहिनीरूप के प्रभाव से देवताओं ने दीपावली के दिन अमृतपान किया। यथा-</p> <p>अथ तस्य कृते राम महानासीत् कुलक्षयः। अदितेस्तु ततः पुत्रा दितिपुत्रानयोधयन्॥<br/> एकतामगमन् सर्वे अुसरा राक्षसैः सह। युद्धमासीन्महाघोरं वीर त्रैलोक्यमोहनम्॥<br/> यदा क्षयं गतं सर्वं तदा विष्णुर्महाबलाः। अमृतं सोहरत्तूर्णं मायामास्थाय मोहिनीम्॥<br/> ये गताभिमुखं विष्णुमक्षरं पुरुषोत्तमम्। सम्पिष्टास्ते तदा युद्धे विष्णुना प्रभविष्णुना॥ ( वा.रा., बा.का., सर्ग ४५, श्लो, ४०-४३ )</p> <p>रुद्रयामलोक्तमृतीकरणप्रयोगग्रन्थ में भी कहा गया है-</p> <p>एतस्मिन्नन्तरे काले विष्णुर्नारायणः स्वयम्। मोहिनीरूपामास्थाय ययौ दैत्यान् विमोहितान्॥<br/> तां सम्मान तदा दैत्यराजो बलिरुवाच ह। सुधा त्वचा विभक्तव्या सर्वेषां सममेव च॥<br/> अद्योपवासः कर्त्तव्यः सुधापानसमुत्सुकैः। रात्रौ जागरणं कृत्वा स्नातव्यं स्वर्णदी जले॥<br/> अत्रैव जाह्नवीतीरे ह्युत्तरे तु महद्वनम्। शाल्मल्याः शोभते देवि गंगा चोत्तरवाहिनी॥<br/> पुलिने तत्र पपुर्देवाः स्नात्वा सुविमले जले॥ ( श्लो. ६६, ६४, ६७, ८७ एवं ८८ पूर्वाद्ध )</p> <p>धर्मसम्राट् परमहंस स्वामी करपात्रिमहोदय ने भी अपने कुम्भपर्वनिर्णय ग्रन्थ की पृष्ठसङ्ख्या २२ में “देवताओं के १२ दिनों में अथवा मनुष्यों के १२ वर्षों में १२ कुम्भ पर्व होते हैं” ऐसा उल्लेख किया है। यथा-</p> <p>देवानां द्वादशाहोभिर्मासैर्द्वादशवत्सरैः। कुम्भपर्वाणि जायन्ते तथा द्वादशसङ्ख्यया॥</p> <p>उक्त सफल द्वादश कुम्भयोग घटित द्वादश स्थान के विषय में रुद्रयामलोक्तामृतीकरणप्रयोग ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णन किया गया है-</p> <p>देवाश्चागत्य मज्जन्ति तत्र मासं वसन्ति च। तस्मिन् स्नानेन दानेन पुण्यमक्षय्यमाप्नुयात्॥<br/> सिंहे युतौ च रेवायां मिथुने पुरुषोत्तमे। मीनभे ब्रह्मपुत्रे च तव क्षेत्रे वरानने॥<br/> धनूराशिस्थिते ब्रह्मसरसि कर्कटे कृष्णशासने। कन्यायां दक्षिणे सिन्धौ यत्राहं रामपूजितः॥<br/> अथाप्यन्योऽपि योगोस्ति यत्र स्नानं सुधोपमम्। मेषराशिस्थिते भानौ कुम्भे चैव गुरौ स्थिते॥<br/> गङ्गाद्वारे भवेद्योगो भुक्तिमुक्तिप्रदः शिवे। मेषे गुरौ तथा देवि! मकरस्थे दिवाकरे॥<br/> त्रिवेण्यां जायते योगः सद्योऽमृतफलं लभेत्। शिप्रायां मेषगे सूर्ये सिंहस्थे च बृहस्पतौ॥<br/> मासं यावन्नरः स्थित्वाऽमृतत्वं यान्ति दुर्लभम्॥ ( श्लो. १२२-१२८ )</p> <p>अर्थात्, सूर्य, चन्द्र एवं गुरु के यथोक्तयोगवशात् सिंह राशि में नासिक ( महाराष्ट्र ) में, मिथुन राशि में जगन्नाथ ( ओडिशा ) में, मीन राशि में कामाख्या ( आसाम ) में, धनु राशि में गङ्गासागर ( पश्चिमबंगाल ) में, कुम्भराशि में कुम्भकोण ( तमिलनाडु ) में, तुला राशि में शाल्मलीवन अर्थात् सिमरियाधाम ( बिहार ) में, वृश्चिक राशि में कुरुक्षेत्र ( हरियाणा ) में, कर्क राशि में द्वारका ( गुजरात ) में, कन्या राशि में रामेश्वरम ( तमिलनाडु ) में, मेषार्क-कुम्भराशिगत गुरु में हरिद्वार ( उत्तराखंड ) में,</p> | <div>५४</div> <p>मकरार्क-मेषराशिगतगुरु में प्रयाग ( उत्तरप्रदेश ) में एवं मेषार्क-सिंहस्थ गुरु में उज्जैन ( मध्यप्रदेश ) में कुम्भयोग होता है। इन सभी तीर्थस्थल में अमृतघट के संयोग से जल अमृतमय कहा गया है। अतएव इन स्थानों में स्नान, दान, दर्शन, मार्जन, जप, पूजन, हवन, कीर्त्तन, तर्पण, पिण्डदानादि विविध धर्मानुष्ठान से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है।</p> <p>चन्द्रमा प्रतिमास, सूर्य प्रतिवर्ष तथा गुरु प्रतिद्वादशवर्ष में इन राशियों में आते हैं। अतएव सूर्य-चन्द्रयोगानुसार प्रतिवर्ष वैशाख ( मेषार्क ), कार्तिक ( तुलार्क ) एवं माघ ( मकरार्क ) मास में क्रमशः हरद्वार सिमरियाधाम एवं प्रयाग में कल्पवास का आयोजन होता है।</p> <p>इसी तरह उक्त तीनों ग्रहों के योग से प्रति द्वादश वर्ष कुम्भयोग लगता है। जैसे-२०१३ ई० के मिथुनार्क में जगन्नाथ में, २०१४ ई० के कर्कार्क में द्वारका में, २०१५ ई० के सिंहार्क में नासिक में, २०१६ ई० के मेषार्क-सिंहराशिगत गुरु में उज्जैन में, २०१६ ई० के कन्यार्क में रामेश्वरम में, २०१७ ई० के तुलार्क में सिमरियाधाम में, आगामि २०१८ ई० के वृश्चिकार्क में कुरुक्षेत्र में, २०१९ ई० के धन्वर्क में गङ्गासागर में, २०२१ ई० के मेषार्क-कुम्भराशिगत गुरु में हरिद्वार में, २०२१ ई० के कुम्भार्क में कुम्भकोण में, २०२२ ई० के मीनार्क में कामाख्या में तथा २०२३ ई० के मकरार्क-मेषगत गुरु में प्रयाग में, २०२४ ई० में हरिद्वार, उज्जैन, बद्रीनाथ में, २०२५ ई० जगकथपुरी में, २०२६ ई० द्वारिका में, २०२७ ई० नासिक में, २०२८ ई० रामेश्वरम् में महाकुम्भयोग सिद्ध होता है।</p> <p>तीरभुक्ति या मिथिला क्षेत्र वैकुण्ड लोक के समान है। अतएव यहाँ वास करने से मनुष्य जीवनमुक्त होता है। यहाँ की यात्रा परम पुण्यप्रद कही गई है। काशी में एक वर्षवास से एवं प्रयाग तथा पुष्कर में तीन वर्षों तक वास से जो फल मिलता है वही फल मिथिला में एक दिन वास मात्र से प्राप्त होता है। अयोध्या के समान फल देने वाली मिथिलापुरी है। जैसे यामलसारोद्धार के मिथिलाखण्ड में कहा गया है-</p> <p>वैकुण्ठमान् पुरस्कृत्य लोकाल्लैक्ष्मीरवातरत्। वैकुण्ठस्तु निजांशेन मिथिलाभूमिमाविशत्॥<br/> अतो निवासभूमिस्ते सर्वस्थानाद्विशिष्यते। वैकुण्ठान्न कलान्यूना दृश्यते मिथिला मया॥ ( पटल ३, श्लो. १५-१६ )</p> <p>अविमुक्ते मम क्षेत्रे संवत्सरनिवासतः। यत्फलं लभते मर्त्यो मिथिलायां दिने दिने॥<br/> तीर्थराजे विधिक्षेत्रे वर्षत्रयनिवासतः। यत्फलं समवाप्नोति मिथिलायां दिनेन तत्॥<br/> गयायां पिण्डदानेन पितृणां यत् फलं भवेत्। तत् फलं समवाप्नोति पिण्डदानान्न संशयः॥<br/> कुरुक्षेत्रे तु यद्दानं ब्राह्मणेभ्यः प्रदीयते। तस्मात् कोटिगुणं पुण्यं मिथिलायां धरेश्वर॥ ( पटल ६, श्लो.२६-३४ )</p> <p>बृहद्विष्णुपुराण के मिथिला माहात्म्य में भी कहा गया है-</p> <p>कथञ्चित्तत्र चेद्वास उद्धाराय भवेदलम्। तत्र यात्रा महापुण्या सर्वकामसमृद्धिदा। ( अ. १,श्लो. १७ )</p> <p>मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां भुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः॥ ( अ. २, श्लो. ३६ )</p> <p>मिथिलावासमासद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते॥ ( अ.४, श्लो.१६ )</p> <p>महापुण्यातिरेकैश्च जनुर्लब्ध्वा च भारते। मिथिलाया निवासस्य नराः संयान्ति योग्यताम्॥ ( अ. ६, श्लो.१३ )</p> <p>अतएव धर्मानुरागियों, साधु-सन्तों एवं विद्वज्जनों से करबद्ध निवेदन है कि उक्त विषय के आलोक में ‘वृश्चिकके ब्रह्मसरसि’ वचनानुसार इस वर्ष दि.१६.११.२०१८ से १६.१२.२०१८ ई० तक ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र, हरियाणा में अगहन ( वृश्चिकार्क ) में आयोज्यमान महाकुंभ में तथा दि.१५.०१.२०१९ से १३.०२.२०१९ तक प्रयाग अर्द्धकुम्भ में अवश्यमेव पधारने तथा इस संबंध में अपनी सम्मति प्रदान कर अनुगृहीत करने की कृपा करेंगे।</p> <p>गंगादशहरा<br/> १६.०६.२०२४</p> <p>निवेदक:-<br/> स्वामी रवीन्द्र जी ब्रह्मचरी</p> |
|----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|



धान, पागलपुर का कतरनी धान का चूड़ा, दरभङ्गा का मालदह एवं सफल मिथिलाइल का पान, माँछ तथा मखान विख्यात है। यहाँ के लेग शालीन कर्मठता, सौम्यस्वरूप, आचार–विचार, प्रतिभा, मेधाविता एवम् उच्चविचार के लिए प्रसिद्ध है।यहाँ के मनोरंजन, हास्य, गीत, सङ्गीत, नृत्य, रामलीला, भजन, सङ्कीर्तन, कथा–प्रवचन, लोरिक, दीनाभदी, विहुला, राजा सल्हेश, सामाचकेवा, कठपुतली एवं जट–जटिन आदि सुप्रसिद्ध है। पाहा जट–जटिन आदि सुप्रसिद्ध है। यह सम्पूर्ण क्षेत्र शक्तिपीठको नाम से विख्यात है। आदिशक्ति माही के योगाग्निदग्ध शरीर के विभित्रवयवात से जब इस धराधाम पर ५१ शक्तिपीठ बन गए तो जहाँ उनका तीन बार (आङ्किस्र विप्र के बंदवती कन्या के रूप में (बामलसारीद्धार उन्कतमिथिलामाहात्य चतुर्थपटल, स्लोक ०४–११), शाल्मलीवन–सिमरियाधाम में श्रीरसागर के तमहालक्ष्मी के रूप में रुद्रयामलीलामृती करणाप्रयोगग्रस्योक्त सिमरियाग्भर्पण, ब्लोक ३२) तथा सीरध्वज जनक के यहाँ धरणीग से आविर्भूतानकी के रूप में (यामल सारोद्धार तन्त्रोक्त मिथिलामाहात्य, प्रथमपटल, ब्लोक ३६) साक्षात् प्राकट्य हो उस धाम के सम्बन्ध में कुछ कहने की आवश्यकता ही क्या है? यहाँ हरिहरनाथ, सोमेश्वरनाथ, गरीबनाथ, उग्रनाथ (उगना), कपिलेश्वर सिंहंबर, कुशेखर, कल्याधा अवर लेकर दिदेवर शीरेकन, त्रिपुरसुन्दरी, चण्डी, कात्यायनी, सिमस्तिका रमेधयामा, काली, कङ्काली, दुर्गा, उग्रतारा जयमङ्गला, बगला, वनदुर्गा, भुवनेधरी, राजराजेश्वरी, अहत्यागौतमस्थान, गिरिजास्थान (फतहर), जानकीस्थान, जनकपुरधाम आदि शिवशक्तिक्षेत्र सतत् प्रेरणास्रोतस्त्वेन विद्यमान है। यह विश्व में एकमात्र क्षेत्र है जिसमें वैवाहिक सम्बन्ध हेतु अधिकारमूलक जानकारी के लिए पीप्रबन्ध को व्यवस्था है। यहाँ को मिथिलाचित्रकला सर्वत्र विख्यात है। यह भूमि (चम्पारण) महात्मा गाँधी एवं (मुजफ्फरपुर) जयप्रकाशनारायण की कर्मभूमि रही है। इस तरह हर क्षेत्र में इसका अपना महत्त्वपूर्ण अवदान अतिप्राचीनकाल से ही रहा है। उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में अन्य विधाओं के साथ–साथ पति के क्षेत्र में भी तोरभुक्ति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ अनेक ग्रन्थकार, टीकाकार एवं सम्पादक हुए हैं जिनकी कृति न्यौतिष जगत् में सदैव शिरोमणि की तरह समादृत है। इनमें सिद्धान्तशेखरकार श्रीपति एवं तष्ट्टीकाकार बबुआजी (श्रीकृष्ण) मिश्र, कृत्यचिन्तामणिकार चण्डे

बर, सिद्धान्तसुधाकार महामहोपाध्याय परमानन्द ठाकुर, ग्रहणमालाकार महामहोपाध्याय हेमाङ्गद ठाकुर, रत्नशतककरा जीवेश्वर दैवत, अतदर्पणकार महामहोपाध्याय माधव सिद्धान्तसेतु रचयिता एवं सिद्धान्तशिरोमणि प्रभाटीकाकार, मुरलीधरताकुर, सिद्धान्ततया विवेकटीकाकार गङ्गाधरमिश्र, गोलप्रकाशकार नीलाम्बर, भावकुष्ठुहलादि ग्रन्थकार जीवनाथ देवज्ञ, व्यवहारसत्कार भानुनाथ चापीय त्रिकोणमिति–गोलीयरेखागणितटीकाकार चन्द्रशेखर शा. सामीपत्रिकोण मिति टीकाकार महावीर पाण्डेय, ज्योतिषरत्नाकरकार देवकीकदर सिंह मोखतार, आर्यभटीयग्रन्थटीकाकार बलदेव मिश्र, माकन्दोपपत्तिकार गोकुलनाथ शताधि कान्ताविद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा, सिद्धान्ततत्त्वा विर्वकादिग्रन्थ सम्पादक महामहोपाध्याय मुरलीधर इस बहुमतक–सूर्यसिद्धान्तादिटीकार सीतराम झा, बृहत्संहिताददिग्रन्थटीकाकार अच्युतानन्द झा, जातकक्रोड पन्थकारी कृष्णदत्त झा, टिप्पणीरिकरणकार बुद्धिनाय झा. सूर्यसिद्धान्त टीकाकार कपिलेश्वरचौधरी, कुण्डलीदर्पणारिग्रन्थकार अनुप मित्र एवं बीजगणितादिटीकाकार देवचान्द झा, आदि प्रमुख है। वर्तमान समय में भी उच्च कोटि के ग्रन्थकार, टीकाकार, सम्पादक अध्यापक एवं चिन्तक ज्योतिर्विद यहाँ है।

सभी प्रकार के शास्त्रीय एवं व्यवहारिक कार्यों के लिये शुभमुहूर्त का ज्ञान अपेक्षित होता है। शुभमुहूर्त की जानकारी ज्यौतिषशास्त्र की गणवानुसार निर्मित पक्षाङ्क से ही होती है। तदनुसार विवाहाद सकल शास्त्रीय एवं वास्तुप्रभृति व्यावहारिक शुभकार्य सम्पन्न किये जाते हैं। तीरभुक्ति क्षेत्र में प्राचीनकाल से ही पक्षाङ्ग निर्माण की परम्परा है मुद्रण व्यवस्था से पूर्व हस्तलिखित पक्षाङ्ग का प्रचलन था। तत्पश्चात् शनैः रानै मुद्रित काङ्ग का प्रचलन हुआ। मुद्रित पक्षाङ्गकारों में गोवर्द्धन दुमनी बालकृष्ण रूपनारायण लाकनाथ कण्टीर सहीधर उमानाथ उमाकाध्–झारिखण्डी–महेन्द्रनारायण विद्यानाथ जगदीश अम्बिकानाथजगत्र–जमनारायण हरिनन्दनवासुदेव लक्ष्मीनारायण लषणलाल अभिराम रम निन्द–पुलकित–यशस्पति–कपिलेश्वर परमानन्द बलदेव ब्रजकिशोर–अध्याय–लक्ष्मीकान्त आदि ज्योतिर्विदों के नाम प्रमुख है।

सर्वमंगला पक्षाङ्ग का द्वितीय पुष्प लोक सेवा हेतु सादर प्रस्तुत है। जिसमें स्थानीय बेगूसराय का प्रतिहार षष्टि प्रातः कालिक अर्धदान सूर्योदय काल विशेष रूप से निर्दिष्ट किया गया है। अन्य व्रतोपवासादि के साथ दिनकचर्या मंत्रारि दुर्लभ किंच उपयोगी मंत्रों का लघुरूप परिराष्ट पृष्ठों पर अंकित हैं। सर्वान्ततः सुधी–माधक–सारस्वतः दैवज्ञों, शास्त्र चिंतकों, पंडितों से सादर निवेदन है कि प्रथम प्रयास का प्रस्फुटित पुष्प इस पक्षाङ्ग में टंकणजन्त्र त्रुटि अथवा विषयगत विभेद के संदर्भ में अपना स्पष्ट मतव्य प्रदान करने की कृपा करेंगे। आपके द्वारा दी गयी सम्यक् सम्मति हमारे लिए उपहार के रूप में स्वीकार होगा। आपको सम्मति हो हमारी धरोहर है।

**पश्चाङ्गमस्तु जगतीतल पुण्यहेतोः, सिद्धाश्रमस्य महिमान्वित सर्वमंगला।**

**गंगा तरंग मिथिला महिमान्विता या, कुम्भ प्रभाव जननी किल शाल्मली तटा॥**

**नवेदकः**

**संपादकः घनश्याम झा**

**9934005205**

**कोशिकौन्तु सभारभ्य गडकीमभिगम्य वै । योजनानि चतुर्विंशद्वयायामः परिकीर्तितः ॥**

**गङ्गाप्रवाहमारभ्य यावद्वैमवतं वनम् विस्तारः षेडश प्रोक्तो देशस्य कुलनदन ॥**

मिथिला नाम नागरी तत्रास्ते लोकविश्रुता॥ (बृहदविष्णुपुराण, मिथिलामात्म्य, अध्याय १४, श्लोक ४२–४४)

**जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्वती यत्र पुण्या, यत्रास्ते सात्रिधाने सुरनगरनदी भैरवो यत्र लिङ्गम् ।**

**मीमांसान्यावेदाध्ययनपट्टरैः पण्डितैर्मण्डिता या, भूदेवो यत्र भूपो यजन वसुमती स्वऽस्ति मे तीरभुक्तिः ॥**

(श्रीशंकर मिश्र, (१४४०–१५३० ई.) कृत, दृष्टव्य विद्याकरसहस्रक, म.म उमेश मिश्र सम्पादित १९४२ ई. प्रयागविश्वविद्यालय प्रकाशित)

**गङ्गा वहथि जनिक दक्षिणदिशी पूर्व कौशिकीधारा। पश्चिम वहथि गण्डकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा।**

**कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा बागमती कृतसारा। मध्य बथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा॥**

**( कवीश्व चन्दा झा )।**

उपयुक्त प्रमाणों के आधार पर कोशी से गण्डकी (हरिहरक्षेत्रस्थ शालग्रामी या नारायणी) तक, पूर्व से पश्चिम तक २४ गोजन (९६ कोश) लम्बा एवं गङ्गाप्रवाह से हिमालय वन (दक्षिण से उत्तर) तक १६ यांजन (६४ कोश) चौड़ा मिथिला अथवा तीरभुक्ति कहा गया है। इस आधार पर वर्तमान समय में उत्तर से दक्षिण तक क्रमशः नेपाल के तराई क्षेत्र (दक्षिणीभाग) से मुद्देर तक तथा पश्चिम से पूर्व तक क्रमशः चम्पारण–वैशाली से पूर्णियाँ–भागलपुर तक का क्षेत्र तिरहुत अथवा मिथिलाक्षेत्र है। १८१५–१७ ई. में सुगौली सन्धि के समय विविध राजनीतिक स्थितिवश उक्त तराई क्षेत्र नेपाल के अधीन हो गया। किन्तु आचार–विचार, सभ्यता–संस्कृति की दृष्टि से आज भी सर्वथा साम्य है। वेद, शतपथब्राहाण, उपनिषद्, रामायण, भागवत, गीता, पुराण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों एवं विविध भाषा के मानक (ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, धार्मिक आदि) ग्रन्थों में मिथिला का महत्त्वपूर्ण वर्णन मिलता है। प्राचीनकाल से ही यह नगरी विद्या, उपासना एवम् आध्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में विश्वविख्यात रही है। यहाँ देवरात, मिथि, निमि, जनक, विशाल, गार्गी, मैत्रेयी, याज्ञवल्क्य, अष्टावक्र, वाल्मीकि, गौतम, कपिल, कणाद, मण्डन–भारती, अयाची, वाचस्पति, उदयन, कालिदास, विद्योत्तमा, श्रीधर, रामाप्त, वीस्वर, विद्यापत, महात्मा बुद्ध, भगवान् महावीर, महामहोपाध्याय रुथर, तान्त्रिकशिरोमणि मदन उपाध्याय, भक्तशिरोमणि बाबासाहेवराम, सन्तशिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोस्वामी परमहंस, नव्यन्यायप्रवर्तक गङ्गशोपाध्याय, महामहोपाध्याय, गोकुलनाथ, महार्घ्य मुमुदन ओझा, देवीकान्त ठाकुर, गोविन्द ठाकुर, महामहोपाध्याय परमेश्वर इव, दैवज्ञरत्न गेनानाल चौधरी, महानहोपाध्याय जयदेव मिश्र, महामहोपाध्याय डॉ. सर गङ्गानाथ झा, सर्वतन्त्रस्वतन्त्र बच्चा झा, महामहोपाध्याय बालकृष्ण मिश्र, महामहोपाध्याय हर्षनाथ झा, आचार्य जानकीवल्लभशास्त्री, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, गोपाल सिंह नेपाली, रामवृक्ष बेनीपुरी, भिखारी ठाकुर, फणीश्वरनाथ रेणु, वैद्यनाथ मित्र यात्री नागार्जुन, सुरेन्द्र झा सुमन आदि अनेक मनीषिगण हो चुके हैं जिनके कार्यकालापालोक से समस्त विश्व आलोकित हो रहा है। **सिमरियाधाम में क्षीरसामरमन्थन** से अमृतप्राप्ति (रुद्रयामलोक्ता मुतीकरणप्रयोग, ब्लोक ११–४२, १२३–१२८, वाल्मीकिरामायण, कालखण्ड सर्ग ४५, यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल ४, श्लोक ४–३) वैकुण्ठांशनिर्मित मिथिला (तत्रैव, पटल ३, ब्लोक १५–१६) एवं मिथिलायात्रा महापुण्यप्रद तथा वास से मोक्ष (बृहद्विष्णुपुराण–मिथिलामाहात्म्य, अध्याय १३, ब्लोक १७, अध्याय १६ श्लोक १३८) सुप्रसिद्ध है।

**सीतामढी में दुर्भिक्षनिवारणार्थ** सम्पन्न हलेष्टियज्ञ के पश्चात् सीरध्वज जनक द्वारा स्वर्णहलप्रवाहाबसर पर पुण्यारण्य (पुनौराधाम) में भूगर्भ से **आदिशक्ति जगज्जननी जानकी** का प्रादुर्भाव (यामलसारोद्धार, मिथिलाखण्ड, पटल २१, ग्लोक ३६, वाल्मीकिरामायण, बालकाण्ड सर्ग ६६. ग्लोक १३–१४), **याज्ञवल्क्य** का ब्रह्मविद्योपदेश (श्रीमागवत, स्कन्ध १२. अध्याय ०६, ग्लोक ६१–७३ एवं बृहदारण्यकोपनिषद्), बलराम–श्रीकृष्ण की मिथिलायात्रा (हरिवंशपर्व, अध्याय ३९ लोक २३, २८, श्रीम गवत, स्कन्ध १०, अध्याय ८६, विष्णुपुराण, ०३१०५), कर्म की प्रधानता निरूपणावसर पर भगवान् श्रीकृष्ण द्वारा **“कर्मणैव हि शंसंसिद्धिमास्थिता जनकादयः”** (श्रीम गवदीता, अध्याय ०३, ब्लोक २०) जनकादि का उदाहरण के रूप में उल्लेख तथा पिता (श्रीव्यास) जी की आज्ञा से शुक्रदेवजी द्वारा मिथिला के अधिपति जनक से (श्रीमद्देवीभागवतमहापुराण) स्कन्ध ०१, अध्याय (१४–१९) गार्हस्थ्य धर्मोपदेश एवम् आत्मज्ञान की प्राप्ति सर्वविेदित ही है। अतएव कहा गया है–

**“नमस्ते मिथिले पुण्ये सीतारामपदाङ्किन्ते।”**

हिमालय के सानिध्य एवं गङ्गादि, विविध नदिध्यों के प्रवाह दोन के कारण यहाँ का वातावरण शुद्ध एवं भूमि कर्वराशक्ति सम्मत्र है। अतएव सम्पूर्ण क्षेत्र जीवनोपयोगी कन्द, मूल, बनस्पति, लता, गुल्म, फूल, कल,औषधि तथा शरद, हेमन्त एवं वैश्मिक धान्यादि विविध वस्तुओं के उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। विशेषतः हाजीपुर का केला, मुजफ्फरपुर का शाही लोथी, समस्तीपुर का विविध कृषि उत्पादन, चम्पारण का

## ॥❀॥ नम्र निवेदनम् ॥❀॥

**वपमिह पदविद्यां तर्कान्वीक्षिकी वा, चदि पछि विपये-वा-वर्तयामः स पन्थाः ।**

**उदयति दिशि यस्यां भानुमान् सेव पूर्वां न हि तरणि अदिते दिक पराचीन वृत्तिः। ( उदयनाचार्य )**

जगन्जननी जगदंबा जानकी की जन्म भूमि जनक याज्ञवल्क्य की तपो भूमि गौतम बावस्पति उदयन पक्षधर की जान भूमि मिथिलांचल के दक्षिण द्वारस्थ उत्तर वाहिणी माँ गंगा के पावन पुलिन पर अवस्थित सर्वमंगला अध्यात्म यांग विद्यापीठ अपने परम पूज्य गुरुदेव कर्पात्री अग्निहोत्री परमहंस संत शिरोमणि स्वामी चिदात्मन जी महाराज के विमल आदर्शोन्मुख पद चिहनों पर चलते हुए अध्यात्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रिय विचारधारा से समाज के अंतिम पंक्ति में खड़े लोगों को जोड़ने का प्रयास प्रायः ०५ दशकों से अनवरत करता आ रहा है। आग्यात्मिक धरातल पर मानवीय मूल्य के मौलिक उद्देश्यों को वैश्विक क्षितिज पर रेखांकित करना ही हमारा परम लक्ष्य है। गुरू कृपा से प्राप्त चारित्रिक शुचिता वैचारिक पारदर्शिता एवं नैतिक दृढ़ता के बल पर हम निरंतर अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर है। आदिकुम्मस्थली सिमरियाधाम अति प्राचीन काल से सद्व्यशास्त्र विश्रुत द्वादश कुंभस्थलियों में आदि रूप स्थान निरूपित करते हुए न केवल मिथिला मगच एवं अंग प्रदेश की पुण्य संगम स्थली है अपितु सम्पूर्ण भारत वर्ष में आदि कुम्भ स्थली के रूप में सुप्रतिष्ठित रहा है। राजा जनक काल से ही यहां याजिक अनुष्ठान् धार्मिक कृत्य, बौद्धिक प्रवचन, संगोष्ठी पारंपरिक रूप से प्रचलित थे। ऐतिहासिक काल खंड के काले अध्याय में विधर्मी आक्रांताओं के द्वारा न केवल मठ मंदिरों को नष्ट किया गया अपितु धर्म और आस्था के सांस्कृतिक धरोहर कुम्भ पर्व को भी बंद करवा दिया गया। धर्मप्राण मिथिला भूमि जो कुम्भ प्रथा बन्द होने पर भी कार्तिक मास मेला के रूप में प्रतिवर्ष इस स्थान की एतिहासिक विरासत को अक्षुण रखा। परम् पृथ्य गुरूदेव जो आदि कुम्भ स्थली के साथ लुप्त प्रायः ०७ अन्य कुम्भ स्थलियों को पूर्ण जागृत करने हेतु प्रथम प्रेरक युग पुरुष के रूप में जन जागरण कर अपने प्राचीन धरोहर को पुनः उत्थापित करने हेतु कार्यारंभ किए। मिथिला शरीर शास्त्र और समुद्र मंथन की स्थली द्वादम नामों एवं पांच कारणों से विश्व विख्यात है। आज भी यहाँ ऐसे रत्न हैं जिन्होंने राजनितिक प्रतिष्ठा को कभी भी महत्व नहीं दिया, अधिकार की भी लिप्या नहीं को, धन को कभी भी अपने जीवन का लक्ष्य नहीं बनाया। इनके जीवन धर्म हैं, त्याग, संयम और मर्यादा। जिनपर न केवल मिथिला वासी अपितु सम्पूर्ण देशवासी गर्व करते हैं। जिन्होंने शास्त्री आधार विधि से कुम्म पर्व प्रमाणित कर भारतवासियों का सर ऊंचा किया है। इनमें विद्वत् समाज, विशिष्ट संत समाज, प्रशासक वर्ग, पत्रकार बंधुओं, राजनेताओं, कानूनविदों बिहार सरकार के साथ विश्व हिन्दू परिषद् राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ, भारतीय विकास परिषद एवं वनवासी कल्याण आश्रम, स्थापतशासी संस्था, व्यवसायीवर्ग एवं समाजिक सांस्कृतिक संस्था के साथ-साथ कुम्भ सेवा समिति की समन्वयात्मक भूमिका सराहनीय है। मूलतः ज्योतिषीय गणना के आधार पर शास्त्रीय सिद्धांत के आलोक में प्रत्येक राशि पर वर्ष में एक बार सूर्य, चन्द्र और बृहस्पति का योग होता है और इसी पूर्ण योग से तीर्थ स्थली विशेष में महाकुंभ पर्व सिद्ध होता है। षष्ट्यव्य रूाड्यामल तंत्राऽ आदि कुंभ स्थली सिमरियाधाम में वेदांग ज्योतिष शास्त्र एवं पौराणिक मान्यताओं से संदर्भित कुंभ महापर्व शारव मंथन का तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजन किया गया। इसमें मिथिला विद्वत्परिषद के माननीय अध्यक्ष पूर्व कुलपति एवं अद्वितीय दैवज्ञ पंडित प्रवर डॉ. रामचंद्र झा जी के साथ मिथिला के विशिष्ट विद्वान एवं काशी विद्वत्परिषद के माननीय अध्यक्ष वयोवृद्ध प्रोफेसर राम पत्तलशुक्ल, प्रोफेसर शिवजी उपाध्याय, प्रोफेसर राम नारायण द्विवेदी के साथ काशी के अन्य विद्वत विभूति साथ ही हिन्दू विश्वविद्यालय बाराणसी, सम्पूर्णानन्द विश्वविद्यालय वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, दिल्ली, गुजरात, पुणे, जगन्नाथपुरी, कोलकाता, असम, काठमांडु, संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा, मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा, पटना विवि,, भागलपुर, दुमका विवि, ऐसे सुप्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान के लब्धप्रतिष्ठ विषय विशेषज्ञ, चारों धाम के तीर्थ पुरोहितों, प्रयाग बाल सभा, अखाड़ा परिषद के सदस्य, विभिन्न धार्मिक सम्प्रदाय के प्रतिनिधियों ने भाग लिया । विचारोपरांत २०१७–१८ वर्षीय विवि. पक्षाङ्ग का लोकार्पण करते हुए महामहिम राज्यपाल गोवा एवं अन्य विशिष्ट विद्व त् विभूतियों ने आदि कुम्मस्थली, सिमरियाधाम, महाकुम्भ पर्व स्नान तिथि निश्चित किया। इसी प्रकार द्वादश कुम्भ योग के अंतर्गत जिन पुण्य तीर्थों में पुनीत मुहूर्त प्राप्त हुए वहां के धर्म प्राण जन समुदाय, तीर्थ पुरोहितों एवं शासन, प्रशासन के सौजन्य से सर्वमंगला परिवार अपनी शाखाओं के साथ श्रद्धा समन्वित अलभ्य युग का अध्यात्मिक लाभ प्राप्त किया। परम् पूज्य गुरुदेव स्वामी प्रायः अपने आशिर्वचनों में वेद एवं वेदांग ज्योतिष की अलौकिकता का अमर संदेश मानवता के रक्षा एवं विश्व शांति के सूत्र रूप में उद्धरित करते हैं– शब्दशास्त्रं मुखं ज्योतिषं चक्षुषी श्रोत्रमुकां निरुक्तं च कल्पः करी। या तु शिक्षास्य वेदस्य सा नासिका छन्दर्बुधैः पाद पद्घ्म द्वयम् ॥

अथार्त, (वेद भगवान का मुख व्याकरण नेत्रद्वय ज्योतिष शास्त्र, निरुक्त अवणेन्द्रिय और दोनों हाथ कल्पशास्त्र, शिक्षा शास्त्र, नासिका तथा छन्द शास्त्र दोनों पांव हैं।) इसी सूत्र का आश्रय ग्रहण करते हुए सर्व मंगला अध्यात्म् योग विध्या पीठ एवं स्वामी चिदात्मन चंद बिज्ञान अनुसंधान संस्थान सर्वमंगला विद्वत्परिषद एवं सर्वमंगला विद्वत्परिवार से विमर्शीपरांत श्रवण मास से प प्रकाशन हेतु निर्णय लिया है। धर्म और संस्कृति के समुन्नयन के साथ राष्ट्रिय विकास एवं वैश्विक शांति की कामना से प्रकाशित।

**गंगादशहरा**

**०५.०६.२०२५**



## परम पूज्य स्वामीजी के वचनामृत

१. ॐ स्वस्तिश्च नमः स्वाहा स्वधा त्वं दक्षिणा तथा। निरूपिताश्चतुर्वेदे षट् प्रशस्ताश्च कर्मिणाम्॥  
ॐ, नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा एवं दक्षिणा चारों वेदों द्वारा इन छः स्वरूपों का निरूपण किया गया है।
२. पाठो होमश्चातिथीनां सेवनं देव-पूजनम्। पितृ श्राद्धं कुलाचारं तत्त्वज्ञानं सदाचरेत्॥  
सनातन धर्मावलम्बियों को नित्य पाठ, हवन, अतिथियों की सेवा, देव-पूजन, पितृ-श्राद्ध, कुलाचार और तत्त्वज्ञान में संलग्न रहना चाहिए। जिससे वास्तविक सुख-शान्ति प्राप्त होती है।
३. सदाचारतः श्रीमान् सदायज्ञ परायणः। स्थापयेत् पञ्चतत्त्वानि गेहमध्ये प्रयत्नतः॥  
४. एकाक्षरे तथा कूटे माला मुद्रादि वैदिके। गृहस्थाश्रमासाद्य तत्त्वज्ञानेषु योगतः॥  
५. कुलपूजां विना देवि तत्त्वज्ञानं न जायते। तत्त्वज्ञानं विना देवि निर्वाणं नैव जायते॥  
६. बीज और ध्यान युक्त नवाक्षर मंत्र सब मन्त्रों में श्रेष्ठ, सब कार्यों की सिद्धि करानेवाला है।  
राजा सुरथ से महर्षि मेधा ने कहा था- तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।

आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा॥

महाराज! आप उन्हीं भगवती परमेश्वरी की अराधना कीजिए।

वे आराधना से प्रसन्न होकर भोग, स्वर्ग और अपुनरावर्ती मोक्ष प्रदान करती हैं।

ऋग्वेद का स्वरूप- “ऋं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहा।”

श्री दुर्गासप्तशती में तीनों वेद के तीन ऋषि बतलाये गये हैं जिसके अङ्ग सहित पाठ करने से चारो पदार्थ की प्राप्ति होती है।

- (क) प्रथम चरित्र के-ब्रह्म ऋषि हैं, महाकाली देवता हैं, अग्नि तत्व है, ऋग्वेद स्वरूप है।  
(ख) मध्यम चरित्र के विष्णु ऋषि हैं, महालक्ष्मी देवता हैं “ह्रीं” बीज है, वायु तत्व है, यजुर्वेद स्वरूप है।  
(ग) उत्तर चरित्र के शिव (रूद्र) ऋषि हैं, महासरस्वती देवता हैं “ऐं” बीज है, सूर्य तत्व हैं, सामवेद स्वरूप हैं। रहस्य को समझने वाला विशुद्ध ज्ञान को प्राप्त करता है। दिव्य चक्षु अर्थात् तीसरी दृष्टि (ज्ञान) को प्राप्त करता है।

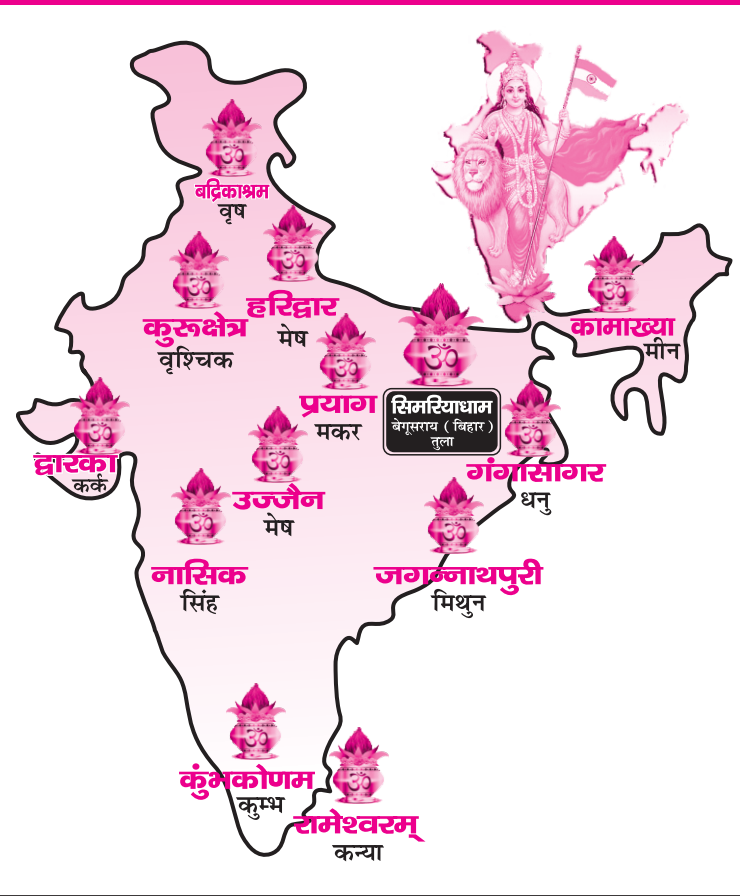
(घ) केवल सप्तश्लोकी दुर्गा या सिद्ध कुञ्जिका स्तोत्र से भी दुर्गापाठ का फल प्राप्त हो जाता है।

मनोनुकूल सफलता एवं चारो पदार्थ की प्राप्ति होती है।

सनातन धर्मावलम्बियों को शिखा, सूत्र, गोत्र, देवकर्म और पितर कर्म के साथ-साथ अतिथि सेवा भी अनिवार्य कहा गया है। कुलदेवी सभी प्रकार के सिद्धियों को देने वाली कही गयी है।

**दूर्वाक्षतदानमन्त्रः** ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानङ्गनाशुः सप्तिः पुरन्धर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम्। मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव॥

## भारत के मानचित्र पर शास्त्रोक्त द्वादश राशिगत कुम्भ स्थलियाँ



## ॥ द्वादश ज्योतिर्लिङ्गानि॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्॥  
उज्जयिन्यां महाकालम् ॐकारममलेश्वरम् ॥१॥  
परल्याम् वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ॥  
सेतुबंधे तु रामेशं नागेशं दारूकावने ॥२॥  
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे॥  
हिमालये तु केदारम् घुश्मेशं च शिवालये ॥३॥  
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः॥  
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥४॥

## संवत् २०८२ - २०८३ के प्रमुख व्रत, पर्व

|                      |                 |                           |                                   |                           |                       |                    |                           |                      |                                |
|----------------------|-----------------|---------------------------|-----------------------------------|---------------------------|-----------------------|--------------------|---------------------------|----------------------|--------------------------------|
| मौनापंचमी            | १५ जुलाई २०२५   | पितृपक्षान्त              | २१ सितम्बर २०२५                   | प्रतिहारषष्ठी प्रातः अर्घ | २८ अक्टूबर २०२५       | मकरसंक्रांति       | १४ जनवरी २०२६             | जुडिशीतल             | १५ अप्रैल २०२६                 |
| मधुश्रावणी           | २७ जुलाई २०२५   | कलशस्थापन                 | २२ सितम्बर २०२५                   | जगद्धात्रीपूजारम्भ        | २८ अक्टूबर २०२५       | प्रयाग कल्पवास     | १४ जनवरी से १३ फरवरी २०२६ | अक्षयतृतीया          | २० अप्रैल २०२६                 |
| नागपंचमी             | २६ जुलाई २०२५   | बिल्वाभिमन्त्रण           | २८ सितम्बर २०२५                   | सामापूजारम्भ              | २८ अक्टूबर २०२५       |                    |                           | शङ्कराचार्यजयंती     | २२ अप्रैल २०२६                 |
| शीतलापूजा            | ३१ जुलाई २०२५   | पत्रिकाप्रवेश             | २६ सितम्बर २०२५                   | अक्षयनवमी                 | ३० अक्टूबर २०२५       | नरकनिवारण चतुर्दशी | १७ जनवरी २०२६             | जानकीनवमीव्रत        | २५ अप्रैल २०२६                 |
| संस्कृतदिवस          | ०६ अगस्त २०२५   | निशापूजा                  | २६ सितम्बर २०२५                   | अहिल्याजयन्ती             | ३० अक्टूबर २०२५       | मौनी अमावास्या     | १८ जनवरी २०२६             | रविव्रतविसर्ग        | २६ अप्रैल २०२६                 |
| रक्षाबन्धन           | ०६ अगस्त २०२५   | महाष्टमीव्रत              | ३० सितम्बर २०२५                   | देवोत्थान एकादशी          | ०१ नवम्बर २०२५        | शिशिरनवरात्रारम्भ  | १६ जनवरी २०२६             | सप्ताडोरविसर्ग       | २६ अप्रैल २०२६                 |
| याज्ञवल्क्यजयन्ती    | ०६ अगस्त २०२५   | महानवमीव्रत               | ०१ अक्टूबर २०२५                   | विद्यापतिपर्व             | ०३ नवम्बर २०२५        | सरस्वती पूजा       | २३ जनवरी २०२६             | मलमास                | १६-०५-२६ से १५-०६-२०२६         |
| कृष्णाष्टमी          | १६ अगस्त २०२५   | विजयादशमी                 | ०२ अक्टूबर २०२५                   | कार्तिक पूर्णिमा          | ०५ नवम्बर २०२५        | अचलासप्तमी         | २५ जनवरी २०२६             |                      |                                |
| कुशोत्पाटन           | २३ अगस्त २०२५   | कोजागरा                   | ०६ अक्टूबर २०२५                   | कार्तिकेयपूजा             | ०५ नवम्बर २०२५        | माघी पूर्णिमा      | ०१ फरवरी २०२६             | गङ्गादशहरा           | २६ मई २०२६                     |
| हरितालिका ( तीज )    | २६ अगस्त २०२५   | सिमरिया कल्पवास           | १८ अक्टूबर २०२५ से १७ नवम्बर २०२५ | सोनपुरमेला                | ०५ नवम्बर २०२५        | रविदासजयन्ती       | ०१ फरवरी २०२६             | अगस्त्यास्त          | ३१ मई २०२६                     |
| चौठचन्द्र ( चौड़चण ) | २६ अगस्त २०२५   | धन्वन्तरिजयन्ती           | १८ अक्टूबर २०२५                   | सामाविसर्जन               | ०५ नवम्बर २०२५        | महाशिवरात्रि       | १५ फरवरी २०२६             | पंचाग्निव्रत         | १७ जून २०२६                    |
| गणेशपूजा             | २७ अगस्त २०२५   | हनुमानजयन्ती              | १६ अक्टूबर २०२५                   | वीडपंचमी                  | १० नवम्बर २०२५        | होलिकादाह          | ०२ मार्च २०२६             | महाराणाप्रतापजयन्ती  | १७ जून २०२६                    |
| ऋषिपंचमी             | २८ अगस्त २०२५   | दीपावली                   | २० अक्टूबर २०२५                   | कालभैरवाष्टमी             | १२ नवम्बर २०२५        | होली               | ०४ मार्च २०२६             | विन्ध्यवासिनीपूजा    | १६ जून २०२६                    |
| अगस्त्योदय           | ३१ अगस्त २०२५   | कालीपूजा                  | २० अक्टूबर २०२५                   | कामेश्वरसिंहजयन्ती        | १२ नवम्बर २०२५        | सप्ताडोरारम्भ      | ०४ मार्च २०२६             | कबीरजयन्ती           | २६ जून २०२६                    |
| राधाष्टमी            | ३१ अगस्त २०२५   | सोमवती अमावस्या           | २० अक्टूबर २०२५                   | रविव्रतारम्भ              | २३ एवं २७ नवम्बर २०२५ | वारुणीयोग          | १७ मार्च २०२६             | ग्रीष्मनवरात्रारम्भ  | १५ जुलाई २०२६                  |
| इन्द्रपूजारम्भ       | ०४ सितम्बर २०२५ | अन्नकूट                   | २२ अक्टूबर २०२५                   | नवान्नपार्वण              | २३ एवं २७ नवम्बर २०२५ | वसन्तनवरात्रारम्भ  | १६ मार्च २०२६             | सूर्यषष्ठीव्रत       | १६ जुलाई २०२६                  |
| अनन्तपूजा            | ०६ सितम्बर २०२५ | गोवर्द्धनपूजा             | २२ अक्टूबर २०२५                   |                           |                       | सूर्यषष्ठीव्रत     | २४ मार्च २०२६             | रामनवमी              | १७ जुलाई २०२६ से १७ अगस्त २०२६ |
| अगस्त्यार्घदान       | ०७ सितम्बर २०२५ | कालिदासजयन्ती             | २२ अक्टूबर २०२५                   |                           |                       | महावीर जयन्ती      | ३१ मार्च २०२६             |                      |                                |
| पितृपक्षारम्भ        | ०८ सितम्बर २०२५ | भातृद्वितीया ( भैया दूज ) | २३ अक्टूबर २०२५                   |                           |                       | मेघसङ्क्रान्ति     | १४ अप्रैल २०२६            | हरिशयन एकादशी        | २५ जुलाई २०२६                  |
| जितिया               | १४ सितम्बर २०२५ | चित्रगुप्तपूजा            | २३ अक्टूबर २०२५                   |                           |                       | हरद्वार कल्पवास    | १४-०४-२६ से १५-०५-२०२६    | चातुर्मास्यव्रतारम्भ | २५ जुलाई २०२६                  |
| मातृनवमी             | १५ सितम्बर २०२५ | प्रतिहारषष्ठी सायं अर्घ   | २७ अक्टूबर २०२५                   |                           |                       |                    |                           | गुरुपूर्णिमा         | २६ जुलाई २०२६                  |
| विश्वकर्मापूजा       | १७ सितम्बर २०२५ |                           |                                   |                           |                       |                    |                           |                      |                                |

## मुहूर्त सूची

१. सौराठससौला सभा - दिनांक ०२-०७-२०२६ ई. से १२-०७-२०२६ ई० तक।  
२. उपयनयनदिन - जनवरी- २६। फरवरी-२२, २६, २७। मार्च-२७ ( क्षत्रियवैश्य ), २६। अप्रैल-२१( छन्दोग ), २७। जून-१७ ( क्षत्रियवैश्य ),१६, २४, २५।  
३. विवाहदिन - नवम्बर-२०, २१, २३, २४, २६, २७, ३०। दिसम्बर-०१, ०४, ०५। जनवरी-२६। फरवरी-०५, ०६, ०८, १५, १६, २०, २२, २५, २६। मार्च-०४, ०६, ११, १३। अप्रैल-१७, २०, २६, ३०। मई-०१, ०६, ०८, १०, १३। जून-१६, २४, २५, २६, २८, २९। जुलाई-०१, ०२, ०३, ०६, ०८, १२।  
४. द्विरागमनदिन- नवम्बर-२१, २३, २४, २६, २७, २८। दिसम्बर-०१, ०४, ०५, ०७, ०८। फरवरी-१८, १६, २०, २२, २५, २६, २७।मार्च-०१, ०४, ०५, ०६, ०८। अप्रैल-२०, २३, २४, ३०। मई-०१, ०३, ०४, ०६।  
५. मुण्डनदिन- नवम्बर-२१, २७। दिसम्बर-०१। जनवरी-२१, २३, २८, २९। फरवरी-०६, २०, २६, २७।मार्च-०५, ०६।अप्रैल-२०, २३, २६। मई-०४।जून-१७, २४, २५। जुलाई-०१,०२,०३,१५।  
६. गृहारम्भ- अगस्त-०६,०८,०९,११,१३।अक्टूबर-३१।नवम्बर-०१, ०३, ०५, ०७, ०८। दिसम्बर-०१,०४। जनवरी-२६। फरवरी-२७, २८। मार्च-०४, ०५, ०६। मई-०१, ०४, ०६। जून-२५,२६। जुलाई-०१,०२, ०३, ०४।  
७. गृहप्रवेश- जुलाई-३०, ३१।अगस्त-०४, ०६, ०८। अक्टूबर-३१। नवम्बर-०१,०३,२६,२७। दिसम्बर-०१।जनवरी-२८,२९,३०।फरवरी-२५, २६, २७, २८।अप्रैल-२३, २७, २८, ३०।जून-२४, २५, २६, २७।७

पंचाग सम्बन्धी जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र- आचार्य श्री शिवेन्द्र झा, मो. ८७०९६३६६३९, डॉ. घनश्याम झा, मो. ९९३४००५२०५, पं. दिगम्बर शास्त्री मो. ९५७०६५८९१९ श्री दिनेश कुमार झा, मो. ७६३१८२१८४७ , पं. श्री सनातन कुमार झा-८७८९१३२०६६